GEO IAS
It's about quality

June 2024

GEO Daily

Daily Current Affairs

GEO IAS

SOURCES

THE HINDU | The Indian EXPRESS JOURNALISM OF COURAGE | pib | PIB | live mint | THE FINANCIAL EXPRESS | ET ECONOMIC TIMES.COM

Contents

सामान्य अध्ययन I 17

ART & CULTURE 17

1. पुरातत्वविद संस्कृत विद्वानों के साथ मिलकर ऋग्वेद को समझने हेतु काम करेंगे - द हिंदू 17
2. पुरी का श्री जगन्नाथ मंदिर- इंडियन एक्सप्रेस 18

POLITY & GOVERNANCE 18

3. प्रधानमंत्री ने बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का उद्घाटन किया- द हिंदू 18
4. DAY-NRLM ने 'लखपति दीदी बनाने' पर कार्यशाला का आयोजन किया 19

GEOGRAPHY 19

5. यूरोपीय संघ में रेयर अर्थ मिनरल्स के दीर्घकालिक समाधान के रूप में पुनर्चक्रण को अपनाया जाएगा - द हिंदू 19

सामान्य अध्ययन II 20

INTERNATIONAL RELATION 20

6. नीदरलैंड भारत का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश बनकर उभरा - द हिंदू 20
7. ऑस्ट्रेलिया अपनी सेना में फाइव आईज देशों के निवासियों को भर्ती करने की अनुमति देगा - बीबीसी 20
8. मानवाधिकार ने इजराइल पर लेबनान में भवनों पर वाइट फॉस्फोरस छिड़कने का आरोप लगाया - द वीक 21
9. आसियान FTA: सरकार ने मांग बढ़ाने के लिए उद्योग जगत से सुझाव मांगे - द हिंदू 21
10. भारतीय प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में भारत ने 'नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी' दोहराई- द हिंदू .. 22
11. मिस्र, ईरान, यूएई, सऊदी अरब और इथियोपिया ब्रिक्स में शामिल हुए - द हिंदू 23
12. स्विट्जरलैंड में आयोजित यूक्रेन शांति शिखर सम्मेलन में 90 देश भाग लेंगे- द इंडियन एक्सप्रेस 23
13. अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन (ILC) के 112वें सत्र में भारतीय त्रिपक्षीय प्रतिनिधिमंडल-PIB 23
14. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने गाजा पर युद्ध समाप्त करने का प्रस्ताव पारित किया- द हिंदू 24
15. पुर्तगाली नागरिकता रखने वाले गोवावासियों को OCI कार्ड की मांग में राहत - इंडियन एक्सप्रेस .. 24
16. श्रीलंका के बागान मजदूरों की दुर्दशा एक चिंता का विषय: न्यायाधिकरण - द हिंदू 25
17. भारतीय प्रधानमंत्री G-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे - इंडियन एक्सप्रेस 25
18. नेपाल ने जन औषधि केंद्र स्थापित करने के लिए भारत से मदद मांगी - द हिंदू 26

+91-9477560001, +91-9477560002, +91-9477560005
info@geoias.com
www.geoias.com
BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | Head office: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

19. CCRAS-NIIMH, हैदराबाद, पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में तीसरा WHO सहयोगी केंद्र बना -पीआईबी 26

20. ताइवान के खिलाफ चीन की 'ग्रे-ज़ोन' युद्ध रणनीति - द हिंदू..... 27

21. भारत और अमेरिका के NSA ने iCET पर प्रगति की समीक्षा की- द हिंदू..... 27

22. बर्गेनस्टॉक 'शांति पर शिखर सम्मेलन में मतदान न करने का भारत का निर्णय सही था -द हिंदू 28

23. SIPRI रिपोर्ट: US और रूस के पास वैश्विक शस्त्रागार का 90% हिस्सा; भारत के पास 172 172 परमाणु हथियार - इंडियन एक्सप्रेस 29

24. भारतीय विदेश मंत्री ने श्रीलंका यात्रा के दौरान ऊर्जा परियोजनाओं की समीक्षा की - द हिंदू..... 29

25. भारत, बांग्लादेश व्यापक व्यापार समझौते पर वार्ता शुरू करने पर सहमत- द हिंदू..... 30

26. भारतीय प्रधानमंत्री वार्षिक SCO शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे- द हिंदू..... 30

27. IWT के तहत भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल बिजली परियोजनाओं का निरीक्षण करेंगे - द हिंदू 31

28. भारत ने FATF मूल्यांकन में 'उत्कृष्ट परिणाम' हासिल किया - द हिंदू..... 31

29. भारतीय विदेश मंत्री SCO शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे - इंडियन एक्सप्रेस..... 32

30. रूस ने काला सागर पर अमेरिकी ड्रोन के खिलाफ 'जवाबी' की चेतावनी दी - द हिंदू..... 32

SCIENCE & TECH 33

31. स्वास्थ्य मंत्रालय ने भारत में TB उन्मूलन के लिए प्रोटोकॉल में बदलाव किया- द हिंदू 33

32. स्वास्थ्य और रक्षा मंत्रालय सशस्त्र बलों के लिए समर्पित टेली मानस सेल स्थापित करेंगे- पीआईबी 33

33. केंद्र ने राज्यों से मानवीय अंगों का अवैध व्यापार करने वाले एजेंटों पर कार्रवाई का आह्वान किया- द हिंदू 34

34. स्वास्थ्य मंत्रालय नेशनल हेल्थ क्लेम एक्सचेंज डिजिटल प्लेटफॉर्म शुरू करेगा - द हिंदू..... 34

35. एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस (H5N1): क्या मनुष्यों के लिए ख़तरा है?- द हिन्दू 35

36. जापान में घातक 'मांस खाने वाले बैक्टीरिया' के फैलने से वैश्विक चिंताएं बढ़ीं- बिजनेस स्टैंडर्ड.... 36

37. भारत को सिकल सेल रोग के उपचार में सफलता की उम्मीद - द हिंदू..... 36

38. भारत और US ने iCET के तहत महत्वपूर्ण खनिजों पर सहयोग बढ़ाने हेतु रणनीति तैयार की- द हिंदू 37

39. कोयला खनन से गंभीर श्वसन और त्वचा रोग होने का खतरा - द हिंदू..... 37

40. गर्भवती महिलाओं में गर्भावधि मधुमेह की जांच HbA1c से की जानी चाहिए- द हिंदू..... 38

POLITY & GOVERNANCE..... 39

41. सांसदों द्वारा MPLADS योजना निधि के उपयोग पर CIC टिप्पणी नहीं कर सकता: दिल्ली हाईकोर्ट - द हिंदू 39

42. NHRC ने 'नाता प्रथा' के संबंध में MWCD तथा विभिन्न राज्यों को नोटिस जारी किया- द हिंदू..... 39

43. भारतीय गुणवत्ता परिषद ने 20 से अधिक शहरों में विश्व प्रत्यायन दिवस मनाया- पीआईबी..... 40

44. केंद्र ने पीएम-किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी की -..... 40

45. FOGSI ने महिलाओं के लिए व्यापक टीकाकरण कार्यक्रम का अनावरण किया- द हिंदू..... 41

46. पूर्व आप मंत्री दिल्ली विधानसभा से अयोग्य घोषित - इंडियन एक्सप्रेस..... 41

47. भारत के साथ भूमि संपर्क पर व्यवहार्यता अध्ययन अंतिम चरण में: विक्रमसिंघे - द हिन्दू..... 42

48. पिछले दशक में PoSH अधिनियम के मामलों में वृद्धि -..... 42

49. वित्त मंत्रालय ने 'पार्सल में ड्रग्स' घोटाले के प्रति जागरूकता का आगाह किया - द हिंदू..... 44

50. हिंसा भड़काने वाले भाषणों को गैरकानूनी गतिविधि नहीं माना जाना चाहिए- द हिंदू..... 44

51. भारत को शिक्षा और राजनीति में लैंगिक अंतर को कम करने की जरूरत - द हिंदू..... 44

52. ड्यूटी पर 'अवैध कृत्यों' के लिए पुलिसकर्मियों पर मुकदमा चलाने के लिए सरकार की मंजूरी आवश्यक: HC- द हिंदू..... 45

53. प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में किसान सम्मान सम्मेलन को संबोधित किया -पीआईबी. 46

54. कैबिनेट ने केंद्रीय क्षेत्र योजना NFIES को मंजूरी दी - पीआईबी..... 46

55. कोयला मंत्रालय द्वारा जारी खनन दिशानिर्देश 2024 में प्रमुख सुधार किए गए- पीआईबी..... 46

56. केंद्र ने सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024 को अधिसूचित किया -द हिंदू 47

57. सरोगेसी से जन्मे बच्चे के पैरेंट्स को मातृत्व अवकाश मिलेगा - द हिंदू..... 48

58. केरल विधानसभा ने राज्य का नाम बदलकर 'केरलम' करने का प्रस्ताव पारित किया - द हिंदू..... 48

59. केंद्रीय गृह मंत्रालय ने eSakhsya ऐप का परीक्षण किया - द हिंदू..... 48

60. प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) को नई सुविधाओं के साथ नया रूप दिया जाएगा - द हिंदू..... 49

61. डमी FIR और पॉकेट गाइड के साथ पुलिस नए आपराधिक कानूनों पर स्विच करने के लिए तैयार- द हिंदू 50

+91-9477560001, +91-9477560002, +91-9477560005
info@geoias.com
www.geoias.com
BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | Head office: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

62. भारत ने धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी रिपोर्ट की आलोचना की - द हिंदू 50

ECONOMY 51

63. केंद्र ने राज्यों को टैक्स हस्तांतरण की 1.39 ट्रिलियन रुपये की किस्त जारी की 51

64. वर्ष 2024 की पहली GST परिषद बैठक 22 जून को होगी- द हिंदू 51

65. 'डिजी यात्रा का विस्तार होटलों, रेल यात्रा और सार्वजनिक स्थानों तक किया जा सकता है' - द हिंदू 51

ART & CULTURE 52

66. श्रीनगर को विश्व शिल्प परिषद से विश्व शिल्प शहर का दर्जा प्राप्त हुआ- द हिंदू 52

सामान्य अध्ययन III 53

SCIENCE & TECH 53

67. वायरस जैसे पार्टिकल उत्पन्न करने की नई विधि;निपाह के खिलाफ एंटीबॉडी बनाने में मदद मिलेगी - द हिंदू 53

68. ऐतिहासिक नमूना पुनर्प्राप्ति मिशन में चीन चंद्रमा के सुदूर भाग पर उतरा- इंडियन एक्सप्रेस 53

69. इसरो ने एयरोडायनामिक डिजाइन हेतु नया PraVaHa सॉफ्टवेयर विकसित किया- द हिंदू 54

70. हिमाचल प्रदेश में बारिश से जंगलों की आग बुझने और भीषण गर्मी से मिलने की उम्मीद - द हिंदू 54

71. ICMR द्वारा सिकल सेल रोग के इलाज हेतु हाइड्रोक्सीयूरिया का फार्मूला उपलब्ध करायेगा - द हिंदू 55

72. FSSAI ने खाद्य ब्रांडों को लेबल और विज्ञापनों से '100% फलों का रस' का दावा हटाने का निर्देश दिया - द हिंदू 56

73. शोधकर्ताओं ने "ग्रीन-बियर्ड" जीन की पहचान की -द हिंदू 56

74. AI भारत के DPI को को सशक्त बना सकता है- लाइव मिंट 57

75. स्पेसएक्स ने सफलतापूर्वक स्टारशिप मिशन पूरा किया - इंडियन एक्सप्रेस 57

76. H5N2 बर्ड फ्लू से पहली मानव मृत्यु: -इंडियन एक्सप्रेस 58

77. इसरो ने पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान के लैंडिंग मिशन का सफलतापूर्वक परीक्षण किया- द हिंदू 58

78. 'वैश्विक कंपनियां लागत कम करने के लिए बड़े AI मॉडल अपना रही हैं'- द हिंदू 59

79. इसरो ने आदित्य-L1 से ली गई सूर्य की तस्वीरें जारी कीं- द हिंदू 59

80. IISc ने भूजल से भारी धातु प्रदूषकों को हटाने की विधि विकसित की- टाइम्स ऑफ़ इंडिया 60

+91-9477560001, +91-9477560002, +91-9477560005
info@geoias.com
www.geoias.com
BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | Head office: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

81. भारत की टीबी डायग्नोस्टिक तकनीक को WHA में सराहना मिली - द हिंदू 60

82. NSSO सर्वेक्षण: COVID-19 की 2nd लहर ने अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया- द हिंदू 61

83. विद्युत चुम्बक आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका हैं - द हिन्दू 61

84. केवल दो वर्षों में अंतरिक्ष स्टार्टअप्स में 200 गुना वृद्धि- पीआईबी 62

85. IIIT-दिल्ली ने ट्रिनिटी चैलेंज में संयुक्त रूप से दूसरा पुरस्कार जीता - द हिंदू 62

86. इसरो डेटा से केरल के दो बांधों पर बाढ़ के जोखिम के विश्लेषण में मदद मिलेगी- टाइम्स ऑफ इंडिया 63

87. कड़े नियम भारत में AI के विकास में बाधा डाल सकते हैं: विशेषज्ञ- द हिंदू 63

88. इसरो के पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान पुष्पक का परीक्षण सफल रहा- द हिंदू 64

89. चीन का चांग'ए-6 यान चंद्रमा से नमूने लेकर पृथ्वी पर लौटा - द हिंदू 65

90. चंद्रयान-4 के पुर्जे दो प्रक्षेपणों के लिए भेजे जाएंगे: इसरो प्रमुख 65

ENVIRONMENT 66

91. तमिलनाडु वन विभाग ने मैंग्रोव कवर की सुरक्षा के लिए 20 गांवों के पैनल बनाए- द हिंदू 66

92. वैश्विक परियोजना ने भारत में वायु प्रदूषण के साक्ष्य प्रस्तुत किए - द हिंदू 67

93. COP-29 में 'शांति' और 'युद्धविराम' का आह्वान किया जाएगा- द हिंदू 67

94. भारत को नवीकरणीय ऊर्जा के लिए 385 अरब डॉलर तक खर्च करेगा'- द हिंदू 68

95. भारत नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन में दूसरे स्थान पर - द हिंदू 68

96. पश्चिमी घाट में ESA की सीमा में कटौती की मांग - द इंडियन एक्सप्रेस 69

97. MNRE और IREDA ने वैश्विक पवन दिवस पर भुवनेश्वर में सम्मेलन का आयोजन किया - पीआईबी 69

98. पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2024: भारत 180 देशों में 176वें स्थान पर- द प्रिंट 70

99. भारत, चीन, ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने सस्ता बायोडीजल बनाने के लिए उत्प्रेरक विकसित किया 71

100. NHAI राष्ट्रीय राजमार्गों पर मियावाकी वृक्षारोपण के साथ ग्रीन आवरण बढ़ाएगा- पीआईबी 71

101. जून में देश के उत्तर-पश्चिमी व मध्य भागों में सामान्य से अधिक तापमान रहने का अनुमान: IMD - द हिंदू 72

102. काजीरंगा में सीसिलियन की नई प्रजाति मिली 72

103. मेथनॉल स्वास्थ्य के लिए कितना खतरनाक हो सकता है? - द हिंदू 73

104. नॉर्ड स्ट्रीम लीक: बाल्टिक समुद्री जल में हजारों टन मीथेन घुल सकता है-डाउन टू अर्थ 74

105. संपीड़ित बायोगैस क्षमता में उत्तर प्रदेश देश में अग्रणी राज्य - डाउन टू अर्थ 75

106. भारत की सबसे बड़ी तेंदुआ सफारी बन्नेरघट्टा में खुली- द हिंदू 75

107. IISER तिरुपति ने मेथनॉल और पैराफॉर्मेल्डिहाइड से हाइड्रोजन उत्पादन विधि विकसित की- पीआईबी 75

108. उत्तराखंड सरकार 13 ग्लेशियल झीलों से उत्पन्न खतरे का अध्ययन करेगी- द हिंदू 76

ECONOMY 77

109. अधिक सड़क परियोजनाओं, उच्च टोल राजस्व से InvITs की शुरूआत को बढ़ावा मिला 77

110. कुल खाद्यान्न उत्पादन 3288.52 LMT होने का अनुमान - पीआईबी 77

111. देश में वर्ष 2023-24 में बागवानी उत्पादन लगभग 352.23 MT होने का अनुमान - पीआईबी 78

112. कोयला और लिग्नाइट PSU भूमि पुनरुद्धार और स्थिरता में अग्रणी - पीआईबी 78

113. PMI संकेत: मई में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर पांच महीने के निचले स्तर पर पहुंची - द हिंदू 79

114. RBI ने रेपो दर अपरिवर्तित रखी, GDP पूर्वानुमान को बढ़ाकर 7.2% किया - द हिंदू 79

115. RBI डिजिटल पेमेंट फ्रॉड के खिलाफ डिजिटल पेमेंट इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म स्थापित करेगा - द हिंदू 80

116. RBI एजेंडा: रुपये का वैश्वीकरण और डिजिटल पेमेंट का सार्वभौमिकरण करना - इंडियन एक्सप्रेस 80

117. सरकार ने सोने के आभूषणों और कलपुर्जों के आयात पर प्रतिबंध लगाया - इंडियन एक्सप्रेस 81

118. वैश्विक विकास स्थिर हो रहा है, लेकिन कोविड-पूर्व स्तर से नीचे: विश्व बैंक - बिजनेस स्टैंडर्ड 82

119. पूंजीगत व्यय में 25% की वृद्धि, शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करें: CII- द इंडियन एक्सप्रेस 82

120. मुद्रास्फीति में कमी आने से सेंसेक्स, निफ्टी नए शिखर पर पहुंचे - इंडियन एक्सप्रेस 83

121. भारत में थोक मूल्य मुद्रास्फीति मई में 15 महीने के उच्चतम स्तर पर - द हिंदू 84

122. केंद्र सरकार ने 2800 करोड़ रुपये के डिजिटल कृषि मिशन का शुभारंभ किया - इंडियन एक्सप्रेस ... 84

123. फेड FOMC का नतीजा हॉकिश या डोविश - इकनॉमिक टाइम 85

124. मांग और निजी निवेश को बढ़ावा देने हेतु सरकार आयकर दर में कटौती करेगी - द इंडियन एक्सप्रेस 85

125. कंचनजंगा एक्सप्रेस दुर्घटना: कवच प्रणाली का अभाव- इकोनॉमिक्स टाइम्स 86

126. अवस्फीतिकारी प्रक्रिया में खाद्य मुद्रास्फीति सबसे बड़ी चुनौती: RBI गवर्नर 86

127. केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 14 खरीफ फसलों के MSP बढ़ाने को मंजूरी दी - द हिंदू................................ 86
128. खाद्य मुद्रास्फीति के कारण अवस्फीति की गति धीमी है: RBI गवर्नर - इंडियन एक्सप्रेस 87
129. भारत सरकार ने अंतर्राज्यीय ट्रांसमिशन प्रणाली (ISTS) योजनाओं को मंजूरी दी -पीआईबी............ 87
130. चालू खाता चौथी तिमाही में 5.7 बिलियन डॉलर अधिशेष पर पहुंचा- द हिंदू................................ 88
131. बढ़ते जल संकट से भारत की ऋण साख को नुकसान पहुंचेगा: मूडीज -द प्रिंट............................ 88
132. रेलवे वंदे भारत, गतिमान एक्सप्रेस ट्रेनों की गति कम करेगा- द हिंदू.. 89
133. केंद्रीय मंत्री ने CEL को 'मिनी रत्न' (श्रेणी-1) का दर्जा देने की घोषणा की- पीआईबी 89
134. वैश्विक अर्थव्यवस्था के बढ़ते जोखिमों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत -द हिंदू............. 90
135. सेबी ने डीलिस्टिंग के नियमों को आसान बनाया - द हिंदू.. 90
136. सरकार MSME विलंबित भुगतान से संबंधित विवादों में सुधार करने हेतु अधिनियम 2006 में संशोधन करेगी - द हिंदू.. 91
137. भूटान से आया मृग-जैसे स्तनपायी में सबसे कम तापमान दर्ज किया गया- द हिंदू.................... 91
138. RBI रिपोर्ट: बैंकों का सकल NPA अनुपात 12 साल के निचले स्तर 2.8% पर - इंडियन एक्सप्रेस 92
139. दिल्ली की बारहमासी जलभराव समस्या से संबंधित मामला -इंडियन एक्सप्रेस 92
140. भविष्य के युद्धों की लागत बहुत अधिक है, संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए: CDS 93

INTERNATIONAL RELATION 93

141. जलवायु परिवर्तन नेपाल में शहद प्राप्त करने का पीढ़ियों पुराना शिल्प खतरे में - इंडियन एक्सप्रेस 93
142. कैपजेमिनी अध्ययन: वैश्विक उच्च-निवल-संपत्ति जनसंख्या और संपत्ति पुनः रिकॉर्ड स्तर पर पहुंची - द हिंदू 94
143. मालदीव के राष्ट्रपति भारतीय पीएम शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे - इंडियन एक्सप्रेस 95
144. पाकिस्तान में पोलियो वायरस से संबंधित मामला - द हिंदू.. 95
145. संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को क्वांटम विज्ञान का वर्ष घोषित किया- द हिंदू 95
146. UAE से चांदी के आयात में लगभग 60 गुना वृद्धि असामान्य: GTRI 96
147. CII ने चीन में FDI प्रतिबंधों और उच्च आयात शुल्क पर पुनर्विचार की मांग की - द हिंदू.............. 97
148. भारत, अमेरिका जैवलिन एंटी टैंक मिसाइलों के सह-उत्पादन पर चर्चा की - द प्रिंट...................... 97
149. गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) न्यायाधिकरण ने लिट्टे को नोटिस जारी किया - द हिंदू....... 98

150. भारत और अमेरिका के बीच स्ट्राइकर इन्फैंट्री वाहनों के सह-उत्पादन को लेकर चर्चा - द हिंदू..... 98

GEOGRAPHY..... 99

151. चिली के अटाकामा रेगिस्तान में दुनिया का सबसे बड़ा खगोल विज्ञान कैमरा स्थापित किया जायेगा - इंडियन एक्सप्रेस..... 99

POLITY & GOVERNANCE..... 99

152. CCI ने निपटान और प्रतिबद्धताओं की निगरानी हेतु नए नियमों का प्रस्ताव दिया - द हिंदू..... 99

153. नीति आयोग ने AIM-ICDK जल चैलेंज 4.0 का अनावरण किया- पीआईबी..... 100

154. लोकसभा का अस्थायी अध्यक्ष कौन होता है और इस पद हेतु चयन प्रकिया कैसे होती है..... 101

DEFENCE..... 102

155. भारतीय सेना ने उन्नत सैन्य क्षमता के लिए "विद्युत रक्षक" का अनावरण किया- इंडियन एक्सप्रेस 102

156. सेना को मिला पहला स्वदेशी मानव-पोर्टेबल आत्मघाती ड्रोन- इकनोमिक टाइम्स..... 102

157. भारत अपना पहला बहुराष्ट्रीय वायु अभ्यास 'तरंग शक्ति' की मेजबानी करेगा - द हिन्दू..... 103

एडिटोरियल, जिस्ट, एक्सप्लेनेर..... 104

158. 60वां बॉन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन -द प्रिंट..... 104

159. भारतीय वृक्ष आवरण में भारी गिरावट - द वायर..... 104

160. वर्तमान में वैश्विक पर्यावरणीय स्थिति -इंडियन एक्सप्रेस..... 105

161. दिल्ली में पानी की आपूर्ति कैसे होती है- इंडियन एक्सप्रेस..... 106

162. वैश्विक प्लास्टिक संधि का नया स्वरूप तैयार करना - द हिंदू..... 107

163. आंध्र प्रदेश विभाजन: किस तरह पुनर्गठन से राज्यों के क्रम में आमूलचूल परिवर्तन हो सकता है- द हिंदू 108

164. भारत में आर्थिक सुधारों के लिए गठबंधन सरकार महत्त्व - इंडियन एक्सप्रेस..... 109

165. भारत में संघवाद से संबंधित मामला- द इंडियन एक्सप्रेस..... 109

166. लोकसभा चुनाव -2024: लोकसभा सदन में महिलाओं की संख्या में मामूली गिरावट -इंडियन एक्सप्रेस..... 110

167. आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा: चंद्रबाबू नायडू की बड़ी मांग- द इंडियन एक्सप्रेस..... 112

168. बिहार, आंध्र प्रदेश की विशेष राज्य के दर्जे की मांग - इंडियन एक्सप्रेस..... 112

169. देश के संसाधनों के उपयोग का निर्णय केंद्र और राज्यों द्वारा संयुक्त रूप से होना चाहिए - द हिंदू 113
170. अध्ययन: टोंगा ज्वालामुखी के कारण शेष दशक में असामान्य मौसम हो सकता है- द हिंदू...... 114
171. भारत किस ग्रेड का कोयला उत्पादित करता है? - द हिन्दू...... 115
172. जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने सबसे पुरानी आकाशगंगा का पता चला - इंडियन एक्सप्रेस...... 116
173. स्वास्थ्य देखभाल लागत से सम्बंधित मामला - द हिंदू...... 116
174. क्लेबसिएला न्यूमोनिया बैक्टीरिया नियो प्रोटीन के उपयोग से संक्रमण को रोका जा सकता है- द हिंदू 117
175. स्वास्थ्य विनियमन हेतु आधार से शीर्ष तक के दृष्टिकोण की आवश्यकता - द हिंदू...... 118
176. भारतीय संविधान के तहत संपत्ति और मुआवजे का अधिकार- द हिंदू...... 118
177. कृषि क्षेत्र के लिए चुनौती: विकास लाभ को कैसे साझा करें- द इंडियन एक्सप्रेस...... 119
178. राजस्थान में किसानों को बिजली आपूर्ति हेतु सहकारिता आधारित वितरण मॉडल- द हिंदू...... 120
179. भारत की GDP वृद्धि :चुनौतियां और अवसर - द इंडियन एक्सप्रेस...... 120
180. भारत में सड़क यातायात असंवहनीय और अन्यायपूर्ण - मिंट...... 121
181. वैश्विक ऋण संकट: राष्ट्र शिक्षा और स्वास्थ्य की तुलना में ब्याज भुगतान पर अधिक खर्च कर रहे - डाउन टू अर्थ...... 122
182. पाकिस्तान, पनामा, सोमालिया, ग्रीस UNSC के गैर-सदस्य चुने गए- लाइव मिंट...... 122
183. भारतीय नौसेना को मिली पहली महिला हेलीकॉप्टर पायलट - द हिंदू...... 123
184. आनुपातिक प्रतिनिधित्व क्या है - द हिन्दू...... 124
185. लोकसभा स्पीकर की शक्तियों का महत्व - इंडियन एक्सप्रेस...... 125
186. ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता का प्रभाव और ओथेरनेस का विचार- द हिंदू...... 125
187. सतनामी धार्मिक संप्रदाय - द इंडियन एक्सप्रेस...... 127
188. 18वीं लोकसभा: नए केंद्रीय मंत्रियों और विभाग - द हिंदू...... 128
189. सरकारी अनुबंधों में मध्यस्थता संबंधित मामला - इंडियन एक्सप्रेस...... 129
190. लाल किला मामला: राष्ट्रपति ने पाक नागरिक की दया याचिका खारिज कर दी - इंडियन एक्सप्रेस 130
191. RBI की MPC ने बेंचमार्क रेपो दर को 6.50% पर अपरिवर्तित रखा - द हिंदू...... 131

192. भारत का बढ़ता वित्तीय संकट- द हिंदू 131

193. जलवायु परिवर्तन पर अधिक कार्रवाई के लिए प्रयास- द हिंदू 133

194. हिंद महासागर: बढ़ती ग्रीनहाउस गैसों से महासागरीय स्थिति -- द हिंदू 133

195. आपदा प्रबंधन अधिनियम में हीटवेव को अधिसूचित आपदा के रूप में शामिल क्यों नहीं - इंडियन एक्सप्रेस 135

196. जलवायु कार्रवाई के लिए धन क्यों महत्वपूर्ण है - इंडियन एक्सप्रेस 136

197. भारत-अमेरिका संबंधों की वैश्विक स्थिति - द हिंदू 137

198. भारत को अमेरिका के साथ महत्वाकांक्षी SMR सार्वजनिक-निजी भागीदारी स्थापित करना चाहिए - द प्रिंट 138

199. कुवैत त्रासदी ने नए उत्प्रवास कानून की आवश्यकता को रेखांकित किया- इंडियन एक्सप्रेस 139

200. फैटी लिवर रोग महामारी से निपटना- द हिंदू 140

201. प्रतीक्षित HIV वैक्सीन की दिशा में प्रगति - द हिंदू 141

202. SWM उपकर क्या है और यह अपशिष्ट उत्पादकों पर क्यों लगाया जाता है? - द हिंदू 142

203. पंजाब में DSR को बढ़ावा नहीं मिल पाया - इंडियन एक्सप्रेस 142

204. ग्रेट निकोबार परियोजना में सामरिकअनिवार्यता और पर्यावरण संबंधी चिंता- इंडियन एक्सप्रेस ... 144

205. विज्ञान आधारित निर्णय को प्राथमिकता देने से अंटार्कटिक पर्यटन हेतु एक सतत भविष्य सुनिश्चित होगा- द हिंदू 144

206. वन प्रबंधन को लोकतांत्रिक बनाना तथा जंगलों में लगने वाली आग को कैसे रोका जाए - द हिंदू 145

207. क्या सरकारी सब्सिडी हेतु EVs और हाइब्रिड वाहनों को समान माना जाना चाहिए? - द हिंदू 146

208. IRDAI ने स्वास्थ्य कवर में बेहतरीन सुधार किये - द हिंदू 147

209. टकराव-रोधी प्रणाली 147

210. भारत मे रेलवे दुर्घटनाओं से सम्बंधित मामला - इंडियन एक्सप्रेस 149

211. भारत में अनाज की मांग कैसे बदल रही है- इंडियन एक्सप्रेस 150

212. बढ़ती वैश्विक भूख और जलवायु से प्रभावित खाद्य प्रणाली के लिए एक नई "जीन क्रांति" को अपनाया जा रहा है - इंडियन एक्सप्रेस 151

213. भारत के बुजुर्गों की स्थिति से संबंधित मामला - द हिंदू 152

214. तेजी से बदलती दुनिया में G-7 को अपने उद्देश्य की समीक्षा करनी होगी- द हिंदू 153

215. श्रीलंकाई तमिल शरणार्थियों से सम्बंधित मामला - द हिंदू 154

216. रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट क्या है? 155

217. नई संसद में नागरिक अधिकारों को खतरे में डालने वाले कानूनों को ख़त्म करना चाहिए - इंडियन एक्सप्रेस 156

218. 11 उम्मीदवारों ने EVM बर्न मेमोरी सत्यापित करने के लिए आवेदन किया - इंडियन एक्सप्रेस ... 157

219. पटना उच्च न्यायालय ने बिहार में 65% आरक्षण को रद्द कर दिया - द इंडियन एक्सप्रेस 158

220. मनी लॉन्ड्रिंग मामलों में जमानत और PMLA के तहत 'ट्विन टेस्ट' - इंडियन एक्सप्रेस 159

221. ओपिओइड के प्रबंधन में योगा महत्वपूर्ण निभाता है -पीआईबी 160

222. भारतीय लोकसभा अध्यक्ष के कर्तव्य - द हिंदू 161

223. लोकसभा के नये कार्यकाल में पर्यावरण संबंधी चिंताओं का ध्यान रखना होगा- द हिंदू 162

224. 18वीं लोकसभा का सत्र शुरू: भर्तृहरि महताब होंगे लोकसभा प्रोटेम स्पीकर-इंडियन एक्सप्रेस 163

225. PESA ने भारत में वन संरक्षण को कैसे बढ़ावा दिया- द हिंदू 163

226. जम्मू-कश्मीर का शत्रु एजेंट अध्यादेश क्या है? 165

227. केंद्र इस वर्ष के अंत तक भारतीय मध्यस्थता परिषद (MCI) की स्थापना करेगा -- द प्रिंट 166

228. लोकसभा में विपक्ष के नेता की भूमिका - इंडियन एक्सप्रेस 167

229. म्यांमार पर एक प्रगतिशील भारतीय नीति की रूपरेखा- द हिंदू 167

230. न्यायालय ने हिमालय के विकास का मार्ग प्रशस्त किया - द हिन्दू 168

231. महाराष्ट्र के जल संकट का विश्लेषण - द हिंदू 169

232. भारत में रूफटॉप सौर ऊर्जा योजना का कितना उपयोग हो रहा है? - द हिंदू 170

233. भारत को महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपदा प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की आवश्यकता - इंडियन एक्सप्रेस 170

234. आंध्रप्रदेश में NDA की जीत से रियल एस्टेट सेक्टर में स्पष्टता आने की उम्मीद - द हिंदू 172

235. सरकार को सभी मुख्य खाद्य वस्तुओं का बफर स्टॉक क्यों बनाना चाहिए- द इंडियन एक्सप्रेस 173

236. नये बजट के साथ भारत के लिए नये दृष्टिकोण का अवसर- द इंडियन एक्सप्रेस 174

237. दिल्ली हवाई अड्डे की छत ढहने की घटना: भारत के इन्फ्रास्ट्रक्चर की स्थिति - इंडियन एक्सप्रेस 175

+91-9477560001, +91-9477560002, +91-9477560005
info@geoias.com
www.geoias.com
BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | Head office: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

238. फॉक्सकॉन रोजगार विवाद: कंपनी ने विवाहित महिलाओं को नौकरी पर नहीं रखा- इंडियन एक्सप्रेस 176
239. GST परिषद बैठक: जीएसटी परिषद को व्यापक सुधारों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए- द हिंदू.... 176
240. लैंसेट अध्ययन: आधे भारतीय शारीरिक रूप से अस्वस्थ - इंडियन एक्सप्रेस..... 177
241. भारत में मुस्लिम जनसंख्या एक्सप्लोशन का मिथक- इंडियन एक्सप्रेस..... 177

फैक्ट फटाफट 179

1. ओपेक+ 179
2. रजिया सुल्तान 179
3. PPF 179
4. H5N1 179
5. म्यूचुअल फंड 179
6. स्विस शांति शिखर सम्मेलन 180
7. BSE PSUइंडेक्स 180
8. प्रेस्टन वक्र 180
9. पीएम- श्री स्कूल 180
10. राष्ट्रीय अस्पताल एवं स्वास्थ्य सेवा प्रदाता प्रत्यायन बोर्ड (NABH) 180
11. कैनलाओन ज्वालामुखी 181
12. फाइव आईज़ 181
13. राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण 181
14. पाम ऑयल 181
15. वोलैटिलिटी इंडेक्स 182
16. विकासशील समाज अध्ययन केंद्र 182
17. कैसिनी अंतरिक्ष यान 182
18. मुख्य आर्थिक सलाहकार 182
19. वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग 182
20. सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया (STPI) 183
21. अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) 183

22. EFTA 183
23. विदेश व्यापार महानिदेशालय 183
24. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) 184
25. ICJ 184
26. क्वालिटी कंट्रोल ऑर्डर 184
27. सेंट्रल हॉल 184
28. सेबी 185
29. IPEF 185
30. CPI औद्योगिक श्रमिक 185
31. IRDAI 185
32. अटल इन्क्यूबेशन सेंटर 186
33. डीपर बूल वन्यजीव अभयारण्य 186
34. चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (MRI) 186
35. इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचा (IPEF) 186
36. न्यू कैलेडोनिया 187
37. INS विक्रमादित्य 187
38. लोकनीति-CSDS 187
39. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन 187
40. स्टेपी घास के मैदान 187
41. अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM) 188
42. अल्टरनेटिव डिस्प्यूट री-सॉल्यूशन (ADR) 188
43. नागरहोल टाइगर रिजर्व 188
44. भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग 188
45. वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद 189
46. माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं 189
47. औद्योगिक उत्पादन सूचकांक: 189
48. यूरोपीय संसद 189

49. हलाइब त्रिभुज 189
50. ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट 190
51. EPFO 190
52. ग्रे ज़ोन वारफेयर 190
53. डिफेंस एक्वीजीशन कॉउन्सिल 190
54. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) 190
55. नमामि गंगे कार्यक्रम 191
56. G - 7 191
57. पीएम गति शक्ति 191
58. कावली पुरस्कार 191
59. CIC 192
60. नाटो 192
61. नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो 192
62. भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) 192
63. राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC) 193
64. गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य: 193
65. मिशन लाइफ 193
66. नाटो 193
67. कवच 194
68. उत्तर पूर्वी परिषद 194
69. वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब 194
70. अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM) 194
71. कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र 194
72. स्कारबोरो शोल 195
73. राष्ट्रीय महिला आयोग 195
74. भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) 195
75. राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (NCDC) 195

76. CERT-In 195
77. संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR) 196
78. ई-श्रम पोर्टल 196
79. इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (IPPB) 196
80. घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) 196
81. जीसैट (GSAT)-20 197
82. भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद: 197
83. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) 197
84. विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) 197
85. डायटम 198
86. INS SUNAYNA (INS सुनयना) 198
87. क्लाउड 3.5 सॉनेट 198
88. अटल सेतु 198
89. मौद्रिक नीति समिति 198
90. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) 199
91. रोटावायरस 199
92. केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण 199
93. सतनामी संप्रदाय 199
94. फास्ट ब्रीडर रिएक्टर 200
95. समीर (SAMEER) 200
96. पशुधन गणना 200
97. जल शक्ति अभियान 200
98. भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण 201
99. भारतीय कॉफी बोर्ड 201
100. SC, ST (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 201
101. भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण 201
102. SBM-U 2.0 201

+91-9477560001, +91-9477560002, +91-9477560005
info@geoias.com
www.geoias.com
BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | Head office: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

103. भारतीय निर्यात संगठन महासंघ (FIEO) 202
104. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) 202
105. केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS) 202
106. अदन की खाड़ी 202
107. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) 203
108. जैविक विविधता अधिनियम, 2002 203
109. वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग 203
110. आधिकारिक ऋणदाता समिति (OCC) 203
111. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) 204
112. वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट 204
113. सेंगोल 204
114. अभ्यास 204
115. भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) 205
116. अर्थोपाय अग्रिम (वेज एंड मीन्स एडवांस/WMA) 205
117. शंघाई सहयोग संगठन 205
118. वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF) 205
119. आठ कोर उद्योग सूचकांक (ICI) 206
120. इंजीन्यूटी मार्स हेलीकॉप्टर 206

महत्वपूर्ण समाचार लेख

सामान्य अध्ययन I

ART & CULTURE

1. पुरातत्वविद संस्कृत विद्वानों के साथ मिलकर ऋग्वेद को समझने हेतु काम करेंगे - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- हड़प्पा की सभ्यता
- ऋग्वैदिक समाज

समाचार:
- हड़प्पा सभ्यता और वैदिक युग के लोगों के बीच संभावित संबंध स्थापित करने के लिए किए जा रहे शोध में, पुरातत्वविदों का एक समूह अब ऋग्वेद के पाठ को समझने के लिए संस्कृत विद्वानों के साथ मिलकर काम कर रहा है।

मुख्य बिंदु:
- हड़प्पा बस्तियों की खुदाई में पुरातात्विक साक्ष्यों को सहसंबंधित करने के लिए ऋग्वेद पाठ में जो उल्लेख किया गया है उसकी स्पष्ट समझ महत्वपूर्ण है
    - हरियाणा के राखीगढ़ी और बनावली,
    - हरियाणा-राजस्थान सीमा पर कालीबंगा, और
    - गुजरात में धोलावीरा।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने हाल ही में कक्षा 12 की इतिहास की पाठ्यपुस्तक में ईंटें, मोती और हड्डियां नामक अध्याय के अंतर्गत एक बड़ा संशोधन किया है।
    - हड़प्पा सभ्यता, एक महिला के 4,600 वर्ष पुराने अवशेषों से प्राप्त DNA साक्ष्य पर आधारित है, जो यह दर्शाता है कि हड़प्पावासी मूलनिवासी थे।

अधिक शोध की आवश्यकता
- यह स्थापित करने के लिए शोध की आवश्यकता है कि हड़प्पावासी और वैदिक लोग एक ही थे।
    - राखीगढ़ी की खुदाई के दौरान हमें अनुष्ठानिक चबूतरे और अग्नि वेदियों के साक्ष्य मिले। इसके साथ ही ऋग्वैदिक ग्रंथों में अग्नि पूजा का उल्लेख मिलता है।
    - ऋग्वेदिक ग्रंथों में क्या उल्लेख है, तथा उनमें से कितने का पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ संबंध हो सकता है, इसके बारे में अधिक समझ प्राप्त करने की आवश्यकता है।
- वर्तमान में वेदों की उत्पत्ति के काल के बारे में बहस चल रही है, इतिहासकारों का एक समूह मानता है कि वेदों की उत्पत्ति 2,000 ईसा पूर्व और 1,500 ईसा पूर्व के बीच हुई थी।
- हालांकि, इतिहासकारों का एक और समूह मानता है कि वेदों का इतिहास 2,500 ईसा पूर्व या 4,500 साल पहले का है। यह राखीगढ़ी साइट पर परीक्षण किए गए तत्कालीन हड़प्पा महिला की हड्डियों के नमूनों से प्राप्त आनुवंशिक साक्ष्य की आयु से मेल खाता है।

एक सामान्य थ्रेड
- ऋग्वैदिक ग्रंथों में सरस्वती नदी का वर्णन ऋग्वैदिक ग्रंथों में कम से कम 71 बार दर्ज किया गया है।
- पुरातात्विक उत्खनन के दौरान, हमें सरस्वती नदी के किनारे अधिकांश हड़प्पा बस्तियाँ मिलीं।
- सिंधु बेसिन और गुजरात में फैली लगभग 2,000 ज्ञात हड़प्पा बस्तियों में से लगभग दो-तिहाई, यानी कम से कम 1,200, सरस्वती बेसिन के किनारे स्थित हैं।
- एक और संदर्भ बिंदु जो हड़प्पा को वैदिक काल से जोड़ सकता है, वह है जानवरों की हड्डियों का एक सेट जो पाया गया है

आनुवंशिक समानताएं
- विभिन्न भाषाई और धार्मिक समूहों के 3,000 आधुनिक दक्षिण एशियाई लोगों के रक्त के नमूनों से डीएनए विश्लेषण से पता चला कि
    - अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से लेकर लद्दाख और कश्मीर तक और अफ़गानिस्तान से लेकर बंगाल तक हड़प्पा की महिलाओं के कंकाल में आनुवंशिक समानताएँ पाई गईं।

2. पुरी का श्री जगन्नाथ मंदिर- इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- श्री जगन्नाथ मंदिर

समाचार:
- 11.78 मीटर की ऊँचाई और 8.79 मीटर x 6.74 मीटर की चौड़ाई वाला रत्न भंडार श्री जगन्नाथ मंदिर के जगमोहन के उत्तरी भाग में स्थित है।

श्री जगन्नाथ मंदिर:
- श्री जगन्नाथ मंदिर, जिसे श्रीमंदिर के नाम से भी जाना जाता है, ओडिशा के पुरी में स्थित है।
- इसका निर्माण गंग वंश के अनंतवर्मन चोडगंगा देव के शासनकाल के दौरान हुआ था और इसका क्षेत्रफल 10.734 एकड़ है।
- मंदिर दो दीवारों मेघनाद प्राचीर (बाहरी दीवार) और कुरुमा प्राचीर (आंतरिक घेरा) से घिरा हुआ है।

मंदिर के चार द्वार:
- **सिंह द्वार:** पूर्व दिशा में स्थित यह मुख्य प्रवेश द्वार है। पारंपरिक रूप से माना जाता है कि यह भक्तों को मोक्ष प्रदान करता है।
- **व्याघ्र द्वार**: पश्चिम में स्थित यह द्वार 'धर्म' (कर्तव्य और धार्मिकता) का प्रतीक है।
- हस्ति द्वार (हाथी द्वार): उत्तर दिशा में स्थित यह द्वार समृद्धि का प्रतीक है।
- **अश्व द्वार**: दक्षिण में स्थित यह द्वार 'काम' (इच्छा) का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें प्रवेश के लिए वासनापूर्ण भावनाओं से वैराग्य की आवश्यकता होती है।

POLITY & GOVERNANCE

3. प्रधानमंत्री ने बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय परिसर का उद्घाटन किया- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- नालंदा
- बुद्ध धर्म

समाचार:
- भारतीय प्रधानमंत्री ने बिहार के राजगीर में नालंदा के प्राचीन खंडहरों के स्थल के निकट एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया।
- नालंदा को भारत की शैक्षणिक विरासत और जीवंत सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतीक बताते हुए

व्यापक प्रतिनिधित्व
- उद्घाटन समारोह में कई देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए।
- उन्होंने कहा कि नये परिसर से यह साबित हो गया है कि बिहार विकास के पथ पर अग्रसर है।
- संसद ने नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 के माध्यम से नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की है ।
- यह अधिनियम निम्नलिखित के कार्यान्वयन का आधार बना
  - ये निर्णय 2007 में फिलीपींस में आयोजित दूसरे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में लिए गए थे
  - विश्वविद्यालय को "बौद्धिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक अध्ययन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान" के रूप में स्थापित करने के लिए।
- इस कार्यक्रम में विदेश मंत्री और भाग लेने वाले देशों के 17 राजदूतों के साथ-साथ बिहार के राज्यपाल और मुख्यमंत्री भी शामिल हुए।
- परिसर का उद्घाटन करने से पहले प्रधानमंत्री ने नालंदा के प्राचीन खंडहरों का दौरा किया और बोधगया से लाए गए बोधि वृक्ष का एक पौधा लगाया।
- नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन अवशेषों के निकट इसका पुनर्जागरण विश्व को भारत की क्षमता से परिचित कराएगा।
- नालंदा सिर्फ भारत के अतीत का पुनर्जागरण नहीं है, कई देशों और एशिया की विरासत इससे जुड़ी हुई है।
- आने वाले दिनों में नालंदा विश्वविद्यालय एक बार फिर हमारे सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमुख केंद्र बन जाएगा।
- प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 5वीं शताब्दी में हुई थी और इसने विश्व भर से छात्रों को आकर्षित किया था।
- यह प्राचीन विश्वविद्यालय 12वीं शताब्दी में आक्रमणकारियों द्वारा जला दिए जाने से पहले 800 वर्षों तक फलता-फूलता रहा।

4. DAY-NRLM ने 'लखपति दीदी बनाने' पर कार्यशाला का आयोजन किया

प्रीलिम्स टेकअवे
- SHG
- DAY-NRLM

समाचार:
- प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप 3 करोड़ लखपति दीदी बनाने की दिशा में अपने प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए,
- ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) ने आज महिला स्वयं सहायता समूहों को सेवा क्षेत्र के उद्यमों में एकीकृत करने: लखपति दीदी बनाने पर एक राष्ट्रीय हितधारक परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया।

मुख्य बिंदु:
- यह मिशन, प्रधानमंत्री की परिकल्पना के अनुसार लखपति दीदियों के लिए प्रयास कर रहा है तथा सेवा क्षेत्र के उद्यमों की संभावनाओं की खोज और एकीकरण करते हुए लखपति पहल को मजबूत बनाने की दिशा में प्रयास कर रहा है।
- इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया कि सेवा क्षेत्र आज सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 50%, नौकरियों में 31% का योगदान देता है और इसलिए इस पर खुले दिमाग से चर्चा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि SHG समुदाय की व्यापक भागीदारी के लिए उनके आर्थिक उत्थान और उन्हें लखपति दीदी बनने में सक्षम बनाने के लिए किस तरह की उप-योजना शुरू की जा सकती है।
- प्रधानमंत्री द्वारा 15 अगस्त 2023 को लखपति दीदीयों को बनाने की घोषणा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और इसके राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन इसे साकार करने के लिए प्रेरित करते हैं।
- प्रधानमंत्री के लखपति दीदीयों के महत्वाकांक्षी सपने को साकार करने के लिए अभिसरण महत्वपूर्ण है और मंत्रालय अपने साझेदारों के साथ मिलकर स्वयं सहायता समूह दीदियों को लखपति दीदीयों के रूप में आर्थिक रूप से परिवर्तित करने में मदद करने के लिए हर संभव अवसर का लाभ उठाएगा।
- कार्यशाला का आयोजन वर्तमान परिदृश्य को समझने के उद्देश्य से किया गया था - सेवा क्षेत्र में महिला स्वयं सहायता समूहों के सामने आने वाले अवसर, क्षमता और चुनौतियाँ, महिला स्वयं सहायता समूहों को सेवा उद्यमों में एकीकृत करने के सर्वोत्तम तरीकों और सफल मॉडलों की पहचान करना और विभिन्न हितधारकों के सहयोग से अर्थव्यवस्था के सेवा क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के सफल एकीकरण के लिए आगे की राह और रणनीति विकसित करना।
- प्रतिभागियों में ग्यारह मंत्रालयों, दस राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों और अन्य हितधारकों, सेक्टर कौशल परिषद, राष्ट्रीय संसाधन संगठनों और तकनीकी सहायता एजेंसियों के प्रतिनिधि शामिल थे।
- कार्यशाला में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी के साथ विभिन्न विचारों और विचारों पर खुली चर्चा हुई।

GEOGRAPHY

5. यूरोपीय संघ में रेयर अर्थ मिनरल्स के दीर्घकालिक समाधान के रूप में पुनर्चक्रण को अपनाया जाएगा - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- लिथियम
- यूरोपीय संघ

समाचार:
- यूरोपीय संघ की कम्पनियां, ब्लॉक के हरित परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण रेयर अर्थ मिनरल्स की आपूर्ति के लिए पुनर्चक्रण की विशाल क्षमता का लाभ उठाने के लिए कमर कस रही हैं, लेकिन पुराने इलेक्ट्रिक वाहनों और पवन टर्बाइनों की पर्याप्त आपूर्ति होने में समय लगेगा।

मुख्य बिंदु
- यूरोपीय संघ को महत्वपूर्ण खनिजों के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने और चीन पर निर्भरता कम करने के लिए बनाए गए नए कानून में दुर्लभ पृथ्वी के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को पूरा करने में संघर्ष करना पड़ेगा।
- पिछले महीने लागू हुए महत्वपूर्ण कच्चे माल अधिनियम के तहत, ब्लॉक ने लक्ष्य रखा है कि वर्ष 2030 तक पुनर्चक्रण से दुर्लभ मृदा सहित महत्वपूर्ण खनिजों की यूरोपीय संघ की 25% मांग पूरी हो जाएगी।
- आज, यूरोपीय संघ में उपभोग किये जाने वाले रेयर अर्थ मिनरल्स का 1% से भी कम पुनर्चक्रित किया जाता है।
- रॉयटर्स के विश्लेषण के अनुसार 25% का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाएगा, लेकिन दीर्घावधि में, संभावना प्रबल है कि ब्लॉक इलेक्ट्रिक वाहनों और पवन टर्बाइनों के लिए आवश्यक रेयर अर्थ मिनरल्स का एक बड़ा हिस्सा बचाकर और उनका पुनः प्रसंस्करण करके प्राप्त कर लेगा।

सामान्य अध्ययन II

INTERNATIONAL RELATION

6. नीदरलैंड भारत का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश बनकर उभरा - द हिंदू

समाचार:

- वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2023-24 के दौरान अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात के बाद नीदरलैंड भारत का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बनकर उभरा है, भले ही देश के माल के शिपमेंट में 3% से अधिक की गिरावट आई है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- वाणिज्य मंत्रालय
- भारत-EFTA संबंध

मुख्य बिंदु:

- नीदरलैंड में जिन प्रमुख वस्तुओं के निर्यात में अच्छी वृद्धि दर्ज की गई उनमें पेट्रोलियम उत्पाद (14.29 बिलियन डॉलर), विद्युत सामान, रसायन और फार्मास्यूटिकल्स शामिल हैं।
- नीदरलैंड के साथ भारत का व्यापार अधिशेष पिछले वित्त वर्ष में बढ़कर 17.4 बिलियन डॉलर हो गया, जो वर्ष 2022-23 में 13 बिलियन डॉलर था।
  - नीदरलैंड ने ब्रिटेन, हांगकांग, बांग्लादेश और जर्मनी के निर्यात गंतव्यों पर कब्जा कर लिया है।
  - वर्ष 2022-23 में नीदरलैंड को भारत का निर्यात लगभग 3.5% बढ़ा।
- नीदरलैंड कुशल बंदरगाहों और सड़कों, रेलमार्गों और जलमार्गों के माध्यम से यूरोपीय संघ के साथ संपर्क के कारण यूरोप के लिए एक केंद्र के रूप में उभरा है।
- नीदरलैंड यूरोप का प्रवेश द्वार है क्योंकि इसके बंदरगाह बहुत कुशल हैं।
- भारत और नीदरलैंड ने वर्ष 1947 में राजनयिक संबंध स्थापित किये।
  - तब से दोनों देशों के बीच मजबूत राजनीतिक, आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध विकसित हुए हैं।
  - वर्ष 2023-24 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार मामूली रूप से घटकर 27.34 बिलियन डॉलर रह जाएगा, जबकि वर्ष 2022-23 में यह 27.58 बिलियन डॉलर था।
- यह भारत में एक प्रमुख निवेशक भी है।
  - पिछले वित्त वर्ष के दौरान भारत को नीदरलैंड से लगभग 5 बिलियन डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त हुआ। वर्ष 2022-23 में यह 2.6 बिलियन डॉलर था।
  - भारत में 200 से अधिक डच कम्पनियां मौजूद हैं।
  - इसी प्रकार, नीदरलैंड में 200 से अधिक भारतीय कंपनियां कार्यरत हैं, जिनमें सभी प्रमुख आईटी कम्पनियां, फार्मास्यूटिकल्स और स्टील कम्पनियां शामिल हैं।

7. ऑस्ट्रेलिया अपनी सेना में फाइव आईज देशों के निवासियों को भर्ती करने की अनुमति देगा - बीबीसी

समाचार:

- ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा और न्यूजीलैंड भी फाइव आईज नामक गठबंधन के तहत खुफिया जानकारी साझा करने में मिलकर काम करते हैं।
- इन देशों से लोगों की भर्ती पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, कोई भी पात्र स्थायी निवासी आवेदन कर सकता है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- फाइव आईज
- भारत-ऑस्ट्रेलिया

मुख्य बिंदु

- ऑस्ट्रेलिया अपनी सेना (ADF) को फाइव आईज देशों (अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, न्यूजीलैंड) के स्थायी निवासियों के लिए खोल रहा है।
- इसका उद्देश्य सैनिकों की कमी को दूर करना तथा संभावित खतरों, विशेषकर उन खतरों के विरुद्ध मजबूत रक्षा तैयार करना है जो व्यापार मार्गों को बाधित कर सकते हैं।
- ऑस्ट्रेलिया व्यापार के लिए शिपिंग और हवाई यात्रा पर बहुत ज़्यादा निर्भर है, और अपने आर्थिक हितों और कार्रवाई की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक बड़ी सेना चाहता है। ADF में वर्तमान में 4,400 से कम कर्मचारी हैं और अगले दशक में इसमें उल्लेखनीय वृद्धि करने का लक्ष्य है।

- फाइव आईज खुफिया जानकारी साझा करने वाले सहयोगी हैं। ये एक-दूसरे को सुरक्षित रखने के लिए फोन कॉल और ईमेल जैसी जानकारी साझा करते हैं। अपने इतिहास और समान सरकारों के कारण ये एक-दूसरे पर बहुत भरोसा करते हैं। इस साझा जानकारी को गुप्त रखने के लिए उनके पास सख्त नियम हैं।

8. मानवाधिकार ने इजराइल पर लेबनान में भवनों पर वाइट फॉस्फोरस छिड़कने का आरोप लगाया - द वीक

प्रीलिम्स टेकअवे
- वाइट फास्फोरस
- रेड फास्फोरस

समाचार:
- एक वैश्विक मानवाधिकार समूह ने इजरायल पर संघर्ष प्रभावित दक्षिणी लेबनान के कम से कम पांच कस्बों और गांवों में आवासीय भवनों पर वाइट फास्फोरस आग लगाने वाले गोले का उपयोग करने का आरोप लगाया, जिससे संभवतः नागरिकों को नुकसान पहुंचा और अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन हुआ।

वाइट फास्फोरस
- वाइट फास्फोरस एक ठोस वाक्सि पदार्थ है जो पीला या रंगहीन दिखता है।
- इसकी गंध लहसुन जैसी होती है।
- वाइट फॉस्फोरस ऑक्सीजन के संपर्क में आते ही तुरंत जल उठता है।
- सैन्य बल इसका उपयोग युद्ध के मैदानों को रोशन करने, धुएं के परदे बनाने और आग लगाने वाले पदार्थ के रूप में करते हैं।
- एक बार आग लग जाने पर इसे बुझाना कठिन होता है, तथा यह त्वचा और कपड़ों जैसी सतहों पर चिपक जाता है।
- वाइट फास्फोरस सभी प्रकार के संपर्क में आने पर मनुष्यों के लिए हानिकारक है।
- इसके धुएं में फॉस्फोरिक एसिड और फॉस्फीन होता है, जो आंखों और श्वसन तंत्र को नुकसान पहुंचा सकता है।
- वाइट फास्फोरस के संपर्क से गहरी और गंभीर जलन हो सकती है, यहां तक कि हड्डी में भी जलन हो सकती है।
- इस आग लगाने वाले पदार्थ पर प्रतिबंध नहीं है, लेकिन घनी आबादी वाले क्षेत्रों में इसके प्रयोग की व्यापक रूप से निंदा की गई है।

अंतर्राष्ट्रीय कानून और वाइट फास्फोरस:
- यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय कानून वाइट फास्फोरस जैसे आग लगाने वाले हथियारों पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाता है, फिर भी घनी आबादी वाले क्षेत्रों में इसके प्रयोग की व्यापक रूप से निंदा की गई है।
- जब वाइट फास्फोरस का उपयोग आग लगाने वाले हथियार के रूप में किया जाता है (रासायनिक युद्ध के लिए नहीं), तो इसे कुछ पारंपरिक हथियारों पर कन्वेंशन के प्रोटोकॉल III द्वारा विनियमित किया जाता है।
- इस अभिसमय का उल्लंघन तभी माना जाएगा जब इसका उपयोग जानबूझकर शहरों या आवासीय क्षेत्रों जैसे नागरिक क्षेत्रों में मनुष्यों के विरुद्ध आग लगाने वाले हथियार के रूप में किया जाए।
- वर्ष 1980 में कुछ पारंपरिक हथियारों के उपयोग पर निषेध या प्रतिबंध संबंधी कन्वेंशन की स्थापना की गई थी।
- इस कन्वेंशन का उद्देश्य अनावश्यक पीड़ा या अंधाधुंध नुकसान पहुंचाने वाले हथियारों पर प्रतिबंध लगाना या उन्हें सीमित करना है।

9. आसियान FTA: सरकार ने मांग बढ़ाने के लिए उद्योग जगत से सुझाव मांगे - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- आसियान
- ROO

समाचार:
- आसियान-भारत FTA समीक्षा पर अगले दौर की वार्ता से पहले वाणिज्य विभाग ने विभिन्न उद्योग और निर्यात संवर्धन निकायों से इनपुट मांगे हैं।

मुख्य बिंदु:
- वाणिज्य मंत्रालय के अधिकारी उद्योग और निर्यात निकाय के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर रहे हैं ताकि अधिक बाजार पहुंच के लिए किन वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाए, इस पर उनके विचार प्राप्त किए जा सकें।
- अन्य इनपुट, जिनमें गैर-टैरिफ बाधाओं से संबंधित इनपुट भी शामिल हैं, मांगे जा रहे हैं
- भारत -आसियान FTA , जिसे औपचारिक रूप से आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता (AITGA) के रूप में जाना जाता है, के परिणामस्वरूप आसियान देशों को असंगत लाभ हुआ है, जिसे भारत समीक्षा के माध्यम से ठीक करना चाहता है।
  - दस सदस्यीय आसियान में इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, ब्रुनेई, वियतनाम, लाओस, म्यांमार और कंबोडिया शामिल हैं।

- वर्ष 2023-24 में, इस समूह के साथ भारत का व्यापार घाटा वर्ष 2010 में समझौते के कार्यान्वयन के दौरान 7.5 बिलियन डॉलर से बढ़कर 38.46 बिलियन डॉलर हो गया।
- नई दिल्ली अपने माल के लिए अधिक बाजार पहुंच, उत्पाद विशिष्ट नियमों के माध्यम से उत्पादों के लिए उत्पत्ति के नियमों (ROO) को निर्धारित करने में अधिक फ्लेक्सिबिलिटी और गैर-टैरिफ बाधाओं के निवारण की मांग कर रही है, ताकि ब्लॉक के साथ अपने बढ़ते व्यापार घाटे को कम किया जा सके।

AITGAकी समीक्षा

- भारत लंबे समय से AITGA की समीक्षा की मांग कर रहा था, क्योंकि व्यापार समझौते के लागू होने के बाद से ब्लॉक के साथ उसका व्यापार घाटा काफी बढ़ गया है।
- पिछली बैठकों में भारत ने आरओओ निर्धारण में उत्पाद विशिष्ट नियमों (PSR) की मांग की थी, ताकि उच्च मूल्य वाली वस्तुओं के लिए आवश्यकताओं में ढील दी जा सके, जहां मूल्य संवर्धन कम है।
- आरओओ किसी उत्पाद की उत्पत्ति का निर्धारण करने तथा यह स्थापित करने के लिए मानदंड हैं कि क्या यह FTA के तहत शुल्क कटौती के लिए योग्य है।
- कुछ वस्तुओं के लिए नियमों में छुट देने के लिए, जहां निर्धारित ROO को पूरा करना कठिन है, ROO अध्याय में PSR को शामिल किया जा सकता है।
- भारत-आसियान FTA में , ROO में 35 प्रतिशत मूल्य संवर्धन की बात कही गई है, जबकि रत्न और आभूषण जैसे कुछ उद्योगों के लिए, जो मूल्य संवर्धन होता है वह 10 प्रतिशत से भी कम है, क्योंकि कच्चा माल उच्च मूल्य का है।
- AITGA के अंतर्गत, दोनों पक्ष लगभग 75 प्रतिशत वस्तुओं पर शुल्कों को उत्तरोत्तर समाप्त करने तथा लगभग 15 प्रतिशत वस्तुओं पर टैरिफ कम करने पर सहमत हुए।
- हालाँकि, दस आसियान देशों द्वारा की गई प्रतिबद्धताओं में काफी भिन्नता थी।
- जबकि सिंगापुर जैसी खुली अर्थव्यवस्था ने लगभग 100 प्रतिशत उन्मूलन के लिए प्रतिबद्धता जताई, इंडोनेशिया और वियतनाम जैसे देशों ने बहुत कम पेशकश की है।

10. भारतीय प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में भारत ने 'नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी' दोहराई- द हिंदू

समाचार:

- प्रधानमंत्री पद के लिए मनोनीत नरेन्द्र मोदी ने दो पूर्ण कार्यकाल के बाद गठबंधन सरकार के प्रमुख के रूप में रविवार को लगातार तीसरी बार शपथ ली है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- भारत-मालदीव संबंध
- सागर

मुख्य बिंदु:

- भारत ने घोषणा की है कि मालदीव सहित उसके पड़ोसी और हिंद महासागर क्षेत्र के सात देशों के नेता शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया
  - श्रीलंका, सेशेल्स, बांग्लादेश, मॉरीशस, नेपाल और भूटान ने भी समारोह में भाग लिया
- यह कार्यक्रम मालदीव के चीन समर्थक राष्ट्रपति की पदभार ग्रहण करने के बाद पहली भारत आधिकारिक यात्रा होगी।
  - इससे पहले उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय प्रधानमंत्री के साथ काम करने की इच्छा व्यक्त की थी।
  - लेकिन पिछले वर्ष जब उन्होंने अपने देश से 88 भारतीय सैन्यकर्मियों को हटाने की मांग की तो इससे द्विपक्षीय संबंधों में तनाव पैदा हो गया।
- विदेश मंत्रालय ने कहा, "प्रधानमंत्री के लगातार तीसरे कार्यकाल के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लेने के लिए नेताओं की यात्रा भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति और 'सागर' दृष्टिकोण को दी गई प्राथमिकता के अनुरूप है।"
- भारत SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) के व्यापक नीति ढांचे के तहत हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ सहयोग कर रहा है।
  - वर्ष 2014 में क्षेत्रीय समूह सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) देशों के नेताओं ने इसमें भाग लिया।
  - वर्ष 2019 में बिम्सटेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल) देशों के नेताओं ने भाग लिया
- भारतीय रेलवे के 10 लोको पायलट जिन्हें 2024 के समारोह में भी आमंत्रित किया गया है।

11. मिस्र, ईरान, यूएई, सऊदी अरब और इथियोपिया ब्रिक्स में शामिल हुए - द हिंदू

समाचार:

- भारत ने सोमवार को मिस्र, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और इथियोपिया के ब्रिक्स में शामिल होने का स्वागत किया, क्योंकि इनके प्रतिनिधियों ने पहली बार रूस द्वारा आयोजित समूह की महत्वपूर्ण बैठक में भाग लिया।

प्रीलिम्स टेकअवे

- ब्रिक्स
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद

मुख्य बिंदु:

- ब्रिक्स परिवार के विस्तार के लिए एक महत्वपूर्ण बैठक है ।
- विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, ''भारत नए सदस्यों का तहे दिल से स्वागत करता है।''
- यह बैठक वर्ष 2023 में ब्रिक्स विस्तार के बाद पहली मंत्रिस्तरीय बैठक थी, जब मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के साथ पूर्ण ब्रिक्स सदस्य बन गए थे।
- मंत्रियों ने अपनी प्रतिबद्धता दोहराई
  - बहुपक्षवाद और अंतर्राष्ट्रीय कानून को कायम रखना।
  - उन्होंने संयुक्त राष्ट्र, जिसमें सुरक्षा परिषद भी शामिल है, में व्यापक सुधार के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया, ताकि इसे और अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधित्वपूर्ण, प्रभावी और कुशल बनाया जा सके।

12. स्विट्जरलैंड में आयोजित यूक्रेन शांति शिखर सम्मेलन में 90 देश भाग लेंगे- द इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- लगभग 90 देशों और संगठनों ने, जिनमें से आधे यूरोप से हैं, स्विट्जरलैंड द्वारा आयोजित यूक्रेन शांति शिखर सम्मेलन में भाग लेने की पुष्टि की है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- रूस-यूक्रेन संघर्ष
- भारत-रूस संबंध

मुख्य बिंदु:

- इसका उद्देश्य रूसी सेना द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करने और युद्ध के जारी रहने के लगभग 28 महीने बाद संभावित शांति की दिशा में एक मार्ग तैयार करना होगा।
- यह स्विट्जरलैंड द्वारा प्रदान की गई मानवीय सहायता के आधार और वार्ता आरंभ करने के बारे में है।
  - जिनमें से लगभग आधे का प्रतिनिधित्व राज्य प्रमुखों या सरकारों द्वारा किया जाएगा
  - लेकिन "कुछ मुट्ठी भर" लोग संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों से हैं।
- तुर्की, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील जैसे प्रमुख विकासशील देशों ने इस बात का संकेत नहीं दिया है कि वे इसमें भाग लेंगे या नहीं। उन्होंने कहा कि भारत इसमें भाग लेगा, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि वह किस स्तर पर भाग लेगा।
- ब्राजील और चीन ने कहा कि वे तब तक भाग नहीं लेंगे जब तक रूस सहित दोनों पक्ष बातचीत की मेज पर न हों।
- स्विटजरलैंड ने स्वीकार किया है कि रूस के बिना शांति प्रक्रिया संभव नहीं है।
- सम्मेलन के संबंध में स्विटजरलैंड लगातार मास्को के अधिकारियों के संपर्क में है।
- यूक्रेन ने शिखर सम्मेलन के समन्वय में मदद की है और वह सम्मेलन में भाग लेगा।
- स्विस अधिकारियों को इस बात पर विचार करना पड़ा कि यदि रूस का प्रतिनिधित्व होता तो यूक्रेन शायद इसमें शामिल नहीं होता।

13. अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन (ILC) के 112वें सत्र में भारतीय त्रिपक्षीय प्रतिनिधिमंडल- PIB

समाचार:

- श्रमिकों, नियोक्ताओं और सरकार के प्रतिनिधियों का भारतीय त्रिपक्षीय प्रतिनिधिमंडल ILO के अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन (ILC) के चल रहे 112वें सत्र में भाग ले रहा है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- ILO
- ई-श्रम पोर्टल

मुख्य बिंदु:

- भारत ने इस अवसर का उपयोग भारत सरकार के श्रम सुधारों, सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों और अन्य नई पहलों को उजागर करने के लिए किया।
- वैश्विक कौशल अंतर मानचित्रण, श्रमिकों का अंतर्राष्ट्रीय प्रवास, कार्य का भविष्य आदि जैसे फोकस क्षेत्रों पर द्विपक्षीय बैठकें आयोजित की गईं।

- भारत भविष्य में कार्य के क्षेत्र में उभरती प्रौद्योगिकियों और डिजिटलीकरण को ध्यान में रखते हुए ।LO के साथ अपने कार्य को मजबूत करना जारी रखेगा।
- देखभाल क्षेत्र के महत्व को स्वीकार करते हुए, जो कि अत्यधिक श्रम-प्रधान प्रकृति का है, भारत ने इस पर प्रकाश डाला
  - महिलाओं की दैनिक देखभाल के बोझ को कम करने के लिए 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY)' के तहत स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन तक पहुंच के रूप में देखभाल क्षेत्र में सरकार द्वारा की गई पहल,
  - मातृत्व लाभ, वृद्धावस्था देखभाल सहित स्वास्थ्य देखभाल, देखभाल कार्य में कौशल कार्यक्रम और पहल, सामाजिक सुरक्षा लाभ आदि।
- अपने नागरिकों का सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने तथा उन्हें आवश्यक सुरक्षा प्रदान करने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता:
  - निःशुल्क आवास, खाद्य सुरक्षा, सब्सिडी वाली रसोई गैस, 'जन धन योजना' के माध्यम से नकद हस्तांतरण, कृषि फसल बीमा योजना आदि जैसे विविध प्रकार के सामाजिक सुरक्षा उपायों पर भी प्रकाश डाला गया।
- श्रम और रोजगार मंत्रालय ने अनौपचारिक श्रमिकों की सभी जरूरतों के लिए वन-स्टॉप समाधान के रूप में 'ई-श्रम पोर्टल' की सफलता को प्रदर्शित किया।
- यह पोर्टल 'राष्ट्रीय कैरियर सेवा (NCS)' पोर्टल से जुड़ा हुआ है, जो देश में श्रमिकों को नौकरी उपलब्ध कराता है।

14. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने गाजा पर युद्ध समाप्त करने का प्रस्ताव पारित किया- द हिंदू

समाचार:

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने गाजा में इजरायल और हमास के बीच आठ महीने से चल रहे युद्ध को समाप्त करने के उद्देश्य से युद्ध विराम योजना का समर्थन करते हुए अपना पहला प्रस्ताव पारित कर दिया।

प्रीलिम्स टेकअवे

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद
- इजराइल- फिलिस्तीन

मुख्य बिंदु:

- सुरक्षा परिषद के 15 सदस्यों में से 14 ने इसके पक्ष में मतदान किया और रूस ने मतदान में भाग नहीं लिया।
- इस योजना के साथ आगे बढ़ने के लिए इजरायल और हमास सहमत हैं या नहीं, यह अभी भी सवालों के घेरे में है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के सबसे शक्तिशाली निकाय में प्रस्ताव को मिले मजबूत समर्थन ने दोनों पक्षों पर प्रस्ताव को मंजूरी देने के लिए अतिरिक्त दबाव डाला है।
- हमास ने कहा कि वह प्रस्ताव को स्वीकार किए जाने का स्वागत करता है और इसे लागू करने के लिए इजरायल के साथ अप्रत्यक्ष वार्ता में मध्यस्थों के साथ काम करने के लिए तैयार है।
- यह युद्ध दक्षिणी इजरायल में 7 अक्टूबर को हमास द्वारा किए गए आश्चर्यजनक हमले से शुरू हुआ था।
- यह प्रस्ताव मिस्र, कतर और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा चल रहे कूटनीतिक प्रयासों के महत्व को रेखांकित करता है, जिसका उद्देश्य तीन चरणों वाले व्यापक युद्धविराम समझौते पर पहुंचना है और कहता है कि तीनों देश यह सुनिश्चित करने के लिए काम करने के लिए तैयार हैं कि सभी समझौते होने तक वार्ता जारी रहे।
- यह प्रस्ताव सुरक्षा परिषद की दो-राज्य समाधान के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए अटूट प्रतिबद्धता को दोहराता है, जहां दो लोकतांत्रिक राज्य, इजरायल और फिलिस्तीन, सुरक्षित और मान्यता प्राप्त सीमाओं के भीतर शांति से एक साथ रहते हैं।
- यह फिलिस्तीनी प्राधिकरण के तहत गाजा पट्टी को पश्चिमी तट के साथ एकीकृत करने के महत्व पर भी जोर देता है।

15. पुर्तगाली नागरिकता रखने वाले गोवावासियों को OCI कार्ड की मांग में राहत - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- पुर्तगाली नागरिकता रखने वाले और ओवरसीज सिटिजनशिप इंडिया (OCI) कार्ड चाहने वाले गोवा के लोगों को बड़ी राहत देते हुए केंद्र सरकार ने पासपोर्ट निरस्तीकरण आदेश पर विचार करने का फैसला किया है।
  - 'आत्मसमर्पण प्रमाणपत्र' के बदले में एक वैकल्पिक दस्तावेज़ के रूप में, "बशर्ते संबंधित व्यक्ति यह प्रमाणित करे कि उन्होंने पुर्तगाली पासपोर्ट धोखाधड़ी से प्राप्त नहीं किया है"।

प्रीलिम्स टेकअवे

- OCI
- NRI

मुख्य बिंदु

- इस निर्णय से गोवा के उन असंख्य लोगों को राहत मिलने की संभावना है, जिन्हें पहले अपने भारतीय पासपोर्ट के निरस्त होने के कारण अपने OCI कार्ड से वंचित होना पड़ा था।
- "गोवा, दमन और दीव के रहने वाले भारतीय नागरिकों, जिन्होंने पुर्तगाली राष्ट्रीयता कानून के अनुसार पुर्तगाली राष्ट्रीयता हासिल की है, को भारतीय वीजा/निकास अनुमति या OCI कार्ड प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं पर गृह मंत्रालय द्वारा विचार किया गया है।
- मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने केंद्र सरकार से अपील की थी कि वे गोवा के उन लोगों को माफ़ी प्रदान करें जो अपनी भारतीय नागरिकता बनाए रखने के लिए अपने पुर्तगाली पहचान पत्र त्यागना चाहते हैं।
- सावंत ने इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि 40,000 से अधिक गोवावासियों ने लिस्बन में अपने जन्म का पंजीकरण कराया है, इस मुद्दे के महत्व पर बल दिया।
- इन लोगों का एकमात्र उद्देश्य अपने बच्चों को पुर्तगाली पासपोर्ट दिलाने और इसके साथ मिलने वाले लाभों को सुरक्षित करना था

16. श्रीलंका के बागान मजदूरों की दुर्दशा एक चिंता का विषय: न्यायाधिकरण - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- मलैयाहा तमिल
- मानचित्र आधारित प्रश्न

समाचार:

- क्षेत्र के पूर्व न्यायाधीशों के एक अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने श्रमिकों और ट्रेड यूनियनों की गवाही सुनने के बाद कहा कि ये श्रीलंका के चाय और रबर बागान श्रमिकों के जीवन की "कठोर वास्तविकताओं से भयभीत" हैं।

मलैयाहा तमिल समुदाय:

- **भूमि पर काम करने के लिए लाया गया:** 200 वर्ष से भी अधिक पहले, भारत से लोगों को श्रीलंका में ऊंचे पहाड़ों पर स्थित चाय बागानों में काम करने के लिए लाया गया था।
- **यूनिक समूह:** मलैयाहा तमिल एक विशिष्ट जातीय समूह है, जो सिंहली, श्रीलंकाई तमिलों और मुसलमानों के बाद श्रीलंका में चौथा सबसे बड़ा समूह है।
- **कठिनाई का सामना करना:** श्रीलंका में अपने लंबे इतिहास के बावजूद, मलैयाहा तमिल सबसे गरीब समुदायों में से एक हैं। उन्हें अक्सर कम वेतन दिया जाता है और उनसे बहुत ज़्यादा काम लिया जाता है।
- **अगोचर योगदान** : यद्यपि उनका कार्य श्रीलंका के चाय उद्योग के लिए आवश्यक है, जो निर्यात से प्रति वर्ष 1.3 बिलियन डॉलर से अधिक कमाता है, फिर भी ये जीवित रहने के लिए पर्याप्त धन ही नहीं कमा पाते हैं।

मलैयाहा तमिलों का संघर्ष:

- **भेदभाव:** अपनी जातीयता के कारण लगातार पक्षपात का सामना करते रहते हैं।
- **भूमि स्वामित्व नहीं:** उन्हें भूमि के स्वामित्व के अधिकार से वंचित किया जाता है, जिससे उनके लिए अपना जीवन सुधारना और गरीबी से बचना और भी कठिन हो जाता है।
- **शोषण:** कई मज़दूर, खास तौर पर महिलाएँ, कम मज़दूरी पर कठोर परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर हैं। उन्हें मौसम या सुरक्षा जोखिमों की परवाह किए बिना चाय की पत्तियों को चुनने के लिए दैनिक कोटा पूरा करना होता है।
- **खराब जीवन स्थितियां** : बागान श्रमिक औपनिवेशिक काल के दौरान निर्मित भीड़भाड़ वाले और अस्वास्थ्यकर आवासों में रहते हैं।

17. भारतीय प्रधानमंत्री G-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- G-7
- ब्रिक्स

समाचार:

- प्रधानमंत्री 50वें G-7 नेताओं के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए इटली रवाना होंगे।
- तीसरी बार प्रधानमंत्री का पदभार संभालने के बाद यह उनकी पहली विदेश यात्रा होगी।

ग्रुप ऑफ सेवन (G-7):

- वर्ष 1975 में स्थापित G-7 प्रमुख औद्योगिक लोकतंत्रों का एक क्लब है जो वैश्विक समस्याओं पर चर्चा करता है और उन्हें हल करने का प्रयास करता है।
- **सदस्य:** G7 में संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, इटली, जर्मनी, कनाडा और जापान शामिल हैं। यूरोपीय संघ भी इसमें भाग लेता है।
- **अनौपचारिक संरचना:** कुछ संगठनों के विपरीत, G7 का कोई स्थायी मुख्यालय या नेता नहीं है।

- इसके बजाय, प्रत्येक वर्ष एक अलग सदस्य देश इसका कार्यभार संभालता है (वर्तमान में इटली)।

उद्देश्य :

- G-7 यूक्रेन में युद्ध और मध्य पूर्व में चल रहे संकट जैसे बड़े मुद्दों से निपटने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसका उद्देश्य एक निष्पक्ष और स्थिर विश्व व्यवस्था को बनाए रखना है।

G-7 के विकल्प:

- **ब्रिक्स:** मूल रूप से ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका द्वारा गठित इस समूह में हाल ही में कई अन्य देशों को शामिल किया गया है।
- यद्यपि ब्रिक्स का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में G-7 की तुलना में हिस्सा छोटा है, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण प्रतिभागी है, विशेष रूप से चीन की आर्थिक शक्ति के साथ।
- **G-20:** अमेरिका और चीन जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं वाले इस बड़े समूह को कुछ लोग G-7 से भी अधिक प्रभावशाली मानते हैं।
- यह वैश्विक व्यापार और आर्थिक गतिविधि के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है।

18. नेपाल ने जन औषधि केंद्र स्थापित करने के लिए भारत से मदद मांगी - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- PMBJP
- भारत-नेपाल संबंध

समाचार:

- नेपाल ने जन औषधि केंद्र स्थापित करने के लिए भारत से संपर्क किया है

मुख्य बिंदु:

- इससे नेपाल के नागरिकों को कम कीमत वाली 'मेड इन इंडिया' जेनेरिक दवाओं का लाभ मिल सकेगा।
- इससे पहले, मॉरीशस 'जन औषधि योजना' को अपनाने वाला पहला देश बन गया, जिससे उसे फार्मास्यूटिकल्स और मेडिकल डिवाइस ब्यूरो ऑफ इंडिया से लगभग 250 उच्च गुणवत्ता वाली दवाइयाँ प्राप्त करने में मदद मिली।

PMBJP

- प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (PMBJP) केंद्र सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसके तहत प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि केंद्र (PMBJK) नामक समर्पित दुकानों के माध्यम से सस्ती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयाँ उपलब्ध कराई जाती हैं।
- वर्तमान में भारत भर में 10,000 से अधिक PMBJK हैं।
- केंद्र का लक्ष्य वर्ष 2023 के अंत तक पूरे भारत में 10,000 नए जन औषधि केंद्र खोलना था
- इस योजना को फार्मास्यूटिकल्स विभाग के तहत एक स्वायत्त सोसायटी, फार्मास्यूटिकल्स एंड मेडिकल डिवाइसेस ब्यूरो ऑफ इंडिया द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।
- इस योजना का उद्देश्य सभी के लिए किफायती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण दवाइयाँ और सर्जिकल आइटम उपलब्ध कराना है और इस तरह उपभोक्ताओं/मरीजों के जेब से होने वाले खर्च को कम करना और आम जनता के बीच जेनेरिक दवाओं को लोकप्रिय बनाना है
- प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि वर्ष 2022-23 में भारतीय फार्मास्यूटिकल्स और मेडिकल डिवाइसेस ब्यूरो ने ₹1,235.95 करोड़ की बिक्री दर्ज की, जिससे नागरिकों को लगभग ₹7,416 करोड़ की बचत हुई।

19. CCRAS-NIIMH, हैदराबाद, पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में तीसरा WHO सहयोगी केंद्र बना -पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- WHO
- NIIMH

समाचार:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय भारतीय आयुर्विज्ञान विरासत संस्थान (NIIMH) को विश्व स्वास्थ्य संगठन सहयोगी केंद्र के रूप में नामित किया है।

मुख्य बिंदु:

- यह प्रतिष्ठित मान्यता चार वर्ष की अवधि के लिए प्रदान की जाती है।
- WHO द्वारा यह पदनाम एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो पारंपरिक चिकित्सा और ऐतिहासिक अनुसंधान के क्षेत्र में अथक प्रयासों को दर्शाता है।
- भारत में, बायोमेडिसिन और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में कार्यरत लगभग 58 विश्व स्वास्थ्य संगठन सहयोगी केंद्र हैं।

- उल्लेखनीय है कि CCRAS-NIIMH, हैदराबाद, पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में तीसरा WHO सहयोगी केंद्र बन गया है।

NIIMH, हैदराबाद

- वर्ष 1956 में स्थापित, NIIMH, हैदराबाद, आयुर्वेद, योग प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा, होम्योपैथी, बायोमेडिसिन और भारत में अन्य संबंधित स्वास्थ्य देखभाल विषयों में औषधीय-ऐतिहासिक अनुसंधान का दस्तावेजीकरण और प्रदर्शन करने के लिए समर्पित एक अद्वितीय संस्थान है।
- संस्थान आयुष की विभिन्न डिजिटल पहलों में अग्रणी रहा है, जिसमें अमर पोर्टल भी शामिल है, जो 16,000 आयुष पांडुलिपियों को सूचीबद्ध करता है। साही पोर्टल जो 793 चिकित्सा-ऐतिहासिक कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है, जबकि आयुष परियोजना की ई-पुस्तकें शास्त्रीय पाठ्यपुस्तकों के डिजिटल संस्करण प्रदान करती हैं।
- नमस्ते पोर्टल 168 अस्पतालों से संचयी रुग्णता आँकड़े एकत्र करता है, और आयुष अनुसंधान पोर्टल 42,818 प्रकाशित आयुष अनुसंधान लेखों को अनुक्रमित करता है।
- NIIMH में 500 से अधिक भौतिक पांडुलिपियाँ हैं, साथ ही मेडिकल हेरिटेज संग्रहालय और पुस्तकालय में 15वीं शताब्दी ईस्वी की दुर्लभ पुस्तकें और पांडुलिपियाँ हैं।
- संस्थान जर्नल ऑफ़ इंडियन मेडिकल हेरिटेज भी प्रकाशित करता है।

20. ताइवान के खिलाफ चीन की 'ग्रे-ज़ोन' युद्ध रणनीति - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- मानचित्र आधारित प्रश्न

समाचार:

- जब से ताइवान के नए राष्ट्रपति ने पदभार संभाला है, सभी की निगाहें उनके कार्यकाल की कठिन शुरुआत पर टिकी हैं।
- श्री लाई के "स्वतंत्रता समर्थक" और "अलगाववादी" बयानों पर चीन की आक्रामक प्रतिक्रिया चौंकाने वाली थी, लेकिन अब उसने श्री लाई की डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (DPP) का जवाब देने के लिए एक परिष्कृत चाल का सहारा लिया है।
- इसे अक्सर 'ग्रे-ज़ोन' युद्ध के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसमें ऐसे तत्व शामिल होते हैं जो ताइवान को निरंतर तरीके से निराश करते हैं।

ग्रे ज़ोन युद्ध

- ग्रे जोन युद्ध का सामान्य अर्थ एक मध्य, अस्पष्ट स्थान है जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रत्यक्ष संघर्ष और शांति के बीच मौजूद होता है।
- इस क्षेत्र में कई गतिविधियाँ आती हैं, जिनमें नापाक आर्थिक गतिविधियाँ, प्रभाव संचालन और साइबर हमले से लेकर भाड़े के अभियान, हत्याएँ और गलत सूचना अभियान शामिल हैं।
- अन्य विशेषज्ञ इसमें आर्थिक कार्रवाइयां भी शामिल करते हैं, जैसे ऋण जाल और आर्थिक प्रतिबंध।
- ग्रे जोन में गतिविधियां हमेशा से ही महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा की विशेषता रही हैं।
- छद्म युद्ध, अस्थिर करने वाले विद्रोह, कानूनी युद्ध (लॉफेयर), तथा विरोधियों और सहयोगियों द्वारा सूचना युद्ध इस संघर्ष की विशेषता रही है।
- विशेषज्ञों का दावा है कि इस तरह के तरीकों का इस्तेमाल अक्सर उन दलों द्वारा किया जाता है जिनके पास पारंपरिक रूप से बड़े पैमाने पर संसाधनों या शक्ति तक पहुंच नहीं होती है।
- इसलिए, ऐसी रणनीतियां तकनीकी रूप से अधिक सुसज्जित प्रतिद्वंद्वी पर बढ़त हासिल करने में मदद कर सकती हैं जो पारंपरिक युद्ध के लिए अधिक अभ्यस्त है।

21. भारत और अमेरिका के NSA ने iCET पर प्रगति की समीक्षा की- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- भारत-अमेरिका संबंध
- क्वाड

समाचार:

- भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) और उनके अमेरिकी समकक्ष, जो दो दिवसीय भारत यात्रा पर हैं, ने महत्वपूर्ण और उभरती हुई प्रौद्योगिकी (iCET) पर पहल की बैठक के दौरान "कॉन्सर्न " वाले देशों को संवेदनशील और दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकियों के "रिसाव" को रोकने का संकल्प लिया।

मुख्य बिंदु:

- वार्ता के बाद जारी संयुक्त तथ्य पत्र के अनुसार, दोनों NSA ने रणनीतिक प्रौद्योगिकी साझेदारी के अगले अध्याय के लिए दृष्टिकोण निर्धारित किया।

- उन्होंने प्राथमिकता वाले महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अभूतपूर्व उपलब्धियों के इर्द-गिर्द हमारे सहयोग को उन्मुख करने की अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया,
- भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) द्वारा उद्योग प्रमुखों के साथ भारत-अमेरिका iCET गोलमेज बैठक आयोजित की जाएगी।
- भू-राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण भारत की यात्रा दो बार पहले ही रद्द हो चुकी है।
- भारत और अमेरिका फिलहाल उन्नत चरण में हैं।
  - 31 मानवरहित हवाई वाहनों की खरीद और
  - जनरल इलेक्ट्रिक जेट इंजन के साथ-साथ पैदल सेना के वाहनों का विनिर्माण,
  - रक्षा औद्योगिक सहयोग के लिए भारत-अमेरिका रोडमैप में शामिल।
- सेमीकंडक्टर, जो दोनों देशों के लिए प्राथमिकता वाला क्षेत्र है,
  - जनरल एटॉमिक्स और भारतीय फर्म 3rdiTech के बीच एक नई रणनीतिक सेमीकंडक्टर साझेदारी के शुभारंभ की घोषणा की गई
  - सेमीकंडक्टर डिजाइन का सह-विकास और सटीक-निर्देशित गोला-बारूद और अन्य राष्ट्रीय सुरक्षा-केंद्रित इलेक्ट्रॉनिक्स प्लेटफ़ॉर्म का निर्माण।
- इसके अलावा दोनों देशों द्वारा नए और उभरते क्षेत्रों में उठाए जाने वाले कदमों की भी रूपरेखा तैयार की गई, जिससे बड़े पैमाने पर चीन पर निर्भरता की समस्या का समाधान हो सकेगा।
- रेयर अर्थ मिनरल्स पर, "खनिज सुरक्षा साझेदारी में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को बढ़ावा देना, जिसमें दक्षिण अमेरिका में लिथियम संसाधन परियोजना और अफ्रीका में दुर्लभ पृथ्वी भंडार में सह-निवेश शामिल है, ताकि महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाई जा सके।
- महत्वाकांक्षी iCET की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा वर्ष 2022 में टोक्यो में क्वाड शिखर सम्मेलन के दौरान की गई थी और इसे वर्ष 2023 में NSA द्वारा लॉन्च किया गया था, जिसमें अंतरिक्ष, सेमीकंडक्टर, उन्नत दूरसंचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और स्वच्छ ऊर्जा सहित प्रमुख प्रौद्योगिकी क्षेत्र शामिल हैं।
- इसके बाद, जैव प्रौद्योगिकी, महत्वपूर्ण खनिज और दुर्लभ मृदा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां, डिजिटल कनेक्टिविटी, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और उन्नत सामग्री सहित नए क्षेत्रों को इसमें शामिल किया गया।

22. बर्गेनस्टॉक 'शांति पर शिखर सम्मेलन में मतदान न करने का भारत का निर्णय सही था -द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- मानचित्र आधारित प्रश्न

समाचार:
- बर्गेनस्टॉक में दो दिवसीय "शांति शिखर सम्मेलन" के मिश्रित परिणाम सामने आए।
- स्विट्जरलैंड 90 से अधिक देशों को एक साथ लाने में सफल रहा, जिनमें से कम से कम 56 देशों के नेताओं ने प्रतिनिधित्व किया
  - और अंतिम संयुक्त विज्ञप्ति पर भारत सहित कुछ को छोड़कर लगभग 82 देशों और संगठनों ने हस्ताक्षर किए।

मुख्य बिंदु
- दस्तावेज़ में "यूक्रेन के विरुद्ध रूसी संघ के चल रहे युद्ध" को समाप्त करने का पुरजोर आह्वान किया गया तथा संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के पालन पर जोर दिया गया।
- इसमें व्यापक समझ के तीन क्षेत्रों का हवाला दिया गया: परमाणु सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और सभी युद्धबंदियों, विस्थापित और हिरासत में लिए गए यूक्रेनियों की अदला-बदली।
- हालाँकि, इन सभी क्षेत्रों में जहां यूक्रेनी राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की ने "ऐतिहासिक जीत" की सराहना की, वहां कमियां भी थीं।
- रूस को आमंत्रित न करने तथा संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों के साथ-साथ यूक्रेन शांति फार्मूले के आधार पर अपनी वार्ता आगे बढ़ाने के स्विट्जरलैंड के निर्णय ने इस आयोजन को एकतरफा बना दिया।
- चीन, जो संभवतः मास्को पर सबसे अधिक प्रभाव रखता है, को प्रतिनिधिमंडल भेजने के लिए राजी करने में विफलता एक और आघात था ।
- ब्रिक्स के किसी भी मौजूदा या भावी सदस्य ने इस वक्तव्य पर हस्ताक्षर नहीं किए, जिससे यह संकेत मिलता है कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच यह एक गैर-शुरुआती प्रयास था।
- रूस के करीबी साझेदार, वैश्विक दक्षिण के एक प्रमुख खिलाड़ी तथा संघर्ष में संतुलन बनाए रखने वाले देश के रूप में भारत की उपस्थिति आयोजकों के लिए एक बड़ी जीत होती।

- यद्यपि भारत सम्मेलन में जारी किए गए अधिकांश पाठ पर चिंता व्यक्त कर सकता है, फिर भी वह अपने खुले रूस विरोधी रुख के साथ आगे नहीं बढ़ सकता था।
- हालाँकि, अपनी उपस्थिति से नई दिल्ली ने दिखा दिया कि वह इस प्रक्रिया का हिस्सा बनने के लिए तैयार है।
  - विशेषकर यदि इससे भविष्य में एक अधिक समावेशी सम्मेलन का मार्ग प्रशस्त होता है, जिसमें रूस और यूक्रेन भी शामिल होंगे।
- परिणामस्वरूप, भारत का सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय, लेकिन इसके परिणाम का समर्थन न करना, संभवतः एक पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष था।

23. SIPRI रिपोर्ट: US और रूस के पास वैश्विक शस्त्रागार का 90% हिस्सा; भारत के पास 172 172 परमाणु हथियार - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- परमाणु हथियार

समाचार:
- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) ने पाया है कि 172 परमाणु हथियारों के साथ, भारत अब दुनिया भर में परमाणु-सशस्त्र देशों की रैंकिंग में पाकिस्तान से आगे है।

SIPRI वर्ष पुस्तिका 2024 के मुख्य निष्कर्ष
- परमाणु शस्त्रागार: रूस और अमेरिका के पास विश्व के अधिकांश परमाणु हथियार हैं, जो कुल परमाणु हथियारों का 90% है।
- चीन के परमाणु शस्त्रागार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो जनवरी वर्ष 2023 में 410 से बढ़कर जनवरी वर्ष 2024 में 500 हो जाएगी।
- जनवरी 2024 तक भारत के पास 172 "संग्रहीत" परमाणु हथियार होंगे, जो पाकिस्तान से थोड़ा अधिक है।
- आधुनिकीकरण: भारत, पाकिस्तान और चीन समेत नौ परमाणु संपन्न देश अपने परमाणु शस्त्रागार का सक्रिय रूप से आधुनिकीकरण कर रहे हैं। इसमें नई परमाणु वितरण प्रणाली विकसित करना भी शामिल है।
- ऑपरेशनल अलर्ट: बैलिस्टिक मिसाइलों पर करीब 2,100 परमाणु हथियार, जिनमें से ज्यादातर अमेरिका और रूस के हैं, हाई ऑपरेशनल अलर्ट की स्थिति में रखे गए हैं। खबर है कि चीन ने भी पहली बार कुछ हथियारों को हाई अलर्ट पर रखा है।
- विश्व के परमाणु-सशस्त्र राज्य: संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, चीन, भारत, पाकिस्तान, डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (उत्तर कोरिया) और इजरायल।

24. भारतीय विदेश मंत्री ने श्रीलंका यात्रा के दौरान ऊर्जा परियोजनाओं की समीक्षा की - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- भारत - श्रीलंका
- कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन

समाचार:
- विदेश मंत्री एस जयशंकर ने हाल ही में कोलंबो की एक दिवसीय यात्रा की और ऊर्जा क्षेत्र की उन प्रमुख पहलों की प्रगति पर चर्चा की, जिन पर भारत और श्रीलंका ने मिलकर काम करने पर सहमति जताई है।

मुख्य बिंदु:
- राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के साथ एक समारोह में भाग लेते हुए, उन्होंने एक समुद्री बचाव समन्वय केंद्र (MRCC) का उद्घाटन किया और भारतीय सहायता से निर्मित नए घरों को सौंपा।
  - यह पहल भारत और श्रीलंका के बीच बढ़ते समुद्री सुरक्षा सहयोग को रेखांकित करती है
- समुद्री सुरक्षा भारत के पड़ोसी देशों के साथ जुड़ाव में एक आवर्ती विषय रहा है और कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन के लिए भी एक घोषित प्राथमिकता है, एक पहल जो भारत, श्रीलंका, मालदीव और मॉरीशस के साथ-साथ बांग्लादेश और सेशेल्स को पर्यवेक्षकों के रूप में एक साथ लाती है।
- LNG आपूर्ति की योजना, दोनों देशों को जोड़ने वाली प्रस्तावित पेट्रोलियम पाइपलाइन, तथा तेल एवं गैस अन्वेषण परियोजनाओं को आगे बढ़ाने पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया।
- इसके अतिरिक्त, यह घोषणा की गई कि सम्पुर सौर ऊर्जा संयंत्र का निर्माण जुलाई 2024 में शुरू होने वाला है।
- समन्वय केंद्र की स्थापना का यह कदम श्रीलंका द्वारा विदेशी अनुसंधान जहाजों पर जारी रोक के साथ मेल खाता है , क्योंकि भारत ने श्रीलंकाई बंदरगाहों पर चीनी अनुसंधान जहाजों के डॉकिंग पर चिंता जताई थी।

25. भारत, बांग्लादेश व्यापक व्यापार समझौते पर वार्ता शुरू करने पर सहमत- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- भारत का पड़ोस
- उत्तर-पूर्व

समाचार:
- भारत और बांग्लादेश ने व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) पर बातचीत शुरू करने पर सहमति व्यक्त की, जिससे दोनों पड़ोसी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापक आर्थिक संबंधों का मार्ग प्रशस्त होगा।

मुख्य बिंदु:
- भारत के प्रधानमंत्री ने कहा कि दोनों पक्ष संपर्क और ऊर्जा सहयोग को बढ़ाएंगे तथा घोषणा की कि दोनों देशों के बीच व्यापार भारतीय मुद्रा में किया जा रहा है।
- अखौरा और अगरतला के बीच छठा भारत-बांग्लादेश सीमा पार रेल संपर्क शुरू किया गया है।
- खुलना-मोंगला बंदरगाह के माध्यम से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए कार्गो सुविधा शुरू की गई है।
- 1,320 मेगावाट के मैत्री थर्मल पावर प्लांट की दोनों इकाइयों ने बिजली उत्पादन शुरू कर दिया है।
- दोनों देशों के बीच भारतीय रुपये में व्यापार शुरू हो गया है।

कनेक्टिविटी पर ध्यान
- दोनों पक्षों ने समुद्री सहयोग और अर्थव्यवस्था, रेल संपर्क, समुद्र विज्ञान, स्वास्थ्य और आपदा प्रबंधन आदि क्षेत्रों में कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।
- देशों के बीच छह मौजूदा सीमा पार रेलवे संपर्कों के अलावा रेलवे संपर्क पर समझौता ज्ञापन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए, दस्तावेज़ "बांग्लादेश के क्षेत्र के माध्यम से भारत के विभिन्न हिस्सों के बीच होने वाले पारगमन" पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह कनेक्टिविटी बांग्लादेश के भीतर आर्थिक बुनियादी ढांचे के एक बहुत बड़े हिस्से को मजबूती प्रदान करती है।
- यह समझा जाता है कि भारत निकट भविष्य में एक रेल सेवा चलाने का प्रयास करेगा जो त्रिपुरा जैसे पूर्वोत्तर राज्यों को बांग्लादेश के भू-भाग के माध्यम से पश्चिम बंगाल से जोड़ेगी।
- पश्चिम बंगाल और असम के बीच रणनीतिक रूप से स्थित रंगपुर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तीस्ता नदी के जल से पोषित होता है, जो दोनों देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही बातचीत का विषय भी रहा है।
- भारतीय प्रधानमत्री श्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की कि भारत से एक तकनीकी टीम तीस्ता के संरक्षण और प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए शीघ्र ही बांग्लादेश का दौरा करेगी।
- भारतीय प्रधानमत्री ने यह भी घोषणा की कि भारत बांग्लादेश से चिकित्सा वीज़ा की बढ़ती मांग से निपटने के लिए ई-मेडिकल वीज़ा जारी करना शुरू करेगा।

26. भारतीय प्रधानमंत्री वार्षिक SCO शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- शंघाई सहयोग संगठन
- ब्रिक्स

समाचार:
- भारत के प्रधानमंत्री अगले महीने कजाकिस्तान में आयोजित होने वाले शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे, तथा उनकी जगह विदेश मंत्री द्वारा कार्यभार संभालने की संभावना है।

मुख्य बिंदु:
- कजाख राष्ट्रपति द्वारा आयोजित शिखर सम्मेलन में रूस, चीन, मध्य एशियाई नेता और पाकिस्तान के शामिल होने की उम्मीद है।
- प्रधानमंत्री के अस्ताना बैठक में शामिल न होने के फैसले का असर 'शरद ऋतु 2024' में होने वाले SCO शासनाध्यक्ष सम्मेलन में भारत की भागीदारी पर भी पड़ सकता है, जिसकी मेजबानी पाकिस्तान करेगा।
- संभावित कारण आगामी संसद सत्र हो सकता है, जो 24 जून से 3 जुलाई तक चलेगा।
- SCO मूल रूप से रूस और चीन द्वारा वर्ष 2001 में प्रवर्तित एक यूरेशियन सुरक्षा और आर्थिक समूह है, जिसमें कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, भारत और पाकिस्तान पूर्ण सदस्य हैं। ईरान और बेलारूस को इस वर्ष इसमें शामिल किया जाएगा।
- अन्य अंतर्राष्ट्रीय नेताओं की उपस्थिति के बावजूद SCO में प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति से इस समूह के प्रति भारत की प्रतिबद्धता पर प्रश्न उठने की संभावना है, जिसमें भारत महज सात वर्ष पहले एक पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल हुआ था।

- वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर सैन्य गतिरोध और वर्ष 2020 की गंभीर गलवान झड़पों और संबंधों में आई दरार के बाद से भारतीय प्रधानमंत्री ने चीनी राष्ट्रपति से कहीं भी द्विपक्षीय बैठक नहीं की है।

मास्को टाइस

- वर्ष 2022 के बाद से, यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने भी मास्को के साथ संवाद को और अधिक कठिन बना दिया है।
- हालाँकि भारतीय प्रधानमंत्री ने वर्ष 2022 में उज्बेकिस्तान में SCO शिखर सम्मेलन में रूसी राष्ट्रपति से मुलाकात की
  - यह बातचीत संघर्ष और भारतीय प्रधानमंत्री के इस बयान पर केंद्रित रही कि "यह युग युद्ध का नहीं है।"
- रूसी राष्ट्रपति के विदेश नीति सहयोगी और वरिष्ठ राजनयिक ने बताया कि रूसी राष्ट्रपति सम्मेलन में श्री मोदी से मुलाकात के लिए उत्सुक हैं।
  - जो कि "भारत में हाल ही में समाप्त हुए चुनावों के मद्देनजर" विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
- यदि भारतीय प्रधानमंत्री जुलाई में SCO शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेते हैं, तो इसे इटली में G-7 शिखर सम्मेलन में उनकी उपस्थिति के विपरीत देखा जाता।
  - भारत इसका सदस्य नहीं है, लेकिन उसे नौ अन्य देशों के साथ 'आउटरीच' में आमंत्रित किया गया था।
- सभी की निगाहें इस बात पर टिकी रहेंगी कि क्या भारतीय प्रधानमंत्री इस वर्ष राष्ट्रपति पुतिन द्वारा आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।
  - भारत जिस समूह का संस्थापक सदस्य है, वह इस वर्ष पांच नए सदस्यों, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, ईरान, मिस्र और इथियोपिया का स्वागत करेगा।

27. IWT के तहत भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल बिजली परियोजनाओं का निरीक्षण करेंगे - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- IWT
- सिंधु और चिनाब

समाचार:

- भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल तटस्थ विशेषज्ञों के साथ जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के लिए रवाना हुए और सिंधु जल संधि (IWT) के तहत दो विद्युत परियोजनाओं का निरीक्षण शुरू किया।

मुख्य बिंदु:

- चिनाब घाटी क्षेत्र में विभिन्न निर्माणाधीन बिजली परियोजनाओं के निरीक्षण के लिए 40 लोगों का एक दल जम्मू पहुंचा।
- वर्ष 1960 की संधि के विवाद निपटान तंत्र के तहत पांच वर्षों से अधिक समय में यह किसी पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल की जम्मू-कश्मीर की पहली यात्रा है।
- भारत और पाकिस्तान ने नौ वर्षों की वार्ता के बाद सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसमें विश्व बैंक भी शामिल है, जो कई सीमा पार नदियों के जल के उपयोग पर दोनों पक्षों के बीच सहयोग और सूचना के आदान-प्रदान के लिए एक तंत्र स्थापित करता है।
- तीन सदस्यीय पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल ने IWT के प्रावधानों के तहत पाकल दुल और लोअर कलनई जलविद्युत परियोजनाओं का निरीक्षण किया।
- प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रीय जलविद्युत निगम (NHPC) मुख्यालय का दौरा किया, तत्पश्चात बांध निरीक्षण के लिए द्राबशल्ला स्थित 85 मेगावाट की रतले जलविद्युत परियोजना स्थल के लिए रवाना हुआ।
- ये चेनाब की सहायक नदी मरुसुदर पर 1,000 मेगावाट की पाकल दुल पनबिजली परियोजना और किश्तवाड़ में अन्य बिजली परियोजनाओं का भी दौरा करेंगे।

28. भारत ने FATF मूल्यांकन में 'उत्कृष्ट परिणाम' हासिल किया - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- FATF

समाचार:

- वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF) द्वारा वर्ष 2023-24 के दौरान किए गए पारस्परिक मूल्यांकन में भारत ने उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किए हैं।

मुख्य बिंदु:

- सिंगापुर में आयोजित FATF प्लेनरी में अपनाई गई भारत की पारस्परिक मूल्यांकन रिपोर्ट में भारत को "नियमित अनुवर्ती" श्रेणी में रखा गया है, यह अंतर केवल चार अन्य G-20 देशों द्वारा साझा किया गया है।
- यह मनी लॉन्ड्रिंग (ML) और आतंकवादी वित्तपोषण (TF) से निपटने के लिए देश के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

- FATF ने एक बयान में कहा कि प्लेनरी ने निष्कर्ष निकाला है कि भारत अपनी आवश्यकताओं के साथ तकनीकी अनुपालन के उच्च स्तर पर पहुंच गया है।
- देश की एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग (AML), आतंकवाद के वित्तपोषण का मुकाबला (CFT), और काउंटर-प्रोलिफरेशन फाइनेंसिंग (CPF) व्यवस्था अच्छे परिणाम प्राप्त कर रही है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, बुनियादी और लाभकारी स्वामित्व जानकारी तक पहुंच, वित्तीय खुफिया जानकारी का उपयोग और अपराधियों को उनकी संपत्ति से वंचित करना शामिल है।
- हालांकि, FATF ने पाया कि कुछ गैर-वित्तीय क्षेत्रों में निवारक उपायों के पर्यवेक्षण और कार्यान्वयन को मजबूत करने के लिए सुधार की आवश्यकता थी।
- अन्य बातों के अलावा, FATF ने भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी और संगठित अपराध से होने वाली आय की लूट सहित ML/TF से उत्पन्न होने वाले जोखिमों को कम करने के मुद्दे पर भारत द्वारा किए गए प्रयासों को मान्यता दी है, और ML/TF जोखिमों को कम करने के लिए नकदी आधारित अर्थव्यवस्था से डिजिटल अर्थव्यवस्था में संक्रमण के लिए भारत द्वारा लागू किए गए प्रभावी उपायों को भी मान्यता दी है।

29. भारतीय विदेश मंत्री SCO शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- शंघाई सहयोग संगठन

समाचार:
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस वर्ष शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेंगे।

मुख्य बिंदु:
- विदेश मंत्री एस जयशंकर कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे
- शिखर सम्मेलन 3-4 जुलाई को अस्ताना में होगा। कजाकिस्तान ने SCO की अध्यक्षता भारत से ली है, जो पिछले साल इसका अध्यक्ष था।
  - भारत जुलाई 2023 में SCO शिखर सम्मेलन की वर्चुअल मेजबानी करेगा।
- पिछले साल वर्चुअल शिखर सम्मेलन के दौरान जयशंकर ने तत्कालीन पाकिस्तान विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो की मौजूदगी में आतंकवाद पर चिंता व्यक्त की थी।
- प्रधानमंत्री के रूप में अपने पिछले 10 वर्षों के दौरान, मोदी ने पांच SCO शिखर सम्मेलनों में भाग लिया है जो कोविड-19 महामारी से पहले आयोजित किए गए थे।
- भारत, चीन, रूस, पाकिस्तान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उजबेकिस्तान से मिलकर बना SCO एक प्रभावशाली आर्थिक और सुरक्षा समूह माना जाता है।
- कजाकिस्तान द्वारा आयोजित शिखर सम्मेलन में पुतिन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के भाग लेने की उम्मीद है।

30. रूस ने काला सागर पर अमेरिकी ड्रोन के खिलाफ 'जवाबी' की चेतावनी दी - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- NTO
- काला सागर

समाचार:
- रूस के रक्षा मंत्री ने अधिकारियों को काला सागर के ऊपर अमेरिकी ड्रोन उड़ानों का "जवाब" तैयार करने का आदेश दिया
- इसमें स्पष्ट चेतावनी दी गई थी कि मास्को अमेरिकी टोही विमानों को रोकने के लिए बलपूर्वक कार्रवाई कर सकता है।

मुख्य बिंदु
- रूसी रक्षा मंत्रालय ने हाल ही में काला सागर के ऊपर अमेरिकी ड्रोन की "बढ़ी हुई तीव्रता" पर ध्यान दिया
  - मंत्रालय ने एक बयान में कहा, "यह यूक्रेन में संघर्ष में कीव शासन के पक्ष में अमेरिका और अन्य नाटो देशों की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।"
- वाशिंगटन और मॉस्को के बीच काला सागर में अमेरिकी ड्रोन को लेकर पहले भी टकराव हो चुका है।
- वर्ष 2023 की एक घटना में, एक रूसी लड़ाकू जेट ने वहां एक अमेरिकी ड्रोन को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिससे वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया।
- इस तरह के टकराव की पुनरावृत्ति से तनाव और बढ़ सकता है।

SCIENCE & TECH

31. स्वास्थ्य मंत्रालय ने भारत में TB उन्मूलन के लिए प्रोटोकॉल में बदलाव किया- द हिंदू

समाचार:

- भारत का लक्ष्य क्षय रोग (TB) से होने वाली रुग्णता और मृत्यु दर में तेजी से कमी लाना है, साथ ही वर्ष 2025 तक देश से TB को समाप्त करने की दिशा में काम करना है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- ICMR
- TB

मुख्य बिंदु:

- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) TB मुक्त पहल को फिर से शुरू करने के लिए प्रोटोकॉल, विशेष रूप से TB की दवा और इसकी अवधि को फिर से तैयार करने पर विचार कर रही है, ताकि संक्रमण के कारण होने वाली मौतों, बीमारी और गरीबी को खत्म किया जा सके।
- स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, भारत 50 वर्षों से अधिक समय से TB नियंत्रण गतिविधियों में लगा हुआ है, फिर भी यह रोग देश का सबसे गंभीर स्वास्थ्य संकट बना हुआ है।
- TB से हर साल अनुमानतः 4,80,000 भारतीय या प्रतिदिन 1,400 से अधिक मरीज मरते हैं।
- इसके अतिरिक्त, देश में प्रतिवर्ष दस लाख से अधिक TB के मामले 'लापता' हो जाते हैं।
- इनमें से अधिकांश का या तो निदान नहीं हो पाता या निजी क्षेत्र में उनका निदान और उपचार अपर्याप्त रूप से हो पाता है।
- कई नई प्रौद्योगिकियां हैं जो प्रारंभिक पहचान में मदद करती हैं और हम TB से निपटने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हैं।
- अब हमारे पास TB के निदान, उपचार और देखभाल के लिए उन्नत और प्रभावी हस्तक्षेप और प्रौद्योगिकियां हैं।
- हालांकि, मंत्रालय का मानना है कि भारत में TB के मामलों में भारी कमी लाने के लिए और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

32. स्वास्थ्य और रक्षा मंत्रालय सशस्त्र बलों के लिए समर्पित टेली मानस सेल स्थापित करेंगे- पीआईबी

समाचार:

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW) और रक्षा मंत्रालय (MoD) के बीच MoHFW की राष्ट्रीय टेलीमेंटल हेल्थ हेल्पलाइन टेली मानस के एक विशेष सेल के संचालन के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।

प्रीलिम्स टेकअवे

- मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 2017
- टेली मानस

मुख्य बिंदु:

- भारतीय सेना द्वारा सामना किए जाने वाले अद्वितीय तनावों को पहचानते हुए, सशस्त्र बलों में टेली-मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यकता स्पष्ट हो गई है।
- परिचालन वातावरण, सांस्कृतिक चुनौतियाँ और क्षेत्रीय संघर्षों से संबंधित कारक सशस्त्र बलों में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक विशेष दृष्टिकोण की आवश्यकता है।
- समर्पित टेली मानस सेल के साथ, सशस्त्र बलों के कर्मियों और उनके परिवारों को 24x7 महत्वपूर्ण मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्राप्त होगी, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को संबोधित करेगी
- टेली मानस जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (DMHP) का डिजिटल विस्तार है, जो व्यापक, एकीकृत और समावेशी 24/7 टेली-मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है।
- वर्तमान में, सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 51 परिचालन टेली मानस सेल काम कर रहे हैं, जो 20 विभिन्न भाषाओं में सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- आंकड़े मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की महत्वपूर्ण मांग को इंगित करते हैं तथा मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों को व्यापक और समावेशी रूप से संबोधित करने के महत्व को रेखांकित करते हैं, विशेष रूप से सशस्त्र बलों जैसे विशिष्ट संदर्भों में।

33. केंद्र ने राज्यों से मानवीय अंगों का अवैध व्यापार करने वाले एजेंटों पर कार्रवाई का आह्वान किया- द हिंदू

समाचार:

- केंद्र सरकार ने मानव अंगों के अवैध व्यापार में लिप्त वेबसाइटों और सोशल मीडिया समूहों के बारे में सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को अलर्ट भेजा है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- THOTA
- NOTTO

मुख्य बिंदु:

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने किडनी और अन्य अंगों के बदले भारी रकम देने वाली कुछ वेबसाइटों/सोशल मीडिया समूहों का विशेष उल्लेख किया है।
- स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय ने एक संदेश में कहा कि उसे पता चला है कि कुछ वेबसाइट और सोशल मीडिया पोस्ट मानव अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम (THOTA) 1994 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए अंग व्यापार को बढ़ावा दे रहे हैं और इसकी पेशकश कर रहे हैं।
- केंद्र ने कहा कि ऐसी गतिविधियां अधिनियम की धारा 18 के तहत दंडनीय अपराध हैं, जिसके लिए 20 लाख रुपये से लेकर एक करोड़ रुपये तक का जुर्माना और 5 साल से लेकर 10 साल तक की कैद हो सकती है।
- इस तरह की अवैध गतिविधियां राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम के लिए एक बड़ी बाधा थीं ।
- चूंकि स्वास्थ्य और कानून एवं व्यवस्था राज्य के विषय थे, इसलिए राज्यों को वाणिज्यिक गतिविधियों/अंग तस्करी से निपटने के लिए THOTA के तहत उपयुक्त प्राधिकारी नियुक्त करने का अधिकार था।

जागरूकता पैदा करना

- एजेंटों के माध्यम से अंग प्राप्त करने की अवैधताओं के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं।
- स्कूली छात्रों को संवेदनशील बनाने के लिए, CBSE पाठ्यक्रम में अंग प्रत्यारोपण पर एक अलग अध्याय शामिल किया जा रहा है।
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अंतर्गत स्थापित एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन NOTTO, अंग खरीद, वितरण के लिए एक नेटवर्क स्थापित करने और देश में अंग दान और प्रत्यारोपण की निगरानी के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय रजिस्ट्री बनाए रखने के लिए केंद्र सरकार को दिए गए अधिदेश के अनुसरण में स्थापित किया गया था।

34. स्वास्थ्य मंत्रालय नेशनल हेल्थ क्लेम एक्सचेंज डिजिटल प्लेटफॉर्म शुरू करेगा - द हिंदू

समाचार:

- स्वास्थ्य मंत्रालय भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI) के साथ मिलकर ऐसे उपायों पर काम कर रहा है, जिनका उद्देश्य मरीजों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक तेजी से और कम खर्च में पहुंच प्रदान करना है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- NHCX
- IRDAI

मुख्य बिंदु:

- मंत्रालय और IRDAI राष्ट्रीय स्वास्थ्य दावा एक्सचेंज शुरू कर रहे हैं, जो एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जो बीमा कंपनियों, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के सेवा प्रदाताओं और सरकारी बीमा योजना प्रशासकों को एक साथ लाएगा।
- NHCX स्वास्थ्य सेवा और स्वास्थ्य बीमा पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न हितधारकों के बीच दावा-संबंधी सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में काम करेगा।
- बारह बीमा कम्पनियों और एक TPA (थर्ड पार्टी एडमिनिस्ट्रेटर) ने NHCX एकीकरण पूरा कर लिया है।
- कैशलेस दावों के बीमा दावों के लिए समयसीमा तय की गई है। बीमा प्राधिकरण ने कहा है कि सभी कैशलेस दावों को अस्पताल से डिस्चार्ज प्राधिकरण प्राप्त होने के तीन घंटे के भीतर संसाधित किया जाना चाहिए।
- देश में डिजिटल स्वास्थ्य लेनदेन को अपनाने और रोगी स्वास्थ्य रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण ने जनवरी 2023 से डिजिटल स्वास्थ्य प्रोत्साहन योजना (DHIS) के तहत वित्तीय प्रोत्साहन की घोषणा की थी।
- DHIS के तहत यह प्रावधान है कि NHCX के माध्यम से प्रत्येक बीमा दावे के लेनदेन के लिए अस्पतालों को प्रति दावे 500 रुपये या दावा राशि का 10%, जो भी कम हो, का वित्तीय प्रोत्साहन दिया जाएगा।

NHCX को क्यों लाया जा रहा है?

- स्वास्थ्य बीमा, स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने के साथ-साथ व्यक्तियों पर पड़ने वाले उच्च व्यय को कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण नीतिगत रणनीति है।
- भारत में कुल सामान्य बीमा प्रीमियम आय में स्वास्थ्य बीमा का योगदान लगभग 29% है।
- आज स्वास्थ्य बीमा में मुख्य बाधा अस्पतालों और बीमा कंपनियों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने में है।
- पॉलिसीधारकों के बीच विश्वास का निर्माण कुशल सेवाएं प्रदान करने पर निर्भर करता है।
- जबकि डेटा उल्लंघन जैसी चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटा जा रहा है, NHCX सभी के लिए एक सतत लाभ के रूप में खड़ा है, जो स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सुचारू संचालन की सुविधा प्रदान करता है।

35. एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस (H5N1): क्या मनुष्यों के लिए ख़तरा है?- द हिन्दू

प्रीलिम्स टेकअवे

- बर्ड फलू

मुख्य बिंदु:

- अत्यधिक रोगजनक एवियन इन्फ्लूएंजा (HPAI) H5N1 वायरस अमेरिका के कई राज्यों में मवेशियों को प्रभावित कर रहा है, और पहली बार डेयरी फार्म श्रमिकों में मानव संक्रमण के तीन मामले भी सामने आए हैं।
- केरल के अलपुझा, कोट्टायम और पथानामथिट्टा जिलों में, जहां जल निकाय, प्रवासी पक्षी, मुर्गे और एकीकृत फार्म पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं, अप्रैल से अब तक 19 स्थानों पर H5N1 प्रकोप की सूचना मिली है।
- हालाँकि, अलप्पुझा में बड़ी संख्या में कौओं की मौत और उसके बाद उनके शवों में H5N1 वायरस की पुष्टि होने से यह चिंता उत्पन्न हो गई है कि यह वायरस दूर-दूर तक फैल सकता है।

H5N1 कितना खतरनाक है?

- वर्ष 1996 में सामने आने के बाद से H5N1 के कारण अरबों जंगली पक्षियों और मुर्गियों की सामूहिक मृत्यु हो चुकी है।
- इस विषाणु का लगभग 26 स्तनधारी प्रजातियों, विशेषकर मवेशियों तक फैलना तथा अब यह प्रमाण सामने आना कि यह मनुष्यों को भी संक्रमित कर सकता है, ने इस खतरे की आशंका को बढ़ा दिया है कि H5N1 अगली वैश्विक महामारी का कारण बन सकता है।
- विशेष रूप से चिंता की बात यह है कि अब अमेरिका में H5N1 का हेर्ड टू हेर्ड (झुंड से झुंड में) संक्रमण हो रहा है

मनुष्यों के लिए खतरा

- वैज्ञानिकों के अनुसार, वायरस में ऐसे बदलाव नहीं हैं जो इसे लोगों के बीच संचारित करने के लिए बेहतर रूप से अनुकूल बना सकें और इसलिए, मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम कम रहता है।
  - हालांकि, इन्फ्लूएंजा वायरस के तेजी से विकसित होने की संभावना और H5N1 का व्यापक भौगोलिक प्रसार संकेत देता है कि अधिक मानव संक्रमण की उम्मीद की जानी चाहिए।
- ऐसा प्रतीत होता है कि यह वायरस पक्षियों/पशुओं से मनुष्यों में फैलता है, जो पर्याप्त व्यक्तिगत सुरक्षा के बिना, इनके साथ निकट संपर्क में रहते हैं।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वर्ष 2003 से 1 अप्रैल 2024 के बीच 23 देशों में H5N1 के लगभग 900 मानव संक्रमण के मामले सामने आए, जिनमें से आधे से अधिक घातक थे।
- यद्यपि H5N1 से मानव संक्रमण का जोखिम अभी भी कम माना जाता है, लेकिन यह तेजी से बदल सकता है क्योंकि वायरस अधिक पशुओं, विशेषकर गायों या घरेलू चूहों में फैलता है, जिनका मनुष्यों के साथ निकट संपर्क होता है।

H5N1 के लक्षण

- H5N1 के सामान्य लक्षण इन्फ्लूएंजा-A बीमारियों के समान हैं, जिनमें श्वसन संबंधी कठिनाइयाँ, बुखार, खांसी, गले में खराश और निमोनिया शामिल हैं, जिनमें से सभी संभावित रूप से खराब हो सकते हैं, खासकर उन लोगों में जो प्रतिरक्षाविहीन हैं या जिनकी कोई अंतर्निहित स्थिति है।
  - अमेरिका में, संक्रमित एक कृषि श्रमिक में नेत्रश्लेष्मलाशोथ या गुलाबी आंख ही एकमात्र लक्षण था।

सावधानियाँ

- लोगों को संक्रमित पक्षियों या जानवरों या उनके दूषित वातावरण के संपर्क में आने से बचना चाहिए।
- यदि कोई व्यक्ति संभावित H5N1-संदूषित वातावरण के संपर्क में आया है, तो उसे 10 दिनों तक नेत्रश्लेष्मलाशोथ सहित नए श्वसन रोग के लक्षणों के लिए खुद पर नज़र रखनी चाहिए और उचित चिकित्सा सलाह लेनी चाहिए।
- यह सुनिश्चित करना बेहतर होगा कि लोग केवल पाश्चुरीकृत दूध का ही उपयोग करें तथा पोल्ट्री मांस और अंडे को अच्छी तरह से पकाया जाना चाहिए, ताकि H5N1 के किसी भी संभावित खाद्य-जनित संचरण को रोका जा सके।

- जिन लोगों के घर में पशु और पक्षी हैं, उन्हें मास्क पहनने की सलाह दी जा रही है, और जहाँ भी H5N1 पॉजिटिव मामले पाए जाते हैं, वहाँ लोगों को एंटीवायरल टैमीफ्लू प्रोफिलैक्सिस के रूप में दी जा रही है।

सुझावात्मक उपाय

- निर्दिष्ट निगरानी क्षेत्रों में पर्यावरण के नमूनों, पानी, पक्षियों के मल-मूत्र तथा इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी वाले मानव नमूनों का परीक्षण करके निरंतर निगरानी आवश्यक होगी।
- एक स्वास्थ्य अवधारणा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उसे क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

36. जापान में घातक 'मांस खाने वाले बैक्टीरिया' के फैलने से वैश्विक चिंताएं बढ़ीं- बिजनेस स्टैंडर्ड

प्रीलिम्स टेकअवे
- स्ट्रेप्टोकोकल टॉक्सिक शॉक सिंड्रोम

समाचार:

- कोविड-19 महामारी के मद्देनजर, मानवता अब एक नए खतरे का सामना कर रही है, जिसे स्ट्रेप्टोकोकल टॉक्सिक शॉक सिंड्रोम (STSS) के रूप में जाना जाने वाला मांस खाने वाला जीवाणु संक्रमण कहा जाता है।
- यह विषाणुजनित संक्रमण 48 घंटों के भीतर घातक साबित हो सकता है।
- जापान के राष्ट्रीय संक्रामक रोग संस्थान के हालिया डेटा से पता चलता है कि STSS के मामलों में चिंताजनक वृद्धि हुई है, इस साल लगभग 1,000 संक्रमणों की सूचना दी गई है, जो पिछले साल की कुल संख्या से अधिक है।

स्ट्रेप्टोकोकल टॉक्सिक शॉक सिंड्रोम (STSS):

- STSS, ग्रुप A स्ट्रेप्टोकोकस नामक बैक्टीरिया के कारण होता है।
- ये बैक्टीरिया हानिकारक विषाक्त पदार्थ छोड़ते हैं जो आपके शरीर में गहराई तक फैल जाते हैं, जिससे गंभीर प्रतिक्रिया होती है।
- **लक्षण**: STSS बुखार, ठंड लगना, मांसपेशियों में दर्द, मतली और उल्टी जैसे लक्षणों से शुरू होता है।
- 24 से 48 घंटों के भीतर, यह निम्न रक्तचाप, अंग विफलता, तेज़ हृदय गति और तेज़ श्वास तक बढ़ सकता है।
- **जोखिम कारक और गंभीरता** : ग्रुप A स्ट्रेप्टोकोकस आमतौर पर बच्चों में गले में खराश का कारण बनता है, लेकिन वयस्कों में गंभीर लक्षण पैदा कर सकता है, जिसमें अंगों में दर्द, सूजन और निम्न रक्तचाप शामिल हैं।
- यह तेजी से बढ़कर ऊतक मृत्यु, सांस लेने में कठिनाई और अंग विफलता का कारण बन सकता है, विशेष रूप से 50 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों में।
- **रोकथाम** : STSS को रोकने के लिए अच्छी स्वच्छता का पालन करना शामिल है, जैसे कि नियमित रूप से हाथ धोना और खांसते या छींकते समय मुंह को ढकना। घाव कीउचित देखभाल और संक्रमण के लिए तुरंत चिकित्सा ध्यान देने से उन जटिलताओं को रोका जा सकता है जो STSS का कारण बन सकती हैं।
- **निदान** : ग्रुप A स्ट्रेप बैक्टीरिया का पता लगाने और अंग कार्य का आकलन करने के लिए रक्त परीक्षण।
- STSS की पुष्टि तब होती है जब किसी व्यक्ति में ग्रुप A स्ट्रेप संक्रमण के साथ-साथ निम्न रक्तचाप और दो या अधिक अंगों के विफल होने के लक्षण पाए जाते हैं।
- **उपचार:** बैक्टीरिया को खत्म करने के लिए नसों में मजबूत एंटीबायोटिक्स का प्रशासन करना मरीजों को रक्तचाप को स्थिर करने और अंग के कार्य का समर्थन करने के लिए तरल पदार्थ भी दिए जाते हैं।

37. भारत को सिकल सेल रोग के उपचार में सफलता की उम्मीद - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- CRISPR-Cas9
- सिकल सेल रोग

समाचार:

- भारत सिकल सेल रोग के लिए जीन थेरेपी विकसित करने के करीब पहुंच रहा है

मुख्य बिंदु:

- सिकल सेल रोग एक आनुवंशिक रक्त विकार है, जो अनुसूचित जनजातियों में उच्च व्यापकता दर के साथ पाया जाता है
- शोधकर्ता CRISPR-Cas9 का उपयोग करके जीन थेरेपी विकसित करने पर काम कर रहे थे
- यह अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन द्वारा दिसंबर 2023 में सिकल सेल रोग के इलाज के लिए कोशिका-आधारित जीन थेरेपी के लिए CRISPR-Cas9 तकनीक को मंजूरी दिए जाने के कुछ महीने बाद आया है।
- मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा कि भारत के लिए मुख्य चुनौतियों में से एक इस चिकित्सा को लागत प्रभावी बनाने का तरीका ढूंढना है।

- CRISPR का उपयोग करके जीन थेरेपी विकसित करना, वर्ष 2047 तक सिकल सेल रोग को खत्म करने के भारत के मिशन का हिस्सा रहा है ।
- इस मिशन का एक हिस्सा 17 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कमज़ोर आदिवासी आबादी के बीच सात करोड़ से ज़्यादा स्क्रीनिंग करना भी है, जिसमें से अब तक तीन करोड़ स्क्रीनिंग पूरी हो चुकी हैं

CRISPR-Cas9

- CRISPR-Cas9 सिस्टम में एक एंजाइम होता है जो आणविक कैंची की तरह व्यवहार करता है, जिसे एक सटीक स्थान पर डीएनए के टुकड़े को काटने के लिए निर्देशित किया जा सकता है।
- इसके बाद गाइड आरएनए को चीरे के स्थान पर परिवर्तित आनुवंशिक कोड डालने की अनुमति मिल जाएगी।
- हालांकि ऐसे परिवर्तन करने के कुछ तरीके हैं, लेकिन CRISPR प्रणाली को सबसे तेज़ और सबसे बहुमुखी माना जाता है।

38. भारत और US ने iCET के तहत महत्वपूर्ण खनिजों पर सहयोग बढ़ाने हेतु रणनीति तैयार की- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- भारत-अमेरिका
- iCET

समाचार:

- भारत और अमेरिका महत्वपूर्ण खनिजों पर सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय समझौते को "शीघ्रतापूर्वक" संपन्न करना चाहते हैं
- अमेरिकी वाणिज्य विभाग, भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा खान मंत्रालय ग्रेफाइट, गैलियम और जर्मेनियम की आपूर्ति श्रृंखलाओं में भागीदारी को आगे बढ़ाएंगे।

मुख्य बिंदु:

- इसका एक उद्देश्य होगा बढ़ावा देना
  - "खनिज सुरक्षा साझेदारी में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका, जिसमें दक्षिण अमेरिका में लिथियम संसाधन परियोजना में सह-निवेश करना शामिल है।
  - अफ्रीका में रेयर अर्थ मिनरल्स की खोज, महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं में जिम्मेदारीपूर्वक और स्थायी रूप से विविधता लाने के लिए है ,
- भारत ने देश के लिए महत्वपूर्ण 30 खनिजों की सूची जारी की है और देश के भीतर अन्वेषण का विस्तार करने के अलावा विदेशों में खदानों का अधिग्रहण करने पर विचार कर रहा है।
- इसे सक्षम करने के लिए, खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 को MMDR संशोधन अधिनियम, 2023 के माध्यम से संशोधित किया गया।
- भारत ने तीन केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों के योगदान से एक संयुक्त उद्यम कंपनी खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL) का गठन किया है -
  - नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड,
  - हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड और
  - मिनरल एक्सप्लोरेशन एंड कंसल्टेंसी लिमिटेड
- इसका उद्देश्य भारतीय घरेलू बाजार में महत्वपूर्ण खनिजों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए विदेशों में महत्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों का अधिग्रहण करना है।
- KABIL वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना और चिली में लिथियम और कोबाल्ट जैसी महत्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों के अधिग्रहण के अवसरों की खोज कर रहा है।

39. कोयला खनन से गंभीर श्वसन और त्वचा रोग होने का खतरा - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- कोयला खनन के प्रभाव

समाचार:

- नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया द्वारा प्रकाशित एक सर्वेक्षण में कहा गया है कि कोयला खनन प्रदूषकों के लंबे समय तक संपर्क में रहने से व्यापक श्वसन और त्वचा संबंधी रोग हुए हैं।

मुख्य बिंदु:

- साक्षात्कार में शामिल कम से कम 65% प्रतिभागियों ने क्रोनिक ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, तथा त्वचा संबंधी बीमारियों जैसे एक्जिमा, डर्मेटाइटिस और फंगल संक्रमण की शिकायत बताई।
- खदानों के निकट रहने वाले लोग अपेक्षाकृत अधिक असुरक्षित थे।

- धनबाद और रामगढ़, जहां ऐसे क्षेत्रों में अधिक लोग रहते हैं, वहां फेफड़े और श्वास संबंधी बीमारियों के साथ-साथ त्वचा संक्रमण के मामले भी अधिक हैं।
- दुनिया के कोयले से दूर जाने से कोयला-निर्भर क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नौकरियां खत्म होने और आर्थिक मंदी आने की आशंका है।
- इसका सीधा असर न केवल कोयला खनिकों और श्रमिकों पर पड़ेगा, बल्कि व्यापक स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा।
- अध्ययन का व्यापक जोर 'न्यायसंगत परिवर्तन' की जांच करने पर था, अर्थात यह कि किस प्रकार कोयला खनन पर सीधे निर्भर लोगों को इन नौकरियों से प्रभावी और संवेदनशील तरीके से दूर किया जा सकता है।

भारत और नवीकरणीय ऊर्जा

- जबकि भारत ने वर्ष 2030 तक लगभग 500 गीगावाट बिजली या अपनी अनुमानित स्थापित क्षमता का लगभग आधा हिस्सा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त करने की प्रतिबद्धता जताई है, फिर भी यह उम्मीद है कि आने वाले दशकों में भारत में बिजली उत्पादन का मुख्य आधार कोयला ही रहेगा।
- भारत की स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता का लगभग आधा हिस्सा, या लगभग 205 गीगावाट, कोयला-चालित ताप विद्युत संयंत्र हैं।
- हालांकि, बदलाव की हवा चल रही है क्योंकि इस साल पहली बार, भारत द्वारा इस वर्ष की पहली तिमाही (जनवरी-मार्च) में जोड़े गए रिकॉर्ड 13.6 (गीगावाट) बिजली उत्पादन क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा का योगदान 71.5% रहा।
- जबकि कुल विद्युत क्षमता में कोयले की हिस्सेदारी (लिग्नाइट सहित) वर्ष 1960 के दशक के बाद पहली बार 50% से नीचे आ गयी।

40. गर्भवती महिलाओं में गर्भावधि मधुमेह की जांच HbA1c से की जानी चाहिए- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- HbA1c
- गर्भावधि मधुमेह

समाचार:

- भारत, लंदन और अफ्रीका के शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया है कि ओरल ग्लूकोस टॉलरेंस टेस्ट्स (OGTT) के स्थान पर HbA1c परीक्षण किया जाना चाहिए।

मुख्य बिंदु:

- उन्होंने सिफारिश की है कि इसे गर्भावस्था के आरंभिक चरण में, पहली तिमाही के दौरान ही दिया जाना चाहिए।
- द लैंसेट डायबिटीज एंड एंडोक्रिनोलॉजी में प्रकाशित एक शोधपत्र में, लेखकों ने तर्क दिया कि HbA1c गर्भावधि मधुमेह के लिए एक सरल स्क्रीनिंग परीक्षण प्रदान करता है, जिससे सबसे अधिक जोखिम वाले लोगों को प्रारंभिक हस्तक्षेप प्राप्त करने की अनुमति मिलती है और OGTT की आवश्यकता बहुत कम हो जाती है।
- यह प्रस्ताव भारत के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनुमान है कि गर्भावधि मधुमेह के 90% से अधिक मामले निम्न-आय और मध्यम-आय वाले देशों में होते हैं।
- वर्तमान में, दिशा-निर्देश अनुशंसा करते हैं कि माताएँ उपवास के समय OGTT लें, जो कि 75 ग्राम का एक केंद्रित मौखिक घोल है, और फिर 24 से 28-सप्ताह के चरण में अनुवर्ती कार्रवाई करने के लिए दो से तीन घंटे प्रतीक्षा करें।
- इससे अनेक चुनौतियां उत्पन्न होती हैं, विशेषकर दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों और पहुंच से दूर क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की जांच करने में।
- अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि भारत में, 4.9 का HbA1c परिणाम मधुमेह को खारिज करता है, जबकि 5.4 या उससे अधिक स्कोर वाली महिलाओं को गर्भावधि मधुमेह के लिए 'अस्वीकार' किया जा सकता है।
- यदि जोखिम स्कोर उन्हें सबसे कम जोखिम वाले समूह में वर्गीकृत करता है, तो उन्हें OGTT नहीं करवाना पड़ेगा, केवल इन दो मूल्यों के बीच के मध्यवर्ती समूह में रहने वालों को अधिक जटिल परीक्षण करवाना होगा।
- HbA1c परीक्षण के लाभ: यह गर्भावस्था के आरंभ में ही उच्च जोखिम वाले समूह की पहचान करने की क्षमता प्रदान करता है, तथा आहार और व्यायाम में हस्तक्षेप करने का अवसर प्रदान करता है।
    - ऐसे आंकड़े मौजूद हैं कि शीघ्र हस्तक्षेप से गर्भावधि मधुमेह के विकास को रोकने में मदद मिलती है।

POLITY & GOVERNANCE

41. सांसदों द्वारा MPLADS योजना निधि के उपयोग पर CIC टिप्पणी नहीं कर सकता: दिल्ली हाईकोर्ट - द हिंदू

समाचार:

- दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि मुख्य सूचना आयुक्त को सांसदों द्वारा MPLADS योजना निधि के उपयोग पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- MPLADS
- CIC

मुख्य अंश:

- न्यायालय ने MPLADS निधि के उपयोग से संबंधित सूचना मांगने वाले RTI आवेदन पर सुनवाई करते हुए CIC द्वारा की गई कुछ टिप्पणियों को हटा दिया।
- अक्टूबर 2018 के अपने आदेश में, CIC ने पाया था कि कुछ सांसद चुनाव के दौरान लाभ पाने के लिए जानबूझकर अपने कार्यकाल के अंतिम वर्ष के लिए MPLADS फंड जमा कर रहे थे।
- इसने सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय को सुझाव दिया था कि धन के इस दुरुपयोग को रोका जाए तथा पांच वर्ष की अवधि के प्रत्येक वर्ष के लिए धन को समान रूप से वितरित करने के लिए दिशानिर्देश लागू किए जाएं।
  - न्यायालय ने CIC की इन टिप्पणियों को हटा दिया।
- न्यायालय का यह आदेश केन्द्र के सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा CIC के आदेश को चुनौती दिए जाने के बाद आया।
- मंत्रालय ने तर्क दिया कि CIC ने सांसदों द्वारा अपनी MPLADS निधि खर्च करने के संबंध में की गई कार्रवाई पर टिप्पणी करके अपने अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण किया है।
- न्यायालय ने कहा कि RTI अधिनियम की धारा 18 के अनुसार, CIC केवल मांगी जा रही सूचना या सूचना के प्रसार से संबंधित किसी अन्य मुद्दे से ही निपट सकता है।
- हालांकि, अदालत ने RTI अधिनियम के तहत निर्वाचन क्षेत्रवार और कार्यवार निधियों का विवरण प्रकट करने के CIC के निर्देश को बरकरार रखा।

42. NHRC ने 'नाता प्रथा' के संबंध में MWCD तथा विभिन्न राज्यों को नोटिस जारी किया- द हिंदू

समाचार:

- राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) ने 'नाता प्रथा' नामक प्रथा के संबंध में केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय तथा विभिन्न राज्यों को नोटिस जारी किया है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- नाता प्रथा
- पोक्सो अधिनियम

मुख्य बिंदु:

- नाता प्रथा में कुछ समुदायों की कम उम्र की लड़कियों को स्टाम्प पेपर पर बेचना या उनकी शादी कर देना शामिल है।
  - ये बिक्री और विवाह आमतौर पर उनके अपने परिवारों द्वारा आयोजित किए जाते हैं।
- महिलाओं और नाबालिग लड़कियों पर 'नाता प्रथा' के अनैतिक परिणामों को देखते हुए आयोग ने इसके उन्मूलन और उन्मूलन का आह्वान किया है
- राज्यों को इस संबंध में उठाए गए या प्रस्तावित उपायों पर आठ सप्ताह के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया है।
- आयोग की अनुसंधान शाखा ने पाया कि 'नाता प्रथा' वेश्यावृत्ति के आधुनिक रूपों के समान है।
- विभिन्न उपायों के बीच, इसने सुझाव दिया कि कानून बनाने के अलावा, महिलाओं को 'नाता प्रथा' के लिए मजबूर करने वाले व्यक्तियों पर मानव तस्करी से संबंधित कानूनों के तहत मुकदमा चलाया जाना चाहिए ।

- नाबालिग लड़कियों की बिक्री पर पोक्सो अधिनियम के तहत मुकदमा चलाया जाना चाहिए।
- इसने लड़कियों और महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए जागरूकता पैदा करने और शिक्षा और रोजगार प्रदान करने के अलावा 'नाता प्रथा' के मामलों को दर्ज करने के लिए गांव स्तर पर एक समूह स्थापित करने का भी सुझाव दिया।

43. भारतीय गुणवत्ता परिषद ने 20 से अधिक शहरों में विश्व प्रत्यायन दिवस मनाया- पीआईबी

समाचार:

- क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) ने भारत के 20 से अधिक शहरों में विश्व प्रत्यायन दिवस मनाया, जिसका विषय था "प्रत्यायन: कल को सशक्त बनाना और भविष्य को आकार देना",

प्रीलिम्स टेकअवे
- QCI
- MSME

मुख्य बिंदु:

- कई उद्योग जगत के नेताओं, सरकारी अधिकारियों और कंपनी प्रमुखों ने सभी क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता को आकार देने में मान्यता की भूमिका पर चर्चा की गई है ।
- मान्यता निकाय और संपूर्ण गुणवत्ता प्रणाली को मजबूत करना न केवल एक आवश्यकता है, बल्कि उत्कृष्टता की दिशा में एक रणनीतिक कदम है।
- NABL (राष्ट्रीय परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड) और NABCB (राष्ट्रीय प्रमाणन निकाय प्रत्यायन बोर्ड) दोनों ही भारत में प्रत्यायन अवसंरचना का गठन करते हैं और
  - बहुपक्षीय मान्यता व्यवस्था पर हस्ताक्षरकर्ता हैं।
  - NABL के पास 8000 से अधिक मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएं हैं और NABCB के पास 260 से अधिक मान्यता प्राप्त CAB (अनुरूपता मूल्यांकन निकाय) हैं।'
- भारत सरकार और भारतीय उद्योग द्वारा 1997 में स्थापित भारतीय गुणवत्ता परिषद ,
  - भारत में शीर्ष संगठन है जो तीसरे पक्ष की राष्ट्रीय मान्यता प्रणाली की स्थापना और संचालन के लिए जिम्मेदार है,
  - विभिन्न क्षेत्रों में गुणवत्ता में सुधार लाना तथा गुणवत्ता से संबंधित सभी मामलों पर सरकार और अन्य हितधारकों को सलाह देना।

44. केंद्र ने पीएम-किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी की -

समाचार:

- तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पीएम किसान निधि की 17वीं किस्त जारी करने की अपनी पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए। इससे 9.3 करोड़ किसानों को लाभ होगा और लगभग 20,000 करोड़ रुपये वितरित किए जाएंगे।

प्रीलिम्स टेकअवे
- केंद्रीय क्षेत्र योजना

पीएम-किसान योजना का अवलोकन:

- प्रारंभ: 2019
- उद्देश्य: पूरे भारत में सभी भूमिधारक किसान परिवारों को आय सहायता प्रदान करना।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के तहत पात्र किसान परिवारों को प्रति वर्ष 6,000 रुपये का वित्तीय लाभ मिलता है, जो 2,000 रुपये की तीन किस्तों में प्रदान किया जाता है।
- केन्द्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में क्रियान्वित पीएम-किसान को केन्द्र सरकार से 100% वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।
- वित्तीय सहायता सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में हस्तांतरित की जाती है।
- कार्यान्वयनकर्ता: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
- पीएम-किसान मोबाइल ऐप: इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र द्वारा विकसित और डिजाइन किया गया

45. FOGSI ने महिलाओं के लिए व्यापक टीकाकरण कार्यक्रम का अनावरण किया- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- HPV वैक्सीन
- प्रतिरक्षण

समाचार:
- फेडरेशन ऑफ ऑब्सटेट्रिक एंड गायनेकोलॉजिकल सोसाइटीज ऑफ इंडिया (FOGSI) ने हाल ही में महिलाओं के लिए एक व्यापक टीकाकरण कार्यक्रम का अनावरण किया है।

मुख्य बिंदु:
- इस कार्यक्रम में वयस्क महिलाओं को मिलने वाले आवश्यक टीकों की सूची और प्रत्येक टीके की अनुशंसित आवृत्ति दी गई है।
- हाल ही में आई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं 25% अधिक समय खराब स्वास्थ्य में बिताती हैं।
- टीकाकरण इसे बदलने में मदद कर सकता है और महिलाओं को टीके से रोके जा सकने वाली बीमारियों से बचा सकता है, जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।
- 31% महिलाओं को जन्म के बाद HPV संक्रमण का उच्च जोखिम होता है। इस प्रकार, टीकाकरण एक नई माँ के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- 'महिला स्वास्थ्य अंतर को कम करना: जीवन और अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए 1 ट्रिलियन डॉलर का अवसर' नामक रिपोर्ट में बताया गया है कि महिला स्वास्थ्य अंतर को कम करने से 3.9 बिलियन महिलाएं अधिक स्वस्थ और उच्च गुणवत्ता वाला जीवन जी सकेंगी।

वयस्क टीकाकरण
- भारत में वयस्कों के लिए टीकाकरण कवरेज लगभग नगण्य है और इसमें बदलाव की आवश्यकता है।
- वयस्कों के टीकाकरण के बारे में लोगों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को जागरूक करने की तत्काल आवश्यकता है क्योंकि इससे भारत में लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है।
- संशोधित टीकाकरण कार्यक्रम जैसी पहल स्थिति को बदलने और भविष्य में अधिक लोगों की सुरक्षा करने में एक लंबा रास्ता तय कर सकती है।

46. पूर्व आप मंत्री दिल्ली विधानसभा से अयोग्य घोषित - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- दलबदल विरोधी कानून

समाचार:
- दिल्ली विधानसभा ने पूर्व मंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) विधायक को विधानसभा की सदस्यता से अयोग्य घोषित कर दिया।
- दलबदल विरोधी कानून उन पर लागू होता है क्योंकि वे आप विधायक के रूप में इस्तीफा दिए बिना ही बसपा में शामिल हो गए थे।

मुख्य बिंदु
- लोकसभा चुनाव के दौरान आनंद ने आप से बगावत कर दी थी और 10 अप्रैल को मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, लेकिन दिल्ली विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा नहीं दिया था। 5 मई को वह BSP में शामिल हो गए और एक दिन बाद नई दिल्ली लोकसभा सीट से BSP उम्मीदवार के तौर पर नामांकन दाखिल किया।
- संविधान की 10वीं अनुसूची के तहत, "दलबदल विरोधी कानून संसद या राज्य विधानसभाओं में किसी राजनीतिक दल के सदस्यों द्वारा दलबदल की स्थिति से निपटता है।"
- जब किसी राजनीतिक दल का कोई सदस्य पार्टी छोड़कर किसी अन्य दल से हाथ मिला लेता है।
- यदि कोई सदस्य चुनाव के बाद स्वेच्छा से किसी राजनीतिक दल की सदस्यता छोड़ देता है या किसी अन्य राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है, तो उसे अयोग्य ठहराया जा सकता है।

47. भारत के साथ भूमि संपर्क पर व्यवहार्यता अध्ययन अंतिम चरण में: विक्रमसिंघे - द हिन्दू

प्रीलिम्स टेकअवे
- भारत-श्रीलंका
- EEZ

समाचार:
- श्रीलंकाई राष्ट्रपति ने कहा कि भारत के साथ भूमि संपर्क स्थापित करने के प्रस्ताव पर व्यवहार्यता अध्ययन अपने अंतिम चरण में है।

मुख्य बिंदु:
- क्षेत्र में विकास कार्यों का निरीक्षण करने के लिए यात्रा कर रहे श्रीलंका के राष्ट्रपति ने कहा कि व्यवहार्यता अध्ययन का प्रारंभिक कार्य पूरा हो चुका है और अंतिम चरण जल्द ही पूरा हो जाएगा।
- इस प्रस्ताव और दोनों देशों के बीच पावर ग्रिड कनेक्शन की संभावना पर भारत के विदेश मंत्री की श्रीलंका यात्रा के दौरान चर्चा होने की संभावना है।
- मंत्री की यात्रा के दौरान भारत को अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा बेचने के लिए एक वाणिज्यिक उद्यम पर भी चर्चा की जाएगी।
- हालाँकि, मछली पकड़ना दशकों से दोनों देशों के बीच विवाद का विषय रहा है
- श्रीलंका भारतीय मछुआरों द्वारा श्रीलंकाई जलक्षेत्र में अवैध रूप से मछली पकड़ने के विवादास्पद मुद्दे को उठाएगा।
- पाल्क जलडमरूमध्य, तमिलनाडु को श्रीलंका से अलग करने वाली पानी की एक संकरी पट्टी है
- दोनों देशों के मछुआरों को अनजाने में सीमा पार करने के कारण अक्सर गिरफ्तार किया जाता है।

48. पिछले दशक में PoSH अधिनियम के मामलों में वृद्धि -

प्रीलिम्स टेकअवे
- POSH अधिनियम

समाचार:
- भारत में STEM विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित पाठ्यक्रमों में अधिक से अधिक महिलाएँ शामिल हो रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कॉर्पोरेट घरानों, विशेष रूप से IT क्षेत्र में नौकरी मिल रही है।
- इसलिए, समय के साथ अग्रणी कॉर्पोरेट फर्मों में महिलाओं का अनुपात काफी बढ़ गया है।

मुख्य बिंदु
- फिर भी, एट्रिशन रेट किसी संगठन को छोड़ने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत भी, सामान्य तौर पर, पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अधिक है। महिलाएँ कई कारणों से संगठन छोड़ती हैं
  - इसमें विवाह के बाद सामाजिक दबाव, गर्भावस्था और गर्भावस्था के बाद कार्य-जीवन संतुलन शामिल हैं, जो कारण पुरुषों पर शायद ही कभी लागू होते हैं।
- इस सूची में कार्यस्थल पर होने वाला उत्पीड़न - मौखिक, यौन या अन्य - भी इस तरह के पलायन में भूमिका निभा सकता है।
- अगर PoSH अधिनियम के तहत दर्ज मामलों की संख्या पर गौर करें, तो शीर्ष चार आईटी फर्मों के आंकड़ों पर नज़र डालने से पता चलता है कि महामारी के दौरान थोड़े समय के ठहराव के बाद मामले फिर से बढ़ रहे हैं।
- कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 (PoSH अधिनियम) एक दशक से भी पहले कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से महिलाओं की रक्षा के लिए पेश किया गया था।
- यद्यपि समय के साथ संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन आधिकारिक तौर पर ऐसे कुछ ही मामले रिपोर्ट किए जाते हैं।
- महिलाएं, आम तौर पर, खासकर जो विवाहित हैं, ऐसी शिकायतें दर्ज करने से बचती हैं, इसलिए उनके आस-पास के माहौल का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।
- कई फर्मों ने आंतरिक शिकायत समितियों का गठन भी नहीं किया है और जिन जगहों पर समितियां हैं, वहां सदस्य अपर्याप्त हैं या कंपनी के बाहर से प्रतिनिधियों की कमी है।

Skeletons tumbling out of closet

The data for the charts were sourced from companies' annual reports and National Family Health Survey-5 (charts 2 and 3)

Chart 1: Number of PoSH complaints filed in select IT companies and the number of complaints upheld

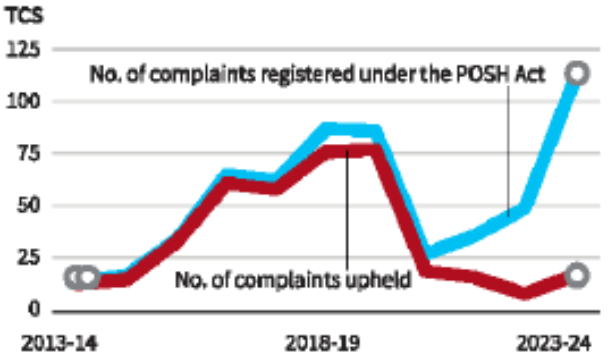

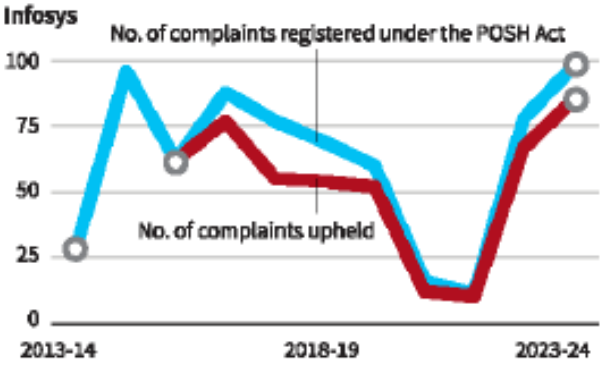

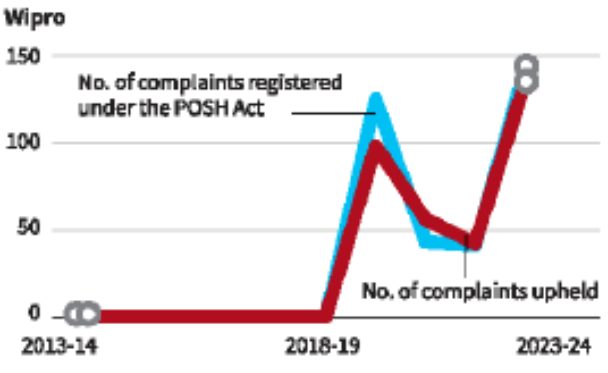

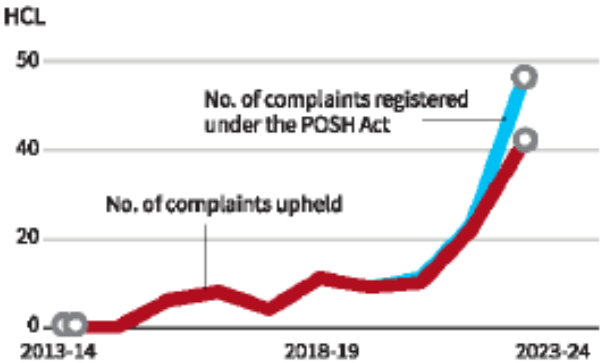

Chart 2: The chart shows the share of men who think a wife should have an equal or greater say than her husband on specific decisions such as ...

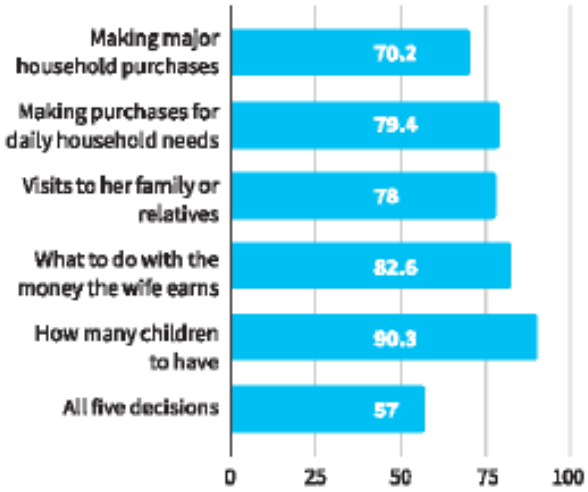

Chart 3: The chart shows the percentage of women who are allowed to go alone to...

Khadija H. Colombowala is interning with The Hindu Data Team

49. वित्त मंत्रालय ने 'पार्सल में ड्रग्स' घोटाले के प्रति जागरूकता का आगाह किया - द हिंदू

समाचार:

- केंद्रीय वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग ने बड़े पैमाने पर चल रहे 'पैकल में नशीली दवाओं' की जबरन वसूली के घोटाले के खिलाफ कदम उठाते हुए लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है।
    - उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सीमा शुल्क अधिकारी कभी भी किसी व्यक्ति से फोन या ईमेल के माध्यम से संपर्क करके उसके निजी खातों में सीमा शुल्क जमा नहीं करते हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे

- केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC)

मुख्य बिंदु

- "समाचार पोर्टलों/सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से विभिन्न घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें धोखेबाज व्यक्तियों द्वारा भारतीय सीमा शुल्क अधिकारी बनकर देश भर में जनता से उनकी गाढ़ी कमाई ठगी करने की घटनाएं सामने आई हैं।
- केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) ने कहा कि ये धोखाधड़ी मुख्य रूप से फोन कॉल या SMS जैसे डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके की जाती है, और तत्काल दंडात्मक कार्रवाई के कथित डर के माध्यम से पैसे ऐंठने पर केंद्रित होती है।
- CBIC ने ऐसे धोखेबाजों की कार्यप्रणाली के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक बहु-मॉडल अभियान शुरू किया है और लोगों से ऐसे मामलों की तुरंत www.cybercrime.gov.in या इसके हेल्पलाइन नंबर 1930 पर रिपोर्ट करने का आग्रह किया है।

50. हिंसा भड़काने वाले भाषणों को गैरकानूनी गतिविधि नहीं माना जाना चाहिए- द हिंदू

समाचार:

- वर्ष 2010 के एक मामले में कथित "गैरकानूनी गतिविधि" के लिए लेखिका-कार्यकर्ता अरुंधति रॉय और शिक्षाविद शेख शौकत हुसैन पर मुकदमा चलाने की मंजूरी देना अनुचित है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- UAPA

मुख्य बिंदु

- दिल्ली के उपराज्यपाल, जिन्होंने अक्टूबर 2023 में बुकर पुरस्कार विजेता लेखक और कश्मीर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर पर मुकदमा चलाने की मंजूरी दी थी,
    - कथित रूप से विभाजनकारी भाषणों और राष्ट्रीय एकता के खिलाफ आरोपों के लिए, अब उन्हीं भाषणों के लिए गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (UAPA) की धारा 13 को लागू करने के लिए अपनी मंजूरी दे दी है।
- इससे पहले का स्वीकृति आदेश दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 196 के तहत दिल्ली सरकार की ओर से उपयुक्त प्राधिकारी के रूप में उनकी क्षमता में था।
- हाल ही में, संभवतः केंद्र सरकार की ओर से, UAPA के अध्याय III के तहत अपराधों के लिए अभियोजन को मंजूरी देने हेतु उपयुक्त प्राधिकारी नियुक्त किया गया है, जिसके अंतर्गत धारा 13 आती है।
- इस पुराने मामले को फिर से जीवित करना दुर्भावनापूर्ण अभियोजन का दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण है।
- वर्ष 2010 में मजिस्ट्रेट अदालत के आदेश पर दर्ज इस मामले को फिर से खोलने के पीछे एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण यह है कि वर्तमान शासन ने असहमति जताने वालों और मुखर आलोचकों पर अपनी निरंतर कार्रवाई के तहत अब ऐसा करना उचित समझा है।

51. भारत को शिक्षा और राजनीति में लैंगिक अंतर को कम करने की जरूरत - द हिंदू

समाचार:

- दुनिया भर में लैंगिक समानता बढ़ रही है और वैश्विक लैंगिक अंतर वर्ष 2024 में 68.5% पर पहुंच जाएगा, लेकिन वर्ष 2023 में 68.4% पर पहुंचने की धीमी गति एक गंभीर आंकड़ा है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- विश्व आर्थिक मंच (WEF)

मुख्य बिंदु

- विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा पिछले सप्ताह जारी वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट में कहा गया है कि इस दर से पूर्ण समानता तक पहुंचने में 134 वर्ष लगेंगे, जो " वर्ष 2030 सतत विकास लक्ष्य (SDG) लक्ष्य से लगभग पांच पीढ़ियों आगे है"।
- आइसलैंड ने अपना प्रथम स्थान (93.5%) बरकरार रखा है, तथा यह एकमात्र ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसने लिंग भेद को 90% से अधिक कम कर दिया है।

- भारत 146 देशों की सूची में दो पायदान नीचे खिसककर 129वें स्थान पर आ गया है। पिछले साल यह 127वें स्थान पर था, जबकि वर्ष 2022 में यह 135वें स्थान से आठ पायदान ऊपर चढ़कर 127वें स्थान पर आ गया है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत ने वर्ष 2024 तक अपने लिंग-अंतर को 64.1% तक कम कर लिया है, जिससे नीति-निर्माताओं के पास बेहतर करने के लिए बहुत बड़ा अवसर उपलब्ध हो गया है।
- रिपोर्ट के अनुसार, यह "मामूली गिरावट" मुख्य रूप से शिक्षा और राजनीतिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में "छोटी गिरावट" के कारण है।
- 140 करोड़ से ज़्यादा की आबादी के साथ, दो कदम पीछे हटना भी चौंका देने वाली संख्या है।

आर्थिक भागीदारी में सुधार

- हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत ने पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक भागीदारी और अवसर में मामूली सुधार दिखाया है, लेकिन वर्ष 2012 के 46% के बराबर पहुंचने के लिए उसे 6.2 प्रतिशत अंक और बढ़ाने की आवश्यकता होगी।
- इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक तरीका श्रम बल भागीदारी दर (45.9%) में लैंगिक अंतर को पाटना होगा।
- ऐसा करने के लिए अनेक उपाय किए जाने चाहिए, जैसे यह सुनिश्चित करना कि लड़कियां उच्च शिक्षा बीच में न छोड़ें, उन्हें रोजगार कौशल प्रदान करना, कार्यस्थल पर सुरक्षा सुनिश्चित करना, तथा घर के कामकाज की जिम्मेदारी बांटकर शादी के बाद भी नौकरी बनाए रखने में उनकी मदद करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में, पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दर के बीच का अंतर 17.2 प्रतिशत अंक है, जिसके कारण भारत इस सूचक पर 124वें स्थान पर है।
- राजनीतिक सशक्तिकरण सूचकांक में भारत का प्रदर्शन बेहतर रहा है, लेकिन संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व अभी भी कम है।
- करीब 800 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं, लेकिन 543 संसद सदस्यों में महिला सांसदों की संख्या 78 (वर्ष 2019) से घटकर 74 हो गई है, जो कुल का 13.6% है।
- ये संख्याएं महिला आरक्षण विधेयक, 2023 के अभी तक लागू होने की पृष्ठभूमि में अच्छे संकेत नहीं हैं, जिसका उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करना है।

52. ड्यूटी पर 'अवैध कृत्यों' के लिए पुलिसकर्मियों पर मुकदमा चलाने के लिए सरकार की मंजूरी आवश्यक: HC- द हिंदू

समाचार:

- केरल उच्च न्यायालय ने माना है कि पुलिस कर्मियों पर उनके आधिकारिक कर्तव्य के तहत किए गए किसी भी कथित अवैध कार्य के लिए मुकदमा चलाने के लिए सीआरपीसी की धारा 197 की आवश्यकता होती है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- धारा 197
- CrPc

मुख्य बिंदु:

- अदालत ने कहा कि यहां तक कि ऐसे मामले में भी जहां किसी व्यक्ति को कर्तव्य के तहत और कानून के अनुसार हिरासत में लिया जाता है, पुलिस को उसके साथ मारपीट करने या उसे अवैध रूप से हिरासत में लेने का कोई अधिकार नहीं है।
- यदि दुर्व्यवहार किया जाता है या अवैध रूप से हिरासत में लिया जाता है, तो दोषी पुलिसकर्मी अभियोजन के लिए उत्तरदायी हैं।
- इसका मतलब यह नहीं है कि यदि ऐसा कार्य आधिकारिक कर्तव्य के हिस्से के रूप में किया जाता है, तो उन पर मुकदमा चलाने के लिए किसी मंजूरी की आवश्यकता नहीं है।
- अदालत ने कहा कि पुलिस द्वारा किए गए प्रत्येक अपराध के लिए मंजूरी की आवश्यकता नहीं होती, बशर्ते कि ऐसा कार्य पूरी तरह से उसके कर्तव्य के दायरे से बाहर हो।
- यदि कथित कृत्य, चाहे वह कितना भी अवैध क्यों न हो, उसके आधिकारिक कर्तव्य के निर्वहन से उचित रूप से जुड़ा हुआ है या उसका उचित संबंध है, तो धारा 197 के तहत अभियोजन के लिए मंजूरी की आवश्यकता होती है।
- न्यायालय ने सत्र न्यायालय के दृष्टिकोण का समर्थन किया कि यह नहीं माना जा सकता है कि पुलिस अधिकारियों का कथित आचरण उनके आधिकारिक कार्य से अलग था, जिससे उन्हें संहिता की धारा 197 के तहत सुरक्षा से वंचित किया जा सके।

53. प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में किसान सम्मान सम्मेलन को संबोधित किया -पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- 'लखपति दीदी' कार्यक्रम

समाचार:
- प्रधानमंत्री ने आज उत्तर प्रदेश के वाराणसी में किसान सम्मान सम्मेलन को संबोधित किया और लगभग 9.26 करोड़ लाभार्थी किसानों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से 20,000 करोड़ रुपये से अधिक की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी की है ।

कृषि सखी अभिसरण कार्यक्रम (KSCP) के बारे में:
- कृषि सखी अभिसरण कार्यक्रम (KSCP) कृषि मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा संचालित एक संयुक्त पहल है।
- इसका उद्देश्य कृषि गतिविधियों और संबंधित व्यवसायों में ग्रामीण महिलाओं के कौशल और योगदान को बढ़ाना है।
- **प्रशिक्षण और प्रमाणन:** KSCP ग्रामीण महिलाओं को कृषि सखियों के रूप में पैरा-एक्सटेंशन वर्कर के रूप में प्रशिक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इन महिलाओं को 56 दिनों के व्यापक प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है, जिसमें मृदा स्वास्थ्य, एकीकृत कृषि प्रणाली, पशुधन प्रबंधन और कृषि संबंधी गतिविधिओं जैसे विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जाता है।
- **'लखपति दीदी' कार्यक्रम का विस्तार:** KSCP सरकार की महत्वाकांक्षी 'लखपति दीदी' पहल का विस्तार है, जिसका उद्देश्य आर्थिक आत्मनिर्भरता के अवसर पैदा करके महिलाओं को सशक्त बनाना है।
- यह कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं को कुशल पैरा-एक्सटेंशन कार्यकर्ताओं का दर्जा दिलाने के लक्ष्य के साथ जुड़ा हुआ है।

54. कैबिनेट ने केंद्रीय क्षेत्र योजना NFIES को मंजूरी दी - पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- फोरेंसिक
- भारतीय न्याय संहिता 2023

समाचार:
- प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आज वर्ष 2024-25 से वर्ष 2028-29 की अवधि के लिए 2254.43 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ केंद्रीय क्षेत्र योजना "राष्ट्रीय फोरेंसिक अवसंरचना संवर्धन योजना" (NFIES) को मंजूरी दी।
- केन्द्रीय क्षेत्र योजना के वित्तीय परिव्यय का प्रावधान गृह मंत्रालय द्वारा अपने बजट से किया जाएगा।

मुख्य बिंदु:
- मंत्रिमंडल ने इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित घटकों को मंजूरी दी है:
  - राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय के परिसरों की स्थापना
  - देश में केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाओं की स्थापना
  - फोरेंसिक के मौजूदा आधारभूत संरचना का संवर्धन।
- भारत सरकार साक्ष्यों की वैज्ञानिक और समय पर फोरेंसिक जांच के आधार पर एक प्रभावी और कुशल आपराधिक न्याय प्रणाली स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- यह योजना एक कुशल आपराधिक न्याय प्रक्रिया के लिए साक्ष्य की समय पर और वैज्ञानिक जांच में उच्च गुणवत्ता वाले, प्रशिक्षित फोरेंसिक पेशेवरों के महत्व को रेखांकित करती है।
- नए आपराधिक कानून के लागू होने से, जिसमें 7 वर्ष या उससे अधिक की सजा वाले अपराधों के लिए फोरेंसिक जांच अनिवार्य कर दी गई है, फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाओं के कार्यभार में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है।
- इसके अलावा, देश में फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाओं (FSL) में प्रशिक्षित फोरेंसिक जनशक्ति की काफी कमी है।
- इस बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए, राष्ट्रीय फोरेंसिक इंफ्रास्ट्रक्चर में महत्वपूर्ण निवेश और वृद्धि अनिवार्य है।

55. कोयला मंत्रालय द्वारा जारी खनन दिशानिर्देश 2024 में प्रमुख सुधार किए गए- पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- मुख्य खनिज
- खान एवं खनिज अधिनियम 1957

समाचार:
- हाल के वर्षों में भारत में कोयला खनन में परिवर्तनकारी परिवर्तन हुए हैं, जिससे उद्योग जगत में महत्वपूर्ण विकास के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई है।
- वाणिज्यिक कोयला खनन की शुरुआत से अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, वित्त वर्ष 23 के दौरान कैप्टिव और वाणिज्यिक खदानों ने सामूहिक रूप से 100 मिलियन टन कोयला उत्पादन को पार कर लिया है और वित्त वर्ष 26 तक 200 मिलियन टन को पार करने की संभावना है।

- इन घटनाक्रमों के जवाब में, कोयला मंत्रालय (MoC) ने खनन योजना की तैयारी के ढांचे को संशोधित किया है।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य संधारणीय(सतत) गतिविधिओं के माध्यम से कोयला संसाधन निष्कर्षण को अनुकूलित करना है, जिससे अपशिष्ट न्यूनतम हो तथा परिचालन दक्षता बढ़े।
- इस सामरिक दृष्टिकोण में परिचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए उन्नत तकनीकी एकीकरण शामिल है, जिससे पर्यावरणीय और आर्थिक स्थिरता प्राप्त हो सके।

प्रमुख सुधार प्रस्तुत किये गये

- निर्धारित लक्ष्यों से अधिक वार्षिक कोयला उत्पादन को समायोजित करने के लिए कैलेंडर योजना में लचीलेपन का प्रावधान।
- राज्य सरकारों को पट्टे पर दिए गए क्षेत्रों में पाए जाने वाले अन्य व्यावसायिक रूप से मूल्यवान खनिजों की अनिवार्य रिपोर्टिंग।
- कोयला खान विनियम, 2017 के अनुसार व्यापक सुरक्षा प्रबंधन योजनाओं का कार्यान्वयन, जिसमें अनिवार्य सुरक्षा ऑडिट शामिल हैं।
- संबंधित पर्यावरणीय चिंताओं को दूर करने के लिए फ्लाई ऐश भरने के प्रोटोकॉल का एकीकरण।
- खनन योजनाओं की व्यापक पंचवर्षीय अनुपालन रिपोर्ट के लिए ड्रोन सर्वेक्षण और संसाधित आउटपुट की आवश्यकता।
- कोयला भंडार के संरक्षण के लिए समीपवर्ती खदानों में अवरोधक कोयले के निष्कर्षण का प्रावधान।
- सुरक्षित और अधिक कुशल संचालन तथा ओवरबर्डन डम्पिंग के लिए खदान एकीकरण की सुविधा।
- वर्ष 2009 के बाद परित्यक्त या बंद की गई खदानों के लिए अस्थायी और अंतिम खदान बंद करने की योजना की अनिवार्य तैयारी।
- कोयला मंत्रालय भारत के कोयला खनन क्षेत्र में सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। ये व्यापक सुधार जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन, सामुदायिक कल्याण और पर्यावरण संरक्षण के लिए मंत्रालय के समर्पण को रेखांकित करते हैं।

56. केंद्र ने सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024 को अधिसूचित किया -द हिंदू

समाचार:

- केंद्र सरकार ने सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024 को अधिसूचित कर दिया है, जिसमें सरकारी भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी और संगठित धोखाधड़ी के लिए पांच साल तक की कैद और एक करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (DoPT)
- अनुच्छेद 15,16

मुख्य बिंदु:

- यूजीसी-नेट 2024 परीक्षा, जिसे 19 जून को समझौता किए जाने के आधार पर रद्द कर दिया गया था और जिसकी जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा की जा रही है, हालांकि, नए अधिनियमित कानून के दायरे में नहीं आएगी।
- कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (DoPT) द्वारा 21 जून को जारी अधिसूचना
  - "केन्द्र सरकार 21 जून, 2024 को उक्त अधिनियम के प्रावधान लागू होने की तारीख नियत करती है।"
- अधिनियम में "प्रश्न पत्र या उत्तर कुंजी को लीक करना", "सार्वजनिक परीक्षा में किसी भी तरह से अनधिकृत रूप से उम्मीदवार की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करना" और
- किसी व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह या संस्थाओं द्वारा किया गया अपराध "कम्प्यूटर नेटवर्क या कम्प्यूटर संसाधन या कम्प्यूटर प्रणाली के साथ छेड़छाड़" है।
- इनके अलावा, "धोखाधड़ी या आर्थिक लाभ के लिए फर्जी वेबसाइट बनाना", "फर्जी परीक्षा आयोजित करना, धोखाधड़ी या आर्थिक लाभ के लिए फर्जी एडमिट कार्ड या ऑफर लेटर जारी करना" और "बैठने की व्यवस्था में हेराफेरी करना" भी कानून के तहत दंडनीय अपराधों में शामिल हैं।
- अधिनियम में कहा गया है, "इस अधिनियम के तहत अनुचित साधनों और अपराधों का सहारा लेने वाले किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों को तीन साल से कम नहीं बल्कि पांच साल तक की कैद और 10 लाख रुपये तक के जुर्माने से दंडित किया जाएगा।"
- सार्वजनिक परीक्षा प्राधिकरण द्वारा परीक्षाओं के संचालन के लिए नियुक्त सेवा प्रदाता को भी 1 करोड़ रुपये तक के जुर्माने से दंडित किया जा सकेगा और परीक्षा की आनुपातिक लागत भी वसूल की जाएगी।

- ऐसे सेवा प्रदाताओं को चार वर्ष की अवधि के लिए किसी भी सार्वजनिक परीक्षा के संचालन की जिम्मेदारी सौंपे जाने से भी रोक दिया जाएगा।

57. सरोगेसी से जन्मे बच्चे के पैरेंट्स को मातृत्व अवकाश मिलेगा - द हिंदू

समाचार:

- केंद्र ने महिला सरकारी कर्मचारियों को सरोगेसी के माध्यम से बच्चे होने की स्थिति में 180 दिनों का मातृत्व अवकाश लेने की अनुमति देने के नियम अधिसूचित किए हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे
- किराए की कोख
- मातृत्व

मुख्य बिंदु:

- केंद्रीय सिविल सेवा (छुट्टी) नियम, 1972 में किए गए बदलावों के अनुसार, सरकार ने "कमीशनिंग मदर" (सरोगेसी के माध्यम से पैदा हुए बच्चे की इच्छुक मां) को भी चाइल्ड केयर लीव के साथ-साथ "कमीशनिंग पिता" को 15 दिनों की पितृत्व छुट्टी की अनुमति दी है।
- सरोगेसी के मामले में, सरोगेट के साथ-साथ दो से कम जीवित बच्चों वाली कमीशनिंग मां को 180 दिनों का मातृत्व अवकाश दिया जा सकता है, यदि उनमें से कोई एक या दोनों सरकारी कर्मचारी हों।
- अभी तक सरोगेसी से बच्चे के जन्म की स्थिति में महिला सरकारी कर्मचारियों को मातृत्व अवकाश देने के लिए कोई नियम नहीं थे।
- मौजूदा नियमों के अनुसार, "एक महिला सरकारी कर्मचारी और एकल पुरुष सरकारी कर्मचारी" को पूरे सेवाकाल के दौरान अधिकतम 730 दिनों के लिए बाल देखभाल अवकाश की अनुमति है, "दो सबसे बड़े जीवित बच्चों की देखभाल के लिए, चाहे वह उनके पालन-पोषण के लिए हो या उनकी शिक्षा, बीमारी आदि जैसी किसी भी आवश्यकता के लिए।"
- "सरोगेट मां" का तात्पर्य उस महिला से है जो कमीशनिंग मां की ओर से बच्चे को जन्म देती है और "कमीशनिंग पिता" का तात्पर्य सरोगेसी के माध्यम से पैदा हुए बच्चे के इच्छित पिता से है।

58. केरल विधानसभा ने राज्य का नाम बदलकर 'केरलम' करने का प्रस्ताव पारित किया - द हिंदू

समाचार:

- केरल विधानसभा ने हाल ही में राज्य का नाम 'केरल' से बदलकर 'केरलम' करने के लिए संविधान संशोधन का प्रस्ताव पारित किया।

प्रीलिम्स टेकअवे
- अनुच्छेद 3
- अनुसूची 1

मुख्य बिंदु:

- प्रस्ताव में प्रथम अनुसूची में इस परिवर्तन को प्रभावी करने के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 3 को लागू करने का आह्वान किया गया।
- यह प्रस्ताव पिछले वर्ष के प्रयास की तरह ही है, जिसे प्रक्रियागत मुद्दों के कारण केंद्र सरकार ने वापस भेज दिया था।
- मूलतः, राज्य ने संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध सभी भाषाओं के नामों को संशोधित कर 'केरलम' करने का प्रयास किया था।
- हालाँकि, केंद्रीय गृह मंत्रालय की सलाह के बाद, ध्यान केवल पहली अनुसूची में संशोधन करने पर केंद्रित हो गया
- यद्यपि राज्य का मलयालम नाम 'केरलम' है, फिर भी आधिकारिक तौर पर इसे 'केरल' के रूप में ही दर्ज किया जाता है।
  - प्रस्ताव का उद्देश्य आधिकारिक नाम को मलयालम उच्चारण के अनुरूप बनाना है।

59. केंद्रीय गृह मंत्रालय ने eSakhsya ऐप का परीक्षण किया - द हिंदू

समाचार:

- केंद्रीय गृह मंत्रालय (MHA) ई-साक्ष्य (e-evidence/ eSakhsya) का परीक्षण कर रहा है, जो एक मोबाइल फोन एप्लीकेशन है, जो पुलिस को आपराधिक मामले में अपराध के दृश्यों को रिकॉर्ड करने, तलाशी और जब्ती करने तथा फाइल को क्लाउड-आधारित प्लेटफॉर्म पर अपलोड करने में मदद करेगा।

प्रीलिम्स टेकअवे
- BNS, 2023
- NCRB

मुख्य बिंदु:

- प्रक्रिया पूरी होने के बाद पुलिस अधिकारी को एक सेल्फी अपलोड करनी होगी।

- राज्य पुलिस विभागों के साथ साझा किए गए विवरण के अनुसार, प्रत्येक रिकॉर्डिंग अधिकतम चार मिनट लम्बी हो सकती है और प्रत्येक प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) के लिए ऐसी कई फाइलें अपलोड की जा सकती हैं।
- भारतीय न्याय संहिता (BNS) जो भारतीय दंड संहिता, 1860 का स्थान लेगी; भारतीय साक्ष्य (BS) जो भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 का स्थान लेगी; तथा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) जो दंड प्रक्रिया संहिता, 1898 का स्थान लेगी, ये सभी जुलाई से लागू होने वाली हैं।

दोषसिद्धि दर

- BNSS प्रत्येक आपराधिक मामले में तलाशी और जब्ती की अनिवार्य दृश्य-श्रव्य रिकॉर्डिंग तथा उन सभी मामलों में अनिवार्य फोरेंसिक जांच को अनिवार्य बनाता है, जहां अपराध के लिए सात वर्ष या उससे अधिक की सजा का प्रावधान है।
- हार्डवेयर और क्लाउड स्पेस खरीदना एक महंगा मामला है और कई राज्यों के पास पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। उन्होंने कहा कि इससे जांच में एकरूपता लाने में भी मदद मिलेगी, जिससे दोषसिद्धि दर में वृद्धि होगी।
- राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (NIC) द्वारा विकसित मोबाइल एप्लीकेशन उन सभी पुलिस स्टेशनों के लिए उपलब्ध होगी जो इसे पंजीकृत और डाउनलोड करेंगे।
- एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने बताया कि ऐप का परीक्षण अंतिम चरण में है और पुलिस को दो विकल्प दिए गए हैं।
- यदि कनेक्टिविटी की समस्या है, तो पुलिस अपने निजी मोबाइल फोन जैसे डिवाइस पर अपराध स्थल को रिकॉर्ड कर सकती है और हैश वैल्यू जनरेट कर सकती है, पुलिस स्टेशन वापस आकर फाइल अपलोड कर सकती है।
- दूसरा तरीका यह है कि वे सीधे eSakhsya के माध्यम से अपलोड कर सकते हैं जिसके लिए अच्छी इंटरनेट स्पीड की आवश्यकता होती है।
- एक अन्य पुलिस अधिकारी ने आगाह किया कि साक्ष्य प्रस्तुत करने की श्रृंखला की पवित्रता का पालन करना होगा, अन्यथा इससे आरोपी को फायदा हो सकता है।
- कई आरोपी प्रक्रियागत खामियों के कारण कानून के चंगुल से बच निकलते हैं।
- नए कानून में सब कुछ डिजिटल कर दिया गया है, अगर डिजिटल साक्ष्य प्राप्त करने में थोड़ी सी भी समस्या आती है, तो अपराधी छूट सकते हैं।
- फोरेंसिक साक्ष्य को हमेशा गुणवत्ता के आधार पर चुनौती नहीं दी जाती, बल्कि आदेश श्रृंखला के आधार पर चुनौती दी जाती है।

60. प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) को नई सुविधाओं के साथ नया रूप दिया जाएगा - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- PMAY
- पूंजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता

समाचार:

- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) को नई सुविधाओं के साथ नया रूप दिया जाएगा

मुख्य अंश:

- PMAY (शहरी) को दिसंबर 2024 तक बढ़ा दिया गया है।
- मिशन का उद्देश्य झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों सहित गरीब और मध्यम आय वर्ग के लोगों के बीच शहरी आवास की कमी को दूर करना है, ताकि सभी पात्र शहरी परिवारों को पक्का घर मिल सके।
- इस पुनर्गठन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होगा कि योजना के लिए पंजीकरण कराने वाले लाभार्थियों तक पहुंचने में कोई देरी न हो।
- मंत्रालय ने वर्ष 2023-24 और वर्ष 2022-23 में पूंजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता और राज्यों को प्रोत्साहित करके शहरों में बुनियादी शहरी नियोजन पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार और गति लाने के लिए एक योजना की भी घोषणा की थी।
- दोनों योजनाओं ने अन्य बातों के अलावा राज्यों को अनुकूल उप-नियमों और राज्यों द्वारा सक्षम नीति अपनाने के माध्यम से 66 वर्ग मीटर तक के निर्मित क्षेत्र के लिए किफायती आवास के लिए सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- इस योजना के अंतर्गत, राज्यों ने बताया है कि उनकी किफायती आवास नीति के अंतर्गत सक्षम प्रावधानों के माध्यम से, पिछले चार से पांच वर्षों में लगभग 5,00,000 आवास इकाइयों का निर्माण किया गया है।
- इसके अलावा, शहरी नियोजन सुधारों के तहत, स्थानीय झुग्गी पुनर्वास परियोजनाओं को भी प्रोत्साहित किया गया है।

61. डमी FIR और पॉकेट गाइड के साथ पुलिस नए आपराधिक कानूनों पर स्विच करने के लिए तैयार- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- CCTNS
- BNS, 2023

समाचार:
- 1 जुलाई से नए आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन से पहले, अपराध और आपराधिक ट्रैकिंग नेटवर्क सिस्टम (CCTNS) में कम से कम 23 संशोधन किए गए हैं। यह एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जिसका उपयोग देश भर के 16,000 से अधिक पुलिस स्टेशनों द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने के लिए किया जाता है।

मुख्य बिंदु:
- नए कानून के लागू होने से, FIR दंड प्रक्रिया संहिता (CrPC) की धारा 154 के बजाय भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) की धारा 173 के तहत दर्ज की जाएंगी।
- सभी राज्य इस पर सहमत थे और 1 जुलाई से नई प्रणाली को अपनाने के लिए तैयार थे।
- भारतीय न्याय संहिता (BNS) भारतीय दंड संहिता, 1860 का स्थान लेती है; भारतीय साक्ष्य (BS) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 का स्थान लेती है; तथा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) दंड प्रक्रिया संहिता, 1898 का स्थान लेती है।
- दिल्ली पुलिस, जो नए कानूनों के लिए प्रशिक्षण और शैक्षिक मॉड्यूल शुरू करने वाली देश भर की पहली पुलिस बलों में से एक है, का लक्ष्य अगस्त तक सभी 90,000 पुलिस कर्मियों को संवेदनशील बनाना है।
- उन्होंने कहा, "पुलिस अधिकारियों को नए प्रारूप का आदी बनाने के लिए डमी FIR दर्ज की जा रही हैं।
- हमने सभी स्तरों के लिए तैयार गणना के रूप में तीनों कानूनों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने वाली छोटी-छोटी पुस्तकें उपलब्ध करा दी हैं।
- सालों से इस्तेमाल हो रहे कानूनों की धाराएं बदली जा रही हैं, केस दर्ज करते समय किताबें काम आएंगी
- एक अन्य पुलिस अधिकारी ने कहा कि IPC और CrPC जैसे पुराने कानून अभी भी इस्तेमाल में रहेंगे। "अगर कोई मामला 1 जुलाई के बाद दर्ज किया जाता है, लेकिन अपराध उस तारीख से पहले हुआ है, तो इसे BNSS और IPC की संबंधित धाराओं के तहत दर्ज किया जाएगा।
- अदालत में मौजूदा मामले, जिनमें आरोपपत्र अभी दाखिल नहीं हुए हैं या जिनमें अभी सुनवाई चल रही है, पुरानी प्रणाली के तहत ही चलाए जाएंगे।
- CCTNS में पुराने और नए दोनों प्रावधान होंगे
- कुल 20 नये अपराध जोड़े गए हैं तथा 33 अपराधों के लिए कारावास की अवधि बढ़ा दी गई है।
- छह अपराधों के लिए सामुदायिक सेवा का दंड लागू किया गया है तथा 23 अपराधों के लिए अनिवार्य न्यूनतम सजा लागू की गई है।

62. भारत ने धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी रिपोर्ट की आलोचना की - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- समान नागरिक संहिता

समाचार:
- भारत ने हाल ही में वर्ष 2023 के लिए अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी विदेश विभाग की रिपोर्ट को "गहरा पक्षपातपूर्ण" बताया और कहा कि यह "मुद्दों का एकतरफा प्रक्षेपण" दर्शाता है।

मुख्य बिंदु
- भारत में हम धर्मांतरण विरोधी कानूनों, घृणास्पद भाषणों, अल्पसंख्यक समुदायों के घरों और पूजा स्थलों को ध्वस्त करने की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि देख रहे हैं।
- साथ ही, दुनिया भर में लोग धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए भी कड़ी मेहनत कर रहे हैं।"
- भारत में धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति को समर्पित लगभग 69 पृष्ठों की रिपोर्ट में कानून प्रवर्तन एजेंसियों और बहुसंख्यक समूहों के बीच स्पष्ट मिलीभगत पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है और समान नागरिक संहिता (UCC) के लिए अभियान के साथ-साथ भारत में "हिंदू राष्ट्र" बनाने के अभियान जैसे कई कारकों को चिह्नित किया गया है।
- आलोचना का जवाब देते हुए भारत ने अमेरिका में कानून और व्यवस्था की स्थिति का मुद्दा उठाया तथा भारतीयों और अन्य रंगीन समुदायों के खिलाफ नस्लभेद से प्रेरित व्यक्तियों द्वारा किए गए अपराधों को उजागर किया।
- वर्ष 2023 में, भारत ने आधिकारिक तौर पर अमेरिका में घृणा अपराधों, भारतीय नागरिकों और अन्य अल्पसंख्यकों पर नस्लीय हमलों, तोड़फोड़ और पूजा स्थलों को निशाना बनाने के कई मामलों को उठाया है

- उदाहरण के लिए, भारत में ईसाई समुदायों ने बताया कि स्थानीय पुलिस ने धर्मांतरण गतिविधियों के आरोप में पूजा सेवाओं को बाधित करने वाली भीड़ की सहायता की या जब भीड़ ने उन पर हमला किया तो वे मूकदर्शक बनी रहीं और फिर पीड़ितों को धर्मांतरण के आरोप में गिरफ्तार कर लिया।"

ECONOMY

63. केंद्र ने राज्यों को टैक्स हस्तांतरण की 1.39 ट्रिलियन रुपये की किस्त जारी की

प्रीलिम्स टेकअवे
- वित्त आयोग

समाचार:
- राज्यों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए वित्त मंत्रालय ने जून 2024 के लिए राज्यों को टैक्स हस्तांतरण की एक अतिरिक्त किस्त जारी की है।
- जून माह के लिए राज्यों को जारी की गई कुल राशि अब 1,39,750 करोड़ रुपये हो गई है।

भारत में टैक्स राजस्व का बंटवारा
- टैक्स का विभाज्य पूल केंद्र सरकार द्वारा एकत्रित कर राजस्व के उस हिस्से को संदर्भित करता है जिसे केंद्र और राज्यों के बीच साझा किया जाता है।
- इसमें निगम कर, व्यक्तिगत आयकर, केंद्रीय GST तथा एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (IGST) में केंद्र का हिस्सा जैसे विभिन्न कर शामिल हैं।
- उल्लेखनीय है कि केंद्र द्वारा लगाया गया उपकर और अधिभार इस पूल से बाहर रखा गया है।

वित्त आयोग
- प्रत्येक पांच वर्ष में वित्त आयोग का गठन किया जाता है जो यह तय करता है कि प्रत्येक राज्य को कितना धन मिलेगा।
- यह आयोग जरूरतमंद राज्यों को अतिरिक्त धनराशि देने की भी सिफारिश कर सकता है।

64. वर्ष 2024 की पहली GST परिषद बैठक 22 जून को होगी- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- GST परिषद
- वित्त आयोग

समाचार:
- केंद्र सरकार ने वस्तु एवं सेवा कर (GST) परिषद की पिछली बैठक के साढ़े आठ महीने बाद एक बार फिर बैठक बुलाने का फैसला किया है।

मुख्य बिंदु:
- GST परिषद की 53वीं बैठक नई दिल्ली में होगी।
- परिषद की बैठक आमतौर पर प्रत्येक तिमाही में होने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन वर्ष 2022 के बाद से इसकी बैठक केवल छह बार हुई है।
- आगामी बैठक का एजेंडा अभी तक ज्ञात नहीं है, लेकिन राज्यों के वित्त मंत्रियों द्वारा अप्रत्यक्ष टैक्स व्यवस्था के लिए सुझाव दिए जाने की उम्मीद है, जिसे अगले महीने पेश किए जाने वाले केंद्रीय बजट में शामिल किया जा सकता है।
- उद्योग जगत भी योजना के पुनरुद्धार के संकेतों के लिए उत्सुक रहेगा।
  - जटिल बहु-दर कर संरचना का पुनर्गठन करना,
  - साथ ही ऑनलाइन गेमिंग, कैसीनो और घुड़दौड़ में लगाए गए दांव पर 28% शुल्क की समीक्षा का वादा किया गया।
- वित्त मंत्री की अध्यक्षता वाली परिषद ने अपनी पिछली बैठक में मार्च 2026 के बाद GST शुल्क के ऊपर उपकर या अधिभार लगाने के लिए एक "परिप्रेक्ष्य योजना" पर चर्चा शुरू की थी, जब GST क्षतिपूर्ति उपकर समाप्त होने वाला है।

65. 'डिजी यात्रा का विस्तार होटलों, रेल यात्रा और सार्वजनिक स्थानों तक किया जा सकता है' - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- डिजी यात्रा पहल
- डेटा लीक

समाचार:
- डिजी यात्रा को होटलों और ऐतिहासिक स्मारकों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर लागू किया जा सकता है

मुख्य बिंदु:
- इस प्रयोग के लिए एक प्रोटोटाइप विकसित किया गया है तथा पर्यटन मंत्रालय जैसी सरकारी एजेंसियों के साथ इस पर चर्चा चल रही है।

- इसका उद्देश्य पूरे भारत में निर्बाध आवागमन के लिए एक ट्रैवल स्टैक बनाना है।
- इससे उन पर्यटकों का यात्रा अनुभव बेहतर हो जाएगा, जिन्हें होटल में चेक-इन के लिए या सत्यापन के लिए पुलिस स्टेशन में पासपोर्ट दिखाना पड़ता है।
  - डिजी यात्रा का उपयोग रेल यात्रा के लिए भी किया जा सकता है
- पाकिस्तान जैसे कुछ देशों के नागरिकों को अपने ठहरने के प्रत्येक स्थान पर 24 घंटे के भीतर निकटतम पुलिस स्टेशन में अपने आगमन और प्रस्थान की रिपोर्ट करना आवश्यक है।
- अन्य राष्ट्रीयताओं के पर्यटक जिनके पास 180 दिनों से अधिक की अवधि के लिए वीज़ा है, उन्हें भी विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय (FRRO) में पंजीकरण कराना आवश्यक है।
- डिजी यात्रा को होटलों और सार्वजनिक स्थानों तक विस्तारित करने से डेटा लीक होने से रोका जा सकेगा क्योंकि लोग अक्सर फोटोकॉपी और स्क्रीनशॉट के माध्यम से पहचान दस्तावेजों के अनएन्क्रिप्टेड फ़ॉर्म साझा करते हैं, जबकि डिजी यात्रा आईडी में कोई व्यक्तिगत पहचान योग्य जानकारी नहीं होती है।
- डिजी यात्रा सेंट्रल इकोसिस्टम केवल एक हैश वैल्यू या संख्यात्मक मान सहेजता है जो फ़ाइल की सामग्री की पहचान करता है ताकि ऐप पर पंजीकरण के समय यात्रियों द्वारा साझा किए गए डेटा आइटम कहीं भी लीक न हो सकें।

डिजी यात्रा पहल

- डिजी यात्रा पहल हवाई यात्रियों की डिजिटल प्रोसेसिंग है, जो हवाई अड्डे पर विभिन्न चेकपॉइंट्स के माध्यम से कागज रहित आवाजाही को सक्षम करने के लिए बोर्डिंग पास के बजाय उनके बायोमेट्रिक्स जैसे कि चेहरे के स्कैन का उपयोग करती है।
- दिसंबर 2022 में हवाई अड्डों पर इस पहल को शुरू किया गया था, और आज यह 14 हवाई अड्डों को कवर करता है, जबकि वर्ष 2024 के अंत तक 15 और हवाई अड्डों को शामिल किया जाएगा।
- वर्ष 2017 में जब नीति दस्तावेज लॉन्च किया गया था, तब इस पहल का प्राथमिक उद्देश्य हवाई अड्डों पर यात्री प्रवाह (या विभिन्न चेकपॉइंट्स से गुजरने वाले यात्रियों की संख्या) में सुधार करना था।
- इससे देश में हवाई अड्डों के भौतिक विस्तार के साथ-साथ अधिक कुशल हवाई अड्डा परिचालन सुनिश्चित करके बढ़ती यात्री संख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक हवाई अड्डा बुनियादी ढांचे को बढ़ाने का उद्देश्य प्राप्त होगा।
- लेकिन होटलों और अन्य सार्वजनिक स्थानों के लिए प्रस्तावित उपयोग से तात्पर्य यह है कि डिजी यात्रा की भूमिका हवाई यात्रा से आगे तक बढ़ सकती है।
- डिजी यात्रा फाउंडेशन स्वयं एक गैर-लाभकारी निजी कंपनी है जो पांच निजी हवाई अड्डों का एक संघ है, जिनकी संयुक्त हिस्सेदारी 74% है, और भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के पास शेष 26% हिस्सेदारी है।

ART & CULTURE

66. श्रीनगर को विश्व शिल्प परिषद से विश्व शिल्प शहर का दर्जा प्राप्त हुआ- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- विश्व शिल्प परिषद
- भारतीय हस्तशिल्प

समाचार:

- श्रीनगर को विश्व शिल्प परिषद से विश्व शिल्प शहर का दर्जा प्राप्त हुआ है । विश्व शिल्प परिषद एक गैर-सरकारी संगठन है जो कारीगरों को सशक्त बनाने और विश्व स्तर पर शिल्प विरासत की सुरक्षा के लिए काम कर रहा है।

मुख्य बिंदु:

- भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट-कश्मीर ने इस सम्मान को "कश्मीर के कौशल आधार की नवीनतम मान्यता" बताया।
- इससे मध्य एशिया और ईरान के साथ कश्मीर के पारंपरिक संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।
- परिषद द्वारा 14 ईरानी शहरों को शिल्प शहरों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है,
  - श्रीनगर को मिले सम्मान से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा।
  - इससे मध्य एशिया और ईरान के शिल्प केंद्रों के साथ कश्मीर के सदियों पुराने संबंध पुनः खुलने की संभावना है।
- परिषद उन जगहों पर ध्यान केंद्रित करने का आधुनिक साधन और माध्यम है जो सदियों से रचनात्मकता और सौंदर्यशास्त्र में लगे हुए हैं।
- पिछली शताब्दी में कश्मीर के पारंपरिक मार्ग धीरे-धीरे बंद होते गए।
  - WCC ने कारीगरों को नई राह पर आगे बढ़ने के लिए एक नया मार्ग उपलब्ध कराया है।

सामान्य अध्ययन III

SCIENCE & TECH

67. वायरस जैसे पार्टिकल उत्पन्न करने की नई विधि;निपाह के खिलाफ एंटीबॉडी बनाने में मदद मिलेगी - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- निपाह वायरस
- वायरस जैसे पार्टिकल

समाचार:
- उन्नत विषाणु विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में गैर-संक्रामक निपाह वायरस जैसे पार्टिकल उत्पन्न करने का एक नया तरीका विकसित किया है।

मुख्य बिंदु:
- जैव सुरक्षा स्तर-2 (BSL) प्रयोगशाला में NiV के विरुद्ध निष्क्रिय करने वाले एंटीबॉडी विकसित करने के लिए एक वैकल्पिक, सुरक्षित और प्रभावी मंच प्रदान करती है।

निपाह वायरस
- जूनोटिक वायरस निपाह एक अत्यधिक रोगजनक पैरामाइक्सो वायरस है, जिससे प्रभावित मनुष्यों में मृत्यु दर 80% तक होती है।
- NiV का जीनोम छह प्रमुख प्रोटीन ग्लाइकोप्रोटीन (G), फ्यूजन प्रोटीन (F), मैट्रिक्स (M), न्यूक्लियोकैप्सिड (N), लॉन्ग पॉलीमरेज़ (L) और फॉस्फोप्रोटीन (P) को एनकोड करता है।
- हालांकि, शोध अध्ययन, विशेष रूप से NiV के खिलाफ विशिष्ट एंटीवायरल या उपचारात्मक विकसित करने के लिए वायरस न्यूट्रलाइजेशन परख, इस BSL-4 रोगज़नक़ से निपटने के लिए आवश्यक जैव सुरक्षा सावधानियों के चरम स्तर के कारण सीमित रहे हैं।

वायरस जैसे पार्टिकल
- वायरस-जैसे पार्टिकल (VLP) ऐसे अणु होते हैं जो वायरस से काफी मिलते-जुलते हैं, लेकिन गैर-संक्रामक होते हैं क्योंकि उनमें कोई वायरल आनुवंशिक सामग्री नहीं होती है।
- VLP में वायरस की अधिकांश विशेषताएं होती हैं, सिवाय उनकी प्रतिकृति बनाने की क्षमता के (क्योंकि इसमें वायरल जीनोम का अभाव होता है)।
- VLP को लंबे समय से वायरस के वायरल बाइंडिंग और प्रवेश की गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए प्रभावी मात्रात्मक प्लेटफ़ॉर्म के रूप में पहचाना जाता रहा है।
- अत्यधिक संवेदनशील HiBiT टैग को शामिल करने से एंटीवायरल दवा स्क्रीनिंग और वैक्सीन विकास में उनकी क्षमता में तेजी आएगी।
- VLP या टैग किए गए VLP (जैसे: हाईबिट) उत्पन्न करने की अवधारणा कई अन्य विषैले रोगजनकों पर लागू होती है, लेकिन इस पद्धति को BSL-3/BSL-4 स्तर के वायरस पर लागू करना विशेष रूप से लाभप्रद है , ताकि निम्न जैव-नियंत्रण स्तरों में अध्ययन संभव हो सके।
- हालांकि, इन VLP की प्रभावकारिता को निर्णायक रूप से दिखाने के लिए वायरस के प्रवेश को अवरुद्ध करने वाले कई न्यूट्रलाइजिंग एंटीबॉडी और एंटीवायरल का उपयोग करके व्यापक और कठोर अध्ययन की आवश्यकता है।

68. ऐतिहासिक नमूना पुनर्प्राप्ति मिशन में चीन चंद्रमा के सुदूर भाग पर उतरा- इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- आर्टेमिस मिशन
- चांग'ई-6
- स्मार्ट-1

समाचार:
- चीन ने चंद्रमा के सुदूर भाग पर एक मानवरहित अंतरिक्ष यान उतारा, यह एक ऐतिहासिक मिशन है जिसका उद्देश्य चंद्रमा के अंधेरे गोलार्ध से दुनिया के पहले चट्टान और मिट्टी के नमूने प्राप्त करना है।

मुख्य बिंदु
- चंद्रमा पर उतरने से चीन की अंतरिक्ष शक्ति की स्थिति में वृद्धि हुई है, जहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका सहित देश अगले दशक के भीतर दीर्घकालिक अंतरिक्ष यात्री मिशनों और चंद्रमा ठिकानों को बनाए रखने के लिए चंद्र खनिजों का दोहन करने की उम्मीद कर रहे हैं।

- चांग ई-6 यान, अनेक उपकरणों और अपने लांचर से सुसज्जित होकर, चंद्रमा के अंतरिक्ष की ओर स्थित दक्षिणी ध्रुव-ऐटकेन बेसिन नामक एक विशाल प्रभाव गड्ढे में उतरा है।
- यह सफल मिशन चंद्रमा के सुदूरवर्ती क्षेत्र पर चीन का दूसरा मिशन है, जहां कोई अन्य देश नहीं पहुंच पाया है।
- चंद्रमा का पिछला भाग सदैव पृथ्वी से दूर रहता है तथा उस पर गहरे और अंधेरे गड्ढे हैं, जिससे संचार और रोबोटिक लैंडिंग कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाते हैं।
- एक स्कूप और ड्रिल का उपयोग करते हुए, लैंडर का लक्ष्य 2 किलोग्राम चंद्र सामग्री एकत्र करना और उसे पृथ्वी पर वापस लाना होगा।
- इससे सौरमंडल के निर्माण के बारे में नये सुराग मिलेंगे।
- इससे चंद्रमा के अंधेरे, अज्ञात क्षेत्र और उसके पृथ्वी की ओर वाले बेहतर समझे जाने वाले हिस्से के बीच अभूतपूर्व तुलना करने का अवसर भी मिलेगा।
- अमेरिका अपने आर्टेमिस कार्यक्रम के साथ वर्ष 2026 के अंत तक या उसके बाद चंद्रमा पर मानवयुक्त लैंडिंग की भी योजना बना रहा है। नासा ने कनाडा, यूरोप और जापान सहित कई अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ साझेदारी की है, जिनके अंतरिक्ष यात्री भविष्य के आर्टेमिस मिशन पर अमेरिकी चालक दल में शामिल होंगे।

69. इसरो ने एयरोडायनामिक डिजाइन हेतु नया PraVaHa सॉफ्टवेयर विकसित किया- द हिंदू

समाचार:

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एयरोस्पेस वाहन एयरो-थर्मो-डायनामिक विश्लेषण के लिए PraVaHa -समानांतर RANS सॉल्वर नामक कम्प्यूटेशनल फ्लुइड डायनेमिक्स (CFD) सॉफ्टवेयर विकसित किया है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- इसरो
- गगनयान

मुख्य बिंदु:

- यह सॉफ्टवेयर इसरो के विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (VSSC) में विकसित किया गया था।
- यह प्रक्षेपण वाहनों, पंखयुक्त और पंखरहित पुनःप्रवेश वाहनों पर बाह्य और आंतरिक प्रवाह का अनुकरण कर सकता है।
- इसरो के अनुसार, प्रक्षेपण वाहनों के लिए प्रारंभिक वायुगतिकीय डिजाइन अध्ययन में बड़ी संख्या में विन्यासों के मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।
  - प्रक्षेपण या पुनःप्रवेश के दौरान पृथ्वी के वायुमंडल से गुजरते समय कोई भी एयरोस्पेस वाहन बाहरी दबाव और तापीय प्रवाह के संदर्भ में गंभीर वायुगतिकीय और वायुतापीय भार के अधीन होता है।
  - पृथ्वी पर पुनः प्रवेश के दौरान विमान, रॉकेट निकायों या क्रू मॉड्यूल (CM) के आसपास वायु प्रवाह को समझना इन निकायों के लिए आवश्यक आकार, संरचना और थर्मल प्रोटेक्शन सिस्टम (TPS) को डिजाइन करने के लिए आवश्यक है।
- कम्प्यूटेशनल द्रव गतिकी (CFD) वायुगतिकीय और वायुतापीय भार की भविष्यवाणी करने के लिए एक ऐसा उपकरण है जो राज्य के समीकरण के साथ द्रव्यमान, संवेग और ऊर्जा के संरक्षण के समीकरणों को संख्यात्मक रूप से हल करता है।
- मानव-रेटेड लॉन्च वाहनों, जैसे HLVM3, क्रू एस्केप सिस्टम (CES), और CM के वायुगतिकीय विश्लेषण के लिए गगनयान कार्यक्रम में प्रवाह का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है।

70. हिमाचल प्रदेश में बारिश से जंगलों की आग बुझने और भीषण गर्मी से मिलने की उम्मीद - द हिंदू

समाचार:

- पिछले महीने लंबे समय तक सूखे और असामान्य रूप से उच्च तापमान के कारण हिमाचल प्रदेश में कई जंगल में आग लग गई।

प्रीलिम्स टेकअवे
- पश्चिमी विक्षोभ
- दावानल

मुख्य बिंदु:

- जंगली आग ने कई हेक्टेयर वन क्षेत्र को नष्ट कर दिया है तथा जैव विविधता और वन पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाया है।
- सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष राज्य भर में वनों में आग लगने की 1,318 घटनाएं सामने आई हैं।
- मई से हिमाचल प्रदेश में औसत अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से काफी ऊपर चल रहा है।

- तापमान और सूखे की वजह से राज्य सरकार के अधिकारियों के लिए जंगल की आग पर काबू पाना एक बड़ी चुनौती है।
  - हालांकि, आने वाले दिनों में शुष्क मौसम और गर्म तापमान में कमी आने की उम्मीद है, इसलिए उम्मीद है कि आग लगने की घटनाएं कम होंगी।

दीर्घकालिक उपाय

- मुख्यमंत्री ने विभाग को इस समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया। उन्होंने समस्या पर अंकुश लगाने के लिए तत्काल पहल के साथ-साथ दीर्घकालिक उपाय शुरू करने का निर्देश दिया।
- उन्होंने कहा कि राज्य सरकार वन क्षेत्रों में नुकसान को कम करने के लिए अग्निशमन के लिए विशेष रूप से सुसज्जित और प्रशिक्षित राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) की एक समर्पित बटालियन बनाने पर विचार कर रही है।
- उन्होंने वन विभाग को आग के कारणों का अध्ययन करने तथा आवश्यक कार्रवाई की सिफारिश करने का भी निर्देश दिया।
- नमी बनाए रखने और आग की घटनाओं को कम करने के लिए विशिष्ट पौधों की प्रजातियों के साथ शंकुधारी पौधों के क्षेत्रों में विविधता लाने की भी आवश्यकता है।

राहत

- इस वर्ष अधिकतम और न्यूनतम तापमान दोनों ही एक महीने से अधिक समय से असामान्य रूप से अधिक रहे हैं
- मौसम शुष्क और गर्म था, और नमी भी कम थी, जिससे जंगल में आग लगने की संभावना बढ़ जाती है।
- हालांकि, 4 जून को एक नया पश्चिमी विक्षोभ आने की संभावना है, जिससे राज्य के अधिकांश हिस्सों में लू और उच्च तापमान से राहत मिलेगी।

71. ICMR द्वारा सिकल सेल रोग के इलाज हेतु हाइड्रोक्सीयूरिया का फार्मूला उपलब्ध करायेगा - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे

- सिकल सेल रोग
- हाइड्रोक्सीयूरिया

समाचार:

- ICMR ने भारत में सिकल सेल रोग के उपचार के लिए हाइड्रोक्सीयूरिया की कम खुराक या बाल चिकित्सा मौखिक फॉर्मूलेशन के संयुक्त विकास के लिए रुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित की है।

मुख्य बिंदु:

- सिकल सेल रोग हीमोग्लोबिन के सबसे आम मोनोजेनिक विकारों में से एक है।
- हाइड्रोक्सीयूरिया, एक मायलोसप्रेसिव एजेंट, सिकल सेल रोग और थैलेसीमिया के रोगियों के इलाज के लिए एक प्रभावी दवा है।
- दक्षिण एशिया में सिकल सेल रोग का प्रचलन भारत में सबसे अधिक है।
  - देश में इस रोग से पीड़ित 20 मिलियन से अधिक लोग रहते हैं।
- जबकि भारत में अधिकांश दवा कंपनियां हाइड्रोक्सीयूरिया की 500 मिलीग्राम की कैप्सूल या 200 मिलीग्राम की गोलियां बेचती हैं, उपचार में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि बाल रोगियों के मामले में प्रभावी उपयोग के लिए यह सस्पेंशन के रूप में उपलब्ध नहीं है।
- इस प्रकार, भारत में SCD मामलों की संख्या और वर्ष 2047 तक सिकल सेल एनीमिया को खत्म करने के लिए राष्ट्रीय मिशन के शुभारंभ को देखते हुए, HU (हाइड्रॉक्सीयूरिया) के बाल चिकित्सा फॉर्मूलेशन की आवश्यकता है।
- ICMR ने यह भी कहा कि भारत में, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के दिशा-निर्देशों के अनुसार, स्वास्थ्य सेवा प्रदाता बच्चों में केवल लक्षण वाले सिकल सेल रोग के रोगियों के लिए हाइड्रोक्सीयूरिया थेरेपी शुरू करते हैं, क्योंकि बाल चिकित्सा खुराक की उपलब्धता की कमी के साथ-साथ विषाक्तता का डर भी है।
- बच्चों में, दो वर्ष की आयु के बाद निर्धारित खुराक शरीर के वजन के प्रति किलोग्राम 10 मिलीग्राम से 15 मिलीग्राम है।
- खुराक का यह अनुमापन कठिन है, और वर्तमान में, यह टूटे हुए कैप्सूल के एक अंश का उपयोग करके किया जाता है, जो एक उपयुक्त विधि नहीं है क्योंकि इससे दवा का कम सटीक प्रशासन हो सकता है, जिसके पांच खुराक-संबंधी दुष्प्रभाव होते हैं।

72. FSSAI ने खाद्य ब्रांडों को लेबल और विज्ञापनों से '100% फलों का रस' का दावा हटाने का निर्देश दिया - द हिंदू

समाचार:

- कई FBO विभिन्न प्रकार के पुनर्गठित फलों के रसों को 100 प्रतिशत फलों के रस होने का दावा करके गलत तरीके से विपणन कर रहे हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे

- FSSAI
- कैल्शियम कार्बाइड

मुख्य बिंदु:

- भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने सभी खाद्य व्यवसाय संचालकों (FBO) को निर्देश जारी कर कहा है कि वे पुनर्गठित फलों के रस के लेबल और विज्ञापनों से '100% फलों के रस' के किसी भी दावे को तत्काल प्रभाव से हटा दें।
- सभी FBO को यह भी निर्देश दिया गया है कि वे 1 सितंबर से पहले सभी मौजूदा पूर्व-मुद्रित पैकेजिंग सामग्री का उपयोग कर लें।
- गहन जांच के बाद, FSSAI इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि खाद्य सुरक्षा और मानक (विज्ञापन और दावे) विनियम, 2018 के अनुसार, '100%' दावा करने का कोई प्रावधान नहीं है।
- ऐसे दावे भ्रामक हैं, विशेष रूप से उन परिस्थितियों में जहां फलों के रस का मुख्य घटक पानी है और प्राथमिक घटक, जिसके लिए दावा किया जाता है, केवल सीमित सांद्रता में मौजूद है, या जब फलों के रस को पानी और फलों के सांद्रण या पल्प का उपयोग करके पुनर्गठित किया जाता है।
- FSSAI ने फल व्यापारियों और खाद्य कारोबारियों से फलों को पकाने के लिए प्रतिबंधित उत्पाद 'कैल्शियम कार्बाइड' का इस्तेमाल न करने को कहा
- विशेष रूप से, घटक सूची में, "पुनर्गठित" शब्द का उल्लेख उस रस के नाम के सामने किया जाना चाहिए जिसे सांद्र से पुनर्गठित किया गया है।
- "इसके अतिरिक्त, यदि पोषक तत्वों की मात्रा 15 ग्राम/किलोग्राम से अधिक हो, तो उत्पाद पर 'मीठा जूस' का लेबल लगाना होगा।

73. शोधकर्ताओं ने "ग्रीन-बियर्ड" जीन की पहचान की -द हिंदू

समाचार:

- वैज्ञानिकों ने अमीबा डिक्टिओस्टेलियम डिस्कोइडम का अध्ययन करके प्राकृतिक परोपकारिता के बारे में बहुमूल्य नई जानकारी प्राप्त की है

प्रीलिम्स टेकअवे

- DNA
- RNA

मुख्य बिंदु

- शोधकर्ताओं ने "ग्रीन-बियर्ड" जीन की पहचान की है, जो समान जीन वाले व्यक्तियों को एक-दूसरे को पहचानने और उनके साथ सहयोग करने में सक्षम बनाता है।
- इसके अलावा, जीन अभिव्यक्ति और प्रोटीन बाइंडिंग जैसे तंत्रों को अमीबा के सामाजिक समूहों के भीतर सहयोग को सुविधाजनक बनाने और शोषण को रोकने के लिए देखा गया है।
- **ग्रीन-बियर्ड जीन** , जिसका नाम उनकी पहचान करने और उसी जीन वाले अन्य लोगों के साथ सहयोग करने की काल्पनिक क्षमता के लिए रखा गया है, अल्ट्रूइस्टिक व्यवहार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- वैकल्पिक रूप से, ये जीन भिन्न जीन वेरिएंट वाले लोगों के प्रति हानिकारक व्यवहार को प्रेरित कर सकते हैं।
- **Tgr जीन की भूमिका** : डिक्टियोस्टेलियम डिस्कोइडम में दो जीन, tgrB1 और tgrC1 की पहचान की गई है, जो अल्ट्रूइस्टिक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। ये जीन कोशिका पहचान और सहयोग को सुविधाजनक बनाते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि अल्ट्रूइस्टिक अमीबा अपने परिजनों को पहचानें और उनके साथ सहयोग करें।
- ये निष्कर्ष न केवल परोपकारिता को प्रेरित करने वाले आनुवंशिक तंत्र पर प्रकाश डालते हैं, बल्कि विविध प्रजातियों में सहयोग और सामाजिकता के विकास के बारे में व्यापक अंतर्दृष्टि भी प्रदान करते हैं।

74. AI भारत के DPI को को सशक्त बना सकता है- लाइव मिंट

प्रीलिम्स टेकअवे
- AI
- DPI

समाचार:
- DPI जैसे मानकीकृत समाधानों के साथ समस्या यह है कि वे विविधता के लिए नहीं बल्कि पैमाने के लिए बनाए गए हैं।
- लेकिन AI तकनीक व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और संदर्भों के अनुसार समायोजित हो सकती है, जिससे सार्वजनिक सेवाओं की डिलीवरी अधिक उत्तरदायी और उपयोगकर्ता-केंद्रित हो जाती है

AI: सार्वजनिक सेवाओं को सशक्त बनाना
- **वितरित शक्ति:** AI देश भर में छोटे, परस्पर जुड़े डेटा केंद्रों की अनुमति देता है, जिससे कंप्यूटिंग शक्ति अधिक सुलभ और कुशल हो जाती है।
- **नैतिक नवाचार** : AI कंपनियाँ नैतिक दिशा-निर्देशों के लिए प्रतिबद्ध हो सकती हैं, जिससे नए कानूनों की प्रतीक्षा किए बिना AI तकनीकों का जिम्मेदार विकास और परिनियोजन सुनिश्चित हो सकता है।
- **अनुकूलित सेवाएँ:** AI व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं के लिए सार्वजनिक सेवाओं को उनकी प्राथमिकताओं, भाषा और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार अनुकूलित कर सकता है।
- **क्षमता का उन्मुक्तीकरण:** मानकीकृत DPI सेवाएँ कई लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन AI निजी कंपनियों को इस आधार पर निर्माण करने की अनुमति देता है, जिससे विविध आवश्यकताओं के लिए समाधान बनते हैं।
- **उपयोगकर्ता-अनुकूल तकनीक** : AI संवादात्मक इंटरफेस के साथ सार्वजनिक सेवाओं को सरल बना सकता है। कल्पना करें कि आप तकनीक के साथ ऐसे बातचीत कर रहे हैं जैसे आप किसी मित्र से चैट कर रहे हों!
- **वास्तविक दुनिया का उदाहरण:** सेतु का PFM ऐप, WhatsApp पर एक वित्तीय सलाहकार, दिखाता है कि कैसे AI परिचित प्लेटफ़ॉर्म पर व्यक्तिगत सलाह दे सकता है, जिससे वित्तीय सेवाओं तक पहुँचना और उनका उपयोग करना आसान हो जाता है।

विचारणीय चुनौतियाँ:
- **मानकीकरण बनाम विकल्प** : मानकीकृत सेवाएँ कई लोगों के लिए बढ़िया हैं, लेकिन AI मुख्य कार्यक्षमताओं को बनाए रखते हुए विविधता जोड़ सकता है।
- **एकीकरण का महत्व:** AI को अकाउंट एग्रीगेटर जैसी मौजूदा DPI प्रणालियों के साथ सहजता से काम करने की आवश्यकता है।
- AI-संचालित DPI समावेशी और स्केलेबल होनी चाहिए, जो व्यापक दर्शकों तक पहुँचते हुए व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुकूल हो।

75. स्पेसएक्स ने सफलतापूर्वक स्टारशिप मिशन पूरा किया - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- नासा का आर्टेमिस मून प्रोग्राम

समाचार:
- स्पेसएक्स ने पहली बार अपने स्टारशिप रॉकेट की परीक्षण उड़ान पूरी की, तथा कंपनी ने इस विशाल वाहन के विकास को नई महत्वपूर्ण उपलब्धि तक पहुंचाया।

मुख्य बिंदु
- स्टारशिप सिस्टम को पूरी तरह से पुन: प्रयोज्य बनाया गया है और इसका उद्देश्य पृथ्वी से परे कार्गो और लोगों को उड़ाने का एक नया तरीका बनना है।
- यह रॉकेट अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर वापस भेजने की नासा की योजना के लिए भी महत्वपूर्ण है।
- स्पेसएक्स ने नासा के आर्टेमिस चन्द्र कार्यक्रम के एक भाग के रूप में स्टारशिप को मानवयुक्त चन्द्र लैंडर के रूप में उपयोग करने के लिए एजेंसी से अरबों डॉलर का अनुबंध जीता है।
- उड़ान के तुरंत बाद, नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने स्पेसएक्स को उसकी प्रगति के लिए बधाई दी।
- स्पेसएक्स ने पहले तीन अंतरिक्ष उड़ान परीक्षणों पर पूर्ण स्टारशिप रॉकेट सिस्टम उड़ाया है, जिसमें अप्रैल 2023, नवंबर और मार्च में लॉन्च किए गए हैं।
- प्रत्येक परीक्षण उड़ान ने पिछली उड़ान की तुलना में अधिक उपलब्धियां हासिल किए हैं, लेकिन गुरुवार से पहले प्रत्येक परिणाम में रॉकेट उड़ान के अंत से पहले नष्ट हो गया था।
- कंपनी की तीसरी परीक्षण उड़ान के दौरान स्पेसएक्स ने अंतरिक्ष में पेलोड के दरवाजे को खोलने और बंद करने सहित नई क्षमताओं का परीक्षण किया
  - यह इस बात पर निर्भर करेगा कि रॉकेट भविष्य के मिशनों में उपग्रहों जैसे पेलोड को कैसे तैनात करता है

- और नासा के एक प्रदर्शन में उड़ान के दौरान ईंधन स्थानांतरित करना।
- स्टारशिप सिस्टम को पूरी तरह से पुन: प्रयोज्य बनाया गया है और इसका उद्देश्य पृथ्वी से परे कार्गो और लोगों को उड़ाने का एक नया तरीका बनना है।
- यह रॉकेट अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर वापस भेजने की नासा की योजना के लिए भी महत्वपूर्ण है।
- स्पेसएक्स ने नासा के आर्टेमिस चन्द्र कार्यक्रम के एक भाग के रूप में स्टारशिप को मानवयुक्त मून लैंडर के रूप में उपयोग करने के लिए एजेंसी से अरबों डॉलर का अनुबंध जीता है।

76. H5N2 बर्ड फ्लू से पहली मानव मृत्यु: -इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- एवियन इन्फ्लूएंजा

समाचार:
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने मेक्सिको में 59 वर्षीय व्यक्ति की मौत की पुष्टि की है, जो H5N2 नामक बर्ड फ्लू के एक प्रकार के कारण हुआ, जो पहले कभी मनुष्यों में दर्ज नहीं किया गया था।

एवियन इन्फ्लूएंजा क्या है?
- एवियन इन्फ्लूएंजा, जिसे आमतौर पर बर्ड फ्लू के नाम से जाना जाता है, एक वायरल संक्रमण है जो मुख्य रूप से पक्षियों को प्रभावित करता है।
- हालाँकि, वायरस के कुछ उपप्रकार मनुष्यों को संक्रमित कर सकते हैं, जिससे गंभीर श्वसन संबंधी बीमारियाँ हो सकती हैं।
- इनमें से सबसे उल्लेखनीय उपप्रकार H5N1 है, जो अतीत में अनेक मानव संक्रमणों और मौतों के लिए जिम्मेदार रहा है।
- मनुष्यों में एवियन इन्फ्लूएंजा के लक्षण सामान्य फ्लू के समान ही होते हैं और इनमें निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:
  - गंभीर मामलों में बुखार, खांसी, गले में खराश, मांसपेशियों में दर्द और गंभीर श्वसन संकट
- एवियन इन्फ्लूएंजा एक जूनोटिक बीमारी है, जिसका अर्थ है कि यह जानवरों से मनुष्यों में फैल सकती है।
- पोल्ट्री उद्योग और अंतरराष्ट्रीय यात्रा की वैश्विक प्रकृति का मतलब है कि प्रकोप जल्दी ही अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति बन सकते हैं।
- यद्यपि एवियन इन्फ्लूएंजा के मानव मामले दुर्लभ हैं, फिर भी वायरस का मनुष्यों में अनुकूलन और प्रसार की संभावना एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता का विषय है।
- यह वायरस के संचरण या विषाणुता के एक नए स्तर को इंगित करता है जो इस क्षेत्र में पहले नहीं देखा गया था।

77. इसरो ने पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान के लैंडिंग मिशन का सफलतापूर्वक परीक्षण किया- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- RLV-LEX
- पुष्पक

समाचार:
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन तीसरे और अंतिम RLV लैंडिंग प्रयोग (RLV LEX) को अंजाम देने के लिए पूरी तरह तैयार है।

मुख्य बिंदु:
- RLV-LEX मिशन में एक मानवरहित पंखयुक्त प्रोटोटाइप, जिसे पुष्पक नाम दिया गया है , को एक निर्दिष्ट ऊंचाई पर ले जाना और विभिन्न परिस्थितियों में उसे सुरक्षित रूप से जमीन पर उतारना शामिल है।
- LEX-03 में, पुष्पक को IAF चिनूक हेलीकॉप्टर का उपयोग करके रनवे के एक तरफ 4.5 किमी और 500 मीटर की ऊंचाई पर ले जाया जाएगा और छोड़ा जाएगा।
- दूसरे मिशन, LEX-02 में, ऊंचाई वही थी, लेकिन रनवे से पार्श्व दूरी 150 मीटर थी।
- इसे स्वचालित रूप से रनवे के पास पहुंचना होता है, तथा क्रॉसरेंज, डाउनरेंज और ऊंचाई सुधार करके रनवे पर उतरना होता है।
- LEX-03 मिशन यह देखेगा कि प्रभाव भार को कम करने के लिए सिंक दर या अवरोहण की दर को कैसे कम किया जा सकता है।
- इसमें एक रियल-टाइम किनेमेटिक्स (RTK) पैकेज भी होगा।
  - आगामी मिशन के सामने एक और चुनौती टेलविंड स्थितियों को संभालना है।
- थुम्बा स्थित VSSC पुष्पक के डिजाइन और विकास के लिए जिम्मेदार था।
- RLV-TD के तहत परीक्षणों के अगले चरण में, ISRO एक मानव रहित ऑर्बिटल री-एंट्री व्हीकल (ORV) का उपयोग करेगा।

- इस्तेमाल किया जाने वाला वाहन LEX के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले 'पुष्पक' के आकार का 1.6 गुना होगा। इसे संशोधित जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (GSLV) का उपयोग करके पृथ्वी के चारों ओर 400 किमी की कक्षा में रखा जाएगा।
- इस मिशन के दो वर्ष में पूरा होने की उम्मीद है।
- इसरो ने 2 अप्रैल, 2023 को LEX-01 मिशन और 22 मार्च, 2024 को LEX-02 मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया था।

78. 'वैश्विक कंपनियां लागत कम करने के लिए बड़े AI मॉडल अपना रही हैं'- द हिंदू

समाचार:

- वैश्विक स्तर पर उद्यम लार्ज एक्शन मॉडल (LAM) अपना रहे हैं जो लागत में कटौती के लिए जटिल लक्ष्यों को समझते हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे
- LAMs
- IoT

मुख्य बिंदु:

- LAM उन्नत AI मॉडल हैं। ये ChatGPT की तरह टेक्स्ट बनाने और व्याख्या करने से आगे बढ़कर , वास्तविक दुनिया में एप्लिकेशन और डिवाइस के साथ बातचीत करने वाले कार्य कर सकते हैं ।
- ये एंड-टू-एंड वेकेशन प्लानिंग, जॉब एप्लीकेशन ऑटोमेशन, इन्वेस्टमेंट पोर्टफोलियो ऑप्टिमाइजेशन और पर्सनलाइज्ड सोशल मीडिया कंटेंट क्रिएशन जैसे जटिल कार्यों को स्वायत्त रूप से संभाल सकते हैं, जबकि वे लगातार सीखते रहते हैं और यूजर की प्राथमिकताओं के अनुसार ढलते रहते हैं।
- इससे LAMs के साथ दावों की प्रक्रिया को स्वचालित करके अमेरिकी बीमा फर्मों में महत्वपूर्ण श्रम लागत में कटौती करने में मदद मिली है।
- इसके अलावा, अत्यंत शक्तिशाली भाषा मॉडल अब मल्टीमॉडल (भाषण, वीडियो, पाठ) इनपुट और न्यूरो-सिम्बोलिक AI से आशय को गहराई से समझ सकते हैं, ताकि उपयोगकर्ता इंटरफेस को मानव की तरह नेविगेट किया जा सके।
- इसे API (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) और IoT डिवाइस के प्रसार, ऑटोमेशन की मांग, बढ़ी हुई कंप्यूटिंग शक्ति के साथ मिलाएँ, यह सब AI एजेंटों की इस अगली पीढ़ी के लिए एक आदर्श वातावरण बनाता है।

भविष्य में LAM

- आने वाले वर्षों में LAMs व्यवसायों के लिए SAAS एप्लिकेशन या हाइपरस्केलर क्लाउड सक्षमता की तरह ही अभिन्न और सामान्य हो सकते हैं।
- LAMs संभवतः मनुष्यों द्वारा वर्तमान में किए जाने वाले कई ज्ञान कार्य कार्यों को स्वचालित करेंगे, इसलिए इस अर्थ में, वे कुछ भूमिकाओं को विस्थापित कर सकते हैं।
- हालाँकि, AI के साथ अन्य चीजों की तरह, वे नई क्षमताओं को सक्षम करके और मनुष्यों को उच्च-स्तरीय, रचनात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देकर, प्रतिस्थापित करने की तुलना में अधिक नौकरियाँ पैदा करने की संभावना रखते हैं।
- उभरती हुई भूमिकाएं LAMs को सहयोग प्रदान करेंगी, जिनमें प्रशिक्षण, निरीक्षण और मॉडल कार्यों की व्याख्या करना शामिल है।
- LAMs के विकास में पारदर्शिता, निष्पक्षता और सुरक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए, साथ ही पक्षपात और दुरुपयोग के लिए कठोर परीक्षण और स्पष्ट जवाबदेही होनी चाहिए।
- कार्य के प्रकारों में बदलाव के लिए सक्रिय रूप से पुनः कौशलीकरण और नौकरी परिवर्तन की योजना बनाने की आवश्यकता होगी, तथा कौशल उन्नयन सुनिश्चित करने के लिए सरकारी नीतियों की आवश्यकता होगी।

79. इसरो ने आदित्य-L1 से ली गई सूर्य की तस्वीरें जारी कीं- द हिंदू

समाचार:

- भारत के प्रथम सौर मिशन आदित्य-L1 पर लगे दो रिमोट सेंसिंग पेलोड ने मई में आए सौर स्टॉर्म के दौरान सूर्य तथा उसकी गतिशील गतिविधियों के चित्र खींचे हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे
- इसरो
- आदित्य L-1

मुख्य बिंदु:

- सूर्य पर सक्रिय क्षेत्र AR13664 में कई X-क्लास और M-क्लास फ्लेयर्स उत्पन्न हुई ।
- यह कोरोनल मास इजेक्शन (CME) से जुड़ा था।
- चित्र लेने के अलावा, इन पेलोडों ने महत्वपूर्ण अवलोकन भी किये हैं।
- इसरो के अनुसार, निम्नलिखित तस्वीरों से मदद मिलेगी।

- सौर ज्वालाओं, ऊर्जा वितरण और सूर्य धब्बों का अध्ययन, अंतरिक्ष मौसम को समझना और भविष्यवाणी करना, और सौर गतिविधि की निगरानी करना और
- यह व्यापक तरंगदैर्घ्य रेंज में यूवी विकिरण को समझने में मदद करेगा तथा दीर्घकालिक सौर विविधताओं के अध्ययन में भी सहायता करेगा।

- इस विशेष वर्णक्रमीय रेखा में कोरोनाल गतिविधियों को पकड़ने के लिए सौर कोरोना के रेखापुंज स्कैन किए गए।

80. IISc ने भूजल से भारी धातु प्रदूषकों को हटाने की विधि विकसित की- टाइम्स ऑफ़ इंडिया

समाचार:

- भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के शोधकर्ताओं ने भूजल से भारी धातु संदूषकों को हटाने के लिए एक नवीन उपचार प्रक्रिया विकसित की है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- भूजल
- आर्सेनिक संदूषण

मुख्य बिंदु:

- IISc के अनुसार, तीन-चरणीय विधि, जो पेटेंट के लिए लंबित है, यह भी सुनिश्चित करती है कि हटाए गए भारी धातुओं का निपटान पर्यावरण के अनुकूल और सतत तरीके से किया जाए, न कि अनुपचारित भारी धातु-समृद्ध कीचड़ को लैंडफिल में भेजा जाए।
  - जहां से वे संभावित रूप से पुनः भूजल में प्रवेश कर सकते हैं।
- IISc ने कहा कि रिपोर्टों के अनुसार, भारत के 21 राज्यों के 113 जिलों में आर्सेनिक का स्तर 0.01 मिलीग्राम प्रति लीटर से अधिक है।
- जबकि 23 राज्यों के 223 जिलों में फ्लोराइड का स्तर 1.5 मिलीग्राम प्रति लीटर से अधिक है, जो भारतीय मानक ब्यूरो और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा निर्धारित अनुमेय सीमा से परे है।
- ये संदूषक मानव और पशु स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं, जिसके लिए उन्हें कुशलतापूर्वक हटाने और सुरक्षित निपटान की आवश्यकता होती है।
- औसतन, ये कार्बनिक प्रजातियाँ भूजल में मौजूद अकार्बनिक रूप की तुलना में लगभग 50 गुना कम विषाक्त होती हैं।
- IISc ने कहा कि इस प्रणाली को जोड़ना और संचालित करना आसान है। सोखने वाली सामग्री के निर्माण में एक सरल विधि का उपयोग होता है।
- प्रयोगशाला में, एक छोटी पायलट-स्केल अवशोषण स्तंभ प्रणाली तीन दिनों तक दो लोगों के लिए सुरक्षित पेयजल (WHO मानकों के अनुसार) उत्पन्न करने में सक्षम थी।
- शोधकर्ता इन प्रणालियों को बिहार के भागलपुर और कर्नाटक के चिकबल्लापुर जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में तैनात करने और उनका परीक्षण करने के लिए गैर सरकारी संगठनों, इनरैम फाउंडेशन और अर्थवॉच के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

81. भारत की टीबी डायग्नोस्टिक तकनीक को WHA में सराहना मिली - द हिंदू

समाचार:

- भारत में विकसित ट्रूनेट (Truenat) प्लेटफॉर्म की टीबी से लड़ने में अपनी भूमिका के लिए तथा वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल समाधान के संभावित घटक के रूप में सराहना की गई है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- ट्रूनेट
- WHA

मुख्य बिंदु:

- ट्रूनेट को पहली बार वर्ष 2017 में लॉन्च किया गया था और यह एक वास्तविक समय मात्रात्मक माइक्रो-PCR प्रणाली है।
- यह पोर्टेबल, बैटरी से चलने वाली मशीन है जिसे प्रयोगशालाओं, स्वास्थ्य केंद्रों और क्षेत्र में इस्तेमाल किया जा सकता है।
- ट्रूनेट एक घंटे से भी कम समय में नमूनों से परिणाम देता है और 40 से अधिक बीमारियों की जांच कर सकता है।
- जिन देशों ने ट्रूनेट (Truenat) का उपयोग शुरू किया है, उन सभी ने मामले का पता लगाने में महत्वपूर्ण सुधार की सूचना दी है
- ट्रूनेट का उपयोग राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत 7,000 से अधिक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में किया जाता है और देश में लगभग 1,500 निजी प्रयोगशालाओं में भी इसका उपयोग किया जा रहा है।

- विश्व स्वास्थ्य सभा (WHO की निर्णय लेने वाली संस्था) में , सहयोग करने वाले ग्लोबल फंड ने व्यापक जागरूकता पैदा करने और डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके गहन निगरानी कार्यक्रमों के माध्यम से टीबी को खत्म करने की भारत की प्रतिबद्धता की सराहना की।
- टीबी से लड़ने के लिए शीघ्र निदान और उपचार अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे हर वर्ष अनुमानतः 480,000 भारतीय या प्रतिदिन 1,400 से अधिक रोगी मरते हैं।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर साल टीबी के 10 मिलियन से अधिक नए मामले सामने आते हैं, तथा अकेले भारत में वैश्विक टीबी रोगियों की संख्या 27% है।

82. NSSO सर्वेक्षण: COVID-19 की 2nd लहर ने अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया- द हिंदू

समाचार:

- भारत का बड़ा अनौपचारिक गैर-कृषि क्षेत्र कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर से बुरी तरह प्रभावित हुआ था, लेकिन तब से धीरे-धीरे इसमें सुधार हुआ है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- अनौपचारिक क्षेत्र
- NSSO

मुख्य बिंदु:

- ऐसा प्रतीत होता है कि असंगठित विनिर्माण, व्यापार और अन्य सेवा गतिविधियाँ महामारी की दूसरी लहर से बुरी तरह प्रभावित हुईं; हालाँकि, जुलाई 2021 से स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हुआ
- अप्रैल-जून 2021 के दौरान, सबसे घातक कोविड लहर के चरम पर, अनुमानित अनौपचारिक उद्यमों की संख्या कम आंकी गई थी।
- इसके विपरीत, जनवरी और मार्च 2022 के बीच किए गए सर्वेक्षणों ने एक अलग तस्वीर पेश की गई थी
- NSSO ने कहा कि पहली तिमाही में कम रिपोर्टिंग ने 2021-22 के लिए कुल वार्षिक अनुमानों को काफी हद तक प्रभावित किया है, जिसमें 5.97 करोड़ फर्में हैं, जिनमें लगभग 9.8 करोड़ कर्मचारी हैं।
- अक्टूबर 2022 और मार्च 2023 के बीच, अनुमानित अनौपचारिक फर्मों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- नौकरियों में यह 7.84% वार्षिक वृद्धि रोजगार सृजन करने की इस क्षेत्र की क्षमता को दर्शाती है
- इस अवधि के दौरान रोजगार में अधिकतम वृद्धि अन्य सेवाओं (13.42%) में देखी गई, उसके बाद विनिर्माण (6.34%) का स्थान रहा।
- सांख्यिकी मंत्रालय द्वारा जारी सर्वेक्षण डेटा का उपयोग राष्ट्रीय खाता सांख्यिकी संकलित करने में किया जाता है क्योंकि देश का असंगठित गैर-कृषि क्षेत्र रोजगार सृजन, आर्थिक मूल्य सृजन और समग्र सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

83. विद्युत चुम्बक आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका हैं - द हिन्दू

समाचार:

- ब्रिटिश भौतिक विज्ञानी विलियम स्टर्जन द्वारा वर्ष 1824 में आविष्कृत विद्युत चुम्बक आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं, जो लाउडस्पीकरों, मोटरों, मैग्नेटिक रेजोनेंस इमेजिंग (MRI) मशीनों, मैग्लेव ट्रेनों और कण त्वरक में दिखाई देते हैं।
- जब विद्युत धारा किसी तार से होकर प्रवाहित होती है, तो यह उत्पन्न होती है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- राइट हैण्ड थंब रूल

विद्युत चुम्बक (इलेक्ट्रोमैग्नेट)

- ये ऐसे उपकरण हैं जो विद्युत धारा को तार की कुंडली से प्रवाहित करने पर चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं।
- चुंबकीय क्षेत्र कुंडली के छिद्र में केंद्रित होता है।
- विद्युत धारा को समायोजित करके चुंबकीय क्षेत्र की ताकत को नियंत्रित किया जा सकता है। जब विद्युत धारा बंद कर दी जाती है, तो चुंबकीय क्षेत्र गायब हो जाता है।
- **निर्माण और सामग्री:** विद्युत चुम्बक में आमतौर पर लोहे जैसे लौहचुम्बकीय पदार्थों से बने चुंबकीय कोर के चारों ओर लपेटे गए तार का एक कुंडल होता है। चुंबकीय कोर कोर के भीतर चुंबकीय डोमेन को संरेखित करके चुंबकीय क्षेत्र की स्ट्रेंथ को बढ़ाता है।

अनुप्रयोग:

- इलेक्ट्रोमैग्नेट का उपयोग विभिन्न उद्योगों में भारी धातु की वस्तुओं को उठाने और स्थानांतरित करने, सामग्रियों को छांटने और गति उत्पन्न करने जैसे कार्यों के लिए किया जाता है।

- इनका उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में इमेजिंग के लिए तथा इलेक्ट्रिक डोरबेल और कार्ड रीडर जैसे उपभोक्ता उपकरणों में भी किया जाता है।

84. केवल दो वर्षों में अंतरिक्ष स्टार्टअप्स में 200 गुना वृद्धि- पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- इसरो
- NSIL

समाचार:
- केवल दो वर्षों में अंतरिक्ष स्टार्टअप्स में लगभग 200 गुना वृद्धि हुई है,
- मंत्री ने कहा कि यह बड़ी उपलब्धि प्रधानमंत्री द्वारा अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए खोलने तथा बड़े पैमाने पर सार्वजनिक-निजी भागीदारी की अनुमति देने के लिए लिए गए प्रमुख नीतिगत निर्णय के कारण संभव हो पाई है।

मुख्य बिंदु:
- अंतरिक्ष स्टार्टअप्स की संख्या वर्ष 2022 में 1 से बढ़कर वर्ष 2024 में लगभग 200 हो गई है, जो इन वर्षों में 200 गुना की अभूतपूर्व वृद्धि है।
- अकेले वर्ष 2023 में भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में लगभग 1000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा।
- इसके अलावा, यह उद्योग अमृत काल के दौरान प्रधानमंत्री के "सबका प्रयास" के विजन की पुष्टि करते हुए लगभग 450 MSME को सेवाएं प्रदान करता है।
- वर्ष 2030 तक वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी वर्ष 2021 की तुलना में 4 गुना बढ़ जाएगी।
- वर्ष 2021 में भारतीय अंतरिक्ष उद्योग ने वैश्विक हिस्सेदारी में 2% का योगदान दिया। वर्ष 2030 तक इसके 8% और वर्ष 2047 तक 15% तक बढ़ने की उम्मीद है।
- वर्तमान में भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में 100% FDI की अनुमति देता है, जिससे इस क्षेत्र में नवाचार और विकास के नए क्षितिज खुलते हैं।
- निजी क्षेत्र उन्नत लघु उपग्रहों, भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों, कक्षीय स्थानांतरण वाहनों आदि के विकास के लिए नए समाधान प्रस्तुत कर सकता है।
- इसरो द्वारा निजी खिलाड़ियों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (ToT) के बारे में। अब तक, 403 ऐसे हस्तांतरण हुए हैं और वर्ष 2023 तक NSIL/INSPACE द्वारा अतिरिक्त 50 हस्तांतरण किए जाएंगे।
- इसरो की अगले 100 दिनों की योजनाओं और उसके निर्धारित प्रक्षेपणों में निसार कार्यक्रम भी शामिल है जो नासा और इसरो के बीच एक संयुक्त पृथ्वी-अवलोकन मिशन है।
- सूची में अन्य कार्यक्रमों में जीसैट-20, पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान का लैंडिंग अभ्यास, अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग आदि शामिल हैं।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने अंतरिक्ष क्षेत्र के अनुसंधान एवं विकास में निजी क्षेत्र की भूमिका को भी स्वीकार किया।

85. IIIT-दिल्ली ने ट्रिनिटी चैलेंज में संयुक्त रूप से दूसरा पुरस्कार जीता - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- AMR
- AMRSense और OASIS

समाचार:
- इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली (IIIT-दिल्ली) की एक परियोजना ने ट्रिनिटी चैलेंज में संयुक्त रूप से दूसरा पुरस्कार जीता है।

मुख्य अंश:
- यह परियोजना रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) के बढ़ते खतरे से निपटने पर आधारित थी।
- ट्रिनिटी चैलेंज एक चैरिटी है जो वैश्विक स्वास्थ्य खतरों से बचाने में मदद करने के लिए डेटा-संचालित समाधानों के निर्माण का समर्थन करती है।
- AMRSense सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (CHW) को AMR निगरानी और प्रबंधन में संलग्न करने, प्रेरित करने और प्रशिक्षित करने की चुनौतियों का समाधान करता है, जो व्यापक डेटा पारिस्थितिकी तंत्र और विश्लेषण क्षमताओं की कमी से और भी जटिल हो जाती है।
- भारत में, जहां 9,00,000 से अधिक आशा कार्यकर्ताओं को सीमित जागरूकता, अपर्याप्त प्रशिक्षण और कम प्रेरणा का सामना करना पड़ता है, समुदाय स्तर पर AMR डेटा संग्रह और साक्ष्य-आधारित प्रबंधन में महत्वपूर्ण अंतर है।
- AMRSense इन मुद्दों को चार प्रमुख घटकों के माध्यम से हल करता है:
- सटीक और सरलीकृत डेटा संग्रह के लिए एआई-सहायता प्राप्त डेटा रिकॉर्डिंग टूल के साथ CHW को सशक्त बनाकर सामुदायिक सहभागिता
- एंटीबायोटिक बिक्री, खपत के एकीकरण के माध्यम से एकीकृत AMR डेटा पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर डेटा एकीकरण

- ओपन-सोर्स टूल्स और API का उपयोग करके WHONet-अनुरूप निगरानी डेटा;
- AMR पर एकीकृत अंतर्दृष्टि के लिए वनहेल्थ इकोसिस्टम में फ़ेडरेटेड एनालिटिक्स का उपयोग करके और निगरानी और मूल्यांकन के लिए एएमरौरा स्कोरकार्ड का उपयोग करके पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण करना।
- IIIT-Delhi परियोजना को भारत की ही एक अन्य परियोजना के साथ दूसरा पुरस्कार मिला, जिसका शीर्षक था OASIS : अनौपचारिक स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए वनहेल्थ एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप'।

86. इसरो डेटा से केरल के दो बांधों पर बाढ़ के जोखिम के विश्लेषण में मदद मिलेगी- टाइम्स ऑफ इंडिया

प्रीलिम्स टेकअवे
- इसरो

समाचार:
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने केरल में मुल्लापेरियार और इडुक्की बांधों से जुड़े बाढ़ के खतरे को कम करने के लिए सहायता प्रदान की है।

मुख्य बिंदु
- भारत का विविध भूदृश्य, मौसमी वर्षा तथा अप्रत्याशित जलवायु इसे बाढ़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाते हैं।
- असम, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में 40 मिलियन हेक्टेयर से अधिक भूमि बाढ़-प्रवण है।
- कुछ क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति को कई कारक और बदतर बना देते हैं।
- इनमें घटते वन, उचित योजना के बिना तेजी से बढ़ता शहरी विकास और असंवहनीय कृषि पद्धतियां शामिल हैं।
- बाढ़ विनाश की लहर लेकर आती है, जीवन लेती है, लोग विस्थापित होते हैं, फसलें नष्ट होती हैं तथा बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचता है।

आपदा प्रबंधन में इसरो की भूमिका
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन बाढ़ सहित विभिन्न आपदा प्रबंधन अनुप्रयोगों के लिए उपग्रहों का उपयोग करता है।
- ये सरकारी निकायों को वास्तविक समय पर बाढ़ के मानचित्र उपलब्ध कराते हैं, जिससे तेजी से निकासी और राहत कार्य संभव हो पाते हैं।
- इसरो हिमालय में हिमनद झीलों पर भी सतर्क नजर रखता है, जो अचानक और विनाशकारी बाढ़ का संभावित स्रोत हैं।
- इसके अतिरिक्त, उच्च-रिज़ॉल्यूशन उपग्रह डेटा बाढ़ मॉडल बनाने और बांधों और अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के पास संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है।
- आपदाओं के दौरान प्रभावी ढंग से संचार करने के लिए, इसरो भुवन और NDEM जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण जानकारी साझा करने के लिए करता है।
- इस डेटा में बाढ़ के नक्शे, मौसम पूर्वानुमान और हुई क्षति का आकलन शामिल है।
- बाढ़ प्रबंधन के अलावा, इसरो के उपग्रह टेलीमेडिसिन परियोजनाओं को भी सहायता प्रदान करते हैं, जो दूरदराज के क्षेत्रों को शहरी केन्द्रों में चिकित्सा विशेषज्ञों से जोड़ते हैं।
- इसी प्रकार, टेली-शिक्षा पहल के माध्यम से ग्रामीण समुदायों तक शैक्षिक संसाधन पहुंचाए जाते हैं।

87. कड़े नियम भारत में AI के विकास में बाधा डाल सकते हैं: विशेषज्ञ- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- AI और डीपफेक
- आईटी नियम, 2021

समाचार:
- भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के लिए विनियामक परिदृश्य के साथ संघर्ष चल रहा है, एक ऐसा क्षेत्र जिसने हाल के वर्षों में तेजी से विकास देखा है, विशेषज्ञों का मानना है कि सख्त नियम देश की उभरती हुई AI-संचालित व्यवस्था को बाधित कर सकते हैं।

मुख्य बिंदु:
- वर्तमान में, भारत में डीप फेक जैसे जनरेटिव AI को सीधे संबोधित करने वाले विशिष्ट कानून नहीं हैं।
  - इसके बजाय इसने AI प्रौद्योगिकियों के जिम्मेदार विकास और कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने के लिए कई सलाह और दिशा-निर्देश पेश किए हैं।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कई "डीपफेक" वीडियो क्लिप वायरल होने के बाद,
  - इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने सोशल मीडिया मध्यस्थों को 36 घंटे के भीतर ऐसी सामग्री को हटाने के लिए कहा, जो कि आईटी नियम, 2021 में उल्लिखित आवश्यकता है।

अदालत में याचिका

- दिल्ली उच्च न्यायालय ने केंद्र से AI और डीप फेक के अनियमित उपयोग के खिलाफ एक जनहित याचिका (PIL) पर जवाब देने को कहा।
- डीपफेक वीडियो में किसी मौजूदा वीडियो में मौजूद व्यक्ति की समानता को किसी अन्य व्यक्ति के साथ बदलने के लिए AI का उपयोग किया जाता है।
- हाल ही में, डीपफेक तकनीक को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं, क्योंकि यह अत्यधिक वास्तविक नकली वीडियो तैयार कर सकती है, जिनका दुरुपयोग गलत सूचना फैलाने, फर्जी समाचार बनाने या झूठे आख्यान तैयार करने के लिए किया जा सकता है।
- याचिका में कहा गया है कि तकनीकी विकास तेजी से हो रहा है, जबकि कानून बहुत धीमी गति से आगे बढ़ रहा है।
- MeitY ने 1 मार्च को एक एडवाइजरी जारी की जिसमें कहा गया कि सभी जनरेटिव AI उत्पाद, जैसे कि ChatGPT और Google के Gemini की तर्ज पर बड़े भाषा मॉडल, को "भारत सरकार की स्पष्ट अनुमति के साथ" उपलब्ध कराया जाना चाहिए, यदि वे "अंडर-टेस्टिंग / अविश्वसनीय" हैं।
- हालाँकि, इस सलाह को अस्पष्ट होने के कारण विशेषज्ञों द्वारा आलोचना का सामना करना पड़ा।
  - इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने एक ताजा परामर्श जारी कर सरकार से "स्पष्ट अनुमति" प्राप्त करने की आवश्यकता को समाप्त कर दिया है।
- नवीनतम सलाह में कहा गया है कि कम परीक्षण किए गए या अविश्वसनीय AI उत्पादों को एक अस्वीकरण के साथ लेबल किया जाना चाहिए जो दर्शाता है कि ऐसे उत्पादों द्वारा उत्पन्न आउटपुट अविश्वसनीय हो सकते हैं।
- सेंटर फॉर डिजिटल इकोनॉमी पॉलिसी रिसर्च (C-DEP) ने कहा कि सलाह है,
  - एक अतिरिक्त योग्यता है कि सभी AI-जनरेटेड सामग्री जो संभावित रूप से गलत सूचना का कारण बन सकती है, उसे स्पष्ट रूप से AI जनरेटेड के रूप में लेबल किया जाना चाहिए।
  - यह सलाह वास्तव में उद्योग में बाधा नहीं डालती है,
- सॉफ्टवेयर फ्रीडम लॉ सेंटर (SFLC) ने सुझाव दिया कि सरकार को "सार्वजनिक हितों की रक्षा करने और प्रौद्योगिकी से जुड़े भविष्य के नुकसान से बचाने के लिए मौजूदा कानूनों को अपडेट करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

88. इसरो के पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान पुष्पक का परीक्षण सफल रहा- द हिंदू

समाचार:

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने तीसरा पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यान लैंडिंग प्रयोग (RLV LEX) सफलतापूर्वक पूरा किया

प्रीलिम्स टेकअवे

- RLV LEX
- ISRO

मुख्य बिंदु:

- यह प्रयोग कर्नाटक के चित्रदुर्ग स्थित वैमानिकी परीक्षण रेंज में सफलतापूर्वक पूरा किया गया।
- RLV LEX-01 और LEX-02 मिशनों की सफलता के बाद, RLV LEX-03 ने अधिक चुनौतीपूर्ण रिलीज स्थितियों और अधिक गंभीर हवा की स्थिति के तहत RLV की स्वायत्त लैंडिंग क्षमता का फिर से प्रदर्शन किया।
- अंतरिक्ष एजेंसी के पंख वाले वाहन पुष्पक को भारतीय वायु सेना के चिनूक हेलीकॉप्टर से 4.5 किमी की ऊंचाई पर छोड़ा गया।
- इसरो ने कहा कि 4.5 किमी दूर स्थित प्रक्षेपण स्थल से पुष्पक ने स्वचालित रूप से क्रॉस-रेंज सुधार प्रक्रिया पूरी की, रनवे के पास पहुंचा और रनवे की मध्य रेखा पर सटीक क्षैतिज लैंडिंग की है।
- अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि इस मिशन ने अंतरिक्ष से लौटने वाले वाहन के लिए दृष्टिकोण और लैंडिंग इंटरफेस और उच्च गति वाली लैंडिंग स्थितियों का अनुकरण किया, जो RLV के विकास के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण तकनीकों को प्राप्त करने में इसकी विशेषज्ञता की पुष्टि करता है।
- इसरो ने कहा कि LEX ने इनर्शियल सेंसर, रडार अल्टीमीटर, फ्लश एयर डेटा सिस्टम और NavIC जैसे सेंसर का इस्तेमाल किया।
- उल्लेखनीय रूप से, LEX-03 मिशन ने LEX-02 मिशन के पंखयुक्त ढांचे और उड़ान प्रणालियों का बिना किसी संशोधन के पुनः उपयोग किया, जिससे उड़ान प्रणालियों के पुनः उपयोग हेतु इसरो की डिजाइन क्षमता की मजबूती का प्रदर्शन हुआ।

89. चीन का चांग'ए-6 यान चंद्रमा से नमूने लेकर पृथ्वी पर लौटा - द हिंदू

समाचार:

- चीन का चांग'ए-6 यान चंद्रमा के कम खोजे गए दूरवर्ती भाग से चट्टान और मिट्टी के नमूने लेकर पृथ्वी पर लौटा है, जो विश्व में पहली बार हुआ है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- आर्टेमिस एकॉर्ड
- मून मिशन

मुख्य बिंदु:

- चीनी वैज्ञानिकों का अनुमान है कि लौटाए गए नमूनों में 2.5 मिलियन वर्ष पुरानी ज्वालामुखी चट्टानें और अन्य सामग्री शामिल होगी
  - वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इससे चंद्रमा के दोनों ओर भौगोलिक अंतर से जुड़े सवालों के जवाब मिल जाएंगे।
- निकट वाला भाग पृथ्वी से दिखाई देता है, और दूर वाला भाग बाहरी अंतरिक्ष की ओर है। दूर वाले भाग में पहाड़ और प्रभाव क्रेटर भी पाए जाते हैं, जो चंद्रमा के निकट वाले भाग पर दिखाई देने वाले अपेक्षाकृत सपाट विस्तार के विपरीत है।

हाई होप्स

- यह यान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव-ऐटकेन बेसिन में उतरा था।
  - यह एक प्रभाव गड्ढा है जो 4 अरब वर्ष से भी अधिक पहले निर्मित हुआ था।
- वैज्ञानिकों को जिन नमूनों की उम्मीद है, वे संभवतः बेसिन की विभिन्न परतों से आएंगे, जिनमें विभिन्न भूवैज्ञानिक घटनाओं के निशान होंगे।
- जबकि पिछले अमेरिकी और सोवियत मिशनों ने चंद्रमा के निकटवर्ती भाग से नमूने एकत्र किए थे, चीनी मिशन पहला था जिसने चंद्रमा के दूरवर्ती भाग से नमूने एकत्र किए थे।

90. चंद्रयान-4 के पुर्जे दो प्रक्षेपणों के लिए भेजे जाएंगे: इसरो प्रमुख

समाचार:

- इसरो अध्यक्ष ने कहा कि चंद्रयान-4, जो चंद्रमा से नमूने लेकर आएगा, एक बार में प्रक्षेपित नहीं किया जाएगा, बल्कि इसके बजाय, अंतरिक्ष यान के विभिन्न भागों को दो प्रक्षेपणों के माध्यम से कक्षा में भेजा जाएगा, तथा चंद्रमा पर जाने से पहले अंतरिक्ष यान को अंतरिक्ष में ही जोड़ा जाएगा।

प्रीलिम्स टेकअवे

- इसरो
- NGLV

मुख्य बिंदु:

- चंद्रयान-4 की वहन क्षमता इसरो के वर्तमान सबसे शक्तिशाली रॉकेट की वहन क्षमता से भी अधिक होने की उम्मीद है।
- अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन और सभी पूर्ववर्ती समान सुविधाएं अंतरिक्ष में विभिन्न भागों को जोड़कर बनाई गई थीं।
- हालाँकि, यह संभवतः दुनिया में पहली बार होगा कि किसी अंतरिक्ष यान को टुकड़ों में प्रक्षेपित किया जाएगा और फिर अंतरिक्ष में उसे जोड़ा जाएगा।
- इसरो अंतरिक्ष में डॉकिंग क्षमता (अंतरिक्षयान के विभिन्न भागों को जोड़ना) की आवश्यकता पर काम कर रहा है, चाहे वह पृथ्वी हो या चंद्रमा।
- चंद्रमा से वापसी यात्रा पर अंतरिक्ष यान मॉड्यूलों का डॉकिंग एक बहुत ही नियमित प्रक्रिया है।
- अंतरिक्ष यान का एक हिस्सा मुख्य अंतरिक्ष यान से अलग होकर उतर जाता है जबकि दूसरा हिस्सा चंद्रमा की कक्षा में ही रहता है। जब उतरने वाला हिस्सा चंद्रमा की सतह से बाहर निकलता है, तो वह परिक्रमा करने वाले हिस्से से जुड़ जाता है और फिर से एक इकाई बन जाता है।
- चंद्रयान-4 मिशन के लिए विस्तृत अध्ययन, आंतरिक समीक्षा और लागत पर काम किया गया है, जिसे जल्द ही मंजूरी के लिए सरकार के पास भेजा जाएगा।

- यह उन चार परियोजना प्रस्तावों में से एक है, जिसे अंतरिक्ष एजेंसी अपने विजन 2047 के अनुरूप मंजूरी लेने की योजना बना रही है, जिसमें भारत द्वारा वर्ष 2035 तक अपना स्वयं का अंतरिक्ष स्टेशन बनाने और वर्ष 2040 तक चंद्रमा पर मानव भेजने की परिकल्पना की गई है।
- भारत का अंतरिक्ष स्टेशन, जिसका नाम भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) है, भी अनेक प्रक्षेपणों के माध्यम से बुनियादी ढांचे के विभिन्न भागों को ले जाकर स्थापित किया जाएगा।
- "BAS के पहले खंड को LVM3 रॉकेट का उपयोग करके प्रक्षेपित किया जा सकता है क्योंकि यह आज उपलब्ध एकमात्र रॉकेट है और हमने निर्णय लिया है कि वर्ष 2028 तक हमें BAS का पहला प्रक्षेपण कर लेना चाहिए।
- इसरो प्रमुख ने कहा कि BAS के बाद के मॉड्यूल को या तो LVM3 के उन्नत संस्करण या नेक्स्ट जेनरेशन लॉन्च व्हीकल (NGLV) द्वारा उठाया जाएगा, जो एक भारी रॉकेट है जिसका विकास अभी चल रहा है। उन्होंने कहा कि NGLV के लिए पूर्ण डिजाइन और उत्पादन योजना तैयार कर ली गई है।
- इसरो बड़े और भारी NGLV के लिए एक नया लॉन्च कॉम्प्लेक्स भी बना रहा है। उन्होंने कहा कि मौजूदा लॉन्च कॉम्प्लेक्स 4,000 टन के रॉकेट के लिए पर्याप्त नहीं होगा। "इसके लिए एक बड़ी सुविधा और प्रसंस्करण क्षमता की आवश्यकता है।

ENVIRONMENT

91. तमिलनाडु वन विभाग ने मैंग्रोव कवर की सुरक्षा के लिए 20 गांवों के पैनल बनाए- द हिंदू

समाचार:

- अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) ने मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के अपने पहले वैश्विक मूल्यांकन में तमिलनाडु, श्रीलंका और मालदीव के तटीय क्षेत्रों में मैंग्रोव को 'गंभीर रूप से संकटग्रस्त' की श्रेणी में रखा है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- IUCN
- मैंग्रोव

मुख्य बिंदु:

- मैंग्रोव आवरण की सुरक्षा के लिए तमिलनाडु वन विभाग ने 20 ग्राम मैंग्रोव समितियों का गठन किया है।
- IUCN के आकलन के अनुसार, दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और गर्म समशीतोष्ण तटों पर फैले 36 भौगोलिक क्षेत्रों में से केवल दक्षिण भारत, श्रीलंका और मालदीव तथा गर्म तापमान वाला उत्तर-पश्चिमी अटलांटिक क्षेत्र ही गंभीर रूप से संकटग्रस्त है।
- दक्षिण भारतीय पारिस्थितिकी क्षेत्र में, अध्ययन के लिए मैंग्रोव पर विचार किया गया।
- मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र जैव विविधता संरक्षण, स्थानीय समुदायों को आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- IUCN के अनुसार, मैंग्रोव के लिए खतरे तेजी से बढ़ रहे हैं।
  - लकड़ी के दोहन, कृषि और झींगा पालन के कारण वनों की कटाई, तथा बांध निर्माण के कारण मीठे पानी और तलछट प्रवाह में परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभाव।
  - मैंग्रोव को जलवायु परिवर्तन के कारण अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें समुद्र के स्तर में वृद्धि और चक्रवाती तूफानों की आवृत्ति और गंभीरता में वृद्धि शामिल है।
- भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट के अनुसार, तमिलनाडु में मैंग्रोव का विस्तार वर्ष 2001 से वर्ष 2021 तक दोगुना हो गया है (45 वर्ग किमी)।
- विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित तमिलनाडु तटीय पुनरुद्धार मिशन के अंतर्गत तमिलनाडु के जिलों में मैंग्रोव पुनरुद्धार का कार्य पूरा हो चुका है।
- राज्य सरकार मैंग्रोव की सुरक्षा में स्थानीय समुदायों की भूमिका को भी मान्यता दे रही है।
- इसके लिए, स्थानीय लोगों को मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र का स्वामित्व लेने और इससे लाभ उठाने के लिए 20 ग्राम पैनल गठित किए गए थे।

92. वैश्विक परियोजना ने भारत में वायु प्रदूषण के साक्ष्य प्रस्तुत किए - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- पार्टिकुलेट मैटर
- लाइट पेंटिंग एप्रोच

समाचार:
- शोधकर्ताओं और कलाकारों ने मिलकर पेंटिंग विद लाइट नामक अंतर्राष्ट्रीय परियोजना शुरू की, जिसका उद्देश्य भारत में अदृश्य वायु प्रदूषण को दृश्यमान बनाना है।

मुख्य बिंदु:
- डिजिटल लाइट पेंटिंग और कम लागत वाले वायु प्रदूषण सेंसर को मिलाकर, वैज्ञानिक टीम ने तीन देशों भारत, इथियोपिया और यू.के. के शहरों में प्रदूषण के स्तर के फोटोग्राफिक साक्ष्य तैयार किए।
- पार्टिकुलेट मैटर या PM, वायु प्रदूषक है जो मानव रुग्णता और मृत्यु दर के लिए सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार है। इसका शारीरिक स्वास्थ्य पर कई तरह के प्रभाव पड़ते हैं और यह हृदय रोग, स्ट्रोक और कैंसर जैसी बीमारियों के लिए ज़िम्मेदार है।
- पेंटिंग विद लाइट टीम ने PM द्रव्यमान सांद्रता को मापने के लिए कम लागत वाले वायु प्रदूषण सेंसर का उपयोग किया। PM सांद्रता बढ़ने पर तेज़ी से चमकने के लिए प्रोग्राम किए गए मूविंग LED ऐरे को नियंत्रित करने के लिए सेंसर को रीयल-टाइम सिग्नल की आवश्यकता थी।
- वायु प्रदूषण की दृश्यात्मक समझ उपलब्ध कराकर, जो उन लोगों के लिए भी सुलभ हो जिनके पास वैज्ञानिक पृष्ठभूमि नहीं है
- लाइट पेंटिंग एप्रोच यह प्रदर्शित कर सकता है कि वायु प्रदूषण के स्तर को प्रबंधित करने से लोगों के दैनिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

वायु प्रदूषण
- वायु प्रदूषण को पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य दोनों के लिए मुख्य खतरों में से एक माना जाता है और वैश्विक स्तर पर मृत्यु का एक प्रमुख कारण है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) का अनुमान है कि वैश्विक आबादी का 99% प्रदूषित हवा में सांस लेता है, जिससे हर साल दुनिया भर में लगभग 7 मिलियन असामयिक मौतें होती हैं।
- स्थिति विशेष रूप से एशिया में चुनौतीपूर्ण है, जहाँ वायु प्रदूषण भारत और चीन जैसे देशों में कई वायु गुणवत्ता नीतियों और कार्रवाइयों के बावजूद एक बड़ी समस्या बनी हुई है।

93. COP-29 में 'शांति' और 'युद्धविराम' का आह्वान किया जाएगा- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- COP
- अज़रबाइजान

समाचार:
- अज़रबाइजान में आयोजित होने वाला वार्षिक जलवायु सम्मेलन "शांति" और "युद्धविराम" पर विशेष जोर देगा, ताकि देश चल रहे संघर्षों के बीच जलवायु समाधानों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

मुख्य बिंदु
- कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (COP) के 29वें संस्करण में, जैसा कि जलवायु सम्मेलन को कहा जाता है, दुबई में 28वें संस्करण में तय किए गए एजेंडा बिंदुओं को आगे बढ़ाया जाएगा, जैसे कि
  - जीवाश्म ईंधन के उपयोग से दूर जाने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता।
  - न्यायसंगत, व्यवस्थित और समान तरीके से, वर्ष 2050 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना।
- अज़रबाइजान COP-29 की कार्यवाही की अध्यक्षता करेगा और जलवायु संकट से निपटने के लिए देशों को आम सहमति बनाने का प्रयास करेगा।
- अधिकांश देश इस समस्या की गंभीरता पर सहमत हैं तथा सदी के अंत तक तापमान को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक बढ़ने से रोकने की आवश्यकता पर सहमत हैं।
- विकसित और विकासशील देशों के बीच गहरा विभाजन यह है कि वर्ष 2009 में विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के लिए वर्ष 2020 और वर्ष 2025 के बीच प्रति वर्ष 100 बिलियन डॉलर जुटाने की प्रतिबद्धता को आंशिक रूप से ही पूरा किया जा सका है।
- वर्ष 2024 तक 100 बिलियन डॉलर से अधिक का नया वार्षिक लक्ष्य तय किया जाना है तथा इस बात पर सहमति बनाई जानी है कि यह अनुदान या ऋण के रूप में होगा।
- विश्व विभाजित है लेकिन अज़रबाइजान का रुख यह है कि जलवायु मुद्दा कुछ अलग है।

- भू-राजनीतिक मामलों में देश अलग-अलग पक्षों पर हो सकते हैं, लेकिन जलवायु सभी को प्रभावित करती है और इसके लिए एक समावेशी प्रक्रिया की आवश्यकता है।
- COP-युद्धविराम का प्रस्ताव किया जा रहा है। COP के दौरान, सभी युद्ध बंद हो जाने चाहिए।

94. भारत को नवीकरणीय ऊर्जा के लिए 385 अरब डॉलर तक खर्च करेगा'- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- नवीकरणीय ऊर्जा
- कार्बन नेट जीरो

समाचार:
- भारत को वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट (GW) अक्षय ऊर्जा (RE) के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए 385 बिलियन डॉलर तक का निवेश करना होगा, लेकिन कोयला अगले दशक तक बिजली उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत बना रहेगा।

मुख्य बिंदु:
- भारत एक प्रमुख ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक है।
  - 500 गीगावाट के लक्ष्य को पूरा करने के लिए गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता को प्रति वर्ष 50 गीगावाट बढ़ाने का लक्ष्य है।
  - वह वर्ष 2022 तक 175 गीगावाट का लक्ष्य हासिल करने से चूक गया।
- भारत को खर्च करना होगा-
  - अगले छह से सात वर्षों में क्षमता पर 190 बिलियन डॉलर से 215 बिलियन डॉलर तक खर्च किया जाएगा।
  - ट्रांसमिशन और वितरण के लिए 150 से 170 बिलियन डॉलर का प्रावधान रखा है
- भारत के मजबूत नीतिगत समर्थन ने वित्त वर्ष 2023-24 में अपने विद्युत क्षमता मिश्रण में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी को लगभग 43% तक बढ़ा दिया, जिससे निजी निवेश आकर्षित हुआ।

एक सस्टेनेबल वर्ल्ड का निर्माण
- भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोग करने वाला देश है।
- नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता में भारत विश्व में चौथे स्थान पर है।
- देश ने COP26 में वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा का लक्ष्य निर्धारित किया है।
- यह पंचामृत के तहत एक प्रमुख प्रतिज्ञा रही है। यह अक्षय ऊर्जा में दुनिया की सबसे बड़ी विस्तार योजना है।

95. भारत नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जन में दूसरे स्थान पर - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- N20 उत्सर्जन
- पेरिस समझौता

समाचार:
- भारत नाइट्रस ऑक्साइड (N2O) उत्सर्जन का विश्व का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है।

मुख्य बिंदु:
- नाइट्रस ऑक्साइड (N2O) , एक ग्रीनहाउस गैस है जो कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में वायुमंडल को कहीं अधिक गर्म करती है।
- वर्ष 2020 में ऐसे वैश्विक मानव निर्मित उत्सर्जनों में लगभग 11% भारत से थे, तथा 16% के साथ केवल चीन ही दूसरे स्थान पर था।
- अर्थ सिस्टम साइंस डेटा पत्रिका में प्रकाशित N2Oउत्सर्जन के वैश्विक आकलन के अनुसार, इन उत्सर्जनों का प्रमुख स्रोत उर्वरक का उपयोग है
- अध्ययन में कहा गया है कि वर्ष 2022 में वायुमंडलीय N2O की सांद्रता 336 भाग प्रति बिलियन तक पहुंच जाएगी, जो औद्योगिक युग से पहले के स्तर से लगभग 25% अधिक है।
- इसकी तुलना में, जल वाष्प के बाद प्रमुख ग्रीनहाउस गैस कार्बन डाइऑक्साइड की सांद्रता वर्ष 2022 में 417 भाग प्रति मिलियन थी।
- इसका मतलब है कि वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड का वर्तमान स्तर नाइट्रस ऑक्साइड की तुलना में हज़ार गुना अधिक है, जिससे जलवायु परिवर्तन को रोकने की कोशिश कर रहे देशों के बीच कार्बन डाइऑक्साइड में कमी बड़ी प्राथमिकता बन गई है।
- हालाँकि, चूँकि नाइट्रस ऑक्साइड वायुमंडल में लंबे समय तक रहता है और तेज़ी से बढ़ रहा है, इसलिए हाल के वर्षों में वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि इसे भी अधिक तत्परता से निपटा जाना चाहिए।

N2O उत्सर्जन के स्रोत

- मांस और डेयरी उत्पादों की बढ़ती मांग ने भी खाद उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से उत्सर्जन में वृद्धि में योगदान दिया है, जिससे N2O उत्सर्जन भी होता है।
- पिछले दशक में अमोनिया और पशु खाद जैसे नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग करने वाले कृषि उत्पादन ने कुल मानवजनित N2O उत्सर्जन में 74% का योगदान दिया।
    - पशु आहार के उत्पादन में प्रयुक्त नाइट्रोजन उर्वरकों के कारण भी इस वृद्धि में योगदान मिला है।
- मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न N2O उत्सर्जन ग्रीनहाउस गैसों के प्रभावी विकिरण बल के 6.4% के लिए जिम्मेदार है, तथा इसने वर्तमान वैश्विक तापमान में लगभग 0.1°C की वृद्धि की है।
- वर्ष 2020 में मानवजनित N2O उत्सर्जन की मात्रा के हिसाब से शीर्ष पांच उत्सर्जक देश चीन (16.7%), भारत (10.9%), संयुक्त राज्य अमेरिका (5.7%), ब्राज़ील (5.3%), और रूस (4.6%) थे।

आगे की राह

- एक बार उत्सर्जित होने के बाद, N2O औसत मानव जीवन काल (117 वर्ष) से अधिक समय तक वायुमंडल में रहता है, और इसलिए इसका जलवायु और ओजोन पर प्रभाव लंबे समय तक रहता है।
- पेरिस समझौते के अनुरूप शुद्ध-शून्य उत्सर्जन मार्गों के लिए, मानवजनित N2O उत्सर्जन को वर्ष 2050 तक वर्ष 2019 के स्तर के सापेक्ष कम से कम 20% कम करना होगा।

96. पश्चिमी घाट में ESA की सीमा में कटौती की मांग - द इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- कस्तूरीरंगन रिपोर्ट
- पश्चिमी घाट

समाचार:

- कर्नाटक, महाराष्ट्र और गोवा ऐसे राज्य हैं जहां केंद्र ने पश्चिमी घाटों की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्र (ESA) का प्रस्ताव दिया है।
    - लेकिन इन राज्यों ने विकास कार्यों की अनुमति देने के लिए इन ESA की सीमा में कटौती की मांग की है।

मुख्य बिंदु:

- यद्यपि पैनल राज्यों की मांगों पर विचार करेगा, लेकिन वह पारिस्थितिकी संरक्षण के सिद्धांतों पर कायम रहेगा तथा एक समान दृष्टिकोण अपनाएगा।
- कर्नाटक, जहां 20,668 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को ESA के रूप में प्रस्तावित किया गया था, कस्तूरीरंगन पैनल की रिपोर्ट का विरोध जारी रखा और कहा कि इससे क्षेत्र के लोगों की आजीविका प्रभावित होगी।
- गोवा ने राज्य में ESA के रूप में निर्धारित क्षेत्र को कम करने की भी मांग की है
- कस्तूरीरंगन पैनल ने 37 प्रतिशत घाटों को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील माना था तथा कुछ गतिविधियों पर प्रतिबंध या विनियमन की सिफारिश की थी।

पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्रों के बारे में:

- पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्र (ESA) संरक्षित क्षेत्रों, राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के आसपास 10 किलोमीटर के दायरे में स्थित हैं।
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के तहत पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) द्वारा ESA को अधिसूचित किया जाता है।
- इसका मूल उद्देश्य राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के आसपास कुछ गतिविधियों को विनियमित करना है ताकि नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र पर ऐसी गतिविधियों के नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।

97. MNRE और IREDA ने वैश्विक पवन दिवस पर भुवनेश्वर में सम्मेलन का आयोजन किया - पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- MNRE
- ग्रीन हाइड्रोजन

समाचार:

- नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) ने भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी लिमिटेड (IREDA) के सहयोग से भुवनेश्वर में वैश्विक पवन दिवस के लिए एक पूर्व-कार्यक्रम सम्मेलन का आयोजन किया।

मुख्य बिंदु:

- इसमें पूरे भारत में नवीकरणीय ऊर्जा के तीव्र विकास पर जोर दिया गया तथा ओडिशा राज्य सहित भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर प्रकाश डाला गया।

- राष्ट्रीय पवन ऊर्जा संस्थान (NIWE) के अनुसार, भारत की तटीय पवन ऊर्जा क्षमता जमीनी स्तर से 150 मीटर ऊपर 1,164 गीगावाट अनुमानित है, जबकि ओडिशा की क्षमता 12 गीगावाट है।
- ओडिशा की महत्वपूर्ण ग्रीन ऊर्जा क्षमता और राज्य में आशाजनक अवसर है।
- इसके अलावा, ग्रीन हाइड्रोजन परियोजनाओं में अग्रणी होने की ओडिशा की क्षमता, टिकाऊ ऊर्जा पहलों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।
- IREDA ने अक्षय ऊर्जा में 1,25,917 करोड़ रुपये का संचयी ऋण वितरित किया है, जिसमें देश भर में पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए 26,913 करोड़ रुपये वितरित किए गए हैं।
    - विशेष रूप से, ओडिशा में अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए IREDA द्वारा 1,637 करोड़ रुपये का ऋण वितरित किया गया है।
- ओडिशा की अक्षय ऊर्जा नीति 2022, जिसका उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा में निवेश को बढ़ावा देना है, जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा विनिर्माण और ग्रीन हाइड्रोजन, ग्रीन अमोनिया और फ्लोटिंग सोलर जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- उन्होंने सतत राष्ट्रीय विकास के लिए अक्षय ऊर्जा के दोहन के महत्वपूर्ण महत्व की पुष्टि की और अक्षय ऊर्जा डेवलपर्स को ओडिशा और अन्य राज्यों में बढ़ते अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

98. पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2024: भारत 180 देशों में 176वें स्थान पर- द प्रिंट

प्रीलिम्स टेकअवे
- पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक

समाचार:
- ग्रीनहाउस गैसों का तीसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक भारत, 2024 पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (EPI) में वायु गुणवत्ता, अनुमानित उत्सर्जन और जैव विविधता और आवास के मामले में सबसे निचले पायदान वाले देशों में रखा गया है।

मुख्य बिंदु
- येल सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल लॉ एंड पॉलिसी तथा कोलंबिया सेंटर फॉर इंटरनेशनल अर्थ साइंस इंफॉर्मेशन नेटवर्क द्वारा 5 जून को जारी समग्र सूचकांक में भारत 180 देशों में 176वें स्थान पर है, जो पाकिस्तान, वियतनाम, लाओस और म्यांमार से केवल ऊपर है।
- यह पिछले EPI की तुलना में मामूली सुधार है, जिसमें भारत सबसे निचले स्थान पर था।

EPI रिपोर्ट के मुख्य बिंदु
- **शीर्ष प्रदर्शनकर्ता:** एस्टोनिया शीर्ष स्थान पर है, जिसने वर्ष 1990 के बाद से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में बड़ी कमी दिखाई है।
- पश्चिमी यूरोप और पूर्वी यूरोप के देशों का समग्र प्रदर्शन अच्छा है, जो मजबूत पर्यावरणीय प्रयासों को दर्शाता है।
- **भारत की निम्न रैंकिंग** : भारत सबसे निचले पायदान (176वें स्थान) पर है, जबकि कुछ ही देशों की रैंकिंग इससे भी खराब है। वायु गुणवत्ता, उत्सर्जन और जैव विविधता विशेष रूप से चिंताजनक क्षेत्र हैं।
- **कोयले पर निर्भरता नुकसानदेह:** भारत की कोयले पर भारी निर्भरता इसकी निम्न रैंकिंग का एक बड़ा कारण है। कोयले के इस्तेमाल से वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन दोनों ही बढ़ते हैं।
- **क्षेत्र में सबसे खराब वायु गुणवत्ता:** दक्षिण एशिया में भारत की वायु गुणवत्ता सबसे खराब है, यहां तक कि वह पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों से भी आगे है।
- **सीमापार प्रदूषण** : भारत पड़ोसी देशों को प्रभावित करने वाले वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा स्रोत है, जो इस क्षेत्र में सार्वजनिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहा है।
- जलवायु परिवर्तन के प्रयासों में आशा की किरण दिखाई देती है कुल मिलाकर कम स्कोर के बावजूद, भारत को जलवायु परिवर्तन में बेहतर रैंकिंग (133वीं) मिली है। अक्षय ऊर्जा में निवेश और वर्ष 2070 तक शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य इसमें योगदान देता है।
- **वित्तीय आवश्यकताएँ** : अपने जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भारत को शमन प्रयासों के लिए प्रतिवर्ष अतिरिक्त 160 बिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी।
- **श्रेणीवार मिश्रित प्रदर्शन** : अपशिष्ट प्रबंधन, वन और कृषि ने भारत के स्कोर को बढ़ाया है, जबकि वायु गुणवत्ता, उत्सर्जन और जैव विविधता ने इसे नीचे गिराया है।

99. भारत, चीन, ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने सस्ता बायोडीजल बनाने के लिए उत्प्रेरक विकसित किया

प्रीलिम्स टेकअवे
- सुपरहाइड्रोफोबिक उत्प्रेरक
- बायोडीजल

समाचार:
- भारत, चीन और ब्रिटेन के वैज्ञानिकों की एक टीम ने एक जल-विकर्षक उत्प्रेरक विकसित किया है, जो "पर्यावरण के अनुकूल" बायोडीजल के उत्पादन की लागत में कटौती कर सकता है।

मुख्य बिंदु:
- बायोडीजल के उत्पादन के दौरान जल उपोत्पाद को झेलने के लिए गोलाकार सुपरहाइड्रोफोबिक सक्रिय कार्बन उत्प्रेरक तक पहुंचने की प्रक्रिया को सहकर्मी-समीक्षित एडवांस्ड फंक्शनल मैटेरियल्स के नवीनतम अंक में प्रकाशित किया गया है।
- कमल के पत्तों जैसी प्राकृतिक सतहों के नमीरोधी या जल-विकर्षक गुणों की नकल करने वाले सुपरहाइड्रोफोबिक उत्प्रेरक, सक्रिय स्थलों को पानी द्वारा विषाक्तता से बचाने की उनकी क्षमता के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं, जो कि साइट पर या उप-उत्पाद के रूप में उत्पादित होते हैं।
- इसका मतलब है कि उत्प्रेरक अत्यधिक प्रभावी रहता है और इसका कई बार पुन: उपयोग किया जा सकता है, जिससे उत्प्रेरक प्रक्रिया अधिक कुशल और लागत प्रभावी हो जाती है।
- बायोमास (सेल्यूलोज) से प्राप्त यह उत्प्रेरक पारिस्थितिकी दृष्टि से सौम्य, प्रचुर मात्रा में और अत्यधिक किफायती है।
- इस सफलता से बायोडीजल उत्पादन की लागत में उल्लेखनीय कमी आने की संभावना है, जिससे संधारणीय ऊर्जा अधिक सुलभ हो सकेगी
- वर्तमान में भारत में बायोडीजल की कीमत लगभग ₹100 या 1.2 डॉलर प्रति लीटर है।
- सुपरहाइड्रोफोबिक सक्रिय कार्बन उत्प्रेरक का उपयोग करके लागत को लगभग 37 सेंट प्रति लीटर तक कम किया जा सकता है।
- संधारणीय ऊर्जा की खोज में बायोडीजल एक प्रमुख भूमिका निभाता है।
- यह नवोन्मेषी उत्प्रेरक व्यापक रूप से अपनाए जाने तथा ग्रीन भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, क्योंकि यह उत्पादन प्रक्रिया को अधिक कुशल, लागत प्रभावी तथा पर्यावरण अनुकूल बनाता है।

100. NHAI राष्ट्रीय राजमार्गों पर मियावाकी वृक्षारोपण के साथ ग्रीन आवरण बढ़ाएगा-पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- मियावाकी तकनीक
- वृक्ष आवरण

समाचार:
- राष्ट्रीय राजमार्गों को हरित आवरण से परिपूर्ण करने के लक्ष्य को साकार करने के लिए, NHAI विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय राजमार्गों से सटे भूखंडों पर मियावाकी वृक्षारोपण करने की एक अनूठी पहल करेगा।

मुख्य बिंदु:
- मियावाकी बागानों की स्थापना के लिए दिल्ली-NCR में और इसके आसपास विभिन्न स्थानों पर 53 एकड़ से अधिक भूमि क्षेत्र की पहचान की गई है।
- मियावाकी वृक्षारोपण, जिसे मियावाकी पद्धति के नाम से भी जाना जाता है, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और वनरोपण विकास के लिए एक अद्वितीय जापानी दृष्टिकोण है।
- इस पद्धति का उद्देश्य क्षेत्र में घने, देशी और जैवविविधता वाले वनों का निर्माण करना है।
- ये वन भूजल को बनाए रखते हैं और भूजल स्तर को पुनः भरने में मदद करते हैं।
  - इस पद्धति से पेड़ दस गुना तेजी से बढ़ते हैं और पौधे ध्वनि और धूल अवरोधक के रूप में कार्य करते हैं।
  - उन देशी प्रजातियों के पौधों को लगाने पर ध्यान दिया जाएगा जो स्थानीय जलवायु और मिट्टी की स्थितियों में जीवित रह सकें।
- मियावाकी वनों का विकास एक लचीले पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में योगदान देगा, जिससे पर्यावरण और स्थानीय समुदाय दोनों को अनेक लाभ प्राप्त होंगे।
  - इसके कई दीर्घकालिक लाभ भी होंगे, जिनमें सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में सुधार, जैसे वायु और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार शामिल है।

- इससे जैव विविधता संरक्षण, कुशल कार्बन अवशोषण, मृदा पुनरुद्धार तथा स्थानीय वनस्पतियों और जीवों के लिए आवास निर्माण में भी मदद मिलेगी।
- दिल्ली/NCR में मियावाकी वृक्षारोपण की सफलता के आधार पर, पूरे देश में इसी तरह का पैटर्न अपनाया जाएगा।
- मियावाकी पद्धति का उपयोग करते हुए, हरित आवरण में वृद्धि से न केवल राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे रहने वाले नागरिकों के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ाने में मदद मिलेगी,
- इससे NCR में राष्ट्रीय राजमार्गों पर आवागमन की सुन्दरता और आनंद में भी वृद्धि होगी।

101. जून में देश के उत्तर-पश्चिमी व मध्य भागों में सामान्य से अधिक तापमान रहने का अनुमान: IMD - द हिंदू

समाचार:

- भारतीय शहर अपने असंतुलित विकास के कारण जल निकायों को निगल रहे हैं और ग्रीनहाउस उत्सर्जन में वृद्धि कर रहे हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे
- हीटवेव
- आर्द्रभूमि

मुख्य बिंदु:

- भारतीय मौसम विभाग (IMD) ने जून में दिल्ली सहित देश के उत्तर-पश्चिम और मध्य भागों में सामान्य से अधिक तापमान का अनुमान लगाया है, जिससे यह सबसे लंबे समय तक चलने वाली हीटवेव में से एक बन गई है।
- IMD का ताप-लहर मानदंड मैदानी इलाकों में 40 डिग्री और पहाड़ी इलाकों में 30 डिग्री से शुरू होता है , जहां ऊंचाई के कारण आमतौर पर ठंडक रहती है।
- असंतुलित शहरी विकास, जिसके कारण आर्द्रभूमि और जल निकाय कम हो गए हैं , एक अन्य कारक था
- ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी बढ़ गया है।
- पारगम्य स्थान काफी कम हो गए हैं। शहर वास्तव में हीट ट्रैप्स बन गए हैं।
  - परिणामस्वरूप, रातें लगभग दिन जितनी ही असुविधाजनक होती हैं।
- पिछले महीने प्रकाशित सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) के एक अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2001 से वर्ष 2010 तक गर्मियों के दौरान दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता और मुंबई जैसे शहरों में भूमि की सतह का तापमान दिन के समय के अधिकतम तापमान से रात में 13.2 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता था।
- वर्ष 2014 और वर्ष 2023 के बीच वे केवल 11.5 डिग्री सेल्सियस तक ठंडे हो जायेंगे।
- दिल्ली की दीर्घकालिक योजना में भवनों में तापरोधी क्षमता बढ़ाना, शहरी गरीबों और झुग्गीवासियों के लिए आश्रय स्थल विकसित करना, तथा जल निकायों को ठंडा करने में निवेश करना शामिल है।
  - ऐसी योजनाओं को वित्तीय सहायता की आवश्यकता है
  - क्योंकि शहर अपनी वित्तीय स्थिति से जूझ रहे हैं और उनके पास गर्मी से निपटने के लिए कार्रवाई करने हेतु अतिरिक्त बजट नहीं है।

102. काजीरंगा में सीसिलियन की नई प्रजाति मिली

समाचार:

- काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एवं बाघ अभयारण्य के जीव-जंतुओं में एक अंगहीन उभयचर को शामिल किया गया है।
- असम के वन्यजीव अधिकारियों ने कहा कि हर्पेटोफ़ौना विज्ञानियों की एक टीम ने बाघ अभयारण्य में तीव्र हर्पेटोफ़ौना सर्वेक्षण के दौरान पहली बार धारीदार सीसिलियन (इचथियोफिस spp) को दर्ज किया है।
- हर्पेटोफ़ौना और उभयचर, जिन्हें सामूहिक रूप से हर्पेटोफ़ौना कहा जाता है, सबसे कम अध्ययन किए गए हैं लेकिन जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे अधिक संवेदनशील हैं।
- सीसिलियन अंगहीन उभयचर होते हैं जो अपना अधिकांश जीवन मिट्टी के नीचे बिताते हैं।
- इसलिए, उभयचर प्रजातियों में वे सबसे कम अध्ययन किये गये हैं।
- चूंकि वे एक प्राचीन प्रजाति हैं, इसलिए उनकी उपस्थिति विकास और अंतरमहाद्वीपीय प्रजाति-विकास से महत्वपूर्ण संबंध रखती है।
- काजीरंगा का विविध पारिस्थितिकी तंत्र, जिसमें बाढ़ के मैदान, आर्द्रभूमि, घास के मैदान और परिधि पर पहाड़ी क्षेत्र शामिल हैं, हर्पेटोफ़ौना जीवों के लिए एक आदर्श आवास प्रदान करता है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- हर्पेटोफ़ौना
- सीसिलियन

- इस बाघ अभयारण्य में उभयचरों की 24 प्रजातियाँ और हर्पेटोफ़ौनों की 74 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यह भारत में पाए जाने वाले कछुओं और मीठे पानी के कछुओं की 29 प्रजातियों में से 21 का भी घर है।
- इन महत्वपूर्ण प्रजातियों के बेहतर प्रबंधन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर्पेटोफौना की पहचान और संरक्षण में वन कर्मियों के कौशल को बढ़ाने के लिए एक प्रशिक्षण और संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।"

103. मेथनॉल स्वास्थ्य के लिए कितना खतरनाक हो सकता है? - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- मेथनॉल

मुख्य अंश:
- तमिलनाडु के कल्लाकुरिची जिले में जहरीली शराब पीने से कम से कम 38 लोगों की मौत हो गई, जबकि 82 अन्य का अस्पतालों में इलाज चल रहा है।

शराब में अल्कोहल
- मनोरंजन के उद्देश्य से पिए जाने वाले पेय पदार्थों में अल्कोहल लगभग हमेशा इथेनॉल होता है।
- इस संदर्भ में, इथेनॉल तकनीकी रूप से एक मनो-सक्रिय दवा है, जो कम खुराक में शरीर में न्यूरोट्रांसमिशन के स्तर को कम कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप इसका विशिष्ट नशीला प्रभाव पैदा होता है।
- आम धारणा के विपरीत, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पाया है कि "इसका कोई भी सेवन हमारे स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित नहीं है"।
- दीर्घकालिक उपयोग से निर्भरता बढ़ती है, कुछ कैंसर और हृदय रोग का खतरा बढ़ता है, और अंततः मृत्यु भी हो सकती है।
- इथेनॉल (C2H5OH) एक कार्बन परमाणु है जो तीन हाइड्रोजन परमाणुओं और एक और कार्बन परमाणु से बंधा होता है; दूसरा कार्बन परमाणु भी दो हाइड्रोजन परमाणुओं और हाइड्रॉक्सिल समूह से बंधा होता है, जिसे आयन OH भी कहा जाता है।
- शरीर के अंदर, इथेनॉल का चयापचय यकृत और आमाशय में अल्कोहल डिहाइड्रोजनेज (ADH) एंजाइम द्वारा एसीटैल्डिहाइड में हो जाता है।
- इसके बाद, एल्डिहाइड डिहाइड्रोजनेज (ALDH) एंजाइम द्वारा एसीटैल्डिहाइड को एसीटेट में बदल दिया जाता है।
- शराब के सेवन से होने वाले प्रतिकूल प्रभाव, हैंगओवर से लेकर कैंसर तक, एसीटैल्डिहाइड के कारण होते हैं।

नकली शराब
- नकली शराब की पहचान यह होती है कि इसमें तरल मिश्रण में मेथनॉल भी होता है।
- कई पुराने मामलों में, नकली शराब आम तौर पर घर पर बनाई गई शराब होती थी, जिसमें नशीले प्रभाव को बढ़ाने के लिए मेथनॉल मिलाया जाता था
- खाद्य सुरक्षा और मानक (मादक पेय) विनियम 2018 विभिन्न मदिराओं में मेथनॉल की अधिकतम स्वीकार्य मात्रा निर्धारित करता है।

मेथनॉल
- मेथनॉल अणु (CH3OH) में एक कार्बन परमाणु तीन हाइड्रोजन परमाणुओं और एक हाइड्रॉक्सिल समूह से बंधा होता है।
- **खतरनाक रसायन** विनिर्माण, भंडारण और आयात नियम, 1989 की अनुसूची-I में मेथनॉल शामिल है।
- भारतीय मानक IS 517 इस बात पर लागू होता है कि मेथनॉल की गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित की जाए और तमिलनाडु विकृत स्पिरिट, मिथाइल अल्कोहल और वार्निश (फ्रेंच पॉलिश) नियम 1959 के साथ, मेथनॉल पैकेजिंग पर क्या संकेत अंकित होने चाहिए।
- मेथनॉल के उत्पादन का सबसे सामान्य तरीका 50-100 atm दबाव और 250 डिग्री सेल्सियस पर उत्प्रेरक के रूप में तांबा और जस्ता ऑक्साइड की उपस्थिति में कार्बन मोनोऑक्साइड और हाइड्रोजन को संयोजित करना है।
- प्राचीन मिस्र में पूर्व-औद्योगिक युग में लोग लकड़ी को बहुत उच्च तापमान पर गर्म करके मेथनॉल (कई अन्य उपोत्पादों के साथ) बनाते थे।
- मेथनॉल के कई औद्योगिक अनुप्रयोग हैं, जिनमें एसिटिक एसिड, फॉर्मेल्डिहाइड और एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन के अग्रदूत के रूप में उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग विलायक और एंटीफ्रीज के रूप में भी किया जाता है।
- तमिलनाडु में मेथनॉल के निर्माण, व्यापार, भंडारण और बिक्री के लिए 1959 के नियमों के तहत लाइसेंस की आवश्यकता होती है।

नकली शराब से कैसे मृत्यु होती है?
- एक बार अंतर्ग्रहण हो जाने पर, ADH एंजाइम यकृत में मेथनॉल का चयापचय कर फॉर्मेल्डिहाइड (H-CHO) बनाते हैं।

- फिर ALDH एंजाइम फॉर्मेल्डिहाइड को फॉर्मिक एसिड (HCOOH) में परिवर्तित कर देते हैं।
- समय के साथ फॉर्मिक एसिड के संचय से मेटाबॉलिक एसिडोसिस नामक स्थिति पैदा होती है, जो एसिडेमिया का कारण बन सकती है: जब रक्त का pH अपने सामान्य मान 7.35 से कम हो जाता है, तो यह तेज़ी से अम्लीय हो जाता है।
- 'मेटाबोलिक एसिडोसिस' में 'मेटाबोलिक' का अर्थ है बाइकार्बोनेट आयन की सांद्रता कम हो रही है, जिसके कारण एसिड का प्रभुत्व बढ़ रहा है।
- फॉर्मिक एसिड साइटोक्रोम ऑक्सीडेज नामक एंजाइम में भी हस्तक्षेप करता है, जिससे कोशिकाओं की ऑक्सीजन का उपयोग करने की क्षमता बाधित होती है और लैक्टिक एसिड का निर्माण होता है और एसिडोसिस में योगदान होता है।

मेथनॉल-विषाक्तता का उपचार

- एक बार मेथनॉल शरीर में प्रवेश कर जाए तो शरीर को इसे पूरी तरह से बाहर निकालने में कुछ समय लगता है।
- मेथनॉल विषाक्तता के उपचार के दो तात्कालिक तरीके हैं। पहला तरीका है फार्मास्युटिकल-ग्रेड इथेनॉल का प्रयोग करना।
- दूसरा विकल्प फोमेपिज़ोल नामक विषहर औषधि का प्रयोग करना है , जिसमें समान क्रियाविधि होती है: यह ADH एंजाइम्स की क्रिया को धीमा कर देता है, जिससे शरीर में फॉर्मेल्डिहाइड का उत्पादन इतनी तेजी से होने लगता है कि शरीर उसे शीघ्रता से बाहर निकाल देता है, जिससे घातक प्रभाव उत्पन्न होने से रोका जा सकता है।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ता व्यक्ति को रक्त से मेथनॉल और फॉर्मिक एसिड लवण को हटाने के लिए डायलिसिस भी करवा सकते हैं, और गुर्दे और रेटिना को होने वाले नुकसान को कम कर सकते हैं
- ये फोलिनिक एसिड भी दे सकते हैं , जो फॉर्मिक एसिड को कार्बन डाइऑक्साइड और पानी में तोड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- फोमेपिज़ोल और फोलिनिक एसिड दोनों ही विश्व स्वास्थ्य संगठन की आवश्यक दवाओं की सूची में हैं।

104. नॉर्ड स्ट्रीम लीक: बाल्टिक समुद्री जल में हजारों टन मीथेन घुल सकता है-डाउन टू अर्थ

समाचार:

प्रीलिम्स टेकअवे
- मानचित्र आधारित प्रश्न
- मीथेन

- एक नए अध्ययन ने बाल्टिक सागर में नॉर्ड स्ट्रीम पाइपलाइनों को नुकसान पहुंचाने वाले सितंबर 2022 के विस्फोटों से निकलने वाली मीथेन के भाग्य पर प्रकाश डाला है।
- शोध में बताया गया है कि यद्यपि काफी मात्रा में मीथेन बच गई, तथापि विस्फोटों के बाद 10,000 से 50,000 टन मीथेन संभवतः आसपास के पानी में घुल गई।

मुख्य बिंदु

- नॉर्ड स्ट्रीम विस्फोटों से उत्सर्जित मीथेन ऐसी घटनाओं में सबसे बड़ी मात्रा में उत्सर्जित होने वाली गैसों में से एक है, जो इसके पर्यावरणीय महत्व को रेखांकित करती है।
- घटना के दौरान, दरारों से मीथेन उत्सर्जन वायुमंडल में प्रति घंटे 79 टन तक पहुंच गया, जो सात दिनों में कुल मिलाकर लगभग 40,000 टन हो गया था।
- समुद्री जल में मीथेन की सांद्रता 10,000 से 55,000 मीट्रिक टन तक है।
- इससे सूक्ष्मजीवी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए संभावित खतरा पैदा हो सकता है तथा मीथेन-उपभोक्ता बैक्टीरिया की वृद्धि पर भी असर पड़ सकता है।

नॉर्ड स्ट्रीम पाइपलाइन

- रूस के गज़प्रोम द्वारा निर्मित नॉर्ड स्ट्रीम 1 (NS1) और नॉर्ड स्ट्रीम 2 (NS2) बाल्टिक सागर में 1,200 किलोमीटर तक फैले हैं, जिनमें से प्रत्येक में दो बड़े पाइप हैं।
- इन्हें रूस से जर्मनी तक सालाना 110 बिलियन क्यूबिक मीटर प्राकृतिक गैस पहुँचाने के लिए डिज़ाइन किया गया था।
- सितंबर 2022 में स्वीडिश और डेनिश जलक्षेत्र में कई स्थानों पर विस्फोटों के कारण NS1 और NS2 दोनों क्षतिग्रस्त हो गए, जिससे वे परिचालन से बाहर हो गए।
- इस घटना से मीथेन के उत्सर्जन के कारण महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चिंताएं उत्पन्न हो गईं।
- शीर्षक था OASIS : अनौपचारिक स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए वनहेल्थ एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप'।

105. संपीड़ित बायोगैस क्षमता में उत्तर प्रदेश देश में अग्रणी राज्य - डाउन टू अर्थ

प्रीलिम्स टेकअवे
- बायोगैस

समाचार:
- दिल्ली स्थित थिंक टैंक सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के नवीकरणीय ऊर्जा परिदृश्य में उत्तर प्रदेश का उल्लेखनीय स्थान है, जहां देश की 24 प्रतिशत संपीड़ित बायोगैस (CBG) उत्पन्न करने की क्षमता है।

मुख्य बिंदु
- **CBG क्षमता:** उत्तर प्रदेश संभावित रूप से किफायती परिवहन के लिए सतत विकल्प योजना के तहत देश भर में परिकल्पित 5,000 CBG संयंत्रों में से 1,000 CBG परियोजनाएं स्थापित कर सकता है।
- **फीडस्टॉक उपलब्धता:** पश्चिमी उत्तर प्रदेश, विशेष रूप से मुजफ्फरनगर, मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर, बुलंदशहर और अलीगढ़ फीडस्टॉक उपलब्धता के मामले में समृद्ध हैं और राज्य के अधिकांश कार्यात्मक और आगामी CBG संयंत्र यहीं स्थित हैं।
- **सहायक नीतियाँ:** उत्तर प्रदेश की एक महत्वाकांक्षी जैव ऊर्जा नीति है, जिसके तहत CBG के लिए 750 करोड़ रुपये (वर्ष 2022-27) आवंटित किए गए हैं, साथ ही सब्सिडी, पट्टे के लिए भूमि और अन्य प्रोत्साहन भी प्रदान किए गए हैं।

106. भारत की सबसे बड़ी तेंदुआ सफारी बन्नेरघट्टा में खुली- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- बिग कैट्स
- बंनेर्घट्टा

समाचार:
- दक्षिण भारत की पहली और देश की सबसे बड़ी तेंदुआ सफारी का उद्घाटन कर्नाटक के बन्नेरघट्टा जैविक उद्यान में किया गया।
- सफारी के लिए केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण के दिशानिर्देशों के अनुसार, सफारी के लिए 20 हेक्टेयर क्षेत्र का सीमांकन कर बाड़ लगा दी गई है।

मुख्य बिंदु:
- खुले वन क्षेत्र में सफारी के लिए आठ तेंदुओं को छोड़ा गया है।
- बन्नेरघट्टा में स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाले तेंदुओं (पेंथेरा पार्डस) की अच्छी आबादी रहती है, और इन शिकारियों पर प्रकाश डालना महत्वपूर्ण है।
- तेंदुआ सफारी क्षेत्र प्राकृतिक चट्टानी चट्टानों और अर्ध-पर्णपाती वनों से युक्त ऊबड़-खाबड़ भूभाग से बना है।
- अधिकारियों ने बताया कि हाल के दिनों में मानव-पशु संघर्ष में वृद्धि के कारण, पूरे कर्नाटक से बचाए गए कई तेंदुए के बच्चे पार्क में आते हैं।
- इन शावकों को तेंदुआ सफारी में ले जाया जाएगा, ताकि आगंतुकों को इन बड़ी बिल्लियों, बढ़ते मानव-पशु संघर्षों के कारणों और जानवरों की सुरक्षा के तरीकों के बारे में जानने में मदद मिल सके।
- अधिकारियों ने बताया कि सफारी क्षेत्र के भीतर चार एकड़ भूमि को सौर बाड़ लगाकर अलग कर दिया गया है, ताकि जानवरों को उनके नए वातावरण के अनुकूल ढलने में मदद मिल सके।

अन्य पहल
- कई नई पहलों की भी घोषणा की गई, जिनमें एक पुनर्निर्मित हाथी छुड़ाने केंद्र, तितली पार्क में एक शिशु देखभाल कक्ष, बच्चों के लिए खेल का मैदान, एक प्रवेश द्वार शामिल है, और उन्होंने इलेक्ट्रिक बग्गी और चिड़ियाघर प्रतिष्ठानों को भी हरी झंडी दिखाई।
- एक नर हाथी का बच्चा "स्वराज" और छह हमाद्रियास बबून भी सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए हैं।
- चिड़ियाघर और तितली पार्क के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए स्काईवॉक भी विकसित किए जा रहे हैं।

107. IISER तिरुपति ने मेथनॉल और पैराफॉर्मेल्डिहाइड से हाइड्रोजन उत्पादन विधि विकसित की- पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था
- मेथनॉल

समाचार:
- शोधकर्ताओं ने हल्की परिस्थितियों में मेथनॉल और पैराफॉर्मेल्डिहाइड के मिश्रण से हाइड्रोजन गैस उत्पन्न करने की एक नवीन सिंथेटिक विधि विकसित की है।
- यह विधि विशेष रूप से प्रभावी साबित हुई है
  - एल्काइनों का एल्केनों में हाइड्रोजनीकरण और

- यह संयोजन एक आशाजनक हाइड्रोजन वाहक हो सकता है, जो रासायनिक संश्लेषण और संधारणीय ऊर्जा समाधान में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करेगा।

- जीवाश्म ईंधनों की तीव्र कमी ने वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की खोज को बढ़ावा दिया है, जिससे संधारणीय और नवीकरणीय संसाधनों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।
- हाइड्रोजन गैस उत्पादन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें ऊर्जा भंडारण, परिवहन और विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं में जीवाश्म ईंधनों का स्थान लेने की क्षमता है।
- मेथनॉल और पैराफॉर्मेल्डिहाइड, दोनों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है, तथा ये हाइड्रोजन वाहक के रूप में व्यवहार्य उम्मीदवार के रूप में उभरे हैं।
- उनकी प्रचुरता और व्यापक निर्माण उन्हें हाइड्रोजन के भंडारण और परिवहन के लिए मूल्यवान बनाता है, जो मुक्त हाइड्रोजन की तुलना में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है।
- शोध में बेस या एक्टिवेटर की आवश्यकता के बिना मेथनॉल और पैराफॉर्मलडिहाइड से हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए व्यावसायिक रूप से उपलब्ध निकल उत्प्रेरक का उपयोग किया गया है।
- इस कुशल उत्प्रेरक प्रणाली ने हल्की परिस्थितियों में उल्लेखनीय दक्षता प्रदर्शित की है, तथा उत्पन्न हाइड्रोजन को एल्काइनों के रासायनिक और स्टीरियो-चयनात्मक आंशिक स्थानांतरण हाइड्रोजनीकरण में सफलतापूर्वक नियोजित किया गया है।
- इस प्रक्रिया ने संवर्धित सिंथेटिक मूल्य वाले जैवसक्रिय अणुओं तक पहुँच को सक्षम किया।
- इस शोध को ANRF (पूर्ववर्ती SERB, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) का एक सांविधिक निकाय है) द्वारा समर्थित किया गया था।
- यह शोध, जिसे कैटालिसिस साइंस एंड टेक्नोलॉजी पत्रिका में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है, COx-मुक्त हाइड्रोजन उत्पादन के लिए एक नया रास्ता खोलता है, तथा 'हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था' को आगे बढ़ाने में योगदान देता है।
- हाइड्रोजन वाहक के रूप में मेथनॉल और पैराफॉर्मेल्डिहाइड का उपयोग करने की क्षमता, बढ़ती वैश्विक ऊर्जा मांगों से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने की महत्वपूर्ण क्षमता प्रदान करती है।
- यह विकास संधारणीय ऊर्जा समाधान की खोज में एक महत्वपूर्ण कदम है।

108. उत्तराखंड सरकार 13 ग्लेशियल झीलों से उत्पन्न खतरे का अध्ययन करेगी- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- ग्लेशियल झील
- गंगा अपवाह बेसिन

समाचार:
- मानसून के आगमन के साथ ही उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन विभाग (USDMA) 13 ग्लेशियल झीलों का भेद्यता अध्ययन करेगा, जिनमें से पांच "उच्च जोखिम वाले क्षेत्र" में हैं।

मुख्य बिंदु:
- अध्ययन का उद्देश्य लेक ऑउटबर्स्ट जैसी आपदाओं से बचने में मदद के लिए डेटा उपलब्ध कराना है।
- हिमालय के ग्लेशियर जलवायु परिवर्तन के कारण खतरे में थे और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निरंतर जांच की आवश्यकता थी।
- दारमा, लासरयांघाटी और कुटियांगटी घाटी की झीलें
- धौली गंगा बेसिन की वसुधारा ताल झील उच्च जोखिम पैदा कर रही है।
- टीमें पांच संभावित उच्च जोखिम वाली झीलों का बैथिमेट्री अध्ययन शुरू करेंगी।
- अध्ययन से हमें झीलों के आकार, ग्लेशियरों के निर्माण, उनके पिघलने आदि के बारे में सही और सटीक जानकारी मिलेगी।
- USDMA ने भारत-तिब्बत सीमा पुलिस से पांच उच्च जोखिम वाली हिमनद झीलों की स्थिति पर एक रिपोर्ट साझा करने को कहा।

दो विशेषज्ञ दल
- राज्य सरकार ने इन हिमनद झीलों से जुड़े खतरों का आकलन करने के लिए दो विशेषज्ञ दल गठित किए।
- पिछले दशक में उत्तराखंड में दो बड़ी ग्लेशियल झीलों के ऑउटबर्स्ट हो जाने से बाढ़ आई।
- पहली आपदा जून 2013 में केदारनाथ घाटी में हुई थी, जिसके कारण 6,000 लोगों की मृत्यु हुई थी।
- दूसरी घटना फरवरी 2021 में चमोली में ऋषि गंगा घाटी में हुई थी, जिसमें 72 लोगों की जान चली गई थी।

ECONOMY

109. अधिक सड़क परियोजनाओं, उच्च टोल राजस्व से InvITs की शुरूआत को बढ़ावा मिला

प्रीलिम्स टेकअवे
- InvIT
- फास्ट टैग

समाचार:
- वित्त वर्ष 2025 में राजमार्गों के विकास की तीव्र गति के साथ-साथ टोल से राजस्व में वृद्धि और टोल वृद्धि भी महत्वपूर्ण है।
  - सड़क डेवलपर्स को आकर्षित करना,
  - निजी इक्विटी और पेंशन फंड सड़क अवसंरचना निवेश ट्रस्ट स्थापित करेंगे,
  - जिसके अंतर्गत अगले तीन वर्षों में परिसंपत्तियों के दोगुने से अधिक हो जाने की उम्मीद है, जिससे 1 लाख करोड़ रुपये का वृद्धिशील ऋण अवसर पैदा होगा।
- इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (InvITs) के पास वर्ष 2024 में 10,000 किलोमीटर से अधिक सड़क की लंबाई नियंत्रित होगी और वित्त वर्ष 28 तक इसके 22,500 किलोमीटर को पार कर जाने की उम्मीद है।

प्रमुख खरीदार
- हाल के वर्षों में InvITs भारत में परिचालन सड़क परिसंपत्तियों के प्रमुख खरीदारों में से एक के रूप में उभरे हैं, और इसने सड़क डेवलपर्स के लिए पूंजी अनलॉक करने की सुविधा भी प्रदान की है, जब उनकी सड़क परियोजनाएँ परिचालन में आ जाती हैं
- आधा दर्जन से अधिक सड़क InvITs पहले से ही परिचालन में हैं, जबकि कई और निर्माणाधीन हैं।
- सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा सड़क परियोजनाओं का आवंटन पिछले वर्ष की तुलना में बेहतर रहने की उम्मीद है, तथा यह 5-8% अधिक होकर 12,500-13,000 किमी रहने की उम्मीद है।
- चालू वित्त वर्ष में फास्टैग राजस्व ₹77,000 करोड़ तक पहुंचने और वित्त वर्ष 28 तक सालाना ₹1 लाख करोड़ से अधिक होने की उम्मीद है।
- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने टोल दरों में 5% की वृद्धि की घोषणा की, जिससे राजस्व प्राप्ति में और वृद्धि होगी।

पेशेंट पूंजी
- सड़क क्षेत्र को दीर्घकालिक निवेश क्षितिज के साथ धैर्यवान पूंजी की आवश्यकता है।
- InvITs में प्रमुख निवेशक पेंशन फंड और सॉवरेन फंड थे, जिन्होंने दीर्घावधि के लिए निवेश किया था।
- और भी InvITs पाइपलाइन में थे, खासकर NHAI की परिसंपत्तियों के नए मुद्रीकरण कार्यक्रम के साथ।
- अनुमान है कि वित्त वर्ष 25 में NHAI की परिसंपत्ति मुद्रीकरण से उसे टोल-ऑपरेट-ट्रांसफर और InvIT मोड के माध्यम से 33 सड़क परिसंपत्तियों की बिक्री से ₹60,000 करोड़ तक मिल सकते हैं
- हमें उम्मीद है कि InvITs परिचालन सड़क परिसंपत्तियों का अधिग्रहण करना जारी रखेंगे और आने वाले वर्षों में अपने परिसंपत्ति आधार को और बढ़ाएंगे।

110. कुल खाद्यान्न उत्पादन 3288.52 LMT होने का अनुमान - पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- खाद्यान्न उत्पादन
- श्री अन्न

समाचार:
- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने वर्ष 2023-24 के लिए प्रमुख कृषि फसलों का तीसरा अग्रिम अनुमान जारी किया है।

मुख्य बिंदु:
- कुल खाद्यान्न उत्पादन 3288.52 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो वर्ष 2022-23 के खाद्यान्न उत्पादन से थोड़ा कम है
- हालाँकि, यह पिछले पांच वर्षों के औसत खाद्यान्न उत्पादन से 211.00 लाख मीट्रिक टन अधिक है।
- कुल चावल उत्पादन वर्ष 2022-23 में 1357.55 LMT की तुलना में 1367.00 LMT होने का अनुमान है, जो वृद्धि दर्शाता है।
- गेहूं का उत्पादन भी पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ा है।
- श्री अन्न के उत्पादन में पोषक अनाज, अरहर, मसूर और सोयाबीन के साथ वर्ष 2022-23 के उत्पादन की तुलना में मामूली वृद्धि देखी गई।
- खरीफ फसल उत्पादन अनुमान तैयार करते समय फसल कटाई प्रयोग (CCE) आधारित उपज पर विचार किया गया है।

111. देश में वर्ष 2023-24 में बागवानी उत्पादन लगभग 352.23 MT होने का अनुमान - पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- पीएम किसान सम्पदा
- ऑपरेशन ग्रीन्स

समाचार:
- कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और अन्य सरकारी स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर संकलित विभिन्न बागवानी फसलों के क्षेत्र और उत्पादन का वर्ष 2023-24 का दूसरा अग्रिम अनुमान जारी किया है।

मुख्य बिंदु
- देश में वर्ष 2023-24 में बागवानी उत्पादन लगभग 352.23 मिलियन टन होने का अनुमान है, जो वर्ष 2022-23 की तुलना में लगभग 32.51 लाख टन (0.91%) कम है।
- वर्ष 2023-24 में फलों, शहद, फूलों, बागान फसलों, मसालों और सुगंधित एवं औषधीय पौधों के उत्पादन में वृद्धि देखी जाएगी जबकि सब्जियों में कमी आएगी।
- फलों का उत्पादन 112.63 मिलियन टन तक पहुंचने की उम्मीद है।
- सब्जियों का उत्पादन लगभग 204.96 मिलियन टन होने का अनुमान है।
  - प्याज, आलू, बैंगन और अन्य सब्जियों के उत्पादन में कमी आने का अनुमान है।
- प्याज का उत्पादन 242.12 लाख टन होने का अनुमान है, जो लगभग 60 लाख टन कम है।
- देश में आलू उत्पादन में लगभग 34 लाख टन की कमी आने की संभावना है, जिसका मुख्य कारण बिहार और पश्चिम बंगाल में उत्पादन में कमी आना है।
- टमाटर का उत्पादन लगभग 212.38 लाख टन होने की उम्मीद है, जो पिछले वर्ष से 3.98% अधिक है।

भारत में बागवानी क्षेत्र
- भारत फलों और सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- भारतीय बागवानी क्षेत्र कृषि सकल मूल्य वर्धित (GVA) में लगभग 33% का योगदान देता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान देता है।
- निर्यात के मामले में भारत सब्जियों में 14वें और फलों में 23वें स्थान पर है, तथा वैश्विक बागवानी बाजार में इसकी हिस्सेदारी मात्र 1% है।
- भारत में लगभग 15-20% फल और सब्जियां आपूर्ति श्रृंखला या उपभोक्ता स्तर पर बर्बाद हो जाती हैं, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन (GHG) में योगदान होता है।

112. कोयला और लिग्नाइट PSU भूमि पुनरुद्धार और स्थिरता में अग्रणी - पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- विश्व पर्यावरण दिवस 2024
- NDC

समाचार:
- कोयला मंत्रालय ने "कोयला एवं लिग्नाइट PSU में हरित पहल" शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है, जिसमें कोयला एवं लिग्नाइट क्षेत्र के PSU द्वारा खनन-रहित भूमि को बहाल करने एवं पुनर्जीवित करने के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य बिंदु:
- कोयला मंत्रालय के मार्गदर्शन में कोयला और लिग्नाइट सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (PSU) ने न केवल पिछले कुछ वर्षों में कोयला उत्पादन के स्तर में वृद्धि की है, बल्कि विभिन्न शमन उपायों को लागू करके पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित की है।
- चूंकि यह वर्ष मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCCD) की 30वीं वर्षगांठ का प्रतीक है, इसलिए विश्व पर्यावरण दिवस, 2024 का फोकस भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने पर है, जिसका नारा है *"हमारी भूमि। हमारा भविष्य। हम #GenerationRestoration हैं"।*
  - इस विषय में सतत भूमि प्रबंधन के महत्व तथा सभी के लिए सतत भविष्य सुनिश्चित करने के लिए बंजर भूमि के पुनर्वास की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
- इन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने व्यापक वनरोपण और पारिस्थितिकी पुनरुद्धार परियोजनाएं शुरू की हैं, जिससे बंजर भूदृश्यों को हरे-भरे क्षेत्रों में बदला जा रहा है।
- इस तरह की पहल न केवल मरुस्थलीकरण से मुकाबला कराती है और सूखे से निपटने की क्षमता बढ़ाती है, बल्कि कार्बन अवशोषण और जैव विविधता संरक्षण में भी योगदान देती है।

- इन हरित प्रयासों को एकीकृत करके, रिपोर्ट उस महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है जो कोयला क्षेत्र भूमि पुनरुद्धार के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में निभा सकता है।

कोयला एवं लिग्नाइट PSU में हरित पहल

- कोयला मंत्रालय की रिपोर्ट में अन्य संस्थाओं द्वारा कोयला खदानों के भीतर बीज बॉल रोपण, ड्रोन के माध्यम से बीज डालना और मियावाकी वृक्षारोपण जैसी नवीन तकनीकों को अपनाने पर प्रकाश डाला गया है।
- कोयला/लिग्नाइट सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, खनन योजनाओं में उल्लिखित तकनीकी और जैविक अनुसूचियों के अनुसार, खनन से नष्ट हुई भूमि के लिए वैज्ञानिक पुनर्ग्रहण तकनीक का क्रियान्वयन कर रहे हैं।
- इसके अतिरिक्त, वे समुदाय-उन्मुख भूमि उपयोग जैसे कि पुनर्स्थापित वन, इको-पार्क, इको-पर्यटन स्थल आदि में अग्रणी हैं।
- रिपोर्ट के अनुसार, कोयला/लिग्नाइट सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों ने पिछले कुछ वर्षों में कोयला खनन क्षेत्रों में और उसके आसपास लगभग 50,000 हेक्टेयर क्षेत्र में हरित आवरण स्थापित किया है।
- इस सामूहिक प्रयास से प्रति वर्ष लगभग 2.5 मिलियन टन CO2 समतुल्य कार्बन सिंक क्षमता निर्मित होने का अनुमान है।
- यह अनुमान है कि यह रिपोर्ट कोयला सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के बीच भूमि सुधार और प्रबंधन के प्रति प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करेगी, साथ ही कोयला खनन परियोजनाओं में सतत हरित आवरण की स्थापना को भी प्रेरित करेगी।
- यह पहल भारत के हरित आवरण को बढ़ाने में और योगदान देगी, जिससे वर्ष 2030 तक 2.5 से 3.0 बिलियन टन कार्बन सिंक प्राप्त करने के भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) लक्ष्य को पूरा करने में सहायता मिलेगी।

113. PMI संकेत: मई में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर पांच महीने के निचले स्तर पर पहुंची - द हिंदू

समाचार:

- मई में भारत के सेवा क्षेत्रों में गतिविधि पाँच महीने के निचले स्तर पर पहुँच गई

प्रीलिम्स टेकअवे

- PMI
- मुद्रा स्फ़ीति

मुख्य बिंदु:

- प्रतिस्पर्धा, मूल्य दबाव और भीषण गर्मी की लहर के कारण नए ऑर्डर और उत्पादन में वृद्धि में कमी आने के कारण, मौसमी रूप से समायोजित HSBC इंडिया सर्विसेज बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स के अनुसार मई में भारत के सेवा क्षेत्र पाँच महीने के निचले स्तर पर पहुँच गए।
- सर्वेक्षण-आधारित सूचकांक पर 50 से अधिक का पढ़ना गतिविधि स्तरों में विस्तार को दर्शाता है।
- सर्वेक्षण प्रतिभागियों ने एशिया, अफ्रीका, यूरोप, मध्य पूर्व और अमेरिका से मांग में मजबूत वृद्धि देखी
- सूचकांक के लिए सर्वेक्षण की गई 400 फर्मों में भर्ती गतिविधि अगस्त 2022 के बाद से सबसे अधिक हद तक बढ़ी, क्योंकि उन्होंने मई में अधिक जूनियर और मध्यम स्तर के कर्मचारियों को काम पर रखा।
- कम्पनियों ने मई माह में इनपुट लागत में वृद्धि की सूचना दी, विशेष रूप से श्रम तथा मांस, सब्जियों और पैकेजिंग जैसी सामग्रियों पर।
- जबकि कुछ कंपनियों ने सुझाव दिया कि अतिरिक्त श्रम लागत ओवरटाइम भुगतान और मांग की मजबूती और उत्पादकता लाभ के कारण वेतन में वृद्धि से उपजी है, कई फर्मों ने अतिरिक्त कर्मचारियों को रखने का संकेत दिया है।
- मई में विनिर्माण पीएमआई भी तीन महीने के निचले स्तर पर रहा, भारत में कुल निजी क्षेत्र की वृद्धि दिसंबर 2023 के बाद से सबसे धीमी हो गई।
- माल और सेवा फर्मों के लिए इनपुट लागत नौ महीनों में सबसे अधिक गति से बढ़ी, जिससे उन्हें मई में अधिक हद तक शुल्क बढ़ाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

114. RBI ने रेपो दर अपरिवर्तित रखी, GDP पूर्वानुमान को बढ़ाकर 7.2% किया - द हिंदू

समाचार:

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने रेपो दर को 6.5% पर अपरिवर्तित रखने का निर्णय लिया।

प्रीलिम्स टेकअवे

- MPC
- रेपो दर

मुख्य बिंदु:

- MPC की बैठक में लिया गया यह निर्ण य लगातार आठवीं बार है जब उच्च मुद्रास्फीति से निपटने पर ध्यान केंद्रित रखने के लिए नीतिगत दर को स्थगित रखा गया है।

- MPC ने वित्तीय वर्ष 2024-2025 के लिए अपने जीडीपी विकास पूर्वानुमान को पहले के 7% अनुमान से संशोधित कर 7.2% कर दिया है।
- इसने यह भी निर्णय लिया है कि वह समायोजन वापस लेने पर ध्यान केन्द्रित रखेगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मुद्रास्फीति में तेजी न आए, तथा विकास को समर्थन मिले।
- ये निर्णय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) मुद्रास्फीति के लिए मध्यम अवधि के लक्ष्य को +/- 2% के बैंड के भीतर 4% प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप हैं, जबकि विकास को समर्थन मिले।

115. RBI डिजिटल पेमेंट फ्रॉड के खिलाफ डिजिटल पेमेंट इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म स्थापित करेगा - द हिंदू

समाचार:

- भारतीय रिजर्व बैंक धोखाधड़ी का पता लगाने के उद्देश्य से वास्तविक समय के आधार पर डेटा साझा करने के लिए एक केंद्रीकृत डिजिटल पेमेंट इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म स्थापित करने की योजना बना रहा है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- UPI
- डिजिटल पेमेंट फ्रॉड

मुख्य बिंदु:

- RBI के गवर्नर ने कहा कि डिजिटल पेमेंट फ्रॉड के बढ़ते मामले डिजिटल धोखाधड़ी को रोकने और कम करने के लिए एक प्रणाली-व्यापी दृष्टिकोण की आवश्यकता को उजागर करते हैं।
- इसलिए, एक डिजिटल पेमेंट इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म स्थापित करने का प्रस्ताव है जो डिजिटल पेमेंट के पारिस्थितिकी तंत्र में वास्तविक समय पर डेटा साझा कर सके
- RBI ने प्लेटफॉर्म की स्थापना के विभिन्न पहलुओं की जांच के लिए एक समिति गठित की है।
- यह ग्राहकों का विश्वास बढ़ाने और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण होगा
- व्यापक उपाय उद्योग को सभी के लिए अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करने में सशक्त बनाएंगे।

डिजिटल पेमेंट फ्रॉड

- RBI की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, मार्च 2024 को समाप्त वित्तीय वर्ष में डिजिटल पेमेंट फ्रॉड में पांच गुना से अधिक की तीव्र वृद्धि देखी गई है, जो रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई है।
- RBI के आंकड़ों के अनुसार, यह चौंकाने वाली वृद्धि पिछले दो वर्षों में UPI लेनदेन में 137 प्रतिशत की विस्फोटक वृद्धि के साथ मेल खाती है, जो 200 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई है।
- वित्त वर्ष 24 में कुल धोखाधड़ी में कार्ड और इंटरनेट लेनदेन सहित डिजिटल पेमेंट का हिस्सा 10 प्रतिशत था, जो पिछले वित्त वर्ष में 1.1 प्रतिशत से अधिक था।

116. RBI एजेंडा: रुपये का वैश्वीकरण और डिजिटल पेमेंट का सार्वभौमिकरण करना - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- RBI का लक्ष्य पूंजी खाते को उदार बनाना, रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना और भारत के वित्तीय क्षेत्र के वैश्वीकरण के साथ-साथ डिजिटल पेमेंट का सार्वभौमिकरण करना है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- कैपिटल अकाउंट कॉनवेर्टीबिलिटी
- RBI@100

मुख्य बिंदु:

- केंद्रीय बैंक ने रुपये में सीमा पार लेनदेन को सुविधाजनक बनाने के लिए गैर-निवासियों को रुपये की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा भारत से बाहर रहने वाले व्यक्तियों (PROI) के लिए रुपया खातों की पहुंच बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है।
- इसने बहु-वर्षीय समय सीमा में RBI@100 के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों के अनुसार, ब्याज-असर वाले गैर-निवासी जमाओं के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने और विदेशी निवेश के माध्यम से भारतीय बहुराष्ट्रीय निगमों (MNC) और भारतीय वैश्विक ब्रांडों को बढ़ावा देने का प्रस्ताव दिया है।
- इस बीच, घरेलू और वैश्विक स्तर पर डिजिटल पेमेंट प्रणालियों को गहरा और सार्वभौमिक बनाने पर, आरबीआई के एजेंडे में भारत की भुगतान प्रणालियों के अंतर्राष्ट्रीयकरण और द्विपक्षीय और बहुपक्षीय देशों में भुगतान प्रणाली लिंकेज परियोजनाओं में भागीदारी की योजनाएँ शामिल हैं।

- इसने डिजिटल पेमेंट के घरेलू उपयोग को बढ़ाने और केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (ई-रुपया) के चरणबद्ध कार्यान्वयन की योजना बनाई है।

कैपिटल अकाउंट कॉनवेर्टीबिलिटी

- भारत ने अभी तक अपना पूंजी खाता पूरी तरह से नहीं खोला है, जिससे देश और बाहर पूंजी का मुक्त प्रवाह हो सके। तत्कालीन सरकार द्वारा शुरू किए गए वर्ष 1991 के सुधारों के दौरान व्यापार खाते में रुपये को पूरी तरह से फ्लोट किया गया था।
- कैपिटल अकाउंट कॉनवेर्टीबिलिटी का अर्थ है पूंजी खाता लेनदेन के लिए रुपये को किसी भी विदेशी मुद्रा में तथा विदेशी मुद्रा को वापस रुपये में परिवर्तित करने की स्वतंत्रता।
- तारापोर समिति ने पूंजी खाता उदारीकरण प्राप्त करने के लिए राजकोषीय समेकन, मुद्रास्फीति नियंत्रण, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों का निम्न स्तर, कम चालू खाता घाटा और वित्तीय बाजारों को मजबूत करने जैसी कई पूर्व शर्तें सूचीबद्ध की थीं।

वैश्वीकरण

- भारत के वित्तीय क्षेत्र के वैश्वीकरण और वित्तीय क्षेत्र के सुधारों पर, RBI राष्ट्रीय विकास के अनुरूप घरेलू स्तर पर बैंकिंग का विस्तार करने और आकार और संचालन के मामले में शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों में 3-5 भारतीय बैंकों को स्थान देने की योजना बना रहा है।
- यह GIFT सिटी को एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्र बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (IFSCA) का समर्थन करने की योजना बना रहा है।
- इसने वैश्विक 24×5 रुपया बाजार को बढ़ावा देकर और FPI (विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक) व्यवस्था को पुनः व्यवस्थित करके वित्तीय बाजार को मजबूत करने का सुझाव दिया।

अन्य उपाय

- अगले दो से पांच वर्षों में, RBI समूह ने रुपया मसाला बांड पर करों की समीक्षा की सिफारिश की है
- सीमा पार व्यापार लेनदेन के लिए रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (RTGS) का अंतर्राष्ट्रीय उपयोग और वैश्विक बांड सूचकांकों में भारतीय सरकारी बांडों को शामिल करना।
- RBI ने मूल्य स्थिरता को संतुलित करने, उभरती बाजार अर्थव्यवस्था (EME) के परिप्रेक्ष्य से आर्थिक विकास, मौद्रिक नीति संचार में परिशोधन और प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में निजी और सार्वजनिक ऋण के बोझ से EME को होने वाले नुकसान को संबोधित करने के लिए मौद्रिक नीति ढांचे की समीक्षा का भी प्रस्ताव किया है।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए , RBI ने विनियमित संस्थाओं (RE) के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का आकलन करने और जलवायु जोखिमों के प्रति भुगतान प्रणालियों के प्रतिरोधकता को मजबूत करने के लिए उनके परिसंपत्ति पोर्टफोलियो का परीक्षण करने हेतु मार्गदर्शन की योजना बनाई है।
- इसने जलवायु जोखिमों पर वर्गीकरण को अंतिम रूप देने के लिए सरकार को इनपुट और अनुसंधान के लिए जलवायु जोखिम प्रकटीकरण मानदंड भी प्रस्तावित किए।

117. सरकार ने सोने के आभूषणों और कलपुर्जों के आयात पर प्रतिबंध लगाया - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- सोने के आयात में वृद्धि की जांच के बीच, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने हाल ही में आभूषण और उसके कलपुर्जों के आयात पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया।

प्रीलिम्स टेकअवे

- HSN कोड
- आयात शुल्क

मुख्य बिंदु:

- तस्करी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए जिम्मेदार जांच एजेंसियां, खासकर कम विकसित देशों (LDC) और उन देशों से सोने के आयात में वृद्धि को लेकर चिंतित हैं, जिनके साथ भारत का FTA है।
- ऐसा माना जा रहा है कि यह वृद्धि मुख्य रूप से आयातकों द्वारा इन देशों से कम टैरिफ का लाभ उठाने के कारण देखी गई है।
- एक सरकारी अधिकारी ने कहा कि पाँच हार्मोनाइज़्ड सिस्टम ऑफ़ नोमेनक्लेचर (HSN) कोड के तहत आभूषण आयात पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है और केवल आयात में असामान्य वृद्धि के पीछे के कारण का पता लगाने और उन भौगोलिक क्षेत्रों की बेहतर निगरानी करने के लिए प्राधिकरण के तहत रखा गया है जहाँ से आयात हो रहा है।

- भारत का कुल सोने का आयात भी बढ़ रहा है, जिससे अप्रैल में माल व्यापार घाटा 5 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया है।
- इसका मुख्य कारण सोने का आयात है जो पिछले साल की तुलना में इस साल अप्रैल में 208.99 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि है।
- पहले बताया गया था कि बजट वर्ष 2024-25 की प्रस्तुति से ठीक एक सप्ताह पहले, वित्त मंत्रालय ने आभूषण खंड की एक विशिष्ट श्रेणी पर आयात शुल्क बढ़ा दिया था जिसे गोल्ड फाइंडिंग्स कहा जाता है
  - ये छोटे घटक होते हैं जैसे हुक, क्लैप्स, क्लैम्प, पिन, स्क्रू, जिनका उपयोग आभूषण के पूरे या उसके एक हिस्से को अपनी जगह पर रखने के लिए किया जाता है।
- सोने की ऊंची कीमत और धातु पर उच्च आयात शुल्क को तस्करी के बढ़ते मामलों के पीछे प्रमुख कारणों में से एक माना जाता है।
- हालांकि यह प्रतिबंध मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के तहत संयुक्त अरब अमीरात से आयात के लिए अपवाद था।

118. वैश्विक विकास स्थिर हो रहा है, लेकिन कोविड-पूर्व स्तर से नीचे: विश्व बैंक - बिजनेस स्टैंडर्ड

प्रीलिम्स टेकअवे
- वैश्विक आर्थिक संभावना रिपोर्ट

समाचार:
- विश्व बैंक ने कहा कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था के उम्मीद से अधिक मजबूत प्रदर्शन ने उसे वर्ष 2024 के लिए अपने वैश्विक विकास के अनुमान को थोड़ा बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है
- इसने यह भी चेतावनी दी कि समग्र उत्पादन वर्ष 2026 तक पूर्व-महामारी के स्तर से काफी नीचे रहेगा।

मुख्य बिंदु
- विश्व बैंक ने अपनी नवीनतम वैश्विक आर्थिक संभावना रिपोर्ट में कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था 2021 में महामारी के बाद की बड़ी उछाल के बाद से वास्तविक जीडीपी वृद्धि में लगातार तीसरी गिरावट से बच जाएगी
  - वर्ष 2024 में वृद्धि दर 2.6% पर स्थिर रहेगी, जो वर्ष 2023 से अपरिवर्तित रहेगी।
- **भारत शीर्ष पर**: भारत के इस वर्ष फिर से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था होने का अनुमान है, वर्ष 2024-25 के लिए सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि 6% रहने की उम्मीद है।
- यद्यपि यह पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ी धीमी है, फिर भी यह स्वस्थ वृद्धि है।
- निवेश से चीजें आगे बढ़ती रहती हैं यह वृद्धि मुख्य रूप से सरकार और व्यवसायों दोनों से मजबूत निवेश द्वारा संचालित है, भले ही निवेश पहले की तरह तेज़ी से नहीं बढ़ रहा है।
- **भारत क्षेत्र में अग्रणी** : पिछले वर्ष की तुलना में भारत की प्रभावशाली वृद्धि (7.8%) ने समूचे दक्षिण एशिया की अर्थव्यवस्था को मदद पहुंचाई।
- **दक्षिण एशिया में वृद्धि जारी रहेगी** : यद्यपि भारत की वृद्धि थोड़ी धीमी हो सकती है, फिर भी यह बांग्लादेश, पाकिस्तान और श्रीलंका की अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ने या यहां तक कि बेहतर बनाने में एक महत्वपूर्ण कारक होगा।
- **बेहतर वित्त** : दक्षिण एशियाई देशों की वित्तीय स्थिति बेहतर हो रही है, अधिक कर राजस्व के कारण भारत का बजट घाटा अपनी अर्थव्यवस्था के आकार की तुलना में कम होने की उम्मीद है।
- **व्यापार में सुधार:** व्यापार असंतुलन कम हो रहा है, विशेष रूप से भारत में, जिससे सम्पूर्ण दक्षिण एशियाई क्षेत्र की आर्थिक स्थिरता को मदद मिलती है।

119. पूंजीगत व्यय में 25% की वृद्धि, शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करें: CII- द इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- CII
- पूंजीगत व्यय

समाचार:
- आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद के लिए नई सरकार के 14 सूत्री एजेंडे के हिस्से के रूप में की गई है ।
- भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) ने सरकार को सुझाव दिया कि वह भारतीय रिजर्व बैंक से प्राप्त 2.1 लाख करोड़ रुपये के अप्रत्याशित लाभांश का उपयोग सार्वजनिक पूंजीगत व्यय को 25 प्रतिशत बढ़ाने तथा कौशल अंतर को पाटने के लिए शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए करे।

मुख्य बिंदु:

- भारत का विकास अनुमान प्राथमिकता के आधार पर अधूरे सुधार एजेंडे को पूरा करने पर निर्भर करता है, तथा भू-राजनीतिक संघर्ष, उच्च ब्याज दरें और उच्च वैश्विक कमोडिटी कीमतें पूर्व महामारी के स्तर से ऊपर बनी हुई हैं, जो अर्थव्यवस्था के सामने मौजूद जोखिम हैं।
- पूंजीगत व्यय लगभग 16.8 प्रतिशत है, लेकिन 25 प्रतिशत से अर्थव्यवस्था को अच्छी गति मिलेगी और प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करने के लिए भी इस प्रकार के निवेश की आवश्यकता है।
- RBI के माध्यम से कुछ अतिरिक्त राजस्व प्रवाह हुआ है जिससे कुछ क्षेत्रों में खर्च बढ़ाने का अवसर मिला है।
- संशोधित अनुमान के अनुसार वर्ष 2023-24 के लिए भारत का पूंजीगत व्यय 9.49 लाख करोड़ रुपये होगा।
  - व्यापार, निवेश और औद्योगिक नीतियों के मुद्दों पर तालमेलपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, क्योंकि भारत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ अधिकाधिक एकीकरण का प्रयास कर रहा है।
- कई परस्पर संबंधित मुद्दे हैं। घरेलू स्तर पर व्यापार और मानकों के लिए आवश्यकताएं हैं।
- शिक्षा में निवेश बढ़ाकर देश में कौशल अंतर को पाटने की सख्त जरूरत है। CII की सिफारिश है कि समय के साथ शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय को 6 प्रतिशत तक लाया जाना चाहिए।
- विभिन्न विकसित देशों के विपरीत, हमारे यहां औपचारिक रूप से कुशल लोगों की संख्या लगभग 5 प्रतिशत है। और यह अमेरिका में लगभग 52 प्रतिशत से लेकर जापान में 80 प्रतिशत तक है।
- इसलिए रिपोर्ट की गई संख्या के अनुसार औपचारिक कौशल की तीव्रता बहुत कम है। इसलिए, विनिर्माण के विकास के लिए संसाधन उपलब्ध कराने के लिए इसे 25 प्रतिशत तक ले जाने की आवश्यकता है।
- खिलौने, वस्त्र एवं परिधान, लकड़ी आधारित उद्योग, पर्यटन, लॉजिस्टिक्स आदि जैसे उच्च विकास क्षमता वाले श्रम गहन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त परिणाम संकेतकों के साथ रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन (ELI) योजनाएं शुरू की जा सकती हैं।
- वित्तीय क्षेत्र के बारे में CII ने कहा कि भारत का वित्तीय क्षेत्र मजबूत है, लेकिन हमारी अर्थव्यवस्था की वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस क्षेत्र को तेजी से विस्तार करने की आवश्यकता है।
  - NBFC के लिए वित्तपोषण के स्रोतों में विविधता लाना ताकि उनकी पहुंच बढ़ाने में मदद मिल सके;
  - प्रत्येक 3-4 वर्ष में प्राथमिकता क्षेत्र ऋण ढांचे की समीक्षा करना;
  - बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए बीमा और पेंशन फंड से दीर्घकालिक पूंजी उपलब्ध कराना भारत की विकास यात्रा के वित्तपोषण के लिए महत्वपूर्ण है।
- अप्रत्यक्ष करों के संबंध में, GST सुधारों के अगले चरण जैसे कि दरों में नरमी के साथ GST को तीन-दर संरचना के अंतर्गत लाना तथा पेट्रोलियम उत्पादों, बिजली और रियल एस्टेट को GST के अंतर्गत लाना, GST परिषद के परामर्श से शीघ्रता से आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

120. मुद्रास्फीति में कमी आने से सेंसेक्स, निफ्टी नए शिखर पर पहुंचे - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- इक्विटी बेंचमार्क सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी ने हाल ही में अपने नए रिकॉर्ड स्तर को छुआ

प्रीलिम्स टेकअवे

- मुद्रा स्फ़ीति
- सेंसेक्स और निफ्टी

मुख्य बिंदु:

- ऐसा मुद्रास्फीति के कम आंकड़ों के कारण हुआ, जिससे RBI द्वारा ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद बढ़ गई।
- इसके अलावा पूंजीगत सामान, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तु और औद्योगिक शेयरों में भारी खरीदारी से भी सूचकांक को मदद मिली।
- सरकारी आंकड़ों के अनुसार, खाद्य वस्तुओं की कीमतों में मामूली गिरावट के कारण खुदरा मुद्रास्फीति मई में एक वर्ष के निम्नतम स्तर 4.75% पर पहुंच गई तथा यह रिजर्व बैंक के 6% से नीचे के सहज स्तर के भीतर रही।
- एशियाई बाजारों में सियोल और हांगकांग में तेजी रही, जबकि टोक्यो और शंघाई में गिरावट रही।
- यूरोपीय बाजारों में गिरावट रही, जबकि अमेरिकी बाजार ज्यादातर बढ़त के साथ बंद हुए।
- अमेरिका और भारत दोनों में मुद्रास्फीति के मोर्चे पर अच्छी खबर है। मुद्रास्फीति के आंकड़ों से यह पता चलता है कि मुद्रास्फीति की प्रक्रिया अच्छी तरह से प्रगति पर है।
  - बाजार के नजरिए से यह सकारात्मक खबर है, खासकर बैंकिंग शेयरों के लिए।
- नीति निर्माताओं का एक दर कटौती का पूर्वानुमान पिछले पूर्वानुमान तीन से कम था, संभवतः इसलिए क्योंकि पिछले दो महीनों में मुद्रास्फीति में कमी आने के बावजूद, यह लगातार उच्च स्तर पर बनी हुई है।

121. भारत में थोक मूल्य मुद्रास्फीति मई में 15 महीने के उच्चतम स्तर पर - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- WPI
- मुद्रा स्फ़ीति

समाचार:
- भारत में थोक मूल्य मुद्रास्फीति मई में 15 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई

मुख्य बिंदु:
- अर्थशास्त्रियों ने कहा कि मई में थोक मुद्रास्फीति में तेजी से संकेत मिलता है कि खुदरा मुद्रास्फीति के 12 महीने के निचले स्तर पर आने के बावजूद उपभोक्ता कीमतों में और उछाल की गुंजाइश है।
  - खास तौर पर तब जब खाद्य और औद्योगिक इनपुट की कीमतें वैश्विक स्तर पर बढ़ रही हैं।
- मई लगातार सातवां महीना था जब थोक मूल्य सूचकांक (WPI) में लगातार सात महीनों तक अपस्फीति के बाद वर्ष-दर-वर्ष आधार पर वृद्धि हुई, तथा इस महीने इसमें 3% से अधिक की वृद्धि होने की उम्मीद है।
- भीषण गर्मी के कारण सब्जियों की मुद्रास्फीति दर नौ महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई, तथा फलों की मुद्रास्फीति दर छह महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई।
- सब्जियों की कीमतों में उछाल आंशिक रूप से आपूर्ति की कमी के कारण था और गर्मी की लहर ने चुनौती को और बढ़ा दिया
- इंडिया रेटिंग्स ने दालों की कीमतों के दोहरे अंकों में बने रहने के बारे में इसी तरह की चिंता जताई है क्योंकि नई फसल अक्टूबर-नवंबर में ही काटी जाएगी।
- थोक स्तर पर खाद्य मुद्रास्फीति का बढ़ना चिंताजनक है, क्योंकि इससे खुदरा खाद्य कीमतें आगे भी स्थिर रहेंगी।
- मई में मुद्रास्फीति की सकारात्मक दर मुख्य रूप से खाद्य पदार्थों, खाद्य उत्पादों के निर्माण, कच्चे पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, खनिज तेल, अन्य विनिर्माण आदि की कीमतों में वृद्धि के कारण है।

122. केंद्र सरकार ने 2800 करोड़ रुपये के डिजिटल कृषि मिशन का शुभारंभ किया - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- डिजिटल कृषि मिशन
- डिजिटल फसल सर्वेक्षण

समाचार:
- केंद्र सरकार अपने पहले 100 दिवसीय एजेंडे के तहत बड़ी पहलों की घोषणा करने वाली है, जिसमें 2,800 करोड़ रुपये का डिजिटल कृषि मिशन भी शामिल है।

मुख्य बिंदु:
- डिजिटल कृषि मिशन देश भर में किसानों की रजिस्ट्री, फसल बोई गई रजिस्ट्री और गांवों के नक्शों की जियोरेफरेंसिंग के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगा।
- मिशन के लिए 2800 करोड़ रुपये का बजटीय आवंटन किया गया है और इसे अगले दो वर्षों (2025-26 तक) में लागू किया जाएगा।
- इस बीच, कृषि मंत्रालय ने कई राज्यों में विभिन्न पायलट प्रोजेक्ट और गतिविधियाँ शुरू कीं, जो मिशन का हिस्सा हैं।
- मिशन का एक घटक किसानों की रजिस्ट्री बनाना है, जिसमें हर किसान को एक विशिष्ट पहचान पत्र दिया जाएगा।
  - कुछ राज्यों में किसान विशिष्ट पहचान पत्र बनाने का काम पहले ही शुरू हो चुका है।
- विशिष्ट किसान पहचान पत्र से नई मूल्यवर्धित सेवाएँ शुरू की जा सकेंगी और किसान इस पहचान पत्र के ज़रिए पीएम-किसान और फसल बीमा योजना सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे।
- इससे वे कृषि ऋण और बीमा जैसी वित्तीय सेवाओं का लाभ भी उठा सकेंगे।
- मिशन में फसल बोई गई रजिस्ट्री की भी परिकल्पना की गई है। इसमें किसान द्वारा अपनी ज़मीन पर बोई गई फसलों का रिकॉर्ड होगा। इससे फसल उत्पादन की बेहतर योजना बनाने और उसका अनुमान लगाने में मदद मिलेगी।
- पिछले साल, केंद्र ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (UT) से जुलाई 2024 से डिजिटल फसल सर्वेक्षण को अपनाकर क्षेत्र स्तर पर फसलों की क्षेत्र गणना/गिरदावरी की प्रक्रिया को स्वचालित/डिजिटल करने के लिए कहा था।

123. फेड FOMC का नतीजा हॉकिश या डोविश - इकनॉमिक टाइम

प्रीलिम्स टेकअवे
- मुद्रा स्फ़ीति

समाचार:
- अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने अपनी हालिया मौद्रिक नीति में लगातार छठी बार दरों को 5.25-5.50% पर अपरिवर्तित रखा और इसका डॉट प्लॉट मार्च में तीन की अपेक्षा के मुकाबले केवल एक कटौती दर्शाता है।

मुख्य बिंदु
- हॉकिश आर्थिक नीति से तात्पर्य केंद्रीय बैंकों या अन्य आर्थिक नीति निर्माताओं द्वारा अपनाए गए रुख से है जो मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के महत्व पर जोर देता है
  - प्रायः पूर्ण रोजगार या आर्थिक विकास जैसे अन्य आर्थिक लक्ष्यों की कीमत पर।
- "हॉकिश" नीति निर्माता मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने और मूल्य स्थिरता बनाए रखने के लिए उच्च ब्याज दरों का पक्ष लेते हैं।
- इस दृष्टिकोण की तुलना अक्सर "डोविश" आर्थिक नीति से की जाती है, जो आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने और बेरोजगारी को कम करने को प्राथमिकता देती है, भले ही इसका मतलब उच्च मुद्रास्फीति को सहन करना हो।

124. मांग और निजी निवेश को बढ़ावा देने हेतु सरकार आयकर दर में कटौती करेगी - द इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- FRBM अधिनियम
- प्रत्यक्ष टैक्स

समाचार:
- टैक्स कटौती डिस्पोजेबल आय को बढ़ाने के लिए एक अधिक कुशल उपाय हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक खपत होगी, और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।
- चूंकि भारतीय अर्थव्यवस्था घटती खपत की समस्या से जूझ रही है, इसलिए सरकार के नीति निर्माता मौजूदा आयकर ढांचे को, विशेष रूप से निम्न आय स्तर पर, युक्तिसंगत बनाने के पक्ष में हैं।

मुख्य बिंदु:
- टैक्स में कटौती प्रयोज्य आय को बढ़ाने के लिए एक अधिक प्रभावी उपाय हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोग में वृद्धि होगी तथा आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।
- मांग को पुनर्जीवित करने के लिए उपभोग को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जो निवेश चक्र को पुनः आरंभ करने, विशेष रूप से उपभोक्ता-केंद्रित क्षेत्रों में निजी पूंजीगत व्यय को पुनः प्रज्वलित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- ऐसे किसी भी उपाय से होने वाली राजस्व हानि के लिए गतिशील विश्लेषण की आवश्यकता होती है
- चूंकि इससे मांग में वृद्धि होने की उम्मीद है, इसलिए शुद्ध प्रभाव का आकलन करने के लिए सामान्य संतुलन विश्लेषण की आवश्यकता है।
- जबकि कल्याणकारी खर्च में रिसाव होता है, निम्न आय स्तर पर कर दर में कटौती से अक्सर खपत बढ़ जाती है। कल्याणकारी योजनाओं पर खुलेआम खर्च करने की तुलना में कर सरलीकरण को बेहतर उपकरण के रूप में देखा जाता है।
- यद्यपि भारत ने पिछले तीन वर्षों में 7 प्रतिशत से अधिक की औसत सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर दर्ज की है, फिर भी उसे धीमी कृषि वृद्धि, कमजोर निर्यात और कमजोर उपभोग मांग के बीच सुस्त निजी निवेश जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- निजी निवेश में सभी क्षेत्रों में वृद्धि नहीं हुई है तथा कमजोर मांग भारतीय उद्योग के लिए चिंता का विषय बनी हुई है।
- उपभोग मांग का सूचक, निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE), सकल घरेलू उत्पाद के हिस्से के रूप में घटकर 52.9 प्रतिशत रह गया, जो वर्ष 2011-12 आधार वर्ष श्रृंखला में सबसे निचला स्तर है।
- उपभोग व्यय में 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो महामारी वर्ष को छोड़कर पिछले दो दशकों में सबसे धीमी वृद्धि दर है।
- सरकार पिछले कुछ वर्षों से राजकोषीय समेकन पर ध्यान केंद्रित कर रही है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2024-25 में राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के 5.1 प्रतिशत तक लाना तथा वर्ष 2025-26 में इसे और घटाकर 4.5 प्रतिशत से नीचे लाना है।

125. कंचनजंगा एक्सप्रेस दुर्घटना: कवच प्रणाली का अभाव- इकोनॉमिक्स टाइम्स

प्रीलिम्स टेकअवे
- टकराव-रोधी प्रणाली

समाचार:
- सोमवार को न्यू जलपाईगुड़ी के निकट एक मालगाड़ी सियालदह कंचनजंगा एक्सप्रेस से टकरा गई, जिसके परिणामस्वरूप पांच लोगों की मौत हो गई और लगभग 50 अन्य घायल हो गए।
- दुर्घटना के समय गुवाहाटी-दिल्ली मार्ग पर टक्कर रोधी प्रणाली 'कवच' चालू नहीं थी।

कंचनजंगा एक्सप्रेस टक्कर के संभावित कारण
- मालगाड़ी और कंचनजंगा एक्सप्रेस के बीच हुई टक्कर के लिए संभवतः दो कारकों की पहचान की गई है।

कवच प्रणाली का अभाव
- एक महत्वपूर्ण कारक कवच का अभाव था, जो भारत में निर्मित प्रणाली है जो एक ही लाइन पर दो ट्रेनों के चलने पर दुर्घटनाओं को रोकती है।
- रिपोर्टों के अनुसार, दार्जिलिंग में जहां टक्कर हुई, वहां रेल पटरियों पर कवच प्रणाली स्थापित नहीं थी।
- अधिकारियों ने बताया कि इस प्रणाली को अभी भारत के अधिकांश रेल नेटवर्क में स्थापित किया जाना बाकी है।

126. अवस्फीतिकारी प्रक्रिया में खाद्य मुद्रास्फीति सबसे बड़ी चुनौती: RBI गवर्नर

प्रीलिम्स टेकअवे
- MPC
- आपूर्ति पक्ष मुद्रास्फीति

समाचार:
- भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर ने कहा कि यद्यपि मुद्रास्फीति में कमी आई है, लेकिन खाद्य मुद्रास्फीति के स्थिर बने रहने के कारण इसमें कमी आने की गति बहुत धीमी है।
- हालांकि, उन्हें उपभोक्ता मूल्य आधारित मुद्रास्फीति (CPI) के 4 प्रतिशत के लक्ष्य को हासिल करने का भरोसा है।

मुख्य बिंदु:
- "खाद्य मुद्रास्फीति के जिद्दी और बहुत अधिक बने रहने से मुद्रास्फीति की प्रक्रिया को बहुत प्रतिरोध मिल रहा है, जिसका मुख्य कारण आपूर्ति पक्ष के कारक हैं जो मौसम की स्थिति से प्रभावित होते हैं।
- पिछली गर्मियों में भीषण गर्मी ने दालों और सब्जियों की खेती को प्रभावित किया है।
- गवर्नर ने कहा कि पिछले छह-सात महीनों में खाद्य मुद्रास्फीति औसतन लगभग 8 प्रतिशत रही है।
- भारतीय रिजर्व बैंक की छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने खाद्य मुद्रास्फीति से संबंधित चिंताओं के कारण प्रमुख नीति दर रेपो दर को लगातार आठवीं बार 6.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित छोड़ने का निर्णय लिया।
- वित्त वर्ष 2025 के लिए RBI ने CPI 4.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है।
- यह पूछे जाने पर कि क्या RBI आवास वापसी के नीतिगत रुख में बदलाव पर विचार कर सकता है, गवर्नर ने कहा कि इस बारे में बात करना अभी जल्दबाजी होगी।

कारक
- वित्त वर्ष 2025 के लिए सकल घरेलू उत्पाद अनुमान में वृद्धि के कारणों में आर्थिक गतिविधि में मजबूत गति, ग्रामीण मांग में वृद्धि और बाह्य क्षेत्र में सुधार शामिल हैं।
- गवर्नर ने कहा कि ग्रामीण खपत, जो कोविड के बाद से पिछड़ रही थी, पिछले वर्ष की पहली छमाही से सुधरने लगी है।
- ग्रामीण क्षेत्र में FMCG (फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स) की बिक्री बढ़ी है, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत श्रमिकों की मांग कम हुई है तथा इस वर्ष सामान्य से अधिक मानसून रहने के अनुमानों के कारण कृषि सीजन भी काफी आशावादी लग रहा है।
- गवर्नर ने कहा कि जैसे ही सरकारी खर्च और निजी निवेश बढ़ने लगेगा, इस वर्ष ग्रामीण मांग अच्छी तरह बनी रहेगी।

127. केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 14 खरीफ फसलों के MSP बढ़ाने को मंजूरी दी - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- MSP
- RBI वार्षिक रिपोर्ट

समाचार:
- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आगामी वर्ष 2024-25 खरीफ विपणन सत्र के लिए धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रति क्विंटल बढ़ाने को मंजूरी दे दी है।

मुख्य बिंदु:
- मंत्रिमंडल ने खरीफ सीजन की सभी 14 फसलों के लिए MSP बढ़ोतरी को मंजूरी दे दी है, जो सरकार की "स्पष्ट नीति" के अनुरूप है, जिसमें MSP को सरकार द्वारा गणना की गई उत्पादन लागत से कम से कम 1.5 गुना अधिक रखने की बात कही गई है।

- हालाँकि, इनमें से केवल चार फसलों बाजरा (77%), उसके बाद अरहर दाल (59%), मक्का (54%), और काला चना (52%) के MSP ऐसे हैं जो किसानों को उनकी उत्पादन लागत से 50% से अधिक का मार्जिन प्रदान करेंगे ।
- **RBI वार्षिक रिपोर्ट 2023-2024:** खरीफ और रबी फसलों के लिए MSP ने उत्पादन लागत पर 50% का न्यूनतम लाभ सुनिश्चित किया
- सीजन की प्रमुख फसल धान के MSP में 117 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि होगी, जिससे किसानों को ठीक 50% का मार्जिन मिलेगा।
- खरीफ की बुआई आमतौर पर दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत के साथ जून में शुरू होती है, जबकि फसल विपणन सीजन अक्टूबर 2024 से सितंबर 2025 तक चलेगा।
- इस वर्ष MSP वृद्धि से कुल 2 लाख करोड़ रुपये का वित्तीय बोझ पड़ने की संभावना है, जो पिछले सीजन की तुलना में लगभग 35,000 करोड़ रुपये अधिक है।
- पिछले वर्ष की तुलना में सर्वाधिक वृद्धि तिलहन और दलहन के लिए अनुशंसित की गई है।

128. खाद्य मुद्रास्फीति के कारण अवस्फीति की गति धीमी है: RBI गवर्नर - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- अवस्फीति की धीमी गति मुख्य रूप से खाद्य मुद्रास्फीति में वृद्धि के कारण है, जो बार-बार आपूर्ति पक्ष के झटकों से प्रभावित हुई है

प्रीलिम्स टेकअवे
- MPC
- मुद्रा स्फ़ीति

मुख्य बिंदु:

- मौद्रिक नीति समिति (MPC) की बैठक में, छह सदस्यीय दर निर्धारण पैनल में से चार ने नीतिगत रेपो दर को 6.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखने तथा नीतिगत रुख को वापस लेने के पक्ष में मतदान किया, क्योंकि उच्च खाद्य मुद्रास्फीति से अवस्फीति प्रक्रिया प्रभावित हो रही है।
- MPC के दो बाहरी सदस्यों ने रेपो दर में 25 आधार अंकों की कटौती के पक्ष में मतदान किया, क्योंकि उच्च ब्याज दरें विकास को नुकसान पहुंचा सकती हैं।
- मुख्य उपभोक्ता मूल्य आधारित मुद्रास्फीति में कमी आ रही है, लेकिन बहुत धीमी गति से है।
- अवस्फीति की धीमी गति के पीछे खाद्य मुद्रास्फीति मुख्य कारक है।
- आपूर्ति पक्ष के बार-बार होने वाले और ओवरलैपिंग शॉक खाद्य मुद्रास्फीति में एक बड़ी भूमिका निभाते रहते हैं
- आगे बढ़ते हुए, आधारभूत अनुमानों से पता चलता है कि वर्ष 2024-25 में मुद्रास्फीति औसतन 4.5 प्रतिशत तक कम हो जाएगी।
- हालांकि, तत्काल महीनों में, कुछ जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं के उत्पादन पर असाधारण रूप से गर्म गर्मी के महीनों का प्रभाव; कुछ दालों और सब्जियों, विशेषकर आलू और प्याज में रबी उत्पादन में संभावित कमी; और दूध की कीमतों में वृद्धि, बारीकी से निगरानी की मांग करती है।
- वर्ष 2024-25 के लिए घरेलू विकास का दृष्टिकोण आशावादी बना हुआ है, क्योंकि आर्थिक गतिविधियां निरंतर गतिमान बनी हुई हैं।
- RBI ने चालू वित्त वर्ष में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है।

129. भारत सरकार ने अंतर्राज्यीय ट्रांसमिशन प्रणाली (ISTS) योजनाओं को मंजूरी दी - पीआईबी

समाचार:

- भारत सरकार ने राजस्थान और कर्नाटक से 9 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त करने के लिए नई अंतर्राज्यीय ट्रांसमिशन प्रणाली (ISTS) योजनाओं को मंजूरी दी है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- कुसुम योजना
- नवीकरणीय ऊर्जा

मुख्य बिंदु:

- इन योजनाओं का क्रियान्वयन टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली (TBCB) मोड के माध्यम से किया जाएगा।
- ये योजनाएं वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का हिस्सा हैं, जिसमें से 200 गीगावाट पहले ही कनेक्ट हो चुकी हैं।
- राजस्थान अक्षय ऊर्जा क्षेत्र (REZ) की विद्युत निकासी योजना से राजस्थान से 4.5 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा निकाली जाएगी।

- फतेहगढ़ कॉम्प्लेक्स से 1 गीगावाट, बाड़मेर कॉम्प्लेक्स से 2.5 गीगावाट और नागौर (मेड़ता) कॉम्प्लेक्स से 1 गीगावाट।
- यह शक्ति उत्तर प्रदेश को हस्तांतरित की जाएगी।
- योजना की पूर्णता अवधि दो वर्ष है।

- कर्नाटक की प्रणाली सुदृढ़ीकरण योजना कोप्पल क्षेत्र और गडग क्षेत्र से 4.5 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा निकालेगी।
  - यह योजना जून 2027 तक पूरी हो जाएगी।

130. चालू खाता चौथी तिमाही में 5.7 बिलियन डॉलर अधिशेष पर पहुंचा- द हिंदू

समाचार:

प्रीलिम्स टेकअवे
- भुगतान संतुलन
- चालू खाता

- भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 24 की चौथी तिमाही में भारत के चालू खाता शेष में 5.7 बिलियन डॉलर (GDP का 0.6%) का अधिशेष दर्ज किया गया।

मुख्य बिंदु:

- वित्त वर्ष 2024 की चौथी तिमाही में वस्तु व्यापार घाटा 50.9 बिलियन डॉलर रहा, जो एक साल पहले की तुलना में कम है और सॉफ्टवेयर निर्यात, यात्रा और व्यावसायिक सेवाओं में वृद्धि के कारण चौथी तिमाही में सेवा निर्यात में 4.1% की वृद्धि हुई।
- भारत का चालू खाता दस तिमाहियों के अंतराल के बाद वित्त वर्ष 24 की चौथी तिमाही में 5.7 बिलियन डॉलर के साथ स्वागत योग्य अधिशेष में बदल गया।
- एक साल पहले की अवधि में घाटे से अधिशेष की ओर वापसी मुख्य रूप से वित्त वर्ष 24 की चौथी तिमाही में व्यापारिक घाटे में कमी के कारण हुई थी।

उच्च सेवा प्राप्तियां

- शुद्ध सेवा प्राप्तियां 42.7 बिलियन डॉलर रही जो एक वर्ष पहले की तुलना में अधिक थी, जिसने वित्त वर्ष 24 की चौथी तिमाही में चालू खाता अधिशेष में योगदान दिया।
- निवेश आय के भुगतान पर शुद्ध व्यय बढ़कर 14.8 बिलियन डॉलर हो गया।
- निजी हस्तांतरण प्राप्तियां, जो मुख्य रूप से प्रवासी भारतीयों द्वारा प्रेषित धनराशि को दर्शाती हैं, 32 बिलियन डॉलर रहीं, जो 11.9% की वृद्धि है।

भुगतान संतुलन

- कुल मिलाकर, भारत का वित्त वर्ष 2024 का चालू खाता घाटा वित्त वर्ष 2023 के 67.0 बिलियन डॉलर से घटकर 23.2 बिलियन डॉलर हो गया।
- वित्त वर्ष 2024 के दौरान शुद्ध अदृश्य प्राप्ति एक वर्ष पहले की तुलना में अधिक थी, जो मुख्य रूप से सेवाओं और स्थानान्तरण के कारण थी।
- वित्त वर्ष 24 में पोर्टफोलियो निवेश में 44.1 बिलियन डॉलर का शुद्ध प्रवाह दर्ज किया गया।
- वित्त वर्ष 2024 में शुद्ध FDI प्रवाह 9.8 बिलियन डॉलर था

131. बढ़ते जल संकट से भारत की ऋण साख को नुकसान पहुंचेगा: मूडीज -द प्रिंट

समाचार:

प्रीलिम्स टेकअवे
- हीटवेव

- मूडीज रेटिंग्स ने कहा कि भारत में पानी की बढ़ती कमी, जो तेज आर्थिक विकास और लगातार प्राकृतिक आपदाओं के बीच उच्च खपत से उत्पन्न हुई है, दक्षिण एशियाई राष्ट्र की संप्रभु ऋण शक्ति पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।

मुख्य बिंदु

- हर साल गर्मियों में लाखों भारतीयों को पानी की कमी का सामना करना पड़ता है, जब खेतों, दफ्तरों और घरों में पानी की मांग बढ़ जाती है, जबकि आपूर्ति सीमित होती है।
  - लेकिन इस साल लंबे समय तक चलने वाली गर्मी ने इस कमी को और बढ़ा दिया है, जिसमें दिल्ली और दक्षिणी प्रौद्योगिकी केंद्र बेंगलुरु भी शामिल हैं
- मूडीज रेटिंग्स ने कहा, "यह सरकार की ऋण साख के लिए हानिकारक है, साथ ही उन क्षेत्रों के लिए भी हानिकारक है जो पानी का अत्यधिक उपभोग करते हैं, जैसे कोयला बिजली उत्पादक और इस्पात निर्माता।"

- इसमें कहा गया है, "दीर्घावधि में, जल प्रबंधन में निवेश से संभावित जल की कमी के जोखिम को कम किया जा सकता है।"
- जल संसाधन मंत्रालय के अनुसार, भारत में प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक जल उपलब्धता वर्ष 2021 में पहले से कम 1,486 क्यूबिक मीटर से घटकर वर्ष 2031 तक 1,367 क्यूबिक मीटर रह जाने की संभावना है।
- मंत्रालय के अनुसार, 1,700 क्यूबिक मीटर से कम का स्तर जल संकट को दर्शाता है, तथा 1,000 क्यूबिक मीटर जल की कमी की सीमा है।
- मूडीज ने कहा, "जल आपूर्ति में कमी से कृषि उत्पादन और औद्योगिक कार्य बाधित हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि हो सकती है और प्रभावित व्यवसायों और समुदायों की आय में गिरावट आ सकती है, साथ ही सामाजिक अशांति भी पैदा हो सकती है।"
- वैश्विक एजेंसी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण जल की कमी की आवृत्ति, गंभीरता या चरम जलवायु घटनाओं की अवधि में वृद्धि से स्थिति और खराब हो जाएगी, क्योंकि भारत जल आपूर्ति के लिए मानसून की वर्षा पर बहुत अधिक निर्भर करता है।
- इसमें कहा गया है कि औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से व्यवसायों और निवासियों के बीच पानी के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी।

132. रेलवे वंदे भारत, गतिमान एक्सप्रेस ट्रेनों की गति कम करेगा- द हिंदू

समाचार:

- भारतीय रेलवे सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जल्द ही चुनिंदा मार्गों पर वंदे भारत और गतिमान एक्सप्रेस सहित प्रीमियम ट्रेनों की अधिकतम गति को वर्तमान 160 किमी प्रति घंटे से घटाकर 130 किमी प्रति घंटे कर देगा।

प्रीलिम्स टेकअवे
- गतिमान एक्सप्रेस
- वंदे भारत एक्सप्रेस

मुख्य बिंदु

- प्रस्ताव के अनुसार, जो 'सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वांछित' है, गतिमान और वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की गति 160 किमी प्रति घंटे से घटाकर 130 किमी प्रति घंटे की जाएगी, जबकि शताब्दी एक्सप्रेस की गति 150 किमी प्रति घंटे से घटाकर 130 किमी प्रति घंटे की जाएगी।
- सूत्रों ने बताया कि इससे इन मार्गों पर चलने वाली कम से कम 10 सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेनों के समय में 25-30 मिनट की वृद्धि होगी और इनके समय में भी बदलाव होगा।

TPWS विफलता

- TPWS को समाप्त करने या ट्रेनों की गति को 130 किमी प्रति घंटे तक कम करने का उत्तर रेलवे का प्रस्ताव 6 नवंबर, 2023 से बोर्ड के पास लंबित था।
- मंडल रेल प्रबंधक की रिपोर्ट के अनुसार, चूंकि TPWS की मरम्मत या रखरखाव संभव नहीं था, इसलिए रेलवे बोर्ड से प्रीमियम ट्रेनों को डाउनग्रेड करने का अनुरोध किया गया ताकि इन्हें "130 किमी प्रति घंटे की अधिक सुरक्षित गति" पर संचालित किया जा सके।

133. केंद्रीय मंत्री ने CEL को 'मिनी रत्न' (श्रेणी-1) का दर्जा देने की घोषणा की- पीआईबी

समाचार:

- सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (CEL) के स्वर्ण जयंती समारोह में उसे "मिनी रत्न" (श्रेणी-1) का दर्जा प्रदान किया गया।

प्रीलिम्स टेकअवे
- मिनी रत्न
- CEL

मुख्य बिंदु:

- CEL घाटे में चल रही सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी से लाभांश देने वाली कंपनी में तब्दील हो गई है और यह लगातार तीसरा वर्ष है जब CEL ने भारत सरकार को लाभांश का भुगतान किया है, वह भी बढ़ती दर पर।
  - लगभग 58 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।
- प्रधानमंत्री के अमृत काल विजन के अनुरूप, CEL का उद्देश्य प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण बढ़ाना और क्षमता निर्माण, कौशल विकास के माध्यम से विनिर्माण को बढ़ावा देना है।
- रक्षा, रेलवे, सुरक्षा, निगरानी और सौर ऊर्जा के क्षेत्र में CEL का योगदान स्वदेशी प्रौद्योगिकियों और विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।
- उन्होंने आगे कहा, "स्मार्ट बोर्ड का उत्पादन शुरू करने से न केवल CEL के उत्पाद पोर्टफोलियो में विविधता आएगी, बल्कि देश के स्कूलों में स्मार्ट शिक्षा के कार्यान्वयन पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।"

- कर्मचारी संलग्नता को मजबूत करने के लिए CEL प्रबंधन द्वारा उठाए गए नए कदमों के कारण पिछले कुछ वर्षों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ तथा पिछले वित्तीय वर्ष में सर्वकालिक उच्चतम उपलब्धि हासिल हुई।
- सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने मिनी रत्न (श्रेणी-1) का उच्चतर दर्जा प्रदान करने के लिए प्रदर्शन मापदंडों के सही बक्से पर टिक किया है।

134. वैश्विक अर्थव्यवस्था के बढ़ते जोखिमों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत -द हिंदू

समाचार:

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR) के 29वें अंक में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था और वित्तीय प्रणाली मजबूत और संधारणीय बनी हुई है, जो व्यापक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता पर आधारित है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- भारतीय रिजर्व बैंक
- CRAR

मुख्य बिंदु

- RBI ने कहा कि बेहतर बैलेंस शीट के साथ, बैंक और वित्तीय संस्थान निरंतर ऋण विस्तार के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को समर्थन दे रहे हैं।
- FSR के अनुसार, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCB) का पूंजी-जोखिम-भारित परिसंपत्ति अनुपात (CRAR) और सामान्य इक्विटी टियर 1 (CET1) अनुपात मार्च 2024 के अंत तक क्रमशः 16.8% और 13.9% रहा।
- SCB की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात कई वर्षों के निचले स्तर 2.8% पर आ गया और शुद्ध गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NNPA) अनुपात मार्च 2024 के अंत में घटकर 0.6% रह गया।
- RBI ने वित्तीय रिपोर्ट में कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक भू-राजनीतिक तनाव, बढ़े हुए सार्वजनिक ऋण तथा अवस्फीति के अंतिम चरण में धीमी प्रगति के कारण गंभीर खतरों का सामना करना पड़ रहा है।
- रिजर्व बैंक ने कहा कि इन चुनौतियों के बावजूद वैश्विक वित्तीय प्रणाली संधारणीय बनी हुई है तथा वित्तीय स्थितियां स्थिर हैं।

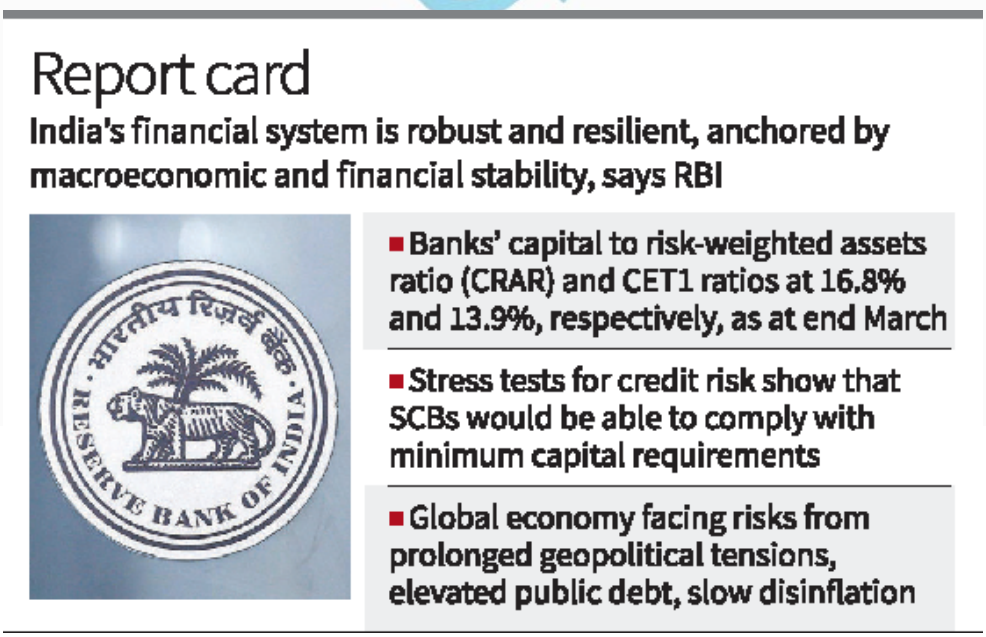

135. सेबी ने डीलिस्टिंग के नियमों को आसान बनाया - द हिंदू

समाचार:

- सेबी ने हाल ही में ब्रोकरों और म्यूचुअल फंडों से कहा है कि वे विपणन और विज्ञापन अभियानों के लिए अनियमित वित्तीय प्रभावशाली व्यक्तियों की सेवाओं का उपयोग करना बंद करें।

प्रीलिम्स टेकअवे
- सेबी
- डेरिवेटिव

मुख्य बिंदु:

- भारतीय शेयर बाजार में तेजी के कारण तथाकथित वित्तीय प्रभावशाली लोगों की लोकप्रियता बढ़ी है, जो सोशल मीडिया पर अपने चैनलों के माध्यम से शेयरों और अन्य संबंधित निवेशों पर सलाह देते हैं।

- यह निर्णय 'अनियमित संस्थाओं सहित कुछ व्यक्तियों द्वारा निवेशकों को अनुचित दावों के आधार पर प्रतिभूतियों में सौदा करने के लिए प्रेरित करने' से संबंधित चिंताओं को दूर करने के लिए लिया गया था।
- सेबी के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल तक भारत में 154 मिलियन ट्रेडिंग खाते थे, जो अप्रैल 2019 में 36 मिलियन ट्रेडिंग खातों से चार गुना से अधिक है।
- विनियमित इकाई की यह जिम्मेदारी होगी कि वह यह सुनिश्चित करे कि जिन व्यक्तियों के साथ वह जुड़ी है, वे सेबी द्वारा निर्धारित आचरण नियमों का उल्लंघन न करें, जिसमें सुनिश्चित रिटर्न के वादे से बचना भी शामिल है।
- सेबी ने उन शेयरों पर निर्णय लेने के लिए नए मानदंड भी पेश किए हैं, जिन्हें वायदा और विकल्प जैसे व्युत्पन्न उत्पादों से जोड़ा जा सकता है, जैसा कि इस महीने की शुरुआत में एक चर्चा पत्र में प्रस्तावित किया गया था।
- सेबी बोर्ड ने डीलिस्टिंग नियमों में बदलाव को भी मंजूरी दे दी है जिससे कंपनियों के लिए स्टॉक एक्सचेंजों से बाहर निकलना आसान हो जाएगा।
- कंपनियां अब स्टॉक एक्सचेंजों से डीलिस्टिंग के वैकल्पिक तंत्र के रूप में शेयरधारकों को शेयरों के लिए निश्चित मूल्य की पेशकश कर सकती हैं।
  - वर्तमान में, डीलिस्टिंग रिवर्स बुक-बिल्डिंग के माध्यम से की जाती है।

136. सरकार MSME विलंबित भुगतान से संबंधित विवादों में सुधार करने हेतु अधिनियम 2006 में संशोधन करेगी - द हिंदू

समाचार:

- केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) MSME विकास अधिनियम, 2006 में संशोधन कर रहा है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- MSME
- समाधान पोर्टल

मुख्य बिंदु:

- इस संशोधन का उद्देश्य विलंबित भुगतान से संबंधित विवादों के प्रबंधन के लिए तंत्र में सुधार करना तथा MSME क्षेत्र की उभरती जरूरतों को बेहतर तरीके से पूरा करना है।
- यह अधिनियम 2006 में लाया गया था और समय बदल गया है। आवश्यक सहायता की प्रकृति में भी बहुत बड़ा बदलाव आया है।
- इसी तरह, जब MSME के लिए राष्ट्रीय बोर्ड की बात आती है, तो इसमें राज्यों के सभी सचिवों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए क्योंकि उद्योग को जमीनी स्तर पर राज्य सरकारों से जुड़ना होता है।
- जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म उद्यमों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।
- इसके अतिरिक्त, MSME मंत्रालय समाधान पोर्टल को एक व्यापक ऑनलाइन समाधान मंच में परिवर्तित करने की प्रक्रिया में है, जो वर्तमान में केवल सूक्ष्म और लघु उद्यमों (MSE) को विलंबित भुगतान से उत्पन्न विवादों पर नज़र रखता है।
- इस कार्यक्रम में मंत्रालय ने व्यापार सक्षमता एवं विपणन (TEAM) पहल की भी घोषणा की , जिसका उद्देश्य 5 लाख MSE को ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) से जोड़ना है।
- अगले तीन वर्षों में 277 करोड़ रुपये के परिव्यय वाली इस पहल का उद्देश्य MSE को कैटलॉगिंग, खाता प्रबंधन, लॉजिस्टिक्स और पैकेजिंग सामग्री और डिजाइन में सहायता प्रदान करना है।
- मंत्रालय ने टियर-2 और टियर-3 शहरों पर ध्यान केंद्रित करते हुए महिलाओं के स्वामित्व वाले अनौपचारिक सूक्ष्म उद्यमों को औपचारिक रूप देने के लिए जागरूकता फैलाने के लिए यशस्विनी अभियान की भी घोषणा की है।

137. भूटान से आया मृग-जैसे स्तनपायी में सबसे कम तापमान दर्ज किया गया- द हिंदू

समाचार:

- मुख्य भूमि सीरो, एक स्तनपायी प्राणी जो बकरी और मृग के मिश्रण जैसा दिखता है, को उसके प्राकृतिक निवास स्थान भूटान के बाहर सबसे कम ऊंचाई पर असम में दर्ज किया गया है।

प्रीलिम्स टेकअवे
- रायमोना राष्ट्रीय उद्यान

मुख्य बिंदु

- वैज्ञानिकों की एक टीम ने पश्चिमी असम के रायमोना नेशनल पार्क में औसत समुद्र तल से 96 मीटर ऊपर एक अकेला मुख्य भूमि सीरो (कैप्रिकॉर्निस सुमात्राएंसिस थार) दर्ज किया।
- अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के अनुसार, मुख्यभूमि सीरो 200 मीटर से 3,000 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में निवास करते हैं।
- इसका निवास स्थान सीमा पार भूटान में फिबसू वन्यजीव अभयारण्य और रॉयल मानस राष्ट्रीय उद्यान है।

138. RBI रिपोर्ट: बैंकों का सकल NPA अनुपात 12 साल के निचले स्तर 2.8% पर - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात घटकर 12 वर्ष के निम्नतम स्तर पर आ गया।

प्रीलिम्स टेकअवे

- NPA
- वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR)

मुख्य बिंदु:

- RBI ने अपनी वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR) में कहा कि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात मार्च 2024 में घटकर 2.8 प्रतिशत रह गया।
- मार्च 2025 के लिए GNPA अनुपात का अनुमान मैक्रो स्ट्रेस टेस्ट पर आधारित है, जो मैक्रोइकोनॉमिक वातावरण से उत्पन्न अप्रत्याशित झटकों के प्रति बैंकों की बैलेंस शीट की संधारणीयता का आकलन करने के लिए किया जाता है।
- आधारभूत तनाव परिदृश्य के तहत, मार्च 2025 तक सभी बैंकों का GNPA अनुपात सुधरकर 2.5 प्रतिशत हो सकता है।
- RBI की अर्धवार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि व्यापक आर्थिक माहौल गंभीर तनाव की स्थिति में पहुंच जाता है तो GNPA अनुपात बढ़कर 3.4 प्रतिशत हो सकता है।
- गंभीर तनाव परिदृश्य में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSB) का GNPA अनुपात मार्च 2024 में 3.7 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2025 में 4.1 प्रतिशत हो सकता है
- ऋण जोखिम, ब्याज दर जोखिम और तरलता जोखिम को कवर करने वाले तनाव परीक्षण किए जाते हैं तथा इन झटकों के प्रति वाणिज्यिक बैंकों की संधारणीयता का अध्ययन किया जाता है।
- चिंतात्मक परीक्षणों का उपयोग करते हुए, RBI एक आधार रेखा और दो प्रतिकूल परिदृश्यों - मध्यम और गंभीर - के तहत एक वर्ष की अवधि में हानि या खराब ऋण और पूंजी अनुपात का अनुमान लगाता है।
- बैंक समूहों में अर्ध-वार्षिक स्लिपेज अनुपात (मानक अग्रिमों के हिस्से के रूप में नए NPA अभिवृद्धि) में कमी आई।
- यद्यपि वर्ष के दौरान राइट-ऑफ की राशि में कमी आई, लेकिन GNPA स्टॉक में कमी के कारण राइट-ऑफ अनुपात लगभग एक वर्ष पहले के स्तर पर ही रहा।
- कुल मिलाकर, मार्च 2020 से GNPA अनुपात में निरंतर कमी मुख्य रूप से नए NPA अभिवृद्धि में लगातार गिरावट और राइट-ऑफ में वृद्धि के कारण हुई है।

139. दिल्ली की बारहमासी जलभराव समस्या से संबंधित मामला -इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- दिल्ली में भारी बारिश के कारण जलभराव की स्थिति पैदा हो गई है, जिसकी वजह कई प्रशासनिक खामियां हैं।

प्रीलिम्स टेकअवे

- शहरी बाढ़

मुख्य बिंदु:

- मानसून की पहली बारिश ने दिल्ली को गर्मी से बड़ी राहत तो दी है, लेकिन तीन घंटे की भारी बारिश ने राष्ट्रीय राजधानी को अस्त-व्यस्त कर दिया।
- ऐसा तब है जबकि लोक निर्माण विभाग ने दावा किया है कि गाद निकालने का काम 83 प्रतिशत पूरा हो चुका है।
- वरिष्ठ PWD अधिकारियों और विशेषज्ञों के अनुसार, इसके प्रमुख कारण विभागों की बहुलता, समन्वय की कमी, खराब बुनियादी ढांचा, दोषपूर्ण डिजाइन और बढ़ती जनसंख्या हैं।
- एक अन्य प्रमुख कारण लंबे समय से लंबित 'ड्रेनेज मास्टर प्लान' है, जिसे कई समस्याओं के कारण अभी तक लागू नहीं किया गया है
- शहर की जल निकासी व्यवस्था में क्षमता नहीं है। यह बहुत पुरानी भी है और आबादी लगातार बढ़ रही है।
  - एक एकीकृत मास्टर प्लान की आवश्यकता है।

140. भविष्य के युद्धों की लागत बहुत अधिक है, संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए: CDS

प्रीलिम्स टेकअवे
- CDS
- WASP

समाचार:
- भविष्य के युद्धों की लागत "बहुत अधिक" होने की बात कहते हुए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने संसाधनों और जनशक्ति को अनुकूलतम बनाने तथा भविष्य के हथियारों और प्रणालियों को वहन करने के लिए दक्षता लाने की आवश्यकता पर बल दिया।
- नागरिक और सैन्य संसाधनों के बीच एकीकरण की बातचीत से पहले, सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच एकीकरण होना चाहिए।

मुख्य बिंदु:
- लगभग 170 ऐसी पहल जहां तीनों सेनाएं एकीकृत तरीके से एक साथ काम कर सकती हैं।
- CDS ने वायु सेना के वारफेयर एंड एयरोस्पेस स्ट्रैटेजी प्रोग्राम (WASP) कोर्स के सेमिनार में कहा, "सेनाएं समय, संसाधन, प्रक्रिया, बुनियादी ढांचे और जनशक्ति का अनुकूलन करने में सक्षम होंगी।"

सामरिक कार्यक्रम
- WASP 15 सप्ताह का एक रणनीतिक शिक्षा कार्यक्रम है जिसे वर्ष 2022 में प्रतिभागियों को भूराजनीति, भव्य रणनीति और व्यापक राष्ट्रीय शक्ति की गहरी समझ प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था।
- इसका संचालन भारतीय वायुसेना द्वारा कॉलेज ऑफ एयर वारफेयर और सेंटर फॉर एयर पावर स्टडीज के साथ मिलकर किया जाता है।
- तीनों सेनाओं के बीच एकीकरण के लिए तार्किक कदम यह होगा कि इस दृष्टिकोण को अन्य सेनाओं तक भी ले जाया जाए।
- उदाहरण के लिए, नौसेना और तटरक्षक बल मिलकर सूची और रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल का काम कर सकते हैं।
- हम केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों को भी आवश्यक रसद और बुनियादी ढांचे में शामिल कर सकते हैं।

वैकल्पिक तरीके
- निम्नलिखित महत्वपूर्ण तरीके –
  - सरकार को लागत कम करने में सहायता करें।
  - क्योंकि भविष्य के युद्धों की लागत बहुत अधिक होगी, इसलिए हथियार प्रणालियां और प्लेटफॉर्म बहुत महंगे होंगे।
  - हमें काम करने के वैकल्पिक तरीकों के बारे में सोचना होगा। यह बहुत व्यावहारिक और समयबद्ध होना चाहिए।
- विद्वान योद्धा एक सैन्य पेशेवर होता है जो आज के जटिल और गतिशील सुरक्षा वातावरण में बौद्धिक कुशाग्रता को युद्ध कौशल के साथ जोड़ता है।
- भारत की सामरिक संस्कृति की चर्चा करते हुए वायुसेना प्रमुख ने कहा कि यह ऐतिहासिक अनुभवों और निरंतर विकसित होते भू-राजनीतिक परिवेश से आकार लेती है।
- इसमें रणनीतिक स्वायत्तता, सावधानी और क्षेत्रीय अखंडता पर विशेष ध्यान देने पर जोर दिया गया है।

INTERNATIONAL RELATION

141. जलवायु परिवर्तन नेपाल में शहद प्राप्त करने का पीढ़ियों पुराना शिल्प खतरे में - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- मधु मक्खी
- परागन

समाचार:
- जलवायु परिवर्तन के कारण नेपाल में गुरुंग समुदाय द्वारा शहद प्राप्त करने का पीढ़ियों पुराना शिल्प तेजी से खतरे में है

मुख्य बिंदु:
- जैसा कि कुछ विशेषज्ञों का कहना है, जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ता तापमान मधुमक्खियों की वृद्धि, उनके भोजन की उपलब्धता और यहां तक कि पौधों के परागण को भी बाधित करता है।
- राजधानी काठमांडू से लगभग 175 किमी. (110 मील) पश्चिम में स्थित ताप और पास के लामजुंग और कास्की जिलों के अन्य गांवों में रहने वाले गुरुंग समुदाय के लोग कई पीढ़ियों से शहद की तलाश में हिमालय की खड़ी चट्टानों की खोज करते रहे हैं।

- इससे पहले, ग्रामीण एक लाल मुर्गे की बलि देने की रस्म में शामिल हुए, जिसके पैरों और पंखों को चट्टान के देवता को भेंट के रूप में चढ़ाया गया, ताकि विशाल मधुमक्खियों से शहद लेने के लिए क्षमा मांगी जा सके, जिन्हें वैज्ञानिक एपिस लेबरियोसा के रूप में जानते हैं।
- मधुकोश का अर्क, जिसे 'मेड हनी ' के रूप में भी जाना जाता है, कुछ नशीले गुणों के कारण जो मतिभ्रम पैदा कर सकता है, 2,000 नेपाली रुपये ($1.5) प्रति लीटर बिकता है, लेकिन ग्रामीण संग्रह में गिरावट के कारण अधिक कटाई को कारण नहीं मानते हैं।
- प्रत्येक वर्ष एकत्रित करने के लिए शहद की उपलब्धता कम होने के कारण, पिछले दशक में इस कार्य से होने वाली आय में गिरावट आई है।

मधुमक्खियां और जलवायु परिवर्तन

- कुछ विशेषज्ञ वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन को गिरावट का मुख्य कारण मानते हैं, लेकिन अन्य योगदानकर्ता वनों की कटाई, जलधाराओं और नदियों से जल को जलविद्युत बांधों के लिए मोड़ना और कीटनाशकों का उपयोग हैं।
- संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों और स्वतंत्र शोध से पता चलता है कि हिमालय में तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.2 डिग्री सेल्सियस की औसत वैश्विक वृद्धि से अधिक है।
- वैश्विक अध्ययनों से पता चलता है कि तापमान में एक डिग्री की भी वृद्धि मधुमक्खियों की वृद्धि, उनके भोजन की उपलब्धता और पौधों के क्रॉस परागण को प्रभावित करती है।
- शोध से पता चला है कि जलवायु परिवर्तन मधुमक्खियों के लिए खाद्य श्रृंखलाओं और पौधों के फूलने को बाधित कर रहा है, जिससे दुनिया भर में दोनों की आबादी प्रभावित हो रही है।
- बहुत अधिक या बहुत कम बारिश, तीव्र या अनियमित बारिश, और लंबे समय तक सूखा या तापमान में उच्च उतार-चढ़ाव, मधुमक्खियों पर कॉलोनी की ताकत और शहद के भंडार को बनाए रखने के लिए दबाव डालते हैं।
- पौधों में जीवन चक्र परिवर्तन भी जल्दी या देर से फूलने और अमृत और शहद के स्राव में उतार-चढ़ाव का कारण बनते हैं।
- कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि बाढ़ और भूस्खलन के कारण आवास नष्ट हो सकते हैं तथा उन क्षेत्रों में कमी आ सकती है जहां मधुमक्खियां भोजन की तलाश कर सकती हैं।
- मधुमक्खियों की आबादी में गिरावट का मतलब है ऊंचे पहाड़ों पर उगने वाली फसलों और जंगली वनस्पतियों का परागण अपर्याप्त होना।
- इसका ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ेगा, क्योंकि शहद की खोज एक महत्वपूर्ण इको-टूरिज्म गतिविधि के रूप में उभर रही एक परंपरा है।

142. कैपजेमिनी अध्ययन: वैश्विक उच्च-निवल-संपत्ति जनसंख्या और संपत्ति पुनः रिकॉर्ड स्तर पर पहुंची - द हिंदू

समाचार:

- भारत में उच्च निवल संपत्ति वाले व्यक्तियों (HNWI) की संख्या वर्ष 2023 में 12.2% की वृद्धि हुई।

प्रीलिम्स टेकअवे

- HNWI
- APAC क्षेत्र

मुख्य बिंदु:

- भारत के HNWI की वित्तीय संपत्ति वर्ष 2022 की तुलना में वर्ष 2023 में 12.4% बढ़ गई
- वर्ष 2023 में बाजार में उछाल के कारण HNWI की संपत्ति में 3.8 ट्रिलियन डॉलर की वृद्धि हुई ।
- APAC क्षेत्र में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले देशों में भारत और ऑस्ट्रेलिया शामिल थे।
- रेसिलिएंट अर्थव्यवस्था और इक्विटी बाजारों के मजबूत प्रदर्शन ने इन दोनों देशों में संपत्ति वृद्धि को बढ़ावा दिया।
- एशिया-प्रशांत क्षेत्र में HNWI की संपत्ति में 4.2% की वृद्धि तथा HNWI जनसंख्या में 4.8% की वृद्धि देखी गई।
- भारत के बाजार पूंजीकरण में वर्ष 2022 में 6% की वृद्धि के बाद वर्ष 2023 में 29.0% की वृद्धि हुई।
- GDP के प्रतिशत के रूप में देश की राष्ट्रीय बचत भी वर्ष 2022 में 29.9% की तुलना में वर्ष 2023 में 33.4% तक बढ़ गई।
- पुनरुत्थानशील इक्विटी बाजार और मैक्रोइकॉनॉमिक्स में सुधार से उत्साहित, वैश्विक उच्च-निवल-मूल्य वाले व्यक्ति (HNWI) की संपत्ति और जनसंख्या वर्ष 2023 में 4.7% और 5.1% बढ़ी।

143. मालदीव के राष्ट्रपति भारतीय पीएम शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- पड़ोसी प्रथम नीति

समाचार:
- मालदीव के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है।

मुख्य बिंदु
- भारत और मालदीव के बीच संबंधों में तब खटास आ गई थी, जब नवंबर 2023 में सत्ता में आने के तुरंत बाद मुइज्जू, जिन्हें चीन समर्थक माना जाता है, ने भारत से द्वीप देश से अपने सैन्य कर्मियों को वापस बुलाने को कहा था।
- पड़ोसी प्रथम नीति की अवधारणा वर्ष 2008 में अस्तित्व में आई।
- अपनी 'पड़ोसी पहले' नीति के तहत, भारत अपने सभी पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण और पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- भारत एक सक्रिय विकास साझेदार है और इन देशों में कई परियोजनाओं में शामिल है।
- अपने पड़ोसी देशों के साथ जुड़ने के लिए भारत का दृष्टिकोण परामर्श, गैर-पारस्परिकता और ठोस परिणाम प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने की विशेषता है।
- यह दृष्टिकोण कनेक्टिविटी, बुनियादी ढांचे, विकास सहयोग, सुरक्षा को बढ़ाने और लोगों से लोगों के बीच अधिक संपर्क को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देता है।

144. पाकिस्तान में पोलियो वायरस से संबंधित मामला - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- पोलियो

समाचार:
- इस साल का पांचवा पोलियो मामला बलूचिस्तान के क्वेटा से सामने आया है। प्रभावित दो वर्षीय बच्चे के पैरों में 29 अप्रैल को लकवा मार गया था।

पोलियो: छोटे बच्चों के लिए एक गंभीर ख़तरा
- पोलियो, जिसे पोलियोमाइलाइटिस भी कहा जाता है, एक संक्रामक रोग है जो वायरस के कारण होता है।
- यह वायरस मुख्यतः संपर्क, दूषित पानी या भोजन के माध्यम से आसानी से फैलता है,
- पोलियो की शुरुआत अक्सर फ्लू जैसे लक्षणों से होती है, लेकिन यह गंभीर भी हो सकता है।
- कभी-कभी यह तंत्रिकाओं पर आक्रमण करता है, जिससे लकवा मार जाता है, विशेषकर पैरों में।
- दुर्लभ मामलों में, यह घातक भी हो सकता है।
- पोलियो वायरस के विभिन्न प्रकार हैं, दो प्रकार दुनिया भर में समाप्त हो चुके हैं
- केवल टाइप 1 कुछ जगहों पर बचा हुआ है, और यह पक्षाघात का कारण बनने वाला सबसे ज़्यादा संभावित वायरस है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि केवल दो देशों पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में ही अभी भी पोलियो है।

भारत की सफलता की कहानी:
- वर्ष 1995 में शुरू किए गए टीकाकरण कार्यक्रम के कारण भारत को पोलियो मुक्त देश घोषित किया गया है।

145. संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को क्वांटम विज्ञान का वर्ष घोषित किया- द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- क्वांटम कम्प्यूटिंग
- क्यूबिट्स

समाचार:
- संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि 2025 को 'क्वांटम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' घोषित किया जाएगा।

मुख्य बिंदु:
- संस्था ने कहा कि यह पहल "वर्ष भर" और "विश्वव्यापी" होगी, तथा इसे "क्वांटम विज्ञान और अनुप्रयोगों के महत्व के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से सभी स्तरों पर गतिविधियों के माध्यम से मनाया जाएगा।"
- जर्मन भौतिक विज्ञानी वर्नर हाइजेनबर्ग ने एक प्रसिद्ध पेपर प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में खोजी जा रही क्वांटम परिघटनाओं को समझने के लिए क्लासिकल यांत्रिकी की पुनर्व्याख्या की थी।
- क्वांटम यांत्रिकी कहलाने वाली वस्तुओं की आधारशिला रखना।

- क्वांटम कंप्यूटर की बदौलत क्वांटम विज्ञान और तकनीकें हाल ही में सार्वजनिक बातचीत और मुद्दों में अधिक बार दिखाई दे रही हैं।
- यद्यपि इस प्रकार की पूरी तरह से कार्यशील मशीनें अभी तक अस्तित्व में नहीं हैं, लेकिन शोधकर्ताओं और उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि यह समय की बात है।
- इस विश्वास के अनुरूप, भारत सरकार ने अप्रैल 2023 में 6,000 करोड़ रुपये की लागत से 'राष्ट्रीय क्वांटम मिशन' की घोषणा की, जिसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा वर्ष 2023 से वर्ष 2031 तक लागू किया जाएगा।
  - चार कार्यक्षेत्र: क्वांटम कंप्यूटिंग, क्वांटम संचार, क्वांटम सेंसिंग और मेट्रोलॉजी, तथा क्वांटम सामग्री और उपकरण।
  - उनकी श्रेष्ठ कम्प्यूटेशनल क्षमताओं के कारण, इलेक्ट्रॉनिक्स, स्वच्छ ऊर्जा और औषधि विकास पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा।
- संयुक्त राष्ट्र के बयान के अनुसार, इसकी घोषणा "किसी भी व्यक्ति, समूह, स्कूल, संस्थान या सरकार के लिए एक संकेत है कि वे 2025 को क्वांटम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में जागरूकता बढ़ाने के अवसर के रूप में उपयोग करें।"
- इसमें यह भी कहा गया है कि एक संचालन समिति "वैश्विक पहलों और कार्यक्रमों की योजना बना रही है, विशेष रूप से वे जो क्वांटम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व से अनभिज्ञ दर्शकों तक पहुँचते हैं।"

146. UAE से चांदी के आयात में लगभग 60 गुना वृद्धि असामान्य: GTRI

प्रीलिम्स टेकअवे
- एक्जिम नीति
- MFN

समाचार:
- पिछले वित्त वर्ष के दौरान संयुक्त अरब अमीरात (UAE) से चांदी के आयात में लगभग 60 गुना वृद्धि असामान्य है, क्योंकि पश्चिम एशियाई देश चांदी का उत्पादन नहीं करता है।
- ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (GTRI) की एक रिपोर्ट के अनुसार, आयात में यह उछाल भारत और UAE द्वारा मुक्त व्यापार समझौते के तहत तय किए गए मूल नियम के उल्लंघन का संकेत हो सकता है।

मुख्य बिंदु:
- UAE से चांदी का आयात वित्त वर्ष 23 में 29.2 मिलियन डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 1.74 बिलियन डॉलर हो गया, जिसका कारण भारत द्वारा UAE व्यापार समझौते के तहत 8 प्रतिशत शुल्क लगाना है, जबकि पहले अन्य देशों से आयात पर सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र (MFN) टैरिफ 15 प्रतिशत था।
- "हालांकि, यह व्यापार असामान्य है क्योंकि UAE चांदी का उत्पादन नहीं करता है; यह बड़ी चांदी की छड़ें आयात करता है, उन्हें पिघलाता है और चांदी के दानों में परिवर्तित करता है।
- GTRI ने कहा कि आयात की मात्रा और मूल्य पर नज़र रखने के लिए एक मजबूत निगरानी तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।
  - व्यापार समझौते के तहत उत्पत्ति के नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए सोने और चांदी के आयात में असामान्य वृद्धि पर त्वरित नीतिगत प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना।
- "भारत में सोने, चांदी और आभूषणों पर 15 प्रतिशत का उच्च आयात शुल्क समस्या की जड़ है।
  - सरकार को टैरिफ को घटाकर 5 प्रतिशत करने पर विचार करना चाहिए जिससे बड़े पैमाने पर तस्करी और अन्य दुरुपयोग पर रोक लगेगी।
- उच्च टैरिफ दर के परिणामस्वरूप वित्त वर्ष 24 में भारत को 1,010 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हुआ है और राजस्व हानि बढ़ सकती है क्योंकि भारत ने अगले आठ वर्षों के भीतर UAE के साथ चांदी की असीमित मात्रा पर टैरिफ को शून्य करने की प्रतिबद्धता जताई है।
- वित्त वर्ष 2024 में भारत ने वैश्विक स्तर पर 5.4 बिलियन डॉलर मूल्य की चांदी का आयात किया।
- चूंकि अगले आठ वर्षों में टैरिफ शून्य हो जाएगा, इसलिए अधिकांश चांदी का आयात संभवतः संयुक्त अरब अमीरात से होगा, जिससे टैरिफ लाभ के कारण 6,700 करोड़ रुपये का राजस्व नुकसान होगा।
- GTRI ने कहा कि यह व्यापार मुख्य रूप से भारत द्वारा दी जाने वाली कम टैरिफ की पेशकश से प्रेरित है।

147. CII ने चीन में FDI प्रतिबंधों और उच्च आयात शुल्क पर पुनर्विचार की मांग की - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- बाह्य क्षेत्र
- CII

समाचार:
- भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) ने अपनी हालिया रिपोर्ट में रेखांकित किया है कि भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र को आयात पर निर्भर से मूल्यवर्धित विनिर्माण की ओर स्थानांतरित करने के लिए महत्वपूर्ण कार्रवाई की आवश्यकता है।

मुख्य बिंदु:
- भारतीय उद्योग ने सरकार से चीन से निवेश प्रवाह और कुशल कर्मियों की आवाजाही पर प्रतिबंधों पर फिर से विचार करने का आग्रह किया है
  - साथ ही इलेक्ट्रॉनिक्स घटकों पर उच्च आयात शुल्क में कटौती की जानी चाहिए, क्योंकि इससे महत्वपूर्ण इनपुट के स्थानीयकरण को बढ़ावा मिलने के बजाय वियतनाम और चीन जैसे प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले भारतीय इलेक्ट्रॉनिक सामान वैश्विक स्तर पर अप्रतिस्पर्धी हो गए हैं।
- अप्रैल 2020 में बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए शुरू की गई उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना के बारे में चेतावनी देते हुए कहा गया है कि कुछ लागत नुकसानों की भरपाई के लिए, यह योजना जल्द ही "टैरिफ-प्रेरित लागत" के कारण अपनी प्रभावशीलता खो सकती है।

रिपोर्ट: भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स घटकों और उप-असेंबली के विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना
- भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले देशों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) पर वर्ष 2020 में लगाए गए प्रतिबंधों पर, रिपोर्ट में कहा गया है कि महामारी के दौरान शिकारी अधिग्रहण को रोकने के उद्देश्य से उठाए गए कदम की अब उपयोगिता समाप्त हो गई है और इस पर "पर्याप्त सुरक्षा" के साथ पुनर्विचार किया जाना चाहिए ।
- भारत को निवेश, घटक आयात, अभावग्रस्त क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के प्रति खुलापन, कुशल जनशक्ति की आवक में आसानी और गैर-व्यापार शुल्कों में ढील के प्रति गैर-प्रतिबंधात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- एक दूसरे पर निर्भर विश्व में, कोई भी देश घरेलू खपत के लिए सभी घटकों का उत्पादन करने की आकांक्षा नहीं रख सकता है और उच्च मूल्य-वर्धित उत्पादों के आयात और निर्यात के बीच सही संतुलन ही दीर्घकालिक औद्योगिक संधारण का नुस्खा है।
  - सबसे बड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माता चीन, जिसका अंतर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स व्यापार 1.6 ट्रिलियन डॉलर का है, 42% आयात पर निर्भर करता है
- भारत की कलपुर्जों की मांग मुख्यतः चीन से आयात के माध्यम से पूरी होती है तथा अल्पकालिक रणनीतियों का घरेलू विनिर्माण के संभावित विस्तार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है।
- प्राथमिकता वाले उप-संयोजनों और घटकों पर आयात शुल्क को प्रमुख प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्थाओं के अनुरूप तत्काल तर्कसंगत बनाने की आवश्यकता है।
- उत्पाद निर्माताओं को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए अधिकांश टैरिफ लाइनों को 5% या उससे कम के स्तर पर लाने की आवश्यकता है।

148. भारत, अमेरिका जैवलिन एंटी टैंक मिसाइलों के सह-उत्पादन पर चर्चा की - द प्रिंट

प्रीलिम्स टेकअवे
- MP-ATGM
- DRDO

समाचार:
- भारत और अमेरिका ने भारतीय सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारत में अमेरिकी जैवलिन मिसाइलों के सह-उत्पादन पर चर्चा की है।

मुख्य बिंदु
- मिसाइलों के संयुक्त उत्पादन पर चर्चा हाल ही में अमेरिका से भारत की उच्चस्तरीय यात्रा के दौरान हुई।
- भारत और अमेरिका सैन्य उपकरणों के संयुक्त उत्पादन सहित अपने सहयोग को बढ़ाने पर चर्चा कर रहे हैं।
- सूत्रों ने बताया कि सेना को नवीनतम एंटी टैंक गाइडेड मिसाइलों की काफी जरूरत है और सेना को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए आपातकालीन खरीद के तहत सीमित संख्या में इजरायली स्पाइक ATGM हासिल करना पड़ा।
- तीसरी पीढ़ी के ATGM की आवश्यकता लंबे समय से रही है और वैश्विक मार्ग से हथियार प्रणालियों को हासिल करने के प्रयास सफल नहीं हुए हैं।
- रक्षा अधिकारियों ने बताया कि स्वदेशी तरीके से ATGM हासिल करने का काम जारी है, क्योंकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन भी सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जल्द ही अपने मैन-पोर्टेबल एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल (MP-ATGM) का परीक्षण करने जा रहा है।

- भारतीय MP-ATGM हथियार प्रणाली का प्रौद्योगिकी की श्रेष्ठता सिद्ध करने के उद्देश्य से कई बार विभिन्न उड़ान विन्यासों में क्षेत्र मूल्यांकन किया गया है।

149. गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) न्यायाधिकरण ने लिट्टे को नोटिस जारी किया - द हिंदू

समाचार:

- गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) न्यायाधिकरण ने लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (LTTE) को नोटिस जारी कर यह बताने को कहा है कि उसे गैरकानूनी क्यों न घोषित कर दिया जाए।

प्रीलिम्स टेकअवे

- लिट्टे
- UAPA

मुख्य बिंदु

- यह नोटिस केंद्र द्वारा लिट्टे पर प्रतिबंध लगाने संबंधी अधिसूचना जारी करने के एक महीने बाद आया है, जिसमें कहा गया था कि उसका मानना है कि संगठन अभी भी ऐसी गतिविधियों में लिप्त है, जो भारत की अखंडता और सुरक्षा के लिए हानिकारक हैं।
- 5 जून, 2024 को केंद्र ने गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम 1967 की धारा 5 के तहत गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) न्यायाधिकरण का गठन किया
  - दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली एक पीठ ने यह निर्णय दिया कि लिट्टे को गैरकानूनी संगठन घोषित करने के लिए पर्याप्त कारण थे या नहीं।
- लिट्टे को 23 जुलाई 2024 को नई दिल्ली में न्यायाधिकरण के समक्ष विधिवत अधिकृत एवं निर्देशित वकील/अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होने का विकल्प भी दिया गया।

तमिलनाडु ने प्रतिबंध अधिसूचित किया

- तमिलनाडु सरकार ने 18 मई 2024 को लिट्टे पर प्रतिबंध लगाने की अधिसूचना भी जारी की, जिसमें उसने कहा कि केंद्र का मानना है कि मई 2009 में श्रीलंका में उसकी सैन्य हार के बाद भी लिट्टे पर प्रतिबंध जारी रहेगा।
- लिट्टे ने 'ईलम' की अवधारणा को नहीं छोड़ा था और वह गुप्त रूप से धन जुटाने और प्रचार गतिविधियों के माध्यम से इस उद्देश्य की दिशा में काम कर रहा था और
  - बचे हुए लिट्टे नेता या कार्यकर्ताओं ने बिखरे हुए कार्यकर्ताओं को फिर से संगठित करने और संगठन को स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनर्जीवित करने के प्रयास भी शुरू कर दिए हैं।

150. भारत और अमेरिका के बीच स्ट्राइकर इन्फेंट्री वाहनों के सह-उत्पादन को लेकर चर्चा - द हिंदू

समाचार:

- भारत ने स्ट्राइकर इन्फेंट्री वाहनों के सह-उत्पादन में रुचि व्यक्त की है और स्ट्राइकर तथा जेवलिन एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल (ATGM) पर अमेरिका के साथ बातचीत के "अपेक्षाकृत" शुरुआती चरण में है।

प्रीलिम्स टेकअवे

- एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल (ATGM)

मुख्य बिंदु

- इसके साथ ही, महत्वपूर्ण एवं उभरती प्रौद्योगिकी (iCET) ढांचे पर पहल के तहत रक्षा औद्योगिक सहयोग के साथ-साथ MQ-9B मानवरहित हवाई वाहनों और GE-414 जेट इंजनों के सौदों में भी प्रगति हो रही है।
- हालांकि, कई रक्षा अधिकारियों ने स्ट्राइकर को लेकर अपनी शंकाएं व्यक्त कीं, क्योंकि हाल के वर्षों में भारतीय कंपनियों द्वारा कई ऐसे वाहनों का विकास और प्रदर्शन किया गया है।
- अमेरिका ने अतीत में द्विपक्षीय अभ्यासों के दौरान भारतीय सेना के लिए स्ट्राइकर और जेवलिन दोनों का प्रदर्शन किया है।
- भारतीय सेना द्वारा जैवलिन का व्यापक मूल्यांकन किया गया था, हालांकि सौदा नहीं हो सका।

GEOGRAPHY

151. चिली के अटाकामा रेगिस्तान में दुनिया का सबसे बड़ा खगोल विज्ञान कैमरा स्थापित किया जायेगा - इंडियन एक्सप्रेस

प्रीलिम्स टेकअवे
- मानचित्र आधारित प्रश्न

समाचार:
- 3.2 गीगापिक्सल से अधिक रिजोल्यूशन, लगभग तीन टन वजन तथा एक दशक तक अभूतपूर्व अन्वेषण करने के महत्वाकांक्षी कार्य के साथ, ऑप्टिकल खगोल विज्ञान के लिए निर्मित अब तक का सबसे बड़ा डिजिटल कैमरा उत्तरी चिली के स्वच्छ आकाश के नीचे स्थापित किए जाने के लिए तैयार है।

मुख्य बिंदु:
- **स्थान** : सेरो पचोन, कोक्विम्बो क्षेत्र, चिली।
- **कैमरा:** यह बहुत बड़ा है, इसका वजन लगभग तीन टन है, तथा इसका रिज़ॉल्यूशन 3.2 गीगापिक्सल से अधिक है।
- **उद्देश्य** : यह कैमरा डार्क एनर्जी, डार्क मैटर और संभावित क्षुद्रग्रह टकरावों का अध्ययन करने के लिए एक दशक लंबे अन्वेषण का हिस्सा है।
- **डेटा:** यह प्रति रात्रि 20 टेराबाइट डेटा उत्पन्न करेगा, जिससे दशक में 15 पेटाबाइट का डेटाबेस तैयार हो जाएगा।
- **उद्देश्य:** यह समझना कि ब्रह्मांड की शुरुआत कैसे हुई और इसका भविष्य में क्या विकास होगा।
- **स्थान का चयन:** चिली का अटाकामा रेगिस्तान साफ़ आसमान प्रदान करता है, जो खगोल विज्ञान के लिए आदर्श है। चिली अपने अटाकामा रेगिस्तान के साफ़ आसमान के कारण खगोल विज्ञान में दुनिया के अधिकांश निवेश का केंद्र है, जो पृथ्वी पर सबसे शुष्क रेगिस्तान है।

POLITY & GOVERNANCE

152. CCI ने निपटान और प्रतिबद्धताओं की निगरानी हेतु नए नियमों का प्रस्ताव दिया - द हिंदू

प्रीलिम्स टेकअवे
- संवैधानिक निकाय

समाचार:
- भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) ने उद्योग जगत की दिग्गज कंपनियों के निपटान और प्रतिबद्धताओं की निगरानी के लिए नए नियमन प्रस्तावित किए हैं।

मुख्य बिंदु:
- CCI द्वारा हाल ही में जारी परामर्श पत्र और मसौदा विनियमन, प्रौद्योगिकी क्षेत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही के एक नए युग की शुरुआत का वादा करता है।
- CCI के मसौदा विनियमों में आयोग के आदेशों के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए स्वतंत्र एजेंसियों की नियुक्ति हेतु एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।
- इस कदम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि उद्योग जगत के दिग्गज अपनी प्रतिबद्धताओं का पालन करें और नियामक जांच से बचने के लिए खामियों का फायदा न उठाएं।

अनुपालन की निगरानी के लिए स्वतंत्र एजेंसियां
- प्रस्तावित विनियमन CCI को लेखा फर्मों, प्रबंधन परामर्शदाताओं, पेशेवर संगठनों, तथा चार्टर्ड अकाउंटेंट, कंपनी सचिवों और लागत लेखाकारों जैसे व्यक्तियों सहित अनेक स्वतंत्र एजेंसियों की नियुक्ति करने का अधिकार प्रदान करते हैं।
- इन एजेंसियों को CCI के आदेशों के कार्यान्वयन की निगरानी करने तथा यह सुनिश्चित करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी जाएगी कि अनुबंध की शर्तों का सख्ती से पालन किया जाए।

निगरानी एजेंसियों की प्रमुख जिम्मेदारियाँ
- नए नियमों के तहत नियुक्त एजेंसियां यह सुनिश्चित करेंगी कि आयोग के आदेशों का क्रियान्वयन हो

- आदेशों के गैर-कार्यान्वयन या गैर-अनुपालन के किसी भी मामले की CCI को सूचना देना, और किसी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वित्तीय या गैर-वित्तीय हित का पर्याप्त रूप से खुलासा करना
- जो उनके प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है, तथा आयोग के निर्देशानुसार आदेश कार्यान्वयन की निगरानी से संबंधित आवधिक रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

- यदि ये एजेंसियां निर्धारित मानकों को पूरा करने में विफल रहती हैं तो CCI के पास उनकी नियुक्ति को निलंबित या समाप्त करने का अधिकार है।
- ऐसा उनकी नियुक्ति की शर्तों के अनुसार किया जा सकता है, अथवा यदि आयोग आवश्यक समझे तो लिखित रूप में दर्ज कारणों से भी किया जा सकता है।
- प्रस्तावित विनियमों में यह प्रावधान है कि निगरानी एजेंसियों को भुगतान
  - भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (निपटान) विनियम, 2024 के प्रासंगिक विनियमों के तहत, आवेदन दायर करने वाले व्यक्ति द्वारा किया जाएगा।
  - भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (प्रतिबद्धता) विनियम, 2024।
- ऐसे मामलों में जहां आवेदन संयोजन विनियमों, या किसी अन्य प्रासंगिक विनियमन के तहत दायर किया जाता है, भुगतान की जिम्मेदारी आयोग द्वारा निर्देशित उपयुक्त व्यक्ति की होगी।
- इससे यह सुनिश्चित होता है कि वित्तीय बोझ नियामक निकाय पर नहीं पड़ता है, बल्कि निपटान या प्रतिबद्धता चाहने वाले पक्षों पर पड़ता है।

153. नीति आयोग ने AIM-ICDK जल चैलेंज 4.0 का अनावरण किया- पीआईबी

प्रीलिम्स टेकअवे
- नीति आयोग
- SDG इंडिया इंडेक्स

समाचार:
- अटल नवाचार मिशन, नीति आयोग (AIM) ने भारत में नवाचार और स्थिरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से AIM - ICDK जल चुनौती 4.0 पहल की घोषणा की है '

मुख्य बिंदु :
- इनोवेशन सेंटर डेनमार्क (ICDK) के सहयोग से
  - AIM ने ओपन इनोवेशन वाटर चैलेंज का चौथा संस्करण प्रस्तुत किया।
  - भारत-डेनमार्क द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी की आधारशिला यह पहल, आविष्कारशील समाधानों के माध्यम से महत्वपूर्ण जल-संबंधी चुनौतियों का समाधान करती है।
- चयनित टीमें वैश्विक "नेक्स्ट जेनरेशन डिजिटल एक्शन" कार्यक्रम में भाग लेंगी और 9 देशों (भारत, डेनमार्क, घाना, केन्या, कोरिया, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, घाना, कोलंबिया और मैक्सिको) की युवा प्रतिभाओं के साथ जुड़ेंगी।
- चयनित टीमों के प्रतिभागियों को समूह कार्य, बूट कैम्प सत्र, मुख्य भाषण और व्यक्तिगत मार्गदर्शन से युक्त कार्य में भाग लेने का अवसर मिलेगा।
  - यह कार्यक्रम स्थिरता, डिजिटल समाधान, समावेशन और सार्वभौमिक डिजाइन सिद्धांतों की खोज को प्रोत्साहित करता है।
  - इसके अतिरिक्त, प्रतिभागियों को डेनमार्क सरकार द्वारा कोपेनहेगन में आयोजित डिजिटल टेक शिखर सम्मेलन में नवाचारों को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।
- सकारात्मक पर्यावरणीय परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध प्रारंभिक स्तर के स्टार्टअप, शोधकर्ताओं और युवा नवप्रवर्तकों को आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
  - डिजिटलीकरण पर विशेष ध्यान देते हुए स्थिरता चुनौतियों के माध्यम से सामाजिक प्रभाव के लिए डिजिटल कार्रवाई पर ध्यान केन्द्रित करना।
- युवा उद्यमी ट्रैक, शुरुआती दौर में भारतीय प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप के लिए अपने विचारों को गति देने और वैश्विक साझेदारी बनाने का एक रोमांचक अवसर प्रस्तुत करता है।
- 'इनोवेशन फॉर यू', एक टेबल बुक सीरीज़ जो भारत के एसडीजी उद्यमियों के प्रयासों पर प्रकाश डालती है।
  - इस संस्करण में भारत के विभिन्न कोनों से 60 उद्यमी भाग ले रहे हैं, जिनमें से प्रत्येक स्थायी नवाचारों के माध्यम से सामाजिक बेहतरी में योगदान दे रहा है।
  - ये स्टार्टअप पुनर्चक्रणीय और नवीकरणीय सामग्रियों, हरित ऊर्जा, समावेशी शिक्षा और अल्पप्रतिनिधित्व वाले समुदायों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

154. लोकसभा का अस्थायी अध्यक्ष कौन होता है और इस पद हेतु चयन प्रकिया कैसे होती है

प्रीलिम्स टेकअवे
- प्रोटेम स्पीकर
- महत्वपूर्ण लेख

समाचार:
- 18वीं लोकसभा का पहला सत्र 24 जून से 3 जुलाई तक चलेगा, जिसके दौरान सदन के नए अध्यक्ष का चुनाव किया जाएगा।

मुख्य बिंदु:
- 18वीं लोकसभा का पहला सत्र 24 जून से 3 जुलाई तक चलेगा, जिसके दौरान सदन के नए अध्यक्ष का चुनाव किया जाएगा।
- जब तक ऐसा नहीं होता, नए संसद सदस्यों को शपथ दिलाने के लिए एक अस्थायी अध्यक्ष का चयन किया जाएगा।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लोकसभा में अध्यक्ष के चुनाव के लिए प्रस्ताव पेश करेंगे।
- इस बीच, कांग्रेस नेता कोडिकुन्निल सुरेश, जो लोकसभा के सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं, को प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किए जाने की उम्मीद है।

प्रोटेम स्पीकर
- लोकसभा का पीठासीन अधिकारी होने के नाते, अध्यक्ष को इसकी दिन-प्रतिदिन की कार्यवाही से संबंधित कुछ प्रमुख कर्तव्यों को पूरा करना होता है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 94 में कहा गया है :
  - "जब भी लोकसभा भंग हो जाती है, तो अध्यक्ष विघटन के बाद लोक सभा की पहली बैठक से ठीक पहले तक अपना पद खाली नहीं करेगा।"
- नई लोकसभा में सदन के अध्यक्ष का निर्णय साधारण बहुमत से होता है ।
- उनके चयन तक, प्रोटेम स्पीकर को कुछ महत्वपूर्ण कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए चुना जाता है।
- 'प्रोटेम' का मतलब अनिवार्य रूप से 'फिलहाल' या 'अस्थायी रूप से' होता है।
- संविधान में इस पद का उल्लेख नहीं है। हालांकि, संसदीय कार्य मंत्रालय के कामकाज पर आधिकारिक पुस्तिका में 'प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति और शपथ ग्रहण' के बारे में बताया गया है।

प्रोटेम स्पीकर का चयन कैसे किया जाता है?
- पुस्तिका में कहा गया है कि जब नई लोकसभा के गठन से पहले अध्यक्ष का पद रिक्त हो जाता है, तो "अध्यक्ष के कर्तव्यों का निर्वहन सदन के एक सदस्य द्वारा किया जाएगा, जिसे राष्ट्रपति द्वारा अस्थायी अध्यक्ष के रूप में इस प्रयोजन के लिए नियुक्त किया जाएगा ।"
- नये सांसदों को शपथ दिलाना अस्थायी अध्यक्ष का प्राथमिक कर्तव्य है।
- संविधान के अनुच्छेद 99 के तहत, "सदन का प्रत्येक सदस्य अपना स्थान ग्रहण करने से पहले राष्ट्रपति या उसके द्वारा इस निमित्त नियुक्त किसी व्यक्ति के समक्ष संविधान की तीसरी अनुसूची में इस प्रयोजन के लिए निर्धारित प्ररूप के अनुसार शपथ लेगा या प्रतिज्ञान करेगा और उस पर हस्ताक्षर करेगा।"
- सामान्यतः, राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा के तीन अन्य निर्वाचित सदस्यों को भी नियुक्त किया जाता है, ताकि सांसद उनके समक्ष शपथ ले सकें।
- पुस्तिका के अनुसार, इस उद्देश्य के लिए आमतौर पर सबसे वरिष्ठ सदस्यों (सदन की सदस्यता के वर्षों की संख्या के संदर्भ में) को चुना जाता है, हालांकि इसके अपवाद भी रहे हैं।
- नई सरकार बनते ही भारत सरकार का विधानमंडल अनुभाग वरिष्ठतम लोकसभा सदस्यों की सूची तैयार करता है।
- इसके बाद इसे संसदीय कार्य मंत्री या प्रधानमंत्री को प्रस्तुत किया जाता है ताकि एक सांसद को अस्थायी अध्यक्ष के रूप में तथा तीन अन्य सदस्यों को शपथ ग्रहण के लिए चुना जा सके।

नये सांसदों को शपथ दिलाना
- प्रधानमंत्री के अनुमोदन के बाद, इन सदस्यों की सहमति संसदीय कार्य मंत्री द्वारा, सामान्यतः टेलीफोन पर प्राप्त की जाती है।
- इसके बाद मंत्री राष्ट्रपति को एक नोट प्रस्तुत करते हैं, जिसमें अस्थायी अध्यक्ष तथा अन्य तीन सदस्यों की नियुक्ति के लिए अनुमोदन मांगा जाता है।
  - ये शपथ ग्रहण समारोह की तारीख और समय भी तय करते हैं।
- राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद मंत्रालय अस्थायी अध्यक्ष और अन्य सदस्यों को उनकी नियुक्तियों के बारे में सूचित करता है।

- अंत में, राष्ट्रपति, राष्ट्रपति भवन में अस्थायी अध्यक्ष को शपथ दिलाते हैं।
- राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त अन्य तीन सदस्यों को लोकसभा में अस्थायी अध्यक्ष द्वारा शपथ दिलाई जाती है।
- तत्पश्चात् अस्थायी अध्यक्ष अन्य तीन सदस्यों की सहायता से नवनिर्वाचित सदस्यों को शपथ/प्रतिज्ञान दिलाता है।

DEFENCE

155. भारतीय सेना ने उन्नत सैन्य क्षमता के लिए "विद्युत रक्षक" का अनावरण किया- इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- आर्मी डिज़ाइन ब्यूरो (ADB) द्वारा विकसित, "विद्युत रक्षक" एक इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स-सक्षम प्रणाली है जिसे जनरेटर की निगरानी, सुरक्षा और नियंत्रण के लिए डिज़ाइन किया गया है।

प्रीलिम्स टेकअवे
• IoT
• AI

विद्युत रक्षक:

- "विद्युत रक्षक" एक इंटरनेट ऑफ थिंग्स-सक्षम प्रणाली है जिसे ADB द्वारा भारतीय सेना में जनरेटरों की निगरानी, सुरक्षा और नियंत्रण के लिए डिजाइन किया गया है।
- यह नवाचार सभी मौजूदा जनरेटरों पर लागू होता है, चाहे उनका प्रकार, निर्माण, रेटिंग या आयु कुछ भी हो।

मुख्य विशेषताऐं:

- **व्यापक निगरानी** : विद्युत रक्षक न केवल जनरेटर मापदंडों की निगरानी करता है, बल्कि दोषों की भविष्यवाणी भी करता है और उन्हें रोकता है, जिससे निर्बाध संचालन सुनिश्चित होता है।
- **फॉल्ट प्रेडिक्शन और प्रीवेंशन** : प्रणाली संभावित दोषों का पूर्वानुमान लगाती है और निवारक उपाय करती है, जिससे डाउनटाइम और रखरखाव लागत कम हो जाती है।
- **ऑटोमेशन** : मैनुअल संचालन को स्वचालित करके, विद्युत रक्षक जनरेटर प्रबंधन कार्यों को सरल बनाता है, जिससे जनशक्ति की बचत होती है और परिचालन दक्षता में सुधार होता है।
- **यूजर फ्रेंडली इंटरफ़ेस**: इस सिस्टम में यूजर-फ्रेंडली इंटरफ़ेस है, जिससे सेना के कर्मियों के लिए जनरेटर को प्रभावी ढंग से संचालित करना और प्रबंधित करना आसान हो जाता है।

156. सेना को मिला पहला स्वदेशी मानव-पोर्टेबल आत्मघाती ड्रोन- इकनोमिक टाइम्स

समाचार:

- सेना को अपना पहला स्वदेशी मानव-पोर्टेबल आत्मघाती ड्रोन मिल गया है, जिसे सैनिकों के जीवन को खतरे में डाले बिना, दुश्मन के प्रशिक्षण शिविरों, लॉन्च पैडों और घुसपैठियों को सटीकता से निशाना बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

प्रीलिम्स टेकअवे
• नागास्त्र-1

मुख्य बिंदु

- भारतीय सेना ने नागस्त्र-1 नामक एक नया हथियार पेश किया है, जिससे यह देश का पहला मानव-पोर्टेबल ड्रोन बन गया है, जिसे पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किया गया है।
- यह "घूमने वाला गोला-बारूद" दुश्मन के प्रशिक्षण स्थलों और घुसपैठियों के विरुद्ध लक्षित हमलों के लिए आदर्श है।

नागस्त्र-1 के फायदे

- यह GPS मार्गदर्शन की बदौलत अविश्वसनीय सटीकता (2 मीटर के भीतर) के साथ लक्ष्य को भेद सकता है, और इसकी रेंज लगभग 30 किलोमीटर है।
- इसके अलावा, इसका इलेक्ट्रिक इंजन इसे शांत बनाता है, जिससे अचानक हमला करना संभव हो जाता है।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि किसी मिशन को रद्द करना पड़े तो पैराशूट का उपयोग करके ड्रोन को पुनः प्राप्त किया जा सकता है, जिसका अर्थ है कि भविष्य के अभियानों के लिए इसका पुनः उपयोग किया जा सकता है।

- यह विकास आधुनिक युद्ध के लिए किफायती समाधान बनाने में भारत की प्रगति को दर्शाता है।
- नागास्त्र-1 को भविष्य में सहयोगी देशों को निर्यात भी किया जा सकता है।

नागास्त्र-1 के मुख्य बिंदु :

- भारत में डिजाइन और निर्मित (75% से अधिक स्वदेशी सामग्री)
- 2 मीटर की सटीकता और 30 किमी की रेंज के साथ सटीक हमला
- विद्युत इंजन के कारण साइलेंट संचालन
- पैराशूट रिकवरी सिस्टम के कारण पुनः उपयोग योग्य

157. भारत अपना पहला बहुराष्ट्रीय वायु अभ्यास 'तरंग शक्ति' की मेजबानी करेगा - द हिन्दू

प्रीलिम्स टेकअवे

- तरंग शक्ति
- 5th जनरेशन फाइटर्स

समाचार:

- भारतीय वायुसेना का पहला बहुराष्ट्रीय हवाई अभ्यास, तरंग शक्ति-2024, अगस्त में आयोजित किया जाएगा, और इसमें पर्यवेक्षकों के रूप में कार्य करने वाले कुछ अन्य देशों के अलावा 10 देशों की भागीदारी देखने की संभावना है।

मुख्य बिंदु:

- "रेड फ्लैग अभ्यास (अमेरिकी वायु सेना) के अनुभव से समृद्ध, भारतीय वायुसेना तरंग शक्ति-2024 के दौरान अन्य देशों के प्रतिभागी दलों की मेजबानी करने के लिए उत्सुक है।
- योजना उन मित्र देशों को आमंत्रित करने की है जिनके साथ भारतीय वायुसेना नियमित रूप से संपर्क रखती है तथा जिनके बीच एक निश्चित सीमा तक अंतर-संचालन क्षमता है।
- अब यह अभ्यास दो चरणों में आयोजित किया जाएगा।
  - पहला आयोजन अगस्त के पहले दो सप्ताह में दक्षिण भारत में होगा तथा दूसरा अगस्त के पहले दो सप्ताह में दक्षिण भारत में होगा।
  - दूसरा अगस्त के अंत से सितम्बर के मध्य तक पश्चिमी क्षेत्र में होगा।
  - कुछ देश दोनों चरणों में भाग लेंगे, जबकि अन्य दोनों चरणों में से किसी एक में शामिल होंगे।
- दल भेजने वाले देशों में ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी, जापान, स्पेन, संयुक्त अरब अमीरात, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।
- जर्मनी लड़ाकू जेट विमानों के साथ-साथ A-400M परिवहन विमान भी तैनात करेगा।
- A-400M विमान IAF के लिए शोकेस में होगा, क्योंकि यह मध्यम परिवहन विमान के लिए खुली निविदा का दावेदार है।

अमेरिकी कार्यक्रम

- अमेरिकी वायु सेना (USAF) द्वारा आयोजित रेड फ्लैग अभ्यास अलास्का के एयेल्सन वायु सेना बेस पर संपन्न हुआ।
- भारतीय वायुसेना के अलावा, इस संस्करण में सिंगापुर वायु सेना, ब्रिटेन की रॉयल वायु सेना, रॉयल नीदरलैंड वायु सेना और जर्मन लूफ़्टवाफे ने भी भाग लिया।
- भारतीय वायुसेना ने रेड फ्लैग में पहली बार आठ राफेल लड़ाकू विमानों को तैनात किया, जिन्हें ट्रान्साटलांटिक फेरी के लिए IL-78 मिड-एयर रिफ्यूलर के साथ-साथ C-17 ग्लोबमास्टर विमानों द्वारा समर्थित किया गया।

एडिटोरियल, जिस्ट, एक्सप्लेनेर

158. 60वां बॉन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन -द प्रिंट

प्रसंग:

- जर्मनी में शुरू होने वाला 60वां बॉन जलवायु सम्मेलन वैश्विक जलवायु कार्रवाई के लिए एक महत्वपूर्ण सम्मेलन होगा, जिसमें हानि एवं क्षति कोष के संचालन पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा तथा बाकू, अजरबैजान में आयोजित होने वाले COP29 के लिए मंच तैयार किया जाएगा।

मुख्य बिंदु	जलवायु वित्त-हानि और क्षति
• यह सम्मेलन जिसे जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के वार्षिक पक्षकारों के सम्मेलन (COP) के बीच एक मध्य बिंदु के रूप में देखा जाता है - o वैश्विक स्टॉकटेक वार्षिक वार्ता की भी मेजबानी करेगा, जो सभी देशों के लिए अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) निर्धारित करने में मदद करेगा। • UNFCCC द्वारा आयोजित यह वार्षिक कार्यक्रम, वैज्ञानिक और तकनीकी सलाह के लिए जिम्मेदार UNFCCC की सहायक संस्थाओं (SBSTA) को अनुमति देता है। o और कार्यान्वयन के लिए सहायक निकाय (SBI) के साथ पूर्ववर्ती पक्षकारों के सम्मेलन (COP) में लिए गए निर्णयों की जटिलताओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा। • सहायक निकाय UNFCCC के दो स्थायी निकाय हैं जो विभिन्न देशों द्वारा सहमत संधियों, समझौतों और सम्मेलनों का अनुपालन करने के लिए आवश्यक तकनीकी विशेषज्ञता के साथ संयुक्त राष्ट्र के शासी निकायों की सहायता करते हैं। • UNFCCC के सभी सदस्य स्वतः ही सहायक निकायों के सदस्य बन जाते हैं।	• जब से COP27 ने हानि एवं क्षति कोष की स्थापना की आधिकारिक घोषणा की है, तब से इस कोष को सुव्यवस्थित करने पर कई अंतर्राष्ट्रीय चर्चाएं हुई हैं o मेजबान देश, योगदानकर्ताओं और लाभार्थियों का निर्धारण करना, साथ ही इसे अन्य जलवायु वित्त तंत्रों के साथ एकीकृत करना। • हानि एवं क्षति कोष एक विशिष्ट वित्तीय तंत्र है जिस पर सभी UNFCCC देशों ने सहमति व्यक्त की है, ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के दौरान निम्न आय वाले देशों को होने वाले नुकसान और क्षति की भरपाई की जा सके। • इस कोष के प्रावधान पर सहमति बनी कि इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति संवेदनशील देशों को सहायता प्रदान करना है। o विशेष रूप से छोटे द्वीपीय विकासशील राष्ट्र (SIDN) जो बाढ़, चरम मौसम की घटनाओं और अन्य जलवायु परिवर्तन संबंधी घटनाओं से प्रभावित हैं। • अब तक यह कोष केवल 600 मिलियन डॉलर ही जुटा पाया है, जो संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की रिपोर्ट में चिन्हित 215 बिलियन डॉलर से काफी कम है, जिसे "जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए विकासशील देशों" के लिए आवश्यक बताया गया है। • यद्यपि विश्व बैंक ने इसकी मेजबानी के लिए सहमति दे दी है, लेकिन कोष के योगदानकर्ता और लाभार्थी देशों तथा इसके मेजबान देश के बीच अभी भी बातचीत चल रही है, तथा जुलाई के मध्य तक निर्णय होने की संभावना है। • "दुनिया के सबसे बड़े ऐतिहासिक प्रदूषक, जो घरेलू जलवायु कार्रवाई और वित्तीय योगदान दोनों में लगातार पीछे रह गए हैं, उन्हें अब अपनी ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करना चाहिए और अपने वादों को पूरा करना चाहिए। • बॉन में, तीन महत्वपूर्ण कार्यक्रम हानि एवं क्षति कोष को प्रभावित करेंगे - 10वां तकनीकी विशेषज्ञ संवाद (TED 10), जिसका उद्देश्य 2025 तक प्रतिवर्ष 100 बिलियन डॉलर के वैश्विक जलवायु वित्त लक्ष्य को प्राप्त करना है। o हानि एवं क्षति पर अंतिम ग्लासगो वार्ता; तथा हानि एवं क्षति के लिए वारसॉ अंतर्राष्ट्रीय तंत्र पर चर्चा। • NDC ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, ऊर्जा संक्रमण को आगे बढ़ाने के लक्ष्य हैं o और जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध शमन और अनुकूलन के अन्य स्वरूप जिन्हें देशों को 2015 के पेरिस समझौते के बाद से हर पांच साल में घोषित करना होता है। • सभी NDC वैश्विक तापमान को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस ऊपर बनाए रखने के पेरिस समझौते के साझा लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। o उदाहरण के लिए, भारत की वर्तमान NDC में 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन तक पहुंचने की योजना शामिल है। • चूंकि 2025 के NDC आने वाले हैं, इसलिए ग्लोबल स्टॉकटेक वार्षिक वार्ता का उद्देश्य देशों को उनके NDC को अद्यतन करने के बारे में ज्ञान और योजना प्रदान करना होगा। • इसमें COP28 के वैश्विक जायजा परिणामों का विश्लेषण भी शामिल है, जिसमें UNFCCC ने 2015 से प्रत्येक देश द्वारा पेरिस समझौते के लक्ष्यों पर की गई प्रगति की समीक्षा की थी या उसका 'जायज़ा लिया' था। • सरल शब्दों में कहें तो, बॉन 2024 में देशों के लिए अपने NDC को अद्यतन करने के लिए सभी आधारभूत कार्य किए जाएंगे, जिसमें यह ध्यान में रखा जाएगा कि उनके पहले के कौन से लक्ष्य पहले ही प्राप्त किए जा चुके हैं।

159. भारतीय वृक्ष आवरण में भारी गिरावट - द वायर

प्रसंग:

- नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) ने एक महत्वपूर्ण मामले पर स्वतः संज्ञान लेते हुए केंद्र सरकार से यह बताने को कहा है कि भारत ने वर्ष 2000 से वर्ष 2023 के बीच 2.33 मिलियन हेक्टेयर वृक्ष क्षेत्र क्यों खो दिया है।

मुख्य बिंदु

- भारत ने वर्ष 2000 से वर्ष 2023 तक 2.33 मिलियन हेक्टेयर वृक्षावरण खो दिया है, जो मेघालय से थोड़ा अधिक है।
- इस क्षति का लगभग 18% (414,000 हेक्टेयर) प्राथमिक वनों में हुआ।
- पूर्वोत्तर भारत में इस नुकसान का 60% हिस्सा है, जिसमें असम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और मणिपुर में महत्वपूर्ण वृक्ष आवरण का नुकसान हुआ है।
- वर्ष 2013 और वर्ष 2023 के बीच, 95% वृक्ष आवरण का नुकसान प्राकृतिक वनों में हुआ।

- वर्ष 2016, वर्ष 2017 और वर्ष 2023 सबसे खराब वर्ष थे, जिनमें क्रमशः 1.75 मिलियन, 1.44 मिलियन और 1.89 मिलियन हेक्टेयर भूमि नष्ट हुई।
- इस हानि से प्रतिवर्ष 51.0 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य उत्सर्जन हुआ, जो वर्ष 2000 से वर्ष 2023 तक कुल 1.12 गीगाटन था।
- देश भर में वृक्ष आवरण में कमी के कारण वातावरण में कार्बन की एक बड़ी मात्रा उत्सर्जित हुई है, जिसे रोकने के लिए भारत पेरिस समझौते के तहत संयुक्त राष्ट्र को सौंपे गए अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान के अनुसार प्रयास कर रहा है।

राज्य	वृक्ष आवरण क्षति (हेक्टेयर में)
असम	3,24,000
मिजोरम	3,12,000
अरुणाचल प्रदेश	2,62,000
नगालैंड	2,59,000
मणिपुर	2,40,000

160. वर्तमान में वैश्विक पर्यावरणीय स्थिति -इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- पापुआ न्यू गिनी अपनी भौगोलिक स्थिति और वनों की कटाई सहित कई कारणों से भूस्खलन और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील है।
- हालाँकि, हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन ने स्थिति को और खराब कर दिया है।

मुख्य कारक

- इसका मुख्य कारण देश की भौगोलिक स्थिति है।
- यह प्रशांत महासागर के किनारे सैकड़ों ज्वालामुखियों और भूकंप स्थलों की एक श्रृंखला प्रशांत 'रिंग ऑफ फायर' पर स्थित है।
- यह रिंग, जो अर्धवृत्ताकार या घोड़े की नाल के आकार की है, टेक्टोनिक प्लेटों के लगातार खिसकने, टकराने या एक दूसरे के ऊपर या नीचे जाने के कारण कई भूकंपों का गवाह बनती है।
- पापुआ न्यू गिनी में लगातार आने वाले भूकंपों के कारण भूस्खलन की घटनाएं भी बढ़ रही हैं।
- उदाहरण के लिए, 2018 में आए एक बड़े भूकंप के कारण पूरे क्षेत्र में कई भूस्खलन हुए।
- देश के पर्वतीय भूभाग और उष्णकटिबंधीय जलवायु जैसे अन्य कारक भी भूस्खलन की अधिक घटनाओं में योगदान देते हैं।
- स्थिति इस तथ्य से और भी बदतर हो जाती है कि पापुआ न्यू गिनी में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए बुनियादी ढांचे और आर्थिक विकास का अभाव है
  - ताइवान, इटली और जापान जैसे अन्य देशों के विपरीत, जो ऐसी आपदाओं के प्रति संवेदनशील हैं।
- परिणामस्वरूप, देश में भूस्खलन या भूकंप आने पर मरने वालों की संख्या आमतौर पर अधिक होती है।
- उपर्युक्त कारकों के अलावा, वनों की कटाई और खनन ने भी भूस्खलन में भूमिका निभाई है।
- चूंकि पापुआ न्यू गिनी विश्व में पाम ऑयल का पांचवां सबसे बड़ा निर्यातक है, इसलिए यहां पाम ऑयल के बागानों का प्रभुत्व है, जो जंगलों के स्थान पर उगाए गए हैं।
- "सोना, चाँदी, निकल, तांबा और कोबाल्ट का खनन और LNG संचालन उन क्षेत्रों में हो रहा है जहाँ पहले भी घातक भूस्खलन हुए हैं

जलवायु परिवर्तन की भूमिका क्या है?

- शेष विश्व की तरह पापुआ न्यू गिनी भी जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से जूझ रहा है।
- संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में तापमान में लगभग 0.8-0.9 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि देखी गई है, जिसे वर्ष 1900-1917 और वर्ष 2000-2017 के औसत तापमान के बीच के अंतर से मापा गया है।
- परिणामस्वरूप, पापुआ न्यू गिनी में चरम मौसम की घटनाएं अधिक लगातार और तीव्र हो गई हैं।

161. दिल्ली में पानी की आपूर्ति कैसे होती है- इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली में पेयजल संकट को हल करने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार को अपने अधिशेष जल में से 137 क्यूसेक जल छोड़ने का निर्देश दिया।
- इसने हरियाणा से राष्ट्रीय राजधानी में पानी के प्रवाह को सुगम बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाने को कहा।
- दिल्ली सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी को यमुना का पानी आपूर्ति रोकने के लिए हरियाणा को जिम्मेदार ठहराया।

दिल्ली में पानी कहां से आता है?

- दिल्ली को अपना अधिकांश पानी यमुना, रावी-व्यास और गंगा नदियों से मिलता है।
- उत्तर प्रदेश में ऊपरी गंगा नहर के माध्यम से गंगा से दिल्ली को 470 क्यूसेक पानी मिलता है।
- हरियाणा से दिल्ली में प्रवेश करने वाले दो चैनल दिल्ली को यमुना और रावी-व्यास नदियों से पानी की आपूर्ति करते हैं।
- दिल्ली जल बोर्ड (DJB) भी मांग को पूरा करने के लिए यमुना से सीधे पानी लेता है। कुल मिलाकर, यमुना का पानी दिल्ली को 612 MGD की आपूर्ति करता है।
- अंत में, दिल्ली जल बोर्ड अपनी नदी जल आपूर्ति की पूर्ति भूजल से करता है - जिसमें से लगभग 135 MGD दिल्ली के ट्यूबवेलों और रेनी कुओं से प्राप्त होता है।

दिल्ली में पानी की कमी:

- उत्तरी दिल्ली के वजीराबाद में जल उपचार संयंत्र अपनी क्षमता से कम पर काम कर रहा था
- संयोगवश, यह वह समय था जब राष्ट्रीय राजधानी में रिकॉर्ड उच्च तापमान दर्ज किया गया था, और इस प्रकार, पानी की मांग में भारी वृद्धि हुई थी।
- लेकिन पूरी क्षमता पर भी, DJB गर्मियों के दौरान शहर की 1290 MGD की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम नहीं है, जैसा कि वर्ष 2023-24 के आर्थिक सर्वेक्षण में अनुमान लगाया गया है।

वजीराबाद जल संयंत्र क्षमता से कम पर काम कर रहा है:

- मई में हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में भारी बारिश की कमी दर्ज की गई।
- कम बारिश का मतलब था कि यमुना में DJB के लिए वजीराबाद जलाशय से खींचने के लिए पर्याप्त पानी नहीं था।
- 674.5 फीट के 'सामान्य' स्तर के मुकाबले जलाशय का जल स्तर 670.3 फीट से नीचे गिर गया।
- कम वर्षा के अलावा, जल स्तर पर परिवहन में होने वाली हानि, रिसाव तथा वाष्पीकरण के कारण भी प्रभाव पड़ता है।
- गर्मियों में हरियाणा के हथिनीकुंड बैराज से छोड़े गए 352 क्यूसेक पानी में से काफी मात्रा में पानी पारगमन में ही बर्बाद हो जाता है।

दिल्ली को यमुना से कितना पानी आवंटित किया जाता है?

- वर्ष 1994 में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के बीच यमुना के 'सतही प्रवाह' पर एक जल बंटवारे के समझौते में निर्दिष्ट किया गया था की -
  - दिल्ली को मार्च से जून तक 0.076 बिलियन क्यूबिक मीटर पानी मिलना है।
  - इस आवंटन को ऊपरी यमुना नदी बोर्ड द्वारा विनियमित किया जाता है, वर्ष 1994 के समझौते में वर्ष 2025 में संशोधन किया जाना है।
- वर्ष 1996 में सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि दिल्ली को यमुना नदी के माध्यम से हरियाणा से घरेलू उपयोग के लिए उतना ही पानी मिलता रहेगा।
  - जितना पानी वजीराबाद और हैदरपुर में दो जलाशयों और उपचार संयंत्रों में भरा जा सकता है और उसका उपभोग किया जा सकता है।
  - वजीराबाद और हैदरपुर दोनों जलाशय यमुना नदी के माध्यम से हरियाणा द्वारा आपूर्ति किए गए पानी से अपनी क्षमता तक भरे रहेंगे।"

162. वैश्विक प्लास्टिक संधि का नया स्वरूप तैयार करना - द हिंदू

प्रसंग:

- चूंकि प्लास्टिक प्रदूषण पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय संधि के लिए अभी भी चर्चा जारी है, इसलिए यह विचार करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि यह उन व्यक्तियों के लिए किस प्रकार एक उचित परिवर्तन का समर्थन कर सकता है जो अनौपचारिक रूप से अपशिष्ट एकत्र करते हैं और उसका पुनर्चक्रण करते हैं।

मुख्य बिंदु:

- ग्लोबल प्लास्टिक आउटलुक के अनुसार,वर्ष 2019 में प्लास्टिक कचरे का वैश्विक उत्पादन 353 मिलियन टन था, जो 2000 की तुलना में दोगुने से भी अधिक है, और 2060 तक तीन गुना हो जाएगा।
- इसमें से केवल 9% का ही पुनर्चक्रण किया गया, 50% को लैंडफिल में भेजा गया, 19% को जला दिया गया, तथा 22% को अनियंत्रित स्थलों या डंपों में निपटाया गया।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार, 9% पुनर्चक्रण में से 85% का कार्य अनौपचारिक पुनर्चक्रण श्रमिकों द्वारा किया गया।
- ये कर्मचारी सामान्य कचरे से पुनर्चक्रण योग्य और पुनः उपयोग योग्य सामग्रियों को एकत्रित करते हैं, छांटते हैं और पुनः प्राप्त करते हैं, जिससे अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित वित्तीय बोझ से नगरपालिका बजट में कमी आती है
- पर्यावरण न्याय एवं विकास केंद्र ने भी पाया है कि ये चक्रीय अपशिष्ट प्रबंधन समाधानों को बढ़ावा देते हैं तथा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में मदद करते हैं, जिससे स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।
- उनके प्रयासों से लैंडफिल और डंप स्थलों में प्लास्टिक की मात्रा में उल्लेखनीय कमी आई है, जिससे पर्यावरण में प्लास्टिक का रिसाव प्रभावी रूप से रोका जा सका है।

मान्यता की आवश्यकता

- फिर भी, इन श्रमिकों को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है और प्लास्टिक मूल्य श्रृंखलाओं में वे अत्यधिक असुरक्षित बने रहते हैं।
- उन्हें अपशिष्ट प्रबंधन, अपशिष्ट से ऊर्जा या भस्मीकरण परियोजनाओं के बढ़ते निजीकरण, तथा विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) के मानदंडों में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन में अन्य सार्वजनिक नीति हस्तक्षेपों के माध्यम से बहिष्कार जैसे जोखिमों का सामना करना पड़ता है।
- अनौपचारिक अपशिष्ट एवं पुनर्प्राप्ति क्षेत्र (IWRS) विश्वव्यापी नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों में एक छोटे प्रतिभागी से कहीं अधिक है।
- UN-Habitat के वेस्ट वाइज सिटीज टूल के अनुसार, कई शहरों में नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट की वसूली में अनौपचारिक क्षेत्र का योगदान 80% है।
- हाल ही में जारी 'किसी को पीछे न छोड़ो' रिपोर्ट में कहा गया है कि प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने की रणनीतियों में अक्सर IWRS की पुनर्प्राप्ति क्षमताओं, कौशल और ज्ञान को प्रभावी रूप से शामिल करने की उपेक्षा की जाती है।
- इस अनदेखी से आजीविका संबंधी समस्याएं और अधिक गंभीर हो जाती हैं तथा मौजूदा अनौपचारिक पुनर्वास प्रणालियां कमजोर हो जाती हैं।

वैश्विक संधि, न्यायोचित परिवर्तन की आवश्यकता

- वैश्विक प्लास्टिक संधि, प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने और समाप्त करने के उद्देश्य से कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।
- अंतर-सरकारी वार्ता समिति (INC) की स्थापना का निर्णय केन्या के नैरोबी में पांचवीं संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा के दौरान किया गया था।
- इन उपायों का उद्देश्य कचरा बीनने वालों के ऐतिहासिक योगदान को मान्यता देना, उनके अधिकारों की रक्षा करना तथा प्रभावी एवं सतत प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देना है।
- अनौपचारिक अपशिष्ट क्षेत्र और उसके कार्यबल के लिए न्यायोचित परिवर्तन या औपचारिक परिभाषा के लिए कोई सर्वमान्य शब्दावली नहीं है। इन परिभाषाओं को स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है।

भारत की आवाज़ महत्वपूर्ण

- वैश्विक दक्षिण के एक प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में, भारत एक ऐसे दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है जो प्लास्टिक के उपयोग को पूरी तरह से समाप्त किए बिना मरम्मत, पुनः उपयोग, पुनः भरने और पुनर्चक्रण को बढ़ाता है।
- भारत ने देश-विशिष्ट परिस्थितियों और क्षमताओं को अपनाने के महत्व पर भी जोर दिया है। इसलिए, भारत के अनौपचारिक कचरा बीनने वाले, जो अपरिहार्य हैं, चर्चा के केंद्र में बने हुए हैं।
- हमारे EPR मानदंडों के निर्माण पर पुनर्विचार करें और इस अनौपचारिक कार्यकर्ता समूह को नए कानूनी ढांचे में कैसे एकीकृत किया जाए, इस पर सवाल उठाएं।
- वैश्विक प्लास्टिक संधि के लिए वार्ता के अंतिम दौर के रूप में, एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के लिए एक वैश्विक साधन लगभग 15 मिलियन लोगों के लिए एक न्यायोचित संक्रमण को कैसे सक्षम कर सकता है, जो अनौपचारिक रूप से वैश्विक पुनर्चक्रित अपशिष्ट का 58% तक एकत्र और पुनर्प्राप्त करते हैं, जिससे एक सतत भविष्य को आकार मिलता है।
- उनके दृष्टिकोणों को शामिल करके और उनकी आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करके, संधि सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों को मूर्त रूप दे सकती है, जबकि किसी को भी और किसी भी स्थान को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता है।

163. आंध्र प्रदेश विभाजन: किस तरह पुनर्गठन से राज्यों के क्रम में आमूलचूल परिवर्तन हो सकता है- द हिंदू

प्रसंग:

- आंध्र प्रदेश को दो राज्यों में विभाजित हुए दस वर्ष हो गये हैं।
- तेलुगु लोगों के राजनीतिक भूगोल के विभाजन के उनके लिए तथा भारतीय गणराज्य के लिए राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक निहितार्थों की जांच करने के लिए एक दशक का समय काफी लंबा रहा है।

अल्प पुरानी यादें	राज्यों की स्थिति
• ये दोनों क्षेत्र (तेलंगाना और आंध्र) लगभग 150 वर्षों तक अलग-अलग राजनीतिक सत्ता के अधीन रहे। ○ इससे पहले कि निज़ाम ने तटीय जिलों और 'सौंपे गए' जिलों को, जिन्हें बाद में रायलसीमा कहा गया, यूरोपीय शक्तियों को दे दिया, ○ और, वर्ष 1956 में वे पुनः एक साथ थे। • हालाँकि, एक ही राजनीतिक सत्ता के अधीन इतने लम्बे वर्षों तक रहने के बावजूद एकजुटता की भावना पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सकी। • निजाम के हैदराबाद राज्य के कन्नड़ भाषी क्षेत्र के साथ अभी तक यह अलगाव नहीं हुआ है, न ही यह अभी तक उसके मराठी भाषी क्षेत्र के साथ हुआ है। • राज्यों के भाषाई पुनर्गठन के बाद वे दोनों क्रमशः कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों में शामिल हो गए। • क्या आंध्र प्रदेश का भाग्य, जिसने भाषाई आधार पर भारतीय राजनीतिक संरचना के पुनर्गठन में अग्रणी भूमिका निभाई है, उसके अंत का भी पूर्वाभास देता है। • क्या भारतीय गणतंत्र को अंततः भाषा के अलावा किसी अन्य संगठनात्मक सिद्धांत की तलाश करनी होगी? ○ आंध्र प्रदेश का विभाजन भारतीय गणराज्य के सामने एक बड़ा सवाल खड़ा करता है। ○ भारतीय गणराज्य के कुछ राज्यों को छोड़कर, हमारे गणराज्य के अन्य सभी राज्य भाषाई आधार पर संगठित हैं। ○ यदि भाषा का अंतर्निहित संगठन सिद्धांत उन्हें इकाइयों के रूप में एक साथ रखने में सक्षम नहीं है, तो एक वैकल्पिक सिद्धांत तैयार करना होगा। • कुछ राज्यों, विशेषकर दक्षिण के राजनीतिक अभिजात वर्ग के बीच पहले से ही भविष्य के परिसीमन के बारे में अटकलों को लेकर बेचैनी के स्वर उठने लगे हैं, जिसमें कुछ उत्तरी राज्यों को केंद्रीय विधानमंडल में असामान्य संख्या प्राप्त हो सकती है।	• आंध्र प्रदेश के विभाजन से हमें यह अंदाजा हो सकता है कि किस प्रकार पुनर्गठन से राज्यों की राजनीतिक सत्ता में आमूलचूल परिवर्तन आ सकता है। ○ संयुक्त आंध्र प्रदेश में 42 लोकसभा सीटें थीं और यह दक्षिण भारत का सबसे बड़ा राज्य था। ○ लेकिन अब, मात्र 25 सीटों के साथ तेलंगाना, 17 सीटों के साथ। • यदि कुछ राज्य छोटे हो जाएं और अन्य बड़े बने रहें तो उनके बीच राजनीतिक समीकरण असमान हो जाएंगे और परिणामस्वरूप संघीय ढांचे में अवांछनीय तनाव पैदा हो सकता है। • आंध्र प्रदेश के विभाजन से जो प्रश्न उठे हैं तथा विभाजन की प्रक्रिया से जो सबक मिले हैं, उन्हें नकारा नहीं जा सकता, न ही नजरअंदाज किया जा सकता। • इस तथ्य से संतुष्ट होना नासमझी होगी कि विभाजन की प्रक्रिया को जिस तरह से संभाला गया, उसके बारे में दोनों पक्षों में से किसी ने भी अपनी शिकायतों को अभी तक स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया है और न ही उनका पालन किया है। • विभाजन के बाद पहले पांच वर्षों में आंध्र प्रदेश की सरकार हैदराबाद जैसी विश्वस्तरीय राजधानी बनाने के प्रयास में उलझी रही। • और अगले पांच साल तो प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) कल्याणवाद की फिजूलखर्ची में ही बीत गए। • यह तथ्य कि इन दोनों जुनूनों ने राज्य को वित्तीय रूप से कमजोर बना दिया है, फिलहाल नजरअंदाज किया जा रहा है। • केंद्र द्वारा किये गये अधूरे वादे ○ विशेष श्रेणी का दर्जा और राजधानी शहर के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता, ○ संयुक्त परिसंपत्तियों का उचित विभाजन करने में असमर्थता • भारत के भाषायी पुनर्गठन के विचार पर काफी लम्बा विचार-विमर्श हुआ। ○ इस पर गहन विचार किया गया, विस्तृत बहस हुई, सहमति बनी और फिर इसे क्रियान्वित किया गया। ○ लेकिन इससे अलग होने पर न तो विचार किया गया और न ही इस पर बहस हुई। ○ गणतंत्र अपने मूल संगठन सिद्धांतों से बड़े विचलन को इस तरह के अनाड़ीपन और विचारहीन तरीके से नहीं संभाल सकता। ○ आंध्र प्रदेश का विभाजन और उसके परिणाम, हमारे गणतंत्र की मजबूत नींव सुनिश्चित करने के लिए गहन और परिपक्व जांच के हकदार हैं।

164. भारत में आर्थिक सुधारों के लिए गठबंधन सरकार महत्त्व - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग

- आर्थिक शासन के संदर्भ में, पिछली दो लोकसभाओं में एक बात जिसने उन्हें अलग किया, वह यह थी कि आर्थिक सुधारों की शुरुआत के बाद पहली बार किसी एक पार्टी को बहुमत मिला था।
- माना जा रहा था कि इसका भारत में आर्थिक सुधारों की दिशा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

पृष्ठभूमि	**पिछली गठबंधन सरकारों द्वारा लाए गए उल्लेखनीय सुधार क्या थे?**
• वर्ष 1991 के बाद से, जब भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को खोलने और नियोजित अर्थव्यवस्था मॉडल को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया • सभी सरकारें ऐसी गठबंधन सरकारें थीं, जहां प्रमुख पार्टी भी 272 के बहुमत के आंकड़े से काफी दूर थी। • कांग्रेस हो या भाजपा या तथाकथित तीसरा मोर्चा, अग्रणी पार्टी की यह स्पष्ट कमजोरी का मतलब है कि ○ भारत में हमेशा मोंटेक सिंह अहलूवालिया (पूर्व योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष) के शब्दों को उधार लेते हुए, "कमजोर सुधारों के लिए एक मजबूत आम सहमति" थी।	• दूसरा, यदि वर्ष 1991 के बाद से भारत के आर्थिक इतिहास पर नजर डाली जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि गठबंधन सरकारों ने कुछ सबसे साहसिक और दूरदर्शी सुधार किए हैं, जिन्होंने भारत के पुनरुत्थान की नींव रखी। • इसका सबसे बड़ा उदाहरण पी.वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान किए गए तमाम सुधार हैं, जो मूलतः अल्पमत की सरकार थी। • इसने केंद्रीकृत नियोजन को त्याग दिया तथा लाइसेंस-परमिट राज को हटाकर भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए खोल दिया। • देश विश्व व्यापार संगठन का सदस्य भी बन गया। • अल्पकालिक देवेगौड़ा सरकार के तहत, तत्कालीन वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने जो बजट पेश किया, उसे आज भी "ड्रीम बजट" कहा जाता है। • इसने भारतीय करदाताओं पर भरोसा जताया और व्यक्तिगत आयकर, कॉर्पोरेट टैक्स और सीमा शुल्क दोनों पर टैक्स दरों में कटौती की थी । • अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) सरकार के तहत, भारत ने राजकोषीय शुचिता के लिए राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (FRBM) कानून तैयार किया, तथा सरकार की विवेकपूर्ण सीमाओं के भीतर उधार लेने की क्षमता को सीमित कर दिया। • वाजपेयी के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार ने घाटे में चल रहे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSU) के विनिवेश की दिशा में कदम आगे बढ़ाए तथा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से ग्रामीण बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया। • सबसे पहले NDA ने ही वर्ष 2000 में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम बनाया, जिसने आज के भारत के ई-कॉमर्स क्षेत्र में अग्रणी होने की नींव रखी। • मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) सरकार के तहत भारत ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू करने के लिए वाजपेयी युग के सर्व शिक्षा अभियान को आगे बढ़ाया। • सरकार ने अधिकार-आधारित दृष्टिकोण के तहत कई सुधार किए, जो किसी एक नेता की व्यक्तिगत गारंटी से कहीं ज़्यादा मज़बूत थे। • इनमें सूचना का अधिकार अधिनियम शामिल है, जिसने भारत के लोकतंत्र में पारदर्शिता को बढ़ावा दिया, तथा भोजन का अधिकार, जिसने यह सुनिश्चित किया कि कोई भी भारतीय भूखा न रहे। • इसी परिप्रेक्ष्य में, UPA ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MG-NREGA) लाया, जिसने ग्रामीण गरीबों को न्यूनतम रोजगार उपलब्ध कराया। • सरकार ने पद छोड़ने से पहले ईंधन की कीमतों को भी नियंत्रणमुक्त कर दिया था और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के साथ-साथ आधार और GST पर भी काम शुरू कर दिया था।

165. भारत में संघवाद से संबंधित मामला- द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- संघवाद की ओर भारत की यात्रा औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के साथ शुरू हुई। तब से इसका विकास गतिशील रहा है।
- सरकार राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान (नीति आयोग) के माध्यम से सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद पर अधिक जोर दे रही है।
    - कई राज्य सरकारें अक्सर आरोप लगाती हैं कि केंद्र सरकार माल एवं सेवा कर (GST) मुआवजे की राशि साझा नहीं कर रही है और इससे टकरावपूर्ण संघवाद की स्थिति पैदा हो रही है।
- सामान्यतः संघवाद को तीन विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है
    - होल्डिंग टुगेदर फेडरेशन,
    - कमिंग टुगेदर फेडरेशन और
    - असममित संघ.

- होल्डिंग टुगेदर फेडरेशन में, देश में विविधता को समायोजित करने के लिए विभिन्न घटक भागों के बीच शक्तियों को साझा किया जाता है। ऐसे मामलों में, केंद्रीय प्राधिकरण अक्सर ऊपरी हाथ रखता है। भारत, स्पेन और बेल्जियम इस समूह में शामिल हैं।
- कमिंग टुगेदर फेडरेशन एक ऐसी व्यवस्था का प्रतीक है, जिसमें अलग-अलग राज्य मिलकर एक एकीकृत इकाई बनाते हैं।
- इस मामले में, राज्यों को होल्डिंग फेडरेशन की तुलना में अधिक स्वायत्तता प्राप्त है। उदाहरणों में संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और स्विटजरलैंड शामिल हैं।
- असममित संघवाद से तात्पर्य संघवाद के उस रूप से है जिसमें एक राष्ट्र को बनाने वाले घटकों के पास राजनीति, प्रशासन और वित्त के क्षेत्रों में असमान शक्तियां और संबंध होते हैं।
- संघ की व्यवस्था में ऊर्ध्वाधर (राज्यों और केंद्र के बीच) और क्षैतिज (राज्यों के बीच) दोनों दृष्टिकोणों से विषमता। भारत में एकमात्र अपवाद जम्मू और कश्मीर (वर्ष 2019 तक) है। इसके अलावा, अनुच्छेद 371 में कई खंड हैं जो भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों को विशेष अधिकार प्रदान करते हैं।

संघवाद की ओर भारत की यात्रा

- स्वायत्तता और स्वशासन की मांग का विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक और भौगोलिक समूहों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।
- भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विविधता में एकता बनाए रखने की आवश्यकता को पहचाना।
- भारत में द्विसदनीयता, दो सरकारें (संघ और राज्य), एक लिखित संविधान और जाँच और संतुलन की प्रणाली को बनाए रखने के लिए एक स्वतंत्र न्यायालय है।
- भारतीय संविधान में भी कई एकात्मक तत्व सम्मिलित हैं,
  - जिसमें एक शक्तिशाली संघ सरकार, एक संविधान, एक नागरिकता, केंद्र सरकार द्वारा राज्यों के राज्यपालों की नियुक्ति, अखिल भारतीय सेवाएं, आपातकालीन प्रावधान शामिल हैं।
- इसके अलावा, संविधान में "संघ" शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, जिससे यह पता चलता है कि किसी भी राज्य को संघ से अलग होने की शक्ति नहीं है और भारतीय संघ व्यक्तिगत राज्यों द्वारा किए गए समझौते का परिणाम नहीं है।
- इसलिए भारत को "एक साथ रखने वाला संघ" कहा जाता है,
- जबकि राजनीतिक विश्लेषक केसी व्हेयर भारतीय संघवाद को अर्ध-संघवाद कहते हैं। अर्ध-संघीय व्यवस्था में संघ के पास राज्यों से ज़्यादा अधिकार होते हैं।

भारत में संघवाद का विकास

- स्वतंत्रता के बाद से भारत में संघवाद का विकास गतिशील रहा है और इसे विभिन्न चरणों में जांचा जा सकता है:
- **आंतरिक पार्टी संघवाद:**
  - संघवाद के प्रथम चरण (वर्ष 1950-68) के दौरान संघीय सरकार और राज्यों के बीच प्रमुख विवादों का समाधान कांग्रेस पार्टी के मंचों पर किया जाता था।
  - "आंतरिक-पार्टी संघवाद" का सर्वसम्मति-आधारित स्वरूप निर्मित किया गया।
- वर्ष 1969 में पार्टी विभाजन के बाद कांग्रेस पार्टी को स्वायत्तता का बहुत नुकसान उठाना पड़ा। इस चरण में, इंदिरा गांधी के नेतृत्व में पार्टी के अत्यधिक केंद्रीकरण और अधिनायकवाद के कारण, कांग्रेस पार्टी ने अपने क्षेत्रीय नेताओं और संगठनात्मक संरचनाओं को पूरी तरह से अधीन कर दिया।
- **बहुदलीय संघवाद:**
  - वर्ष 1990 के दशक में गठबंधन का दौर देखा गया, जिसे बहुदलीय संघवाद के नाम से भी जाना जाता है, जिसमें राष्ट्रीय दल संसद में बहुमत हासिल करने में सक्षम नहीं थे। राष्ट्रीय गठबंधनों ने क्षेत्रीय शक्तियों की मदद से संघ में अपना प्रभाव बनाए रखा।
  - इस अवधि में केंद्र-राज्य टकराव की तीव्रता में कमी देखी गई, साथ ही राज्य प्रशासन को गिराने के लिए केंद्र द्वारा अनुच्छेद 356 के मनमाने उपयोग में भी कमी देखी गई।
  - वर्ष 1994 के सर्वोच्च न्यायालय के फैसले (एसआर बोम्मई बनाम भारत संघ मामले का फैसला) ने केंद्र द्वारा प्रावधान के मनमाने उपयोग पर सवाल उठाया था
- **सहकारी संघवाद:**
  - इस अवधि के दौरान, भारतीय अर्थव्यवस्था को भी उदार बनाया गया, जिससे राज्य सरकारों को व्यवसाय शुरू करने और विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए पर्याप्त स्वायत्तता मिली।
  - नीचे से ऊपर तक नींव को मजबूत करते हुए, वर्ष 1992 के 73वें और 74वें संविधान संशोधन अधिनियमों ने स्थानीय स्वशासन को और अधिक सशक्त बनाया।
  - इस प्रकार, इस अवधि के दौरान संघ और राज्यों के बीच विचार-विमर्श और संघर्षों से सच्चा संघवाद संभव हुआ।
- **प्रतिस्पर्धी संघवाद:**
  - शासन के संदर्भ में, संघीय सरकार ने सहकारी संघवाद की वकालत की और GST कानून बनाने, GST परिषद और नीति आयोग की स्थापना करने और राज्यों के वित्तपोषण हिस्से को बढ़ाने के लिए वित्त आयोग के सुझाव को मंजूरी देने जैसे उपायों पर सहमति व्यक्त की थी ।
  - अनेक क्षेत्रों में खुली रैंकिंग और सहायता के माध्यम से, यह राज्यों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।
- **कांफ्रण्टेशनल संघवाद:**
  - वर्ष 2014 में NDA के उदय के साथ ही "प्रमुख पार्टी" का चेहरा पुनः उभर कर सामने आया।
  - इसके साथ ही, पार्टी ने कई राज्यों पर कब्जा करके सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली।
  - कांफ्रण्टेशनल संघवाद का उदय विपक्ष के नेतृत्व वाले राज्यों और केंद्र के बीच महत्वपूर्ण संघीय विवादों के समय हुआ।
  - उदाहरणों में राज्यपाल का दुरुपयोग, राज्य के वित्तीय केंद्रीकरण, और राज्य के अधिकारों का हनन शामिल हैं।
- संक्षेप में, भारतीय संघवाद वर्ष 1991 के बाद एक नए चरण में प्रवेश कर गया, जब राज्य राजनीति और अर्थव्यवस्था को सुलझाने के लिए सौदेबाजी या वार्ता में लगे रहे।
- यह तर्क दिया जा सकता है कि सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद स्वाभाविक रूप से लाभप्रद है, लेकिन कांफ्रण्टेशनल संघवाद का मानना है कि राज्य और संघीय सरकारों को लोगों की ओर से सौदेबाजी या बातचीत करनी चाहिए।
- संघवाद का अंतिम उद्देश्य विविध मुद्दों को स्वीकार करना और एक साझा रास्ता प्रस्तुत करना है ताकि कल्याण और राष्ट्रीय उन्नति सर्वोपरि हो।

166. लोकसभा चुनाव -2024: लोकसभा सदन में महिलाओं की संख्या में मामूली गिरावट -इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- भारत ने इस वर्ष लोकसभा के लिए 74 महिला सांसदों को चुना है, जो वर्ष 2019 की तुलना में चार कम और वर्ष 1952 में भारत के पहले चुनावों की तुलना में 52 अधिक है।
- ये 74 महिलाएं लोकसभा सदन की निर्वाचित संख्या का मात्र 13.63% हैं, जो अगले परिसीमन के बाद महिलाओं के लिए आरक्षित 33% से बहुत कम है।

धीमा परिवर्तन

- पिछले कुछ वर्षों में लोकसभा की लैंगिक संरचना में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में वृद्धि की सामान्य प्रवृत्ति देखी गई है। लेकिन प्रगति धीमी और रैखिक नहीं रही है।
- वर्ष 1952 में लोकसभा सदन में महिलाओं की संख्या मात्र 4.41% थी।
- एक दशक बाद हुए चुनाव में यह संख्या बढ़कर 6% से अधिक हो गई, लेकिन वर्ष 1971 में यह फिर से घटकर 4% से नीचे आ गई (विडंबना यह है कि उस समय इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं)।
- तब से, महिलाओं के प्रतिनिधित्व में धीमी, लेकिन स्थिर वृद्धि हुई है (कुछ अपवादों के साथ), जो वर्ष 2009 में 10% का आंकड़ा पार कर गई, और वर्ष 2019 में 14.36% के शिखर पर पहुंच गई।
- भारत अभी भी कई देशों से पीछे है: दक्षिण अफ्रीका में 46%, ब्रिटेन में 35% तथा अमेरिका में 29% सांसद महिलाएं हैं।

पार्टीवार हिस्सा

- वर्ष 2024 में महिला लोकसभा सांसद 14 पार्टियों से आएंगी।
- भाजपा 31 महिला सांसदों के साथ इस सूची में सबसे आगे है, उसके बाद कांग्रेस (13) और TMC (11) का स्थान है।
- लोकसभा में दोहरे अंक वाली महिला सांसदों वाली तीन पार्टियों में TMC का अनुपात सबसे अधिक (37.93%) है, उसके बाद कांग्रेस (13.13%) और भाजपा (12.92%) का स्थान है।

नये चेहरे, युवा

- निर्वाचित 74 महिला सांसदों में से 43 पहली बार सांसद बनी हैं।
- सदन की कुल आयु 56 वर्ष है। ये अपने पुरुष समकक्षों के समान ही शिक्षित हैं, जिनमें से 78% ने स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की है।
- वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में खड़े हुए कुल 8,360 उम्मीदवारों में से लगभग 10% महिलाएँ थीं।
- यह पहली बार है जब महिला उम्मीदवारों का अनुपात 10% तक पहुंच गया है। समय के साथ यह संख्या भी बढ़ी है; वर्ष 1957 में यह 3% थी।
- भाजपा के लगभग 16% उम्मीदवार महिलाएं थीं, जबकि कांग्रेस के 13% उम्मीदवार महिलाएं थीं, जो समग्र औसत से अधिक है।

GEO IAS
It's about quality

167. आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा: चंद्रबाबू नायडू की बड़ी मांग- द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- तेलुगु देशम पार्टी (TDP) के अध्यक्ष एन चंद्रबाबू नायडू बुधवार (4 जून) को राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण प्रतिभागी के रूप में उभरे, जब उनकी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में 16 सीटें जीतीं। नायडू का समर्थन भाजपा के लिए महत्वपूर्ण है, जिसके पास लोकसभा में केवल 240 सीटें हैं।

विशेष श्रेणी का दर्जा (SCS) क्या है?

- वर्ष 1969 में, भारत के पांचवें वित्त आयोग ने ऐतिहासिक आर्थिक या भौगोलिक नुकसान का सामना करने वाले कुछ राज्यों को उनके विकास और तेजी से विकास में सहायता करने के लिए SCS की व्यवस्था शुरू की।
- कठिन और पहाड़ी इलाके, कम जनसंख्या घनत्व और/या बड़ी जनजातीय आबादी, सीमाओं के साथ रणनीतिक स्थान, आर्थिक और अवसंरचनात्मक पिछड़ापन और राज्य वित्त की गैर-व्यवहार्य प्रकृति जैसे कारकों को आमतौर पर SCS प्रदान करने के लिए माना जाता था।
- इस प्रणाली को 14वें वित्त आयोग ने खत्म कर दिया था, जिसने सुझाव दिया था कि राज्यों के संसाधन अंतर को मौजूदा 32% से बढ़ाकर 42% कर के हस्तांतरण को बढ़ाकर पूरा किया जाना चाहिए।
- 11 राज्यों को विशेष दर्जा प्रदान किया गया, जिनमें सम्पूर्ण पूर्वोत्तर तथा सीमावर्ती पहाड़ी राज्य जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड शामिल हैं।
- इसके बाद, आंध्र प्रदेश, बिहार और ओडिशा सहित अन्य राज्यों ने भी SCS की मांग की है ।

आंध्र प्रदेश विशेष श्रेणी का दर्जा क्यों चाहता है:

- जब वर्ष 2014 में आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2014 के माध्यम से अविभाजित आंध्र प्रदेश को विभाजित कर तेलंगाना बनाया गया,
  - केंद्र की UPA सरकार ने राजस्व के नुकसान की भरपाई के लिए आंध्र प्रदेश को एससीएस देने का वादा किया था, और हैदराबाद के लिए क्षतिपूर्ति की थी।
- वर्ष 2014 से वर्ष 2024 तक आंध्र के मुख्यमंत्रियों ने बार-बार SCS के लिए अपील की, इसलिए "संकटपूर्ण" वित्तीय स्थिति से उबरने के लिए केंद्र से अधिक धनराशि उपलब्ध कराई गई।
  - उदाहरण के लिए, वर्ष 2013-14 में आंध्र प्रदेश से 57,000 करोड़ रुपये का सॉफ्टवेयर निर्यात हुआ, जिसमें अकेले हैदराबाद शहर का हिस्सा 56,500 करोड़ रुपये था, तथा अब तेलंगाना का हिस्सा 57,000 करोड़ रुपये है।
  - आज का आंध्र प्रदेश मूलतः एक कृषि प्रधान राज्य है, जिसके कारण राजस्व में भारी कमी आई है।
- वर्ष 2015-16 में तेलंगाना की प्रति व्यक्ति आय 14,411 रुपये थी, जबकि आंध्र प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय केवल 8,397 रुपये थी।

SCS का आंध्र प्रदेश के लिए क्या मतलब होगा?

- SCS का अर्थ होगा राज्य सरकार को केन्द्र से अधिक अनुदान सहायता मिलना।
- SCS राज्यों को आयकर छूट, सीमा शुल्क माफी, जीएसटी से संबंधित छूट तथा कम राज्य और केंद्रीय करों जैसे विशेष औद्योगिक प्रोत्साहन प्राप्त हैं।
- SCS राज्यों में केंद्र केंद्रीय योजनाओं के लिए 90% तक धन मुहैया कराता है, जबकि गैर-SCS राज्यों में यह राशि 60% है।
- आंध्र प्रदेश ने तर्क दिया है कि SCS प्रदान करने से विशिष्ट अस्पतालों, पांच सितारा होटलों, विनिर्माण उद्योगों, आईटी जैसे उच्च मूल्य सेवा उद्योगों और उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के प्रमुख संस्थानों में निवेश को बढ़ावा मिलेगा।

केंद्र से मांग:

- वर्ष 2014 में TDP मोदी सरकार के साथ थी और नायडू केंद्र को अपनी बात समझाने में विफल होने से निराश थे।
- NDA अब एक विशिष्ट अवधि, जैसे पांच वर्ष, के लिए SCS दे सकता है।
- नायडू अपनी मजबूत स्थिति के कारण अनुकूल शर्तों पर समझौता कर सकते थे, जैसे कि आंध्र प्रदेश में कई केंद्रीय परियोजनाएं, विजाग इस्पात संयंत्र के निजीकरण पर रोक, पिछड़े जिलों को सहायता में वृद्धि, विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना, जहां केंद्र टैक्स में छूट दे सकेगा, आदि।

168. बिहार, आंध्र प्रदेश की विशेष राज्य के दर्जे की मांग - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- बिहार और आंध्र प्रदेश अपने राज्यों के लिए विशेष श्रेणी का दर्जा (SCS) की मांग कर रहे हैं।

मुख्य बिंदु

- राष्ट्रीय विकास परिषद द्वारा पूर्व में योजना सहायता के लिए विशेष श्रेणी का दर्जा उन राज्यों को प्रदान किया जाता था, जिनमें अनेक असुविधाएं होती थीं, जिनके लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती थी।
- इन नुकसानों में शामिल हैं:
  - पहाड़ी और कठिन इलाका

- कम जनसंख्या घनत्व और/या जनजातीय आबादी का बड़ा हिस्सा; पड़ोसी देशों के साथ सीमाओं पर सामरिक स्थान
- आर्थिक एवं अवसंरचनात्मक पिछड़ापन, तथा राज्य के वित्त की अव्यवहार्य प्रकृति।

- इन मानदंडों के एकीकृत विचार के आधार पर विशेष श्रेणी का दर्जा दिया गया था।
- हालाँकि, चौदहवें वित्त आयोग की शुरुआत और सरकार द्वारा योजना आयोग को समाप्त करने के साथ ही राज्यों के बीच का भेद समाप्त कर दिया गया।
- "कोई भी राज्य जो अपेक्षाकृत गरीब है और जिसकी विशेष आवश्यकताएं हैं, वह इसकी मांग कर सकता है।
- यदि कई राज्य इसकी मांग करते हैं, और सरकार एक व्यवस्थित व्यवस्था बनाना चाहती है, तो इस मामले को नीति आयोग को सौंप दिया जाना चाहिए और उसे कुछ मानदंडों के माध्यम से ऐसे राज्यों को वित्तपोषित करने के लिए कुछ विशेष अवसर दिए जा सकते हैं।

169. देश के संसाधनों के उपयोग का निर्णय केंद्र और राज्यों द्वारा संयुक्त रूप से होना चाहिए - द हिंदू

प्रसंग:

- आम चुनाव 2024 के नतीजों ने आश्चर्यचकित कर दिया है।
- विपक्ष शासित राज्य केंद्र द्वारा दुर्व्यवहार की शिकायत कर रहे हैं।

मुख्य बिंदु

- **राज्यों द्वारा शिकायतें**
  - केरल ने संसाधनों के अपर्याप्त हस्तांतरण के बारे में शिकायत की है।
  - कर्नाटक में सूखा राहत और पुनर्वास के बारे में चर्चा
  - पश्चिम बंगाल सरकार ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGS) के लिए धनराशि के बारे में पूछा।
  - ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रयास विपक्ष शासित राज्यों को गलत रोशनी में दिखाने का है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में कहा कि केंद्र-राज्य मुद्दों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाया जाना चाहिए, क्योंकि राज्यों के बीच बहुत अधिक विविधता है।
- एक समान दृष्टिकोण हर राज्य की प्रगति के लिए अनुकूल नहीं है।
- उन्हें अपने मुद्दों को अपने अनूठे तरीकों से संबोधित करने के लिए अधिक स्वायत्तता की आवश्यकता है। यह लोकतंत्र और संघवाद दोनों है। इसलिए, एक प्रमुख केंद्र द्वारा अपनी इच्छा राज्यों पर थोपना, जिससे केंद्र-राज्य संबंधों में गिरावट आती है, भारत के लिए अच्छा संकेत नहीं है।

वित्तपोषण और संघर्ष एक मुद्दा है

- राज्यों के सामने कई बड़ी समस्याएं हैं। इनमें से कुछ को प्रत्येक राज्य दूसरे राज्यों को प्रभावित किए बिना निपटा सकता है, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाएं।
- लेकिन बुनियादी ढांचे और जल बंटवारे के लिए राज्यों के बीच सहमति की आवश्यकता होगी।
- मुद्रा और रक्षा जैसे मुद्दों के लिए एक साझा दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।
- लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यय को वित्तपोषित करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष होता है। करों, गैर-कर स्रोतों और उधार के माध्यम से राजस्व जुटाना पड़ता है।
- केन्द्र द्वारा कर संग्रहण में दक्षता के कारण संसाधन जुटाने में केन्द्र को प्रमुख भूमिका दी गई है।
- प्रमुख करों में व्यक्तिगत आयकर (PIT), निगम कर, सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क केंद्र द्वारा एकत्र किए जाते हैं।
- जीएसटी केन्द्र और राज्य दोनों द्वारा एकत्रित किया जाता है और साझा किया जाता है।
- इसलिए, अधिकांश संसाधनों पर केन्द्र का नियंत्रण है और उन्हें राज्यों को हस्तांतरित किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी जिम्मेदारियां पूरी कर सकें।

- वित्त आयोग की नियुक्ति निम्नलिखित विषयों पर निर्णय लेने के लिए की जाती है: केन्द्र से राज्यों को धनराशि का हस्तांतरण तथा प्रत्येक राज्य का हिस्सा।
- केंद्र सरकार आयोग का गठन करती है और उसके कार्य-क्षेत्र भी तय करती है। इससे केंद्र के पक्ष में पक्षपात पैदा होता है और केंद्र तथा राज्यों के बीच टकराव की स्थिति पैदा होती है।
- राज्य भी राजस्व का बड़ा हिस्सा पाने के लिए अपनी मांगें ऊंची रखते हैं। वे कम राजस्व संग्रह और अधिक व्यय दिखाते हैं, इस उम्मीद में कि आयोग से अधिक आवंटन होगा।

अंतर्राज्यीय झगड़े, केंद्र-राज्य संबंध	संघवाद में मुद्दे

• राज्यों की स्थिति एक समान नहीं हो सकती क्योंकि वे विकास के विभिन्न चरणों में हैं तथा उनके संसाधनों की स्थिति भी बहुत भिन्न है।
  ○ अमीर राज्यों के पास अधिक संसाधन हैं, जबकि गरीब राज्यों को तेजी से विकास करने तथा अन्य राज्यों के साथ तालमेल बिठाने के लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता है।
  ○ इसलिए, वित्त आयोग से अपेक्षा की जाती है कि वह गरीब राज्यों को आनुपातिक रूप से अधिक धनराशि हस्तांतरित करे।
  ○ अमीर राज्य, जो अधिक योगदान करते हैं और आनुपातिक रूप से कम पाते हैं, इस पर नाराज हैं।
• ये यह भूल जाते हैं कि गरीब राज्य उन्हें बाजार मुहैया कराते हैं, जिससे वे तेजी से विकास कर पाते हैं। गरीब राज्य अपनी बचत का एक बड़ा हिस्सा भी खो देते हैं जो अमीर राज्यों के पास चला जाता है, जिससे उनका विकास तेजी से होता है।
• केंद्र सरकार राज्यों को दो तरीकों से संसाधन आवंटित करती है। पहला, वित्त आयोग के निर्णय के आधार पर।
• हर राज्य अपने क्षेत्र में ज़्यादा खर्च चाहता है। केंद्र योजनाओं और परियोजनाओं के आवंटन में राजनीति कर सकता है। उदाहरण के लिए, उस पर गुजरात और उत्तर प्रदेश को तरजीह देने का आरोप है। विपक्ष शासित राज्य लंबे समय से सौतेले व्यवहार की शिकायत करते रहे हैं।
• राज्यों की स्वायत्तता को किसी भी काम को करने की स्वतंत्रता से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। यह व्यापक भलाई के लिए राष्ट्रीय ढांचे के भीतर काम करने की आवश्यकता से घिरा हुआ है। यह आम और विविधता के बीच एक अच्छा संतुलन दर्शाता है।
	• सोलहवें वित्त आयोग ने काम शुरू कर दिया है। उसे कमजोर होते संघवाद को पलटने और 'राज्यों के संघ' के रूप में भारत की भावना को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए।
	• यह न केवल राजनीतिक कार्य है, बल्कि आर्थिक कार्य भी है। आयोग यह सुझाव दे सकता है कि केंद्र द्वारा सभी राज्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए और गरीब राज्यों को आनुपातिक रूप से अधिक संसाधन हस्तांतरित किए जाने पर अमीर और गरीब राज्यों के बीच टकराव कम हो, ताकि बढ़ती असमानता पर नियंत्रण रखा जा सके।
	• केंद्र और राज्य दोनों ही स्तरों पर शासन के मुद्दे पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह निवेश उत्पादकता और विकास की गति निर्धारित करता है। भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद के कारण संसाधनों की बर्बादी होती है और सामाजिक कल्याण को नुकसान पहुंचता है।
	• राज्यों पर केन्द्र के प्रभुत्व को कम करने के लिए, केन्द्र से राज्यों को संसाधनों का हस्तांतरण वर्तमान 41% के स्तर से काफी बढ़ाया जा सकता है।
	• केंद्र की भूमिका कम की जा सकती है। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक वितरण प्रणाली या MGNREGS संयुक्त योजनाएं हैं, लेकिन केंद्र का कहना है कि उसे इसका श्रेय दिया जाना चाहिए। इसने ऐसा न करने वाले राज्यों को दंडित किया है।
	• वर्ष 2024 के आम चुनाव के नतीजों के बाद बदली हुई राजनीतिक स्थिति के साथ यह संभव हो गया है।

170. अध्ययन: टोंगा ज्वालामुखी के कारण शेष दशक में असामान्य मौसम हो सकता है- द हिंदू

मुख्य बिंदु :

- हंगा टोंगा-हंगा हा'आपाई (संक्षेप में हंगा टोंगा) ज्वालामुखी 15 जनवरी, 2022 को प्रशांत महासागरीय राज्य टोंगा में फटा।
- इससे सुनामी उत्पन्न हुई, जिससे पूरे प्रशांत बेसिन में चेतावनी जारी कर दी गई, तथा कई बार विश्व भर में ध्वनि तरंगें भेजी गईं।
- इस विस्फोट का हमारे शीतकालीन मौसम पर आने वाले कई वर्षों तक प्रभाव रह सकता है।

धुएँ का बादल
- आमतौर पर ज्वालामुखी का धुआं और विशेष रूप से धुएं के बादल में मौजूद सल्फर डाइऑक्साइड के कारण अंततः पृथ्वी की सतह कुछ समय के लिए ठंडी हो जाती है।
- ऐसा इसलिए है क्योंकि सल्फर डाइऑक्साइड सल्फेट एरोसोल में परिवर्तित हो जाता है , जो सूर्य के प्रकाश को सतह पर पहुंचने से पहले ही अंतरिक्ष में वापस भेज देता है।
- इस छायांकन प्रभाव का मतलब है कि सतह कुछ समय के लिए ठंडी हो जाती है, जब तक कि सल्फेट वापस सतह पर नहीं गिर जाता या बारिश नहीं हो जाती।

हंगा टोंगा में विपरीत परिदृश्य.
- क्योंकि यह एक पानी के नीचे का ज्वालामुखी था, इसलिए हंगा टोंगा से बहुत कम धुआँ निकलता था, लेकिन बहुत अधिक जलवाष्प निकलता था।
- विस्फोट की प्रचंड गर्मी ने समुद्र के विशाल जल को भाप में बदल दिया, जो विस्फोट के बल के साथ वायुमंडल में ऊपर चला गया।
- सारा पानी समताप मण्डल में समा गया
  - सतह से लगभग 15 से 40 किलोमीटर ऊपर वायुमंडल की एक परत , जो अत्यधिक शुष्क होने के कारण न तो बादल बनाती है और न ही वर्षा करती है।
- समताप मंडल में जल वाष्प के दो मुख्य प्रभाव होते हैं:
  - यह ओजोन परत को नष्ट करने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं में मदद करता है
  - यह एक बहुत शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है।

हालिया अध्ययन
- अगस्त से दिसंबर 2023 तक होने वाला बड़ा ओजोन छिद्र कम से कम आंशिक रूप से हंगा टोंगा के कारण था ।
- चूंकि ओजोन छिद्र दिसंबर के अंत तक बना रहा, इसलिए इसके साथ ही 2024 की गर्मियों के दौरान दक्षिणी एनुलर मोड का एक सकारात्मक चरण भी आएगा।
- ऑस्ट्रेलिया के लिए, इसका मतलब था कि गर्मियों में बारिश की संभावना अधिक थी, जो घोषित एल नीनो के साथ अधिकांश लोगों की अपेक्षा के बिल्कुल विपरीत था।
- वैश्विक औसत तापमान के संदर्भ में, हंगा टोंगा का प्रभाव बहुत कम है।
- लेकिन ग्रह के कुछ क्षेत्रों में इसके कुछ आश्चर्यजनक, स्थायी प्रभाव भी हैं।
- ऐसा प्रतीत होता है कि ज्वालामुखी वायुमंडल में कुछ तरंगों के भ्रमण के तरीके को बदल देता है और वायुमंडलीय तरंगें उच्चता और निम्नता के लिए जिम्मेदार होती हैं, जो सीधे हमारे मौसम को प्रभावित करती हैं।

171. भारत किस ग्रेड का कोयला उत्पादित करता है? - द हिन्दू

मुख्य अंश:
- सकल कैलोरी मान (GCV), या कोयले के जलने से उत्पन्न होने वाली ऊष्मा या ऊर्जा की मात्रा, कोयले के वर्गीकरण को निर्धारित करती है।

'उच्च श्रेणी' और 'निम्न श्रेणी' कोयला
- कोयला एक जीवाश्म ईंधन है, जो कार्बन, राख, नमी और अन्य अशुद्धियों का मिश्रण है।
- कोयले की एक इकाई में उपलब्ध कार्बन जितना अधिक होगा, उसकी गुणवत्ता या 'ग्रेड' उतनी ही बेहतर होगी।
- कोयला मंत्रालय द्वारा किए गए वर्गीकरण के अनुसार, इस मीट्रिक के अनुसार कोयले की 17 श्रेणियाँ हैं, जिनमें से ग्रेड 1 या सर्वोच्च गुणवत्ता वाला कोयला एक किलो 7,000 किलो कैलोरी से अधिक उत्पादन करता है, तथा सबसे निम्न श्रेणी का कोयला 2,200-2,500 किलो कैलोरी के बीच उत्पादन करता है।

भारतीय कोयले की विशेषताएँ
- ऐतिहासिक रूप से भारतीय कोयले को आयातित कोयले की तुलना में राख की मात्रा में उच्च और कैलोरी मान में कम माना जाता है।
- घरेलू थर्मल कोयले का औसत GCV 3,500-4,000 किलो कैलोरी/किलोग्राम है, जबकि आयातित थर्मल कोयले का GCV +6,000 किलो कैलोरी/किलोग्राम है।
- इसके अलावा, भारतीय कोयले में औसत राख की मात्रा 40% से अधिक है, जबकि आयातित कोयले में राख की मात्रा 10% से भी कम है।
- इसका परिणाम यह है कि अधिक राख वाले कोयले को जलाने पर अधिक मात्रा में कणिका तत्व, नाइट्रोजन और सल्फर डाइऑक्साइड उत्पन्न होते हैं।
- इसे देखते हुए, सरकार ने वर्ष 1954 से कोयले की कीमत को इस प्रकार नियंत्रित किया है कि बिजली कम्पनियां बिजली उत्पादन के लिए उच्च श्रेणी के कोकिंग कोयले का उपयोग करने से हतोत्साहित हो गयी हैं।

स्वच्छ कोयला
- मोटे तौर पर, हमें स्वच्छ कोयला तब मिलता है जब राख की मात्रा को कम करके उसमें कार्बन की मात्रा बढ़ा दी जाती है ।
- कोयला संयंत्रों में 'वाशिंग प्लांट' होते हैं जो कोयले को इस प्रकार से संसाधित करते हैं कि राख और नमी की मात्रा कम हो जाती है।
- ये बारीक, मोटी राख को हटाने के लिए विशाल ब्लोअर या 'बाथ' का उपयोग करते हैं।
  - हालाँकि, ऐसे उपकरण लगाना महंगा है और इससे बिजली की लागत बढ़ जाती है।
- कोयले को स्वच्छ करने की दूसरी विधि, जिसमें भी महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है, वह है कोयला गैसीकरण।
- यहां, कोयले को सीधे जलाने की आवश्यकता को समाप्त कर उसे गैस में परिवर्तित कर दिया जाता है।
- परिणामस्वरूप उत्पन्न सिंथेटिक गैस, जो कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन, CO2 और जलवाष्प का मिश्रण है , को साफ किया जाता है और बिजली बनाने के लिए गैस टरबाइन में जलाया जाता है।

भारत में कोयले का भविष्य
- आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार भारत ने वर्ष 2023-24 में 997 मिलियन टन कोयला उत्पादन किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 11% अधिक है। इसका अधिकांश उत्पादन सरकारी स्वामित्व वाली कोल इंडिया लिमिटेड और उसकी सहायक कंपनियों द्वारा किया गया।
- भारत के विद्युत क्षेत्र को जीवाश्म ईंधन से दूर ले जाने की घोषित प्रतिबद्धताओं के बावजूद, कोयला भारत की ऊर्जा अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।
- हालाँकि, बदलाव की हवा चल रही है क्योंकि इस साल पहली बार भारत द्वारा इस वर्ष की पहली तिमाही में जोड़े गए रिकॉर्ड 13.6 गीगावाट बिजली उत्पादन क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा का योगदान 71.5% रहा।
- जबकि कुल विद्युत क्षमता में कोयले की हिस्सेदारी (लिग्नाइट सहित) 1960 के दशक के बाद पहली बार 50% से नीचे आ गयी।

172. जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने सबसे पुरानी आकाशगंगा का पता चला - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- नासा के जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) ने सबसे प्राचीन ज्ञात आकाशगंगा को देखा है, जो आश्चर्यजनक रूप से चमकीली और बड़ी है, क्योंकि इसका निर्माण ब्रह्मांड के प्रारंभिक चरण में हुआ था।
    - ब्रह्मांड के प्रथम कुछ सौ मिलियन वर्षों की इस अवधि को ब्रह्मांडीय उषा (कॉस्मिक डॉन) कहा जाता है।

हम आकाशगंगा के बारे में क्या जानते हैं?

- यह आकाशगंगा, जिसे JADES-GS-z14-0 कहा जाता है, लगभग 1,700 प्रकाश वर्ष दूर है। एक प्रकाश वर्ष वह दूरी है जो प्रकाश एक वर्ष में तय करता है, जो 9.5 ट्रिलियन किलोमीटर है।
- आकाशगंगा का द्रव्यमान हमारे सूर्य के आकार के 500 मिलियन तारों के बराबर है और यह हर साल लगभग 20 नए तारों का निर्माण कर रही है।
- अब तक, सबसे पुरानी ज्ञात आकाशगंगा बिग बैंग के लगभग 320 मिलियन वर्ष बाद की है, जैसा कि पिछले साल JADES टीम ने घोषणा की थी।
- अब तक ज्ञात सबसे प्राचीन आकाशगंगा बिग बैंग के लगभग 320 मिलियन वर्ष बाद की है, जैसा कि पिछले वर्ष JADES टीम ने घोषणा की थी।
- यह समझना चुनौतीपूर्ण होगा कि इतनी बड़ी चीज़ सिर्फ़ कुछ सौ मिलियन वर्षों में कैसे बन सकती है।
- यह तथ्य कि यह इतना चमकीला है, भी दिलचस्प है, क्योंकि ब्रह्मांड के विकास के साथ आकाशगंगाएं बड़ी होती जा रही हैं, जिसका अर्थ है कि अगले कई सौ मिलियन वर्षों में यह संभवतः काफी अधिक चमकीला हो जाएगा।
- इसी अध्ययन में JADES टीम ने बिग बैंग के लगभग 303 मिलियन वर्ष बाद की दूसरी सबसे पुरानी ज्ञात आकाशगंगा की खोज का खुलासा किया।
    - यह आकाशगंगा लगभग 100 मिलियन सूर्य के आकार के तारों के बराबर द्रव्यमान वाली है,, इसका व्यास लगभग 1,000 प्रकाश वर्ष है तथा यह प्रति वर्ष लगभग दो नए तारों का निर्माण करता है।

आकाशगंगा इतनी चमकीली क्यों है?

- प्रारंभिक आकाशगंगाओं की चमक को समझाने के लिए कई मुख्य परिकल्पनाएँ सामने आई हैं।
    - पहले अनुमान के अनुसार इसका कारण इन आकाशगंगाओं में स्थित विशालकाय ब्लैक होल हैं, जो पदार्थों को निगल रहे हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि यह संभावना खारिज हो गई है, क्योंकि देखा गया प्रकाश व्यापक क्षेत्र में फैला हुआ है।
    - दूसरी परिकल्पना यह है कि इन आकाशगंगाओं में अपेक्षा से अधिक तारे हैं

173. स्वास्थ्य देखभाल लागत से सम्बंधित मामला - द हिंदू

प्रसंग:

- जैसे-जैसे हम भारतीय स्वास्थ्य देखभाल के गतिशील परिदृश्य पर नजर डालते हैं, लागत संबंधी विचार सेवा वितरण और रोगी देखभाल के हर पहलू को तेजी से प्रभावित कर रहे हैं।

भारत में स्वास्थ्य देखभाल की लागत: संतुलन बनाना	प्रौद्योगिकी की भूमिका-
• भारत में स्वास्थ्य सेवा की बढ़ती लागत एक जटिल स्थिति पैदा कर रही है। जबकि वहनीयता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है, कुछ लोगों को चिंता है कि मूल्य नियंत्रण गुणवत्ता और नवाचार को नुकसान पहुंचा सकता है। • अध्ययनों से पता चलता है कि वित्तीय संकट से जूझ रहे अस्पतालों को गुणवत्तापूर्ण देखभाल बनाए रखने और नए उपचार विकसित करने में कठिनाई हो सकती है। • इसका लक्ष्य प्रदाताओं के आर्थिक स्वास्थ्य को खतरे में डाले बिना स्वास्थ्य देखभाल असमानताओं को कम करना है। • अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण, जैसे थाईलैंड की स्तरीकृत मूल्य निर्धारण प्रणाली, लागत और देखभाल के बीच संतुलन के लिए मॉडल प्रस्तुत करती है। • हालाँकि, प्रभावी समाधान के लिए कानूनी सुधारों की आवश्यकता है जो भारत की विशिष्ट जनसांख्यिकी और आर्थिक परिदृश्य पर विचार करें।	• टेलीमेडिसिन और AI से निदान और देखभाल समन्वय में सुधार हो सकता है, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में। • इसके अतिरिक्त, मोबाइल स्वास्थ्य ऐप और पहनने योग्य डिवाइस अस्पतालों के बाहर दीर्घकालिक बीमारियों के प्रबंधन में मदद कर सकते हैं, जिससे लागत कम हो सकती है और परिणाम बेहतर हो सकते हैं। • हालाँकि, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि सभी लोगों तक इन प्रौद्योगिकियों की पहुँच हो। • अंततः, नीति निर्माण के लिए डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि आवश्यक है। • यह डेटा सूक्ष्म मूल्य निर्धारण संरचनाएं बनाने और नवाचार और सुलभता पर लागत नियंत्रण के दीर्घकालिक प्रभाव की भविष्यवाणी करने में मदद कर सकता है।

174. क्लेबसिएला न्यूमोनिया बैक्टीरिया नियो प्रोटीन के उपयोग से संक्रमण को रोका जा सकता है- द हिंदू

प्रसंग:

- कोविड-19 महामारी द्वारा प्रस्तुत अभूतपूर्व चुनौतियों के बीच एक बार अस्पष्ट एंजाइम रिवर्स ट्रांसक्रिपटेस सुर्खियों में आया। रिवर्स ट्रांसक्रिपटेस की खोज अपने आप में एक कहानी है।
- हॉवर्ड टेमिन और डेविड बाल्टीमोर की प्रयोगशालाओं में शोधकर्ताओं ने स्वतंत्र रूप से इसकी खोज की और अपने निष्कर्ष प्रकाशित किए।
- अपने शोधपत्र में, डॉ. बाल्टीमोर ने सुझाव दिया कि वेसिकुलर स्टोमेटाइटिस वायरस में, RNA पॉलीमरेज़ नामक एक प्रोटीन RNA को DNA में रिवर्स-ट्रांसलेट करने में शामिल था।

आणविक जीव विज्ञान में क्रांति	मानव जीनोम में रेट्रोएलिमेंट्स
• उस समय प्रचलित मान्यता यह थी कि सभी जीवित प्राणियों में आनुवंशिक जानकारी केवल DNA से RNA और RNA से प्रोटीन (जिसे 'केन्द्रीय सिद्धांत' भी कहा जाता है) तक प्रवाहित होती है। • डॉ. टेमिन और बाल्टीमोर की खोजों से पता चला कि सूचना दूसरी दिशा में भी प्रवाहित हो सकती है, जिसमें RNA से DNA का निर्माण हो सकता है। • कोशिकाओं की RNA से DNA प्रतियाँ बनाने की क्षमता ने अनुसंधान विधियों में क्रांति ला दी, जहाँ शोधकर्ता मैसेंजर RNA को DNA के टुकड़ों में रिवर्स-ट्रांसक्राइब कर सकते थे, उस DNA को बैक्टीरियल वेक्टर में क्लोन कर सकते थे, और संबंधित जीन के कार्य का अध्ययन कर सकते थे। • निदान में, चिकित्सकों ने RNA को DNA में बदलने के लिए रिवर्स ट्रांसक्रिपटेस का उपयोग किया और इस प्रकार किसी दिए गए नमूने में वायरल सामग्री की मात्रा का अनुमान लगाया। इस तकनीक ने हेपेटाइटिस B और मानव इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस (HIV) सहित RNA वायरस के अध्ययन में जल्दी ही व्यापक अनुप्रयोग और उपयोग पाया।	• मानव जीनोम में कई स्थानों पर ऐसे अनुक्रम पाए जाते हैं, जिन्हें तत्व कहा जाता है, तथा ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी उत्पत्ति रेट्रोवायरस से हुई है। • इसलिए, शोधकर्ता इन्हें रेट्रोएलिमेंट्स कहते हैं। विकासवादी जीवविज्ञानी मानते हैं कि ये रेट्रोएलिमेंट्स लाखों वर्षों के विकास के दौरान क्षैतिज रूप से स्थानांतरित हुए हैं। ○ क्षैतिज जीन स्थानांतरण से तात्पर्य माता-पिता से संतानों में स्थानांतरित होने के बजाय जीवों के बीच जीन के 'स्थानांतरण' से है। ○ और हाल ही तक, शोधकर्ता भी उन्हें "जंक" तत्व मानते थे : ये जीनोम के माध्यम से दोहराए जाते थे और ये मानव जीव को कोई कार्य प्रदान नहीं करते थे। • जर्नल नेचर कम्युनिकेशंस में हाल ही में प्रकाशित एक शोधपत्र में, शोधकर्ताओं ने पोस्ट-मॉर्टम मस्तिष्क के नमूनों से मानव मस्तिष्क के विभिन्न भागों में जीन की अभिव्यक्ति का व्यापक अध्ययन किया। • उन्होंने बताया कि मानव जीनोम में रेट्रोएलिमेंट्स के एक प्रमुख वर्ग, एक हजार से अधिक मानव अंतर्जात रेट्रोवायरस की अभिव्यक्ति मनुष्यों में न्यूरोसाइकिएट्रिक रोगों के जोखिम से जुड़ी हो सकती है। • मानव जीनोम और बैक्टीरियल रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेस में रेट्रोएलिमेंट्स का एक समान विकासवादी इतिहास है और साथ ही कार्यात्मक तंत्र भी साझा करते हैं। • माना जाता है कि बैक्टीरियल रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेस अपने यूकेरियोटिक समकक्षों के अग्रदूत हैं और समान तंत्र प्रदर्शित करते हैं। • जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में रिवर्स ट्रांसक्रिपटेस क्रियाशीलता की खोज, प्रोकैरियोटिक और यूकेरियोटिक दोनों प्रणालियों में एंजाइम की मौलिक भूमिका के साथ-साथ उल्लेखनीय विकासवादी निरंतरता और कार्यात्मक बहुमुखी प्रतिभा को रेखांकित करती है।

175. स्वास्थ्य विनियमन हेतु आधार से शीर्ष तक के दृष्टिकोण की आवश्यकता - द हिंदू

प्रसंग:

- स्वास्थ्य विनियमन का विषय हमेशा से ही स्वास्थ्य कार्यक्रम प्रबंधकों के लिए रूचि का विषय रहा है, लेकिन चुनौती अवास्तविक स्वास्थ्य देखभाल गुणवत्ता मानकों की है।

मुख्य बिंदु

- भारत में हर स्तर पर सरकारें ऐसी नीतियों का मसौदा तैयार करने के लिए जानी जाती हैं जो लगभग परिपूर्ण होती हैं।
  - 14 वर्ष पहले अधिनियमित क्लिनिकल प्रतिष्ठान (पंजीकरण एवं विनियमन) अधिनियम, 2010 को राज्यों द्वारा पूरी तरह से नहीं अपनाया गया।
  - ऐसा इसलिए है क्योंकि राज्य सरकारों ने हितधारकों के साथ विचार-विमर्श में महसूस किया है कि अधिनियम के कई प्रावधानों को लागू करना असंभव है।
- सरकार द्वारा अपनी स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के लिए तैयार किए गए भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य मानक, ताकि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा सकें।
  - फिर भी 17 वर्षों के अस्तित्व में, भारत में केवल 15% से 18% सरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएँ ही सरकार के अपने मानकों को पूरा करती हैं।

भारत में मिश्रित स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली

- तथ्य यह है कि भारत में मिश्रित स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली है, जहां निजी स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं और प्रदाता लगभग 70% बाह्य रोगी और 50% अस्पताल-आधारित सेवाएं प्रदान करते हैं।
- महाराष्ट्र या केरल जैसे राज्यों में स्वास्थ्य संकेतक बेहतर हैं, इसलिए नहीं कि इन राज्यों में उत्कृष्ट सरकारी सुविधाएं हैं, बल्कि इसलिए कि निजी क्षेत्र की सुविधाएं और क्लीनिक लोगों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं।
- फिर भी, जब स्वास्थ्य देखभाल विनियमन की बात आती है, तो निजी क्षेत्र में विनियमनों को लागू करने का अनुचित प्रयास होता है।
  - स्पष्टतः, प्रभावी विनियमन और अनुपालन के लिए, हितधारकों को यह महसूस नहीं होना चाहिए कि उन्हें निशाना बनाया जा रहा है।
  - स्वास्थ्य देखभाल विनियमन में, वर्तमान योजना के अनुसार, जिम्मेदारी का बोझ प्रदाताओं और सुविधा मालिकों पर अधिक है।

वहनयोग्य देखभाल एक जरूरत

- निजी क्षेत्र में एकल चिकित्सक क्लीनिक, छोटे नर्सिंग होम और मध्यम आकार के अस्पतालों से लेकर बड़े कॉर्पोरेट अस्पतालों तक विभिन्न प्रकार के अस्पताल हैं।
- एकल चिकित्सक क्लीनिक और छोटे नर्सिंग होम अक्सर भारत में मध्यम आय और निम्न आय वाली आबादी के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और उपयोग के लिए पहला संपर्क बिंदु होते हैं, और स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविक जीवन रेखा हैं।
- ये बड़े कॉर्पोरेट अस्पतालों की तुलना में बहुत कम लागत पर बड़ी मात्रा में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं।
- स्पष्टतः, स्वास्थ्य देखभाल की लागत को कम और किफायती बनाए रखने के सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहायक और सुविधाजनक विनियमन की आवश्यकता है।
- विनियामक पहलुओं में, छोटी सुविधाओं से समान मानक पूरा करने की अपेक्षा करना, छोटी सुविधाओं के लिए महंगा हो जाएगा, जिसका बोझ संभवतः मरीजों पर पड़ेगा, जिससे स्वास्थ्य सेवाएं उनकी पहुंच से बाहर हो जाएंगी।
- विभिन्न प्रकार की सुविधाओं के लिए भिन्न दृष्टिकोण की आवश्यकता है।
- डॉक्टरों के संघों के प्रतिनिधियों और जिन सुविधाओं के लिए विनियम बनाए जा रहे हैं, उनके प्रतिनिधियों को विनियमन बनाने की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए।

प्राथमिक देखभालकर्ताओं पर ध्यान केंद्रित करें

- भारत को छोटी स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं और नर्सिंग होम के अलावा एकल चिकित्सक क्लीनिकों को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- ये वे हैं जो प्राथमिक देखभाल प्रदान करते हैं और स्वास्थ्य देखभाल की लागत को कम रखने में योगदान देते हैं। ऐसी हर सुविधा और उसके डॉक्टरों को अतिरिक्त विनियमन के बोझ के बजाय समर्थन की आवश्यकता है।
- कार्यान्वयन में निष्पक्षता, समयबद्ध निर्णय और लाइसेंसों के नवीनीकरण, सब्सिडी के साथ छोटी स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं को बढ़ावा देने तथा गुणवत्ता और सुरक्षा में वृद्धि के लिए समर्थन की आवश्यकता है।
  - भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली पहले से ही भर्ती आधारित इन-पेशेंट सेवाओं की ओर झुकी हुई है।
  - ऐसे प्रदाताओं और सुविधाओं को बढ़ावा देना जो कम लागत पर आउट-पेशेंट देखभाल प्रदान करते हैं।
- इससे राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 के लक्ष्य में योगदान मिलेगा, जिसके तहत ऐसी स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाएंगी जो जन-केंद्रित, सुलभ, उपलब्ध, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण हों।
- इसके लिए स्वास्थ्य विनियमों को ऊपर से नीचे की बजाय नीचे से ऊपर की ओर तैयार किया जाना चाहिए और उन्हें सूक्ष्म और संतुलित तरीके से लागू किया जाना चाहिए।

176. भारतीय संविधान के तहत संपत्ति और मुआवजे का अधिकार- द हिंदू

प्रसंग:

- संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने एक बार कहा था, "संपत्ति निश्चित रूप से मानव जाति का उतना ही वास्तविक अधिकार है जितना कि स्वतंत्रता"।
- संपत्ति के अधिकार को शुरू में एक मौलिक अधिकार के रूप में और बाद में एक संवैधानिक अधिकार के रूप में परिकल्पित किया गया, जिसका उत्तर-औपनिवेशिक युग में एक दिलचस्प इतिहास रहा है।
- संविधान में निहित किसी भी अन्य अधिकार के लिए न्यायालयों और विधायिका के बीच इतना संघर्ष नहीं देखा गया है।
- इस सत्ता संघर्ष की उत्पत्ति बहुत पहले की है।
  - बेला बनर्जी का मामला (1953) जिसमें संविधान के अनुच्छेद 19(1)(एफ) और 31(2) (संशोधन से पूर्व) की व्याख्या शामिल थी।
  - भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि अनुच्छेद 31(2) में प्रतिकर शब्द का तात्पर्य "उस राशि के समतुल्य है जिससे मालिक को वंचित किया गया है"।
  - इस व्याख्या को रद्द करने के लिए, वर्ष 1955 में संविधान (चौथा) संशोधन पारित किया गया, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ अनुच्छेद 31(2) में संशोधन किया गया, ताकि स्पष्ट रूप से कहा जा सके कि अदालतें मुआवजे की अपर्याप्तता के प्रश्न पर गहराई से विचार नहीं कर सकतीं।

- जवाबी कार्रवाई में, न्यायालय ने माना कि यद्यपि अंतिम मुआवजा न्यायोचित नहीं था, तथापि ऐसे निर्धारण पर पहुंचने के लिए विधायिका द्वारा निर्धारित सिद्धांत जांच के लिए खुले होंगे।

शब्द प्रतिस्थापन
- संविधान (पच्चीसवां) संशोधन अधिनियम, 1971 के तहत "मुआवजा" शब्द के स्थान पर "राशि" शब्द रखा गया, जिससे अदालतों की व्याख्या पर कोई असर नहीं पड़ा।
- परिणामस्वरूप ऐसी "राशि" की पर्याप्तता न्यायिक समीक्षा के लिए खुली नहीं थी।
- यद्यपि केशवानंद भारती मामले में संविधान (पच्चीसवां) संशोधन अधिनियम, 1971 की वैधता को बरकरार रखा गया था, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने व्याख्यात्मक प्रक्रिया द्वारा संशोधित अनुच्छेद 31(2) के इच्छित प्रभाव को कम कर दिया।
  - केशवानंद भारती मामले में बहुमत का मत था कि यद्यपि भुगतान की गई राशि की पर्याप्तता न्यायोचित नहीं थी,
  - अदालतें अभी भी यह जांच कर सकती हैं कि क्या ऐसे मुआवजे के निर्धारण के लिए निर्धारित सिद्धांत प्रासंगिक थे।
  - इस निर्णय के बाद, संसद को विश्वास हो गया कि संपत्ति का अधिकार समाजवादी राज्य प्राप्त करने के लक्ष्य में एक बाधा बना हुआ है।
  - ऐसा इसलिए था क्योंकि समाजवादी दृष्टिकोण से संपत्ति का अधिकार पूरी तरह से पूंजीपति वर्ग का गढ़ था।

एक महत्वपूर्ण परिवर्तन
- वर्ष 1977 के आम चुनाव में कांग्रेस की हार के बाद सत्ता में आई जनता पार्टी ने संविधान (44वां संशोधन) अधिनियम, 1978 पारित किया।
- अनुच्छेद 19(1)(F) के तहत संपत्ति के अधिकार को भाग III से हटा दिया गया और अनुच्छेद 300-A के तहत संवैधानिक अधिकार के रूप में पुनर्स्थापित किया गया।
- अनुच्छेद 31, जिसके कारण मुआवजे के निर्धारण के मामले में काफी विवाद हुआ था, को भी हटा दिया गया।
- अनुच्छेद 300A में कहा गया है कि "किसी भी व्यक्ति को कानून के प्राधिकार के बिना उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा"।
- अनुच्छेद 19(1)(F) और 31 को हटाए जाने के बाद के वर्षों में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना है कि संपत्ति का अधिकार न केवल एक संवैधानिक अधिकार है, बल्कि एक मानव अधिकार भी है।

संरक्षित पहलू
- कोलकाता नगर निगम मामले में सर्वोच्च न्यायालय के हालिया निर्णय ने अनुच्छेद 300-A के तहत संरक्षित विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है।
- राज्य द्वारा भूमि से वंचित व्यक्ति को उचित और उचित मुआवजा पाने का अधिकार है। न्यायालय ने दोहराया है कि उस अधिकार से वंचित करना या समाप्त करना केवल प्रतिपूर्ति के बाद ही स्वीकार्य है।
- इस प्रकार, मुआवजा देने की आवश्यकता, अर्थात अर्जित संपत्ति के मूल्य के बराबर, जो बेला बनर्जी मामले में मूल स्थिति थी, अब पुनः बहाल कर दी गई है।

177. कृषि क्षेत्र के लिए चुनौती: विकास लाभ को कैसे साझा करें- द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:
- मुख्य बात सिर्फ उत्पादकता में सुधार लाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि उत्पादकता में वृद्धि कायम रह सके।
- भारत जैसे-जैसे अमृत काल की ओर बढ़ रहा है, कृषि क्षेत्र की यात्रा कठिन और चुनौतियों से भरी होगी।
- इस सदी में, भारतीय कृषि इस बात से जूझ रही है कि पुराने मॉडल से कैसे दूर जाया जाए। नीति निर्माता किसानों के लिए सम्मानजनक आजीविका सुनिश्चित करने में विफल रहे हैं।
- हम कुछ निश्चित परिस्थितियों का सामना करते हैं, जिन्हें बदलना हमारी क्षमता से परे हो सकता है।
  - पहला, जलवायु में अपरिवर्तनीय रूप से बदतर परिवर्तन हो रहे हैं। हम फसल उत्पादन और आजीविका को प्रभावित करने वाली अनियमित जलवायु घटनाओं की शुरुआत देख रहे हैं।
  - दूसरा, विश्व व्यापार संगठन नहीं बदलेगा और हमें इसके अधिदेश के साथ काम करना होगा।
    - कई वर्षों से अमेरिका ने जानबूझकर विवाद-निपटान तंत्र को कमजोर कर दिया है।
    - जब यह चालू हो जाएगा, तो भारतीय राजनेताओं को यह पता नहीं होगा कि घरेलू स्तर पर इसके फैसलों से कैसे निपटा जाए।
  - तीसरा, छोटी भूमि जोतों की बड़ी संख्या (कुल कृषि योग्य भूमि का 85 प्रतिशत) प्राथमिक उत्पादकों के लिए सम्मानपूर्ण जीवन जीने की संभावना को मूलतः सीमित कर देती है।
  - चौथा, उपभोक्ताओं के लिए कम खाद्य कीमतें सुनिश्चित करने की वैश्विक प्राथमिकता को कृषि-द्वार कीमतों को कृत्रिम रूप से कम करके सबसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।
  - इससे खेती पर्यावरणीय दृष्टि से असंवहनीय और आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी हो जाती है।
  - पांचवां, कृषि के लिए पानी की अत्यधिक मांग के कारण घटते जलभृत उस सीमा तक पहुंच रहे हैं, जहां सिंचाई के लिए पानी निकालना आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं होगा।

कृषि संबंधित चिंताएं
- कृषि अनुसंधान और विस्तार सेवाओं में निवेश मुद्रास्फीति के स्तर से नीचे रहा है। साथ ही, कृषि बाज़ार स्वाभाविक रूप से अनुचित हैं।
- कृषि राज्य का विषय है, जहां राज्य राष्ट्रीय उद्देश्यों के अनुरूप काम नहीं करते, बल्कि भविष्य में निवेश करने के बजाय लोकलुभावन घोषणाएं करते हैं।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से अनाज का वितरण निशुल्क या अवास्तविक रूप से कम कीमतों पर किया जाता है, जिससे कृषि-द्वार पर मिलने वाले अनाज की कीमतें लगातार गिरती रहती हैं, जिससे प्राथमिक उत्पादन एक अप्रिय और अव्यवहारिक पेशा बना हुआ है।
- उर्वरक सब्सिडी जैसी इनपुट सब्सिडी के कारण उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग होता है, जिससे लोगों और पृथ्वी के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- केन्द्र और राज्य सरकार दोनों स्तरों पर सार्वजनिक ऋण के कारण दीर्घावधि के लिए योजना बनाने में कम वित्तीय लचीलापन रहता है तथा आगे अंतहीन सब्सिडी देने की अनुमति नहीं मिलती।
- कई राज्य तकनीकी रूप से दिवालिया घोषित किए जाने की कतार में हैं। राज्यों के लिए संप्रभु दिवालियापन प्रक्रिया का अभाव है।
- अंत में और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि केंद्र और राज्यों में कृषि क्षेत्र का प्रबंधन करने वाले मंत्रालयों में अयोग्य शासन और जवाबदेही की कमी है।
- मुख्य चुनौती सिर्फ़ कृषि उत्पादकता में सुधार लाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि उत्पादकता में होने वाले लाभ को बरकरार रखा जा सके और व्यापक रूप से साझा किया जा सके। विकास समावेशी हो।
- ढांचे में केवल बदलाव करना पर्याप्त नहीं होगा और यदि नीतियों के निर्माण की प्रक्रिया सहित कोई भी मौलिक परिवर्तन नहीं किया गया, तो हम स्वयं को भ्रम में फंसते हुए और दुःस्वप्न में जीते हुए पाएंगे।

178. राजस्थान में किसानों को बिजली आपूर्ति हेतु सहकारिता आधारित वितरण मॉडल- द हिंदू

प्रसंग:

- राजस्थान में किसानों के समक्ष खराब विद्युत आपूर्ति के प्रणालीगत मुद्दों पर एक संवाद में विद्युत अधिनियम, 2003 के अंतर्गत विनियामक व्यवहार्यता के साथ किसान सहकारी-आधारित वितरण मॉडल की स्थापना की सिफारिश की गई है।
- इस अवसर पर कृषि उपभोक्ताओं को बिजली की आपूर्ति के लिए नियामक जवाबदेही बढ़ाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर भी जोर दिया गया।

बिजली की समस्या: किसानों को समाधान की आवश्यकता क्यों है	**किसानों का सहकारी आधारित वितरण मॉडल**
• भारतीय किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अविश्वसनीय बिजली है। • उन्हें अक्सर वादा किए गए छह घंटे के बजाय दिन में केवल चार घंटे बिजली मिलती है। • यह कम और अस्थिर वोल्टेज सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण उपकरणों को नुकसान पहुंचाता है, जिससे फसल का नुकसान होता है और लागत बढ़ जाती है।	• यह मॉडल किसानों को अपने समुदायों में बिजली का प्रबंधन और वितरण करने के लिए एक साथ लाता है। ये सिंचाई और बिजली उपकरणों जैसी कृषि की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी खुद की प्रणाली बनाएंगे। • यह दृष्टिकोण कई लाभ प्रदान करता है। • किसानों को अपने ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त होगा, जिससे उन्हें बिजली की विश्वसनीय पहुंच सुनिश्चित होगी। • ये उन चुनौतियों से निपट सकते हैं जो वर्तमान में उनके उत्पादन को नुकसान पहुंचाती हैं। इसके अतिरिक्त, ये सहकारी समितियाँ स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा दे सकती हैं और ग्रामीण समुदायों को अधिक लचीला बना सकती हैं।

179. भारत की GDP वृद्धि :चुनौतियां और अवसर - द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- नई सरकार के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि उच्च विकास का लाभ निम्न आय वर्ग तक पहुंचे
- भारत के सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा था, वास्तव में, इसने बाजार की उम्मीदों को पार कर लिया है, वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकिवर्ष 2022-23 में 7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- यह ध्यान देने वाली बात है कि वर्ष 2023-24 में वृद्धि सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के दूसरे अग्रिम अनुमान 7.6 प्रतिशत से काफी अधिक है।
- यद्यपि समग्र सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि प्रभावशाली है, फिर भी इस वर्ष वृद्धि की स्थिरता का अनुमान लगाने के लिए आंकड़ों की कुछ बारीकियों को समझना महत्वपूर्ण है।
- एक अन्य महत्वपूर्ण बिंदु वर्ष 2023-24 में GDP और GVA वृद्धि के बीच 1 प्रतिशत अंक का तीव्र अंतर है।
  - इसका मुख्य कारण शुद्ध करों में तीव्र वृद्धि (उच्च कर संग्रह और कम सब्सिडी के कारण) है। इससे GDP वृद्धि को बढ़ाने में भी मदद मिली है।
- यदि हम क्षेत्रीय स्तर पर देखें तो, जैसा कि अपेक्षित था, पिछले वर्ष खराब मानसून के कारण, समग्र कृषि मूल्य संवर्धन वृद्धि धीमी रही है।
- कम इनपुट कीमतों के समर्थन से, विनिर्माण GVA ने वर्ष 2023-24 में 9.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ स्वस्थ सुधार दिखाया है।
- जबकि सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर 7.6 प्रतिशत रही है।
- निर्माण क्षेत्र मजबूत बना हुआ है और इसमें 9.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

सकल घरेलू उत्पाद व्यय पक्ष:	विकास एवं निर्यात:
• यदि हम व्यय पक्ष से सकल घरेलू उत्पाद के विभाजन को देखें, तो हम पाते हैं कि समग्र सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि बहुत व्यापक आधारित नहीं है। • अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ, निजी उपभोग, वर्ष 2023-24 में 3.8 प्रतिशत की मामूली वृद्धि के साथ बढ़ा है। यह पिछले दो दशकों (महामारी वर्ष संकुचन को छोड़कर) में सबसे धीमी खपत वृद्धि दर है। • भारतीय अर्थव्यवस्था का दूसरा स्तंभ निवेश 9 प्रतिशत की दर से बढ़ा है। अर्थव्यवस्था में निवेश का नेतृत्व मुख्य रूप से सरकारी क्षेत्र ने किया है। • केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय वर्ष 2023-24 में 28 प्रतिशत की अच्छी वृद्धि के साथ बढ़ा है।	• कमजोर वैश्विक विकास के कारण भारत की अर्थव्यवस्था का तीसरा स्तंभ धीमा पड़ गया है। • यद्यपि भारत का सेवा निर्यात अच्छा बना हुआ है, किन्तु वस्तु निर्यात को विशेष रूप से वैश्विक मंदी का दंश का सामना हुआ है। • हम उम्मीद कर सकते हैं कि भारत की GDP वृद्धि दर में नरमी आएगी। हालांकि, इस साल यह करीब 7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। • विकास की गति को कायम रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू निजी उपभोग में सुधार होगा। • जबकि उच्च आय वर्ग खर्च कर रहा है, निम्न आय वर्ग उच्च मुद्रास्फीति और कम वेतन वृद्धि के बीच सतर्क बना हुआ है। • पिछले वर्ष खराब मानसून के कारण ग्रामीण मांग भी कमजोर रही थी। • इस वर्ष सामान्य मानसून की उम्मीद के साथ, हम ग्रामीण उपभोग मांग में पुनरुद्धार की उम्मीद कर सकते हैं। • ग्रामीण उपभोग में सुधार के लिए खाद्य मुद्रास्फीति में कमी एक अन्य पूर्वापेक्षा होगी। • रोजगार परिदृश्य में सुधार भी उपभोग पुनरुद्धार के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्सा होगा। • असंगठित क्षेत्र में रोजगार की स्थिति में सुधार भी महत्वपूर्ण होगा। • सतत विकास गति के लिए निजी पूंजीगत व्यय चक्र में तेजी एक अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकता है। • निजी क्षेत्र में निवेश के प्रति बढ़ती इच्छा दिखाई दे रही है, जैसा कि घोषित निवेश परियोजनाओं पर CMIE के आंकड़ों से पता चलता है। • बेशक, निजी निवेश को सार्थक रूप से बढ़ाने के लिए उपभोग मांग में निरंतर पुनरुद्धार सबसे महत्वपूर्ण होगा। **वैश्विक परिदृश्य** • वैश्विक विकास परिदृश्य में सुधार के साथ ही भारत के निर्यात में भी सुधार होने की संभावना है। • हालाँकि, भू-राजनीतिक तनाव बढ़ने के कारण आपूर्ति में बाधा उत्पन्न होने का खतरा बना हुआ है। • वैश्विक कमोडिटी कीमतों, विशेष रूप से औद्योगिक धातुओं की कीमतों में हाल ही में हुई बढ़ोतरी, उच्च इनपुट लागत के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

180. भारत में सड़क यातायात असंवहनीय और अन्यायपूर्ण - मिंट

प्रसंग:

- मौजूदा सड़कों की हालत खराब होने से दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं, ईंधन दक्षता कम हो रही है और वायु प्रदूषण बढ़ रहा है

मुख्य बिंदु

- भारत में बहुत सारी नई सड़कें बनाई जा रही हैं, लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि यह पैसा खर्च करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है।
- भारत में प्रति व्यक्ति सड़कों की संख्या चीन से अधिक है, लेकिन उनकी गुणवत्ता अक्सर खराब होती है।
- इससे दुर्घटनाएं होती हैं, ईंधन की बर्बादी होती है और प्रदूषण बढ़ता है, जिससे कई स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं। भले ही भारत यातायात दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को कम करना चाहता हो, लेकिन यह तरीका कारगर नहीं हो सकता।
- अधिक सड़कें बनाने से पर्यावरण को भी नुकसान पहुंच सकता है।
- कार और ट्रक प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत हैं, और बिना किसी अच्छी योजना के सड़कों का विस्तार करने से वास्तव में यातायात और भी खराब हो सकता है। दिल्ली जैसे कुछ शहरों में, नए एक्सप्रेसवे ने भीड़भाड़ की समस्या का समाधान नहीं किया है।
- कारों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय भारत को सार्वजनिक परिवहन में निवेश करना चाहिए।
- रेलगाड़ियां और बसें पर्यावरण के लिए बेहतर हैं और इनमें अधिक लोग यात्रा कर सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त, वर्तमान सड़क परियोजनाएं सभी की आवश्यकताओं पर विचार नहीं करती हैं।
- ये अक्सर पैदल यात्रियों और साइकिल चालकों की अपेक्षा तेज गति वाले यातायात को प्राथमिकता देते हैं, तथा ये पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकते हैं और समुदायों को विस्थापित कर सकते हैं।
- एक बेहतर तरीका यह होगा कि सभी को लाभ पहुँचाने वाले संधारणीय परिवहन की योजना बनाई जाए।

181. वैश्विक ऋण संकट: राष्ट्र शिक्षा और स्वास्थ्य की तुलना में ब्याज भुगतान पर अधिक खर्च कर रहे - डाउन टू अर्थ

प्रसंग:

- वर्ष 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को पूरा करने के लिए मुश्किल से छह साल बचे हैं
- कई देशों के लिए ऋण देना एक प्रमुख व्यय है, जो उन्हें स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे विकास वित्तपोषण से दूर रखता है।

मुख्य बिंदु	निष्कर्ष
• "ए वर्ल्ड ऑफ डेट 2024" शीर्षक वाली यह रिपोर्ट वैश्विक वित्त की चिंताजनक तस्वीर पेश करती है। ऋण खतरनाक स्तर तक बढ़ गया है, विश्व में हर व्यक्ति पर लगभग 39,000 अमेरिकी डॉलर का ऋण है। • यह भारी ऋण का बोझ सरकारों को परेशान कर रहा है,, जिससे उन्हें स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बजाय ब्याज भुगतान पर अधिक खर्च करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। • घरेलू, व्यावसायिक और सरकारी ऋण सभी ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। • विकसित देश पारंपरिक सहायता कम दे रहे हैं और इसके स्थान पर ऋण दे रहे हैं, जिससे विकासशील देशों का ऋण भार और बढ़ रहा है। • ये देश विशेष रूप से असुरक्षित हैं, अत्यधिक ब्याज दरें चुका रहे हैं तथा अपने विकास में निवेश करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। • देशों को अपने ऋणों का भुगतान न करने का जोखिम है, जिससे आवश्यक कार्यक्रमों में भारी कटौती हो रही है। • अफ्रीका में ऐसा पहले से ही हो रहा है, जहां शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल बजट भारी ऋण के बोझ के कारण प्रभावित हो रहे हैं। • उच्च ऋण स्तर संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDG) की प्रगति में भी बाधा डालते हैं, क्योंकि राष्ट्र इन महत्वपूर्ण पहलों के लिए संसाधन आवंटित करने में संघर्ष करते हैं।	• इस संकट से निपटने के लिए रिपोर्ट में वैश्विक वित्तीय प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन का प्रस्ताव किया गया है। • यह वित्तीय निर्णय लेने में विकासशील देशों की बढ़ती भागीदारी, बढ़ती ऋण लागतों को प्रबंधित करने के लिए एक तंत्र और अत्यधिक उधार लेने से बचने के लिए संकट के दौरान अधिक आसानी से उपलब्ध वित्तीय सहायता का आह्वान करता है। • इसके अतिरिक्त, सस्ती, दीर्घकालिक वित्तपोषण तक पहुँच का विस्तार करने के लिए संसाधनों को जुटाना अधिक सतत भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाता है।

182. पाकिस्तान, पनामा, सोमालिया, ग्रीस UNSC के गैर-सदस्य चुने गए- लाइव मिंट

प्रसंग:

- डेनमार्क, ग्रीस, पाकिस्तान, पनामा और सोमालिया को गुरुवार को महासभा में गुप्त मतदान के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सीटें मिलनी तय हो गई हैं।

मुख्य बिंदु	UNSC को "सुधारों" की आवश्यकता क्यों है?
• 193 सदस्यीय विश्व निकाय परिषद में दो वर्ष का कार्यकाल पूरा करने के लिए पांच देशों को चुनने के लिए मतदान करेगा। • 15 सदस्यीय परिषद की 10 अस्थायी सीटें क्षेत्रीय समूहों को आवंटित की जाती हैं, जो आमतौर पर अपने उम्मीदवारों का चयन करते हैं, लेकिन कभी-कभी किसी एक पर सहमत नहीं हो पाते हैं। • पिछले वर्ष, स्लोवेनिया ने पूर्वी यूरोपीय क्षेत्रीय समूह का प्रतिनिधित्व करने वाली सीट के लिए रूस के करीबी सहयोगी बेलारूस को आसानी से हरा दिया था, यह वोट रूस द्वारा यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण के प्रति मजबूत वैश्विक विरोध को दर्शाता है। • इस बार, क्षेत्रीय समूहों ने अफ्रीकी सीट के लिए सोमालिया, एशिया-प्रशांत सीट के लिए पाकिस्तान, लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई सीट के लिए पनामा, तथा दो मुख्य रूप से पश्चिमी सीटों के लिए डेनमार्क और ग्रीस को आगे रखा।	• संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का गठन, जिसमें पाँच स्थायी सदस्य चीन, फ्रांस, रूस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं, लगभग आठ दशक पहले हुआ था। • उस समय, वैश्विक परिदृश्य में लगभग 50 स्वतंत्र राष्ट्र शामिल थे। • आज संप्रभु राज्यों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद, जो आज लगभग 193 हो गई है, UNSC सदस्यता पर नियंत्रण मूल पाँच स्थायी सदस्यों के हाथों में ही केंद्रित रहा है। • **भारत के प्रयास:** भारत ने जापान, जर्मनी और मिस्र के साथ मिलकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की सक्रिय वकालत की है। • इस गठबंधन द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का उद्देश्य प्रतिनिधित्व में असंतुलन को दूर करना तथा परिषद की प्रभावशीलता को बढ़ाना है। • **चुनौतियाँ:** UNSC सुधार के लिए आम सहमति प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण साबित हुआ है। जहाँ कुछ राष्ट्रों ने समर्थन व्यक्त किया है, वहीं अन्य परिवर्तन के प्रति झिझक या प्रतिरोध कर रहे हैं। • इन बाधाओं को दूर करने के लिए ठोस प्रयासों और रणनीतिक कूटनीति की आवश्यकता है।

183. भारतीय नौसेना को मिली पहली महिला हेलीकॉप्टर पायलट - द हिंदू

समाचार:

- अराकोणम में नौसेना वायु स्टेशन INS राजली में आयोजित पासिंग आउट परेड के दौरान सब लेफ्टिनेंट अनामिका बी. राजीव भारतीय नौसेना की पहली महिला हेलीकॉप्टर पायलट बनीं

भारत ने सेना में महिलाओं को शामिल किया	वायु सेना:
सेना: • महिला अधिकारी अब कई क्षेत्रों में दीर्घकालिक करियर (स्थायी कमीशन) बना सकती हैं • महिलाएं प्रतिष्ठित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA) में पुरुषों के साथ प्रशिक्षण ले सकती हैं। हर छह महीने में नए बैच शुरू होते हैं। • सेना, आर्मी एविएशन कोर में महिला पायलटों के लिए अपने कॉकपिट खोल रही है। • महिलाएं सैन्य पुलिस में सूचीबद्ध सैनिक (अन्य रैंक) के रूप में भी शामिल हो सकती हैं। **नौसेना:** • जून 2023 से महिलाएं नौसेना की लगभग हर शाखा में अधिकारी बन सकेंगी, सिवाय पनडुब्बियों के (अभी के लिए)। • महिला अधिकारी पहले से ही युद्धपोतों और नौसेना वायु संचालन जैसी विशिष्ट भूमिकाओं में काम कर रही हैं। • ये नौसेना के लिए ड्रोन (रिमोटली पायलटेड एयरक्राफ्ट) भी उड़ा सकते हैं। • नौसेना NDA और भारतीय नौसेना अकादमी (INA) दोनों में महिला कैडेटों के लिए और अधिक प्रशिक्षण स्थान खोल रही है।	• वायु सेना अपनी महिला कार्मिकों के लिए उत्कृष्ट सुविधाएं प्रदान करती है। • महिला अधिकारी लड़ाकू मिशनों सहित किसी भी शाखा या भूमिका के लिए प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं। • वायु सेना NDA और NCC विशेष प्रवेश जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की सक्रिय रूप से भर्ती कर रही है। • ये महिलाओं के लिए इन रोमांचक अवसरों के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए अभियान भी चला रहे हैं। **वर्दी में अधिक महिलाएं** • फिलहाल भारत की थलसेना, नौसेना और वायुसेना में 11,400 से अधिक महिलाएं कार्यरत हैं। • सेना में सबसे अधिक महिलाएं हैं, जिनकी संख्या 7,000 से अधिक है, लेकिन सभी शाखाओं में यह संख्या बढ़ रही है। • इस आंकड़े में अधिकारी और सूचीबद्ध कार्मिकों के साथ-साथ चिकित्सा पेशे से जुड़े लोग भी शामिल हैं। • तीनों सेनाओं में लगभग 5,000 महिलाएं गैर-चिकित्सा भूमिकाओं में सेवारत हैं।

184. आनुपातिक प्रतिनिधित्व क्या है - द हिन्दू

प्रसंग:

- सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने 43.3% वोट शेयर के साथ 293 सीटें जीती हैं, जबकि विपक्षी दल भारत (तृणमूल कांग्रेस सहित) ने 41.6% वोट शेयर के साथ 234 सीटें हासिल की हैं। अन्य क्षेत्रीय दलों और निर्दलीयों ने लगभग 15% वोट प्राप्त किए, लेकिन कुल मिलाकर केवल 16 सीटें ही प्राप्त कर पाए।

फर्स्ट पास्ट द पोस्ट सिस्टम क्या है:

- लोकसभा और विधानसभाओं के चुनावों में फर्स्ट पास्ट द पोस्ट सिस्टम (FPTP) का पालन किया जाता है।
  - इस प्रणाली के अंतर्गत, किसी निर्वाचन क्षेत्र में किसी अन्य उम्मीदवार की तुलना में अधिक वोट प्राप्त करने वाले उम्मीदवार को निर्वाचित घोषित किया जाता है।
  - अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा जैसे लोकतंत्रों में चुनावों के लिए यही प्रणाली अपनाई जाती है।
  - FPTP प्रणाली का प्राथमिक लाभ यह है कि यह सरल है और भारत जैसे बड़े देश में सबसे व्यवहार्य विधि है।
- FPTP हमारे संसदीय लोकतंत्र में कार्यपालिका को अधिक स्थिरता प्रदान करता है क्योंकि
  - सत्तारूढ़ पार्टी/गठबंधन सभी निर्वाचन क्षेत्रों में बहुमत (50% से अधिक) प्राप्त किए बिना भी लोकसभा/विधानसभा में बहुमत प्राप्त कर सकता है।
- FPTP के साथ समस्या यह है कि इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व उनके वोट शेयर की तुलना में अधिक या कम हो सकता है।
  - स्वतंत्रता के बाद पहले तीन चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने 45-47% वोट शेयर के साथ तत्कालीन लोकसभा में लगभग 75% सीटें जीतीं

आनुपातिक प्रतिनिधित्व क्या है?

- आनुपातिक प्रतिनिधित्व (PR) प्रणाली सभी दलों का उनके वोट शेयर के आधार पर प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करती है।
- सबसे अधिक प्रयुक्त PR प्रणाली वह है, जिसमें मतदाता पार्टी को वोट देते हैं (न कि व्यक्तिगत उम्मीदवार को) और फिर पार्टियों को उनके वोट शेयर के अनुपात में सीटें मिल जाती हैं।
- आमतौर पर किसी पार्टी के लिए सीट पाने की न्यूनतम सीमा 3-5% वोट शेयर होती है।
- PR प्रणाली के खिलाफ मुख्य आलोचना यह है कि इससे अस्थिरता पैदा हो सकती है, क्योंकि हमारे लोकतंत्र में किसी भी पार्टी/गठबंधन को सरकार बनाने के लिए बहुमत नहीं मिल सकता है।
- इसके अलावा, इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय, जातिगत, धार्मिक और भाषाई आधार पर राजनीतिक दलों का प्रसार हो सकता है, जो जातिवादी या सांप्रदायिक मतदान पैटर्न को बढ़ावा दे सकते हैं।
- स्थिरता और आनुपातिक प्रतिनिधित्व के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए मिश्रित सदस्य आनुपातिक प्रतिनिधित्व (MMPR) प्रणाली पर विचार किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां

- ब्राजील और अर्जेंटीना जैसे राष्ट्रपति पद वाले लोकतंत्रों में पार्टी सूची PR प्रणाली है।
- दक्षिण अफ्रीका, नीदरलैंड, बेल्जियम और स्पेन जैसे संसदीय लोकतंत्र भी ऐसा ही करते हैं।
- जर्मनी में, जो MMPR प्रणाली का पालन करता है, बुंडेसटाग (जो हमारी लोकसभा के समकक्ष है) की 598 सीटों में से 299 सीटें (50%) FPTP प्रणाली के तहत निर्वाचन क्षेत्रों से भरी जाती हैं।
- मतदाता मतपत्र में किसी पार्टी के लिए अपनी पसंद भी बताते हैं। शेष 299 सीटें (50%) उन पार्टियों के बीच बांटकर भरी जाती हैं, जिन्हें कम से कम 5% वोट मिलते हैं, जो उनके वोट प्रतिशत के आधार पर होता है।
- इसी प्रकार, न्यूजीलैंड में प्रतिनिधि सभा की कुल 120 सीटों में से 72 सीटें (60%) प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों से FPTP प्रणाली के माध्यम से भरी जाती हैं।
- शेष 48 सीटें (40%) विभिन्न दलों को आवंटित की जाती हैं जो अपने वोट शेयर के आधार पर कम से कम 5% वोट हासिल करते हैं।
- यह प्रणाली भारत जैसे संसदीय लोकतंत्र में अपेक्षित स्थिरता प्रदान करने के साथ-साथ सभी दलों के लिए उनके वोट शेयर के आधार पर प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगी।

आगे की राह

- विधि आयोग ने अपनी 170वीं रिपोर्ट, ' चुनावी कानूनों में सुधार' (1999) में प्रायोगिक आधार पर MMPR प्रणाली शुरू करने की सिफारिश की थी।
- इसने सुझाव दिया था कि लोकसभा की सदस्य संख्या बढ़ाकर 25% सीटें PR प्रणाली के माध्यम से भरी जा सकती हैं।
- हालांकि इसने वोट शेयर के आधार पर PR के लिए पूरे देश को एक इकाई के रूप में मानने की सिफारिश की थी, लेकिन उचित दृष्टिकोण यह होगा कि हमारी संघीय राजनीति को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तर पर इस पर विचार किया जाए।
- यह भी ध्यान देने योग्य है कि सीटों की संख्या बढ़ाने के लिए परिसीमन की प्रक्रिया वर्ष 2026 के बाद होने वाली पहली जनगणना के आधार पर होनी है।
  - पिछले पांच दशकों के दौरान हमारे देश में जो जनसंख्या विस्फोट हुआ है वह विभिन्न क्षेत्रों में असमान रहा है।
  - लोकसभा में सीटों की संख्या केवल जनसंख्या के अनुपात में निर्धारित करना हमारे देश के संघीय सिद्धांतों के विरुद्ध हो सकता है और इससे दक्षिणी राज्यों में असंतोष की भावना पैदा हो सकती है।
- तथापि, परिसीमन प्रक्रिया के दौरान सीटों में वृद्धि होने की स्थिति में, प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र से भरी जाने वाली कुल सीटों के कम से कम 25% अथवा वृद्धिशील सीटों के लिए MMPR प्रणाली पर विचार किया जा सकता है।

185. लोकसभा स्पीकर की शक्तियों का महत्व - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- 18वीं लोकसभा के सत्र की तैयारी के बीच, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) के प्रमुख सहयोगी दल अध्यक्ष पद के लिए होड़ में लगे हुए हैं।
- अस्थायी या प्रोटेम अध्यक्ष द्वारा नए सदस्यों को शपथ दिलाने के बाद, अध्यक्ष को सदन का पीठासीन अधिकारी चुना जाता है।

संवैधानिक जनादेश

- भारत के संविधान में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के पदों का प्रावधान है, जिन्हें अनुच्छेद 93 के अनुसार सदन के प्रारंभ होने के बाद चुना जाना है।
- अध्यक्ष बनने के लिए कोई विशिष्ट योग्यता नहीं है, जिसका अर्थ है कि कोई भी सदस्य विचार किए जाने का हकदार है।
- अध्यक्ष का वेतन भारत की संचित निधि से लिया जाता है, जबकि अन्य सांसदों का वेतन सदन द्वारा पारित कानून के आधार पर लिया जाता है।

अध्यक्ष की शक्तियाँ	सदस्यों की अयोग्यता

• सरकारी कार्य का संचालन अध्यक्ष द्वारा सदन के नेता के परामर्श से तय किया जाता है।
  ○ सदस्यों को प्रश्न पूछने या किसी मामले पर चर्चा करने के लिए अध्यक्ष की पूर्व अनुमति आवश्यक है
  ○ सदन के संचालन के लिए नियम और प्रक्रियाएं हैं, लेकिन इन नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए अध्यक्ष के पास व्यापक शक्तियां हैं।
  ○ इससे अध्यक्ष की निष्पक्षता, विपक्ष के लिए सदन में अपनी बात रखने के लिए एक महत्वपूर्ण जांच और संतुलन बन जाती है।
• अध्यक्ष किसी सदस्य द्वारा उठाए गए प्रश्न की ग्राह्यता तथा सदन की कार्यवाही किस प्रकार प्रकाशित की जाए, इस पर निर्णय लेता है।
• अध्यक्ष के पास उन टिप्पणियों को पूरी तरह या आंशिक रूप से हटाने का अधिकार है, जिन्हें वह असंसदीय मानती हैं।
• यदि अध्यक्ष की राय में यह "अनावश्यक रूप से दावा किया गया" है, तो वे उन सदस्यों से पूछ सकते हैं जो क्रमशः 'हां' के पक्ष में हैं और जो 'नहीं' के पक्ष में हैं।
• सबसे महत्वपूर्ण समय वह होता है जब अध्यक्ष की निष्पक्षता विपक्ष पर प्रभाव डालती है, जब सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है।
• यद्यपि यह दुर्लभ है कि मत बराबर होने की स्थिति में अध्यक्ष को अपना निर्णायक मत देने की आवश्यकता पड़ती है।
	• विपक्ष के लिए, संविधान की दसवीं अनुसूची के तहत अध्यक्ष की शक्ति की वास्तविकताएं, सदन के संचालन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।
	• दसवीं अनुसूची या दलबदल विरोधी कानून, सदन के अध्यक्ष को किसी पार्टी से 'दलबदल' करने वाले विधायकों को अयोग्य घोषित करने की शक्ति देता है।
	• वर्ष 1992 में ऐतिहासिक किहोटो होलोहान बनाम जाचिल्लू मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने अध्यक्ष में निहित शक्ति को बरकरार रखा और कहा कि केवल अध्यक्ष का अंतिम आदेश ही न्यायिक समीक्षा के अधीन होगा।
	• वर्ष 2020 में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि विधानसभाओं और लोकसभा के अध्यक्षों को असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर तीन महीने के भीतर अयोग्यता याचिकाओं पर फैसला करना होगा।

186. ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता का प्रभाव और ओथेरनेस का विचार- द हिंदू

प्रसंग:

- अरस्तू ने अपनी पुस्तक राजनीति में इस अवधारणा के लिए एक स्पष्ट और अधिक सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।
- उन्होंने निरंकुशता को राजतंत्र का एक वैध और वंशानुगत रूप माना, जो विशेष रूप से फारस जैसे बर्बर माने जाने वाले समाजों के लिए उपयुक्त था, जहां लोगों की अधीनता की प्रवृत्ति के कारण राजा के पास पूर्ण शक्ति होती थी।

अवधारणा की विभिन्न व्याख्याएँ

- यूरोकेन्द्रित दृष्टिकोण से आकार लेने वाले एशियाई समाजों की सीमित समझ ने एशियाई लोगों के बारे में गलत धारणाओं को जन्म दिया।

- इन कार्यों ने ओरिएंटल (प्राच्य) ओथेरनेस के विचार को मजबूत किया, तथा तथाकथित श्रेष्ठ यूरोपीय समाजों और निम्न एशियाई समाजों के बीच एक अलगाव पैदा किया।
- 17वीं सदी के अंत और 18वीं सदी की शुरुआत में, फारसी राजतंत्रों के बारे में यात्रियों के वृत्तांतों ने ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता की समझ को आकार दिया।
- फ्रांसीसी चिकित्सक फ्रांकोइस बर्नियर ने जिस मुगल साम्राज्य का दौरा किया था, उसकी निरंकुश सरकार की आलोचना की थी।
- उन्होंने अमीर राजकुमारों और गरीब विषयों के बीच धन की असमानता को उजागर किया, और इसके लिए निजी स्वामित्व अधिकारों की कमी को जिम्मेदार ठहराया।
- इस तरह के दृष्टिकोण ने एशियाई सरकारों की एकरूप व्याख्या को चुनौती देने में मदद की और राजनीतिक प्रणालियों को समझने में अनुभवजन्य अनुभव की आवश्यकता पर जोर दिया।

ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता और ज्ञानोदय

- प्रबोधन (ज्ञानोदय) युग के दौरान, फ्रांस जैसे देशों के सिद्धांतकारों ने अपने राष्ट्र में सत्तावादी राजतंत्र की आलोचना की थी।
- इस अवधि की चिंताएँ इस तथ्य में परिलक्षित होती हैं कि कई लोगों ने लुई XIV के शासन और पूर्वी तानाशाहों के शासन के बीच समानताएँ खींची हैं।
- फ्रांसीसी दार्शनिक मोंटेस्क्यू ने निरंकुशता का विश्लेषण एक स्वायत्त शासन प्रणाली के रूप में किया जो अरस्तू के राजतंत्र से अलग थी।
- मोंटेस्क्यू ने जलवायु, धर्म, शिष्टाचार, अर्थव्यवस्था और कानूनों के बीच संबंधों की भी जांच की, और इस अवधारणा के लिए एक अनुभवजन्य आधार तैयार किया।
  - निरंकुशता में धर्म की भूमिका पर मोंटेस्क्यू के जोर की तरह, कई अन्य सिद्धांतों ने भी इसे धर्मतन्त्र से जोड़ा।
  - हालाँकि, कई लोगों ने मोंटेस्क्यू की सीमित समझ की आलोचना की है।
  - फ्रांसीसी लेखक वॉल्टेयर ने स्पष्ट किया कि मोंटेस्क्यू का तर्क सही नहीं था।
  - प्राच्यविदों ने भारत में रियासतों के उदाहरणों का हवाला देते हुए इस धारणा की आलोचना की कि एशिया में असीमित अधिकार मौजूद हैं।
- इसके विपरीत, फिजियोक्रेटिक विचारधारा ने केंद्रीय प्राधिकार वाली प्रणालियों की प्रशंसा की और उन्हें बढ़ावा दिया, जैसे कि चीन में, जो आर्थिक और सामाजिक कानूनों का प्रबंधन करती थी।
- इन दृष्टिकोणों ने दक्षता पर जोर देते हुए अवधारणा को सकारात्मक रूप से चित्रित किया।
- यूरोप द्वारा एशिया का उपनिवेशीकरण, स्थानीय आबादी के साथ बढ़ते संपर्क के कारण एशियाई देशों में शासन के बारे में विभिन्न दृष्टिकोण उभरे।
- राजनयिकों और प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा पूर्व के बारे में विस्तृत विवरण, जिसका उद्देश्य सत्ता का सुचारू संचालन सुनिश्चित करना था, ने पूर्व के बारे में अधिक सूक्ष्म समझ विकसित करने में योगदान दिया।

एशियाई उत्पादन पद्धति में भूमिका

- इस अवधारणा ने तब नया मोड़ लिया जब जर्मन दार्शनिक जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल ने इसका उपयोग एशियाई उत्पादन पद्धति को समझने के लिए किया।
- उन्होंने ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता को ऐतिहासिक विकास की प्रारंभिक अवस्था के रूप में देखा, जहाँ व्यक्तिगत स्वायत्तता सीमित थी, और सार्वभौमिक भावना एक स्वतंत्र व्यक्ति, तानाशाह में केंद्रित थी।
- बाद में, जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने भूमध्यसागरीय और एशियाई समाजों के बीच अंतर को समझाने के लिए इस अवधारणा का और अन्वेषण किया।
- उन्होंने आर्थिक और भौगोलिक कारकों पर विचार किया और तर्क दिया कि एशियाई देशों में कृषि संबंधी आवश्यकताओं के कारण सत्ता की प्रणाली अधिक केंद्रीकृत हो गई, जो कठोर और शासक पर केंद्रित थी, जबकि भूमध्यसागरीय समाज अधिक धर्मनिरपेक्ष और पूंजीवादी बन गए।
- ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता की अवधारणा यूनानी विचारधारा से विकसित हुई, जो मध्ययुगीन अनुकूलन और ज्ञानोदय के विचारों के माध्यम से पूरे एशिया में कृषि प्रधान समाजों में सत्ता की व्याख्या करती है।
- यद्यपि उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांतों और वैश्विक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों के उदय के साथ इसकी सैद्धांतिक प्रासंगिकता कम हो गई, फिर भी यूरोपीय संस्कृति पर इसका प्रभाव महत्वपूर्ण बना हुआ है।
- यूरोपीय संस्कृति पर ओरिएंटल (प्राच्य) निरंकुशता का सतत प्रभाव एशियाई देशों के प्रति विचारों, अनुभवों, ऐतिहासिक दृष्टिकोणों और राजनीतिक दृष्टिकोणों के बीच जटिल अंतःक्रिया में देखा जाता है।

187. सतनामी धार्मिक संप्रदाय - द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- सतनामी धार्मिक संप्रदाय के सदस्यों ने जिले के अमर गुफा में एक धार्मिक स्थल के अपवित्र होने पर कथित निष्क्रियता के बाद मध्य छत्तीसगढ़ के पुलिस कार्यालय में आग लगा दी।
- अपवित्र मंदिर, जिसे जैतखाम के नाम से जाना जाता है, 18वीं शताब्दी के संत गुरु घासीदास की जन्मस्थली पर स्थित है, जिनसे छत्तीसगढ़ के सतनामी लोग अपनी धार्मिक वंशावली जोड़ते हैं।

मुख्य बिंदु

- अनुसूचित जाति सतनामी समाज या सतनाम पंथ मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के निकटवर्ती क्षेत्रों में रहते हैं।

नारनौल के प्रारंभिक सतनामी • वर्ष 1657 में, कबीर की शिक्षाओं से प्रेरित होकर बीरभान नामक एक भिक्षु ने वर्तमान हरियाणा के नारनौल में एक सतनामी समुदाय की स्थापना की है। • मुगल दरबारी इतिहासकार खफी खां (वर्ष 1664-1732) ने लिखा है कि नारनौल और मेवात के परगने में सतनामी, जिनकी आजीविका और पेशा आमतौर पर कृषि और बनियाओं की तरह व्यापार है • "कर्मकाण्ड और अंधविश्वास की निंदा की गई और कबीर के प्रति निष्ठा व्यक्त की गई। • प्रारंभ में, अधिकांश सतनामी चमड़े के काम में लगी एक "अछूत" जाति से संबंधित थे। हालांकि, समय के साथ समुदाय इस पेशे से दूर हो गया है। **औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह** • खफी खान ने लिखा, "यदि कोई [सतनामियों] पर अत्याचार और उत्पीड़न थोपना चाहेगा... तो वे इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे; और उनमें से अधिकांश के पास अस्त्र और शस्त्र हैं।" • वर्ष 1672 में, वर्तमान पंजाब और हरियाणा में रहने वाले सतनामियों ने औरंगजेब की लगातार बढ़ती कर मांगों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। • मुगलों ने अंततः विद्रोह को कुचल दिया और हजारों सतनामियों को मार डाला। हथियारों और उपकरणों की कमी के बावजूद, सतनामियों ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और "महाभारत के महान युद्ध के दृश्यों को दोहराया", मुगल इतिहासकार साकी मुस्तद खान ने मआसिर-ए-आलमगिरी में लिखा।	**घासीदास के अधीन पुनरुत्थान** • औरंगजेब ने इस समुदाय को लगभग मिटा दिया, जो अठारहवीं शताब्दी के मध्य में जगजीवनदास के अधीन वर्तमान उत्तर प्रदेश में और घासीदास के अधीन वर्तमान छत्तीसगढ़ में पुनरुत्थान देखेगा। • संत रविदास (15वीं या 16वीं शताब्दी) से लेकर कबीर तक घासीदास की प्रेरणा और आध्यात्मिक विकास के स्रोतों के बारे में कई सिद्धांत हैं। • हालाँकि, उत्तर भारत में "अधिकांश वर्तमान सतनामी घासीदास और पिछले सतनामी आंदोलनों के बीच किसी संबंध से इनकार करते हैं या इसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं"। • फिर भी, गुरु घासीदास का धार्मिक दर्शन पुराने सतनामियों के दर्शन से मिलता-जुलता था • घासीदास ने अपने अनुयायियों को मांस खाने, शराब पीने, धूम्रपान करने या तंबाकू चबाने से भी दूर रहने को कहा। • उन्होंने उनसे मिट्टी के बर्तनों के स्थान पर पीतल के बर्तनों का उपयोग करने, चमड़े और शवों से काम करना बंद करने तथा तुलसी से बने मोतियों की माला पहनने को कहा, जैसा कि वैष्णव और कबीरपंथी पहनते हैं। • उन्होंने अपने अनुयायियों से यह भी कहा कि वे अपना जातिगत नाम छोड़ दें और इसके स्थान पर 'सतनामी' नाम का प्रयोग करें। **आज सतनामी** • घासीदास की मृत्यु के समय, उन्होंने गुरुओं की एक वंशावली निर्धारित की जो उनके बाद संप्रदाय का नेतृत्व करेंगे, जिसकी शुरुआत उनके पुत्र बालकदास से हुई। • वर्ष 1800 के दशक के अंत तक, दो-स्तरीय संगठनात्मक संरचना विकसित हो गई थी, जिसमें शीर्ष पर गुरु और उसके नीचे कई ग्राम-स्तरीय पुजारी होते थे। • ये पुजारी विवाह संपन्न कराते हैं, विवादों में मध्यस्थता करते हैं, प्रायश्चित करते हैं तथा संगठन में मध्यस्थ के रूप में भी कार्य करते हैं। • पिछले कुछ वर्षों में, कई सतनामियों ने जाति-हिंदू प्रथाओं, विश्वासों और अनुष्ठानों को अपना लिया और स्वयं को हिंदू धार्मिक मुख्यधारा का हिस्सा मानने लगे। • कुछ लोग हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करने लगे तथा स्वयं को राजपूत या ब्राह्मण वंश का होने का दावा करने लगे। • सतनामी अब एक तेजी से मुखर राजनीतिक ताकत बन गए हैं। सतनामी नेताओं का न केवल संप्रदाय के सदस्यों पर बल्कि छत्तीसगढ़ की शेष 13% अनुसूचित जाति आबादी पर भी प्रभाव है।

188. 18वीं लोकसभा: नए केंद्रीय मंत्रियों और विभाग - द हिंदू

प्रसंग:

- 18वीं लोकसभा के नव-शपथ ग्रहण करने वाले अनेक मंत्रियों के विभागों में पिछली सरकार की तुलना में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है।
- 18वीं लोकसभा में पांच स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री भी शामिल हैं।

एक मंत्रालय	**मांग में वृद्धि**
• हालाँकि, अंतरिक्ष विभाग (DoS) और परमाणु ऊर्जा (DAE), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES), विज्ञान और प्रौद्योगिकी (MST), और कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन के लिए केवल एक मंत्री जिम्मेदार है। • आजकल इनमें से प्रत्येक मंत्रालय या विभाग अपने आप में काफी बड़ा है। ○ DoS राष्ट्रीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों के प्रवेश के साथ-साथ पहले मानव अंतरिक्ष यान मिशन और नए प्रक्षेपण वाहनों के विकास का प्रबंधन करने से जूझ रहा है। ○ MoES खनिज संसाधनों के लिए समुद्र तल की खोज करने के मिशनों में शामिल है, एक ऐसा उद्यम जो बहुपक्षीय मंचों के साथ-साथ जलवायु अनुकूलन और शमन में भी शामिल होना शुरू हो गया है। ○ विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत के तीन प्रमुख अनुसंधान विभागों की देखरेख ऐसे समय में करता है जब दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता का परीक्षण करने, क्वांटम कंप्यूटर बनाने, कृषि से लेकर चिकित्सा तक के क्षेत्रों में मल्टी-ओमिक्स दृष्टिकोण विकसित करने और लागू करने तथा उन्नत ऊर्जा भंडारण समाधानों का आविष्कार करने के लिए उत्सुक है। ○ DAE ने परमाणु ऊर्जा को तेजी से आगे बढ़ाने की योजनाओं की घोषणा की है, जिसमें इसके रिएक्टर कार्यक्रम के दूसरे चरण को शुरू करना और हर साल एक सुविधा चालू करना शामिल है।	• यहां तकनीकी रूप से बहुत अधिक भिन्नताएं हैं, तथा समाज के साथ उनका विकसित होता संबंध, एक साझा राज्य मंत्री से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। • ये निकाय जिन क्षेत्रों की देखरेख करते हैं, वे भी कई लगातार समस्याओं से ग्रस्त हैं। इनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं: ○ युवा शोधकर्ताओं के लिए फेलोशिप और अनुदान वितरण की समयसीमा अक्सर हास्यास्पद होती है; ○ अंतःविषयक अनुसंधान को समर्थन देने वाली सुविधाएं काफी हद तक स्थानीयकृत हैं और सहयोग के प्रतिकूल हैं; ○ अत्याधुनिक अनुसंधान अस्थिर नियमों के कारण बाधित है; ○ बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण कमज़ोर है, और ○ अनुवादात्मक अनुसंधान बहुत ही कम है और कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है। • महत्वपूर्ण बात यह है कि सकल घरेलू उत्पाद के एक अंश के रूप में अनुसंधान एवं विकास पर सकल घरेलू व्यय वर्ष 2008-09 से घट रहा है। • जबकि अधिक धन की मांग से पहले क्षमता निर्माण किया जाना चाहिए, जो इन निधियों को उत्पादक रूप से अवशोषित कर सके, उस क्षमता का विकास रुक-रुक कर हुआ है। • अन्य बातों के अलावा, भारत को अपने प्रत्येक प्रमुख नोडल अनुसंधान निकाय के लिए एक पृथक मंत्री, आदर्शतः कैबिनेट स्तर का, की सख्त आवश्यकता है, ताकि वे अपनी पुरानी व्यवस्था से बाहर आ सकें, तथा उनकी आवश्यकताएं पूरी हो सकें तथा समस्याएं सार्थक तरीका से हल हो सकें।

GEO IAS
It's about quality

189. सरकारी अनुबंधों में मध्यस्थता संबंधित मामला - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- वित्त मंत्रालय ने एक आश्चर्यजनक नीतिगत निर्णय की घोषणा की गई है।
- दशकों तक भारत को मध्यस्थता के केंद्र के रूप में बढ़ावा देने की कोशिश करने के बाद, भारत सरकार को अब लगता है कि मध्यस्थता उनके लिए कारगर नहीं है और भविष्य के सभी सरकारी अनुबंधों से मध्यस्थता खंड को हटा दिया जाना चाहिए (10 करोड़ रुपये या उससे कम मूल्य के छोटे विवादों के संबंध में छोड़कर)।

नई नीति	सरकार का रवैया
• नई नीति में यह प्रावधान है कि सरकारी विभागों को समग्र दीर्घकालिक सार्वजनिक हित में यथासंभव अधिक से अधिक विवादों का सौहार्दपूर्ण ढंग से निपटारा करना चाहिए। • सौहार्दपूर्ण समाधान को सुगम बनाने के लिए, सरकारी एजेंसियां ऐसे समझौतों की जांच या अनुमोदन के लिए पूर्व न्यायाधीशों/सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारियों की "उच्च स्तरीय" समितियों का गठन करेंगी। • यदि समझौते के प्रयास सफल नहीं होते तो विवाद को निर्णय के लिए अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा। • नीति में इस नाटकीय बदलाव के लिए मुख्य कारण यह बताया गया है कि सरकार की यह धारणा है कि मध्यस्थों में अक्सर ईमानदारी की कमी होती है और वे निजी पक्षों के साथ मिलीभगत करते हैं। • मध्यस्थों का काम स्वतंत्र और निष्पक्ष होना और विवादों का निर्णय गुण-दोष के आधार पर करना होता है। वे सरकार की लाइन पर चलने या उसके आदेश पर चलने के लिए नहीं होते। • सरकार को यह समझना चाहिए कि प्रतिकूल आदेशों का अर्थ यह नहीं है कि न्यायाधिकरण के साथ समझौता किया गया है। • इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि समझौते को "उच्च स्तरीय" समिति द्वारा मंजूरी दी गई है क्योंकि यह एक स्वैच्छिक, प्रशासनिक निर्णय रहेगा। एक मध्यस्थ (यदि शामिल है) किसी विशेष स्थिति की वकालत नहीं कर सकता है। • पारदर्शिता और जवाबदेही के संदर्भ में, कोई समझौता कभी भी किसी पुरस्कार के बराबर नहीं हो सकता • एक पंचाट न्यायिक प्रक्रिया और विधि द्वारा ज्ञात प्रक्रिया के बाद जारी किया जाता है।	• सरकार के वर्तमान रवैये को संविदा संबंधी विवादों के लिए वर्ष 2023 विवाद से विश्वास-II योजना से देखा जा सकता है, जिसमें कहा गया है कि जब मध्यस्थता पुरस्कार दिया जाता है, तो सरकार पुरस्कार का सम्मान करने के बजाय, समझौते के माध्यम से दी गई राशि पर 35 प्रतिशत की छूट पर सहमत हो सकती है। • अंततः, यदि कोई समझौता नहीं होता है, तो पीड़ित पक्ष को अदालत की दया पर छोड़ दिया जाता है। ◦ इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि अदालतें गंभीर वाणिज्यिक विवादों को किसी भी समझदारीपूर्ण तरीके से निपटाने में सक्षम नहीं हैं। ◦ अदालतों पर इतना अधिक काम का बोझ है कि वे अवार्ड चुनौती कार्यवाही (जहां न्यायिक समीक्षा की गुंजाइश न्यूनतम है) से निपटने में भी मुश्किल से सक्षम हैं। • मध्यस्थता अधिनियम में वर्ष 2015 के संशोधन में प्रावधान किया गया है कि निर्णय संबंधी चुनौतियों का निपटारा शीघ्रता से और किसी भी स्थिति में एक वर्ष के भीतर किया जाएगा। • मध्यस्थता भले ही परिपूर्ण न हो, लेकिन यह स्पष्ट रूप से अदालती मुकदमेबाजी की तुलना में अधिक व्यावहारिक है। • प्रभावी विवाद समाधान पद्धतियाँ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक सहायक हैं। • यह स्पष्ट है कि सरकार ने इस पर गहराई से विचार नहीं किया है, जिसमें यह भी शामिल है कि वह अपनी चिंताओं का बेहतर समाधान कैसे कर सकती है तथा मध्यस्थता में सुधार के लिए वह क्या कर सकती है। • नीतिगत परिवर्तन अदूरदर्शी है और इसे शीघ्र वापस लेने की आवश्यकता है।

190. लाल किला मामला: राष्ट्रपति ने पाक नागरिक की दया याचिका खारिज कर दी - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- राष्ट्रपति ने पाकिस्तानी नागरिक मोहम्मद आरिफ की दया याचिका खारिज कर दी है, जिसे 22 दिसंबर 2000 को लाल किले पर हुए आतंकवादी हमले के लिए मौत की सजा सुनाई गई थी। इस हमले में दो सैन्य जवानों सहित तीन लोग मारे गए थे।

भारत के राष्ट्रपति के पास क्षमादान देने का अधिकार है	मृत्यु दंड और कानूनी विचार
• भारतीय संविधान राष्ट्रपति को दोषी अपराधियों पर दया दिखाने का अधिकार देता है। • इसमें उन्हें पूरी तरह से माफ़ करना, उनकी सज़ा कम करना या उनकी फांसी में देरी करना (अनुच्छेद 72) शामिल है। • राज्यपालों के पास भी ऐसी ही शक्तियां हैं, लेकिन मृत्युदंड के लिए नहीं (अनुच्छेद 161)। • राष्ट्रपति इन निर्णयों में पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हैं। सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसलों के अनुसार उन्हें कैबिनेट की सलाह पर विचार करना होगा। • राष्ट्रपति मंत्रिमंडल से केवल एक बार पुनर्विचार करने के लिए कह सकते हैं, यदि वे असहमत हों (अनुच्छेद 74)। • एक नया कानून, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), राष्ट्रपति से दया मांगने वाले मृत्युदंड की सज़ा प्राप्त कैदियों के लिए प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने का प्रस्ताव करता है। • इससे राष्ट्रपति की पसंद के खिलाफ़ अपील खत्म हो जाएगी, जिससे उनके फ़ैसले अंतिम हो जाएँगे। • न्यायालय राष्ट्रपति के दया संबंधी निर्णयों के पीछे के कारणों की समीक्षा भी नहीं कर सकेंगे।	• भारत में मृत्युदंड कानूनी है, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने इसे "दुर्लभतम" मामलों तक सीमित रखा है (बचन सिंह बनाम पंजाब राज्य, 1980)। • न्यायालयों ने राष्ट्रपति या राज्यपाल के दया संबंधी निर्णयों की समीक्षा करने के अपने अधिकार पर भी जोर दिया है (एपुरु सुधाकर बनाम आंध्र प्रदेश, 2006)। • जीवन का अधिकार (अनुच्छेद 21) मृत्युदंड की सजा पाए कैदियों पर भी लागू होता है (शत्रुघ्न चौहान बनाम भारत संघ, 2014)। • लंबित दया याचिकाओं के कारण फांसी में अनुचित देरी होने पर अदालतें हस्तक्षेप कर सकती हैं और सजा को आजीवन कारावास में बदल सकती हैं। **मृत्युदंड पर बहस** • भारत के विधि आयोग ने अधिकांश अपराधों के लिए मृत्युदंड को समाप्त करने की सिफारिश की है, तथा इसे केवल आतंकवाद और युद्ध के लिए ही रखने की सिफारिश की है (262वीं रिपोर्ट, 2015)। • यह प्रणाली मृत्युदंड का सामना करने वाले लोगों को राष्ट्रपति से क्षमादान मांगने का अंतिम मौका देती है, लेकिन राष्ट्रपति की अंतिम शक्ति पर सीमाएं हैं।

191. RBI की MPC ने बेंचमार्क रेपो दर को 6.50% पर अपरिवर्तित रखा - द हिंदू

प्रसंग:

- RBI की मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने लगातार आठवीं बैठक में बेंचमार्क रेपो दर को 6.50% पर अपरिवर्तित छोड़ने का निर्णय लिया है, क्योंकि उसे चिंता है कि 'उच्च खाद्य मुद्रास्फीति' सतत मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने के उसके प्रयासों को लक्ष्य से दूर हो सकती है।

मुख्य बिंदु :

- गवर्नर ने MPC' के रुख को उचित ठहराते हुए कहा था कि खाद्य पदार्थों की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी से समग्र मुद्रास्फीति के मार्ग पर खतरा मंडरा रहा है।
- उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक द्वारा मापी गई खाद्य मुद्रास्फीति मार्च के 8.52% से बढ़कर अप्रैल में अनंतिम 8.7% हो गई, तथा
  - हाल के संकेतकों से पता चलता है कि टमाटर, प्याज और आलू की कीमतों में उछाल के कारण मई में कीमतों में और भी तेजी आ सकती है।
- सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) ने जून में पूर्वानुमान लगाया था कि,
  - पिछले महीने मुख्य खुदरा मुद्रास्फीति संभवतः बढ़कर 5.14% हो गई, जो खाद्य कीमतों में तेजी के कारण हुई।
  - CMIE ने फलों और सब्जियों की कीमतों में वृद्धि का कारण पिछले महीने की भीषण गर्मी को बताया है।

मौद्रिक नीति समिति

- MPC ने 4-2 बहुमत से वोट देकर कहा कि "यह सुनिश्चित करने के लिए समायोजन वापस लेने पर ध्यान केंद्रित रहेगा
  - मुद्रास्फीति धीरे-धीरे 4% के लक्ष्य के करीब पहुंच रही है,
  - इस लक्ष्य को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि प्रतिकूल जलवायु घटनाओं के बढ़ने से आपूर्ति में बाधा उत्पन्न हो रही है, जिससे खाद्य कीमतों के पूर्वानुमान लगाना बहुत कठिन हो गया है।
- MPC को यह भी अच्छी तरह पता है कि खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों के अलावा,
  - देश के जलाशयों में पानी के भंडारण के स्तर में खतरनाक रूप से कमी तथा वर्तमान में पड़ रही असाधारण गर्मी के कारण खाद्यान्न की लागत में वृद्धि हो रही है।
  - औद्योगिक धातुओं की बढ़ती कीमतें मुख्य मुद्रास्फीति में अपस्फीतिकारी प्रवृत्ति को कमजोर कर सकती हैं।
  - पश्चिम एशिया में तनाव तथा ओपेक+ उत्पादक देशों द्वारा उत्पादन में की जा रही कटौती को देखते हुए कच्चे तेल की कीमतों के लिए अनिश्चित दृष्टिकोण को जोड़ते हुए, यह मुद्रास्फीति के मार्ग पर अनिश्चितता को बढ़ाने का एक नुस्खा है।
- RBI के नवीनतम सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट हो गया है कि मूल्य स्थिरता नीति निर्माताओं के लिए मुख्य चिंता का विषय क्यों है।
- मई में सर्वेक्षण किए गए परिवारों को उम्मीद है कि तीन महीने और एक साल आगे की अवधि में सभी प्रमुख उत्पाद समूहों के लिए मुद्रास्फीति में तेज़ी आएगी।
- मार्च के सर्वेक्षण की तुलना में उपभोक्ता विश्वास में भी कमी आई है, जिसमें लगभग 80% उत्तरदाताओं ने उम्मीद जताई है कि एक साल के समय में मूल्य वृद्धि में तेज़ी आएगी।
- RBI गवर्नर द्वारा मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं पर अडिग ध्यान केंद्रित करने में पूरी तरह से उचित कदम उठाया गया है, जैसा कि उन्होंने कहा, यह दीर्घकालिक विकास के लिए "निरंतर आवश्यक आधार" है।

192. भारत का बढ़ता वित्तीय संकट- द हिंदू

प्रसंग:

- तीव्र ऋण वृद्धि एक साईरन सॉन्ग के समान है।
- यह अर्थव्यवस्थाओं को समृद्धि का वादा करके लुभाता है, लेकिन उन्हें संकट की ओर ले जाता है।
- प्रत्येक वित्तीय उछाल को वित्तीय नवाचार और अच्छे समय की कहानी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- सरकारें और बाजार प्रतिभागी ऋण में उछाल के बाद आए पिछले संकटों को यह कहकर खारिज कर देते हैं कि "इस बार कुछ अलग है।"

एक लॉफ्टी और खतरनाक विवरणात्मक

- भारत भी ऐसी ही फॉली के दौर से गुजर रहा है, जो देश के प्रदर्शन और संभावनाओं के बारे में अनियंत्रित प्रचार करने वाले नीति निर्माताओं के कारण हो रहा है।
- 'इस बार कुछ अलग है' थीम भारत के डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को वित्तीय नवाचार और समावेशन के उत्प्रेरक के रूप में पेश करती है, जो विकास और समानता का वादा करता है।

- विडंबना यह है कि इस शानदार कहानी ने खराब विनियमित वित्तीय क्षेत्र और अपनी क्षमता से अधिक खर्च करने वाले उपभोक्ताओं को ऋण देने में उछाल लाने में सक्षम बनाया है।
- अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दोनों विश्लेषक इस उछाल की सराहना कर रहे हैं।
- वर्ष 2023 में, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने बैंक ऋण में मजबूत वृद्धि और गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों के निम्न स्तर का हवाला देते हुए भारतीय वित्तीय क्षेत्र के प्रदर्शन की प्रशंसा की थी ।
- इसी प्रकार, नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च ने पिछले वर्ष की तुलना में बैंक ऋण में 20% की वृद्धि को उज्ज्वल संभावनाओं का संकेत बताते हुए प्रसन्नता व्यक्त की है।
- ऋण वृद्धि का यह उत्सव गहरी जड़ें जमाए बैठी नौकरियों और मानव पूंजी की कमी से ध्यान हटाता है; और यह प्रचार को खतरनाक क्षेत्र में ले जाता है।
- सच तो यह है कि जब उधार देने का विस्तार होता है, तो वित्तीय क्षेत्र अच्छी स्थिति में दिखता है क्योंकि नए ऋण पुराने ऋणों का भुगतान करते हैं।
- IMF इस इतिहास को अच्छी तरह से जानता है: भारी कर्ज में डूबे परिवार और व्यवसाय अपने कर्ज को चुकाने के लिए खर्च में भारी कटौती कर देते हैं, जिससे आर्थिक संकट पैदा हो जाता है।
- घरेलू ऋण में उछाल एक "ख़राब " उछाल है। यह उत्पादक क्षमता में वृद्धि नहीं करता है, बल्कि घरेलू कीमतों को बढ़ाता है, जिससे देश कम प्रतिस्पर्धी बन जाता है।

अव्यवस्थित वित्तीय सेवा उद्योग	समाधान
• मामले को बदतर बनाते हुए, भारतीय शैली के उदारीकरण ने एक बड़े और अव्यवस्थित वित्तीय सेवा उद्योग को बढ़ावा दिया है। • शीर्ष पर 30 से अधिक बड़े प्रदाता, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक और प्रमुख गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान (एनबीएफसी) हैं, जिनका दुष्ट आचरण का इतिहास रहा है। • लेकिन विशेष रूप से कोविड-19 के बाद, वित्तीय सेवा प्रदाताओं ने स्थिर आय के बदले उधार लेने के इच्छुक परिवारों की ओर ऋण देना पुनः निर्देशित कर दिया। • नए उभरते फ़िनटेक ने हताश परिवारों को जबरन ब्याज दरों पर ऋण देकर इस अभियान का नेतृत्व किया। • असुरक्षित उपभोक्ता उधारी का पोस्टर चाइल्ड क्रेडिट कार्ड ऋण है। जनवरी 2024 में, भारतीयों के पास लगभग 100 मिलियन क्रेडिट कार्ड थे, जो वर्ष 2011 में 20 मिलियन से अधिक थे। • जैसा कि रिजर्व बैंक कहता है, क्रेडिट कार्ड की तीव्र वृद्धि ने "प्राइम से नीचे" या अधिक जोखिम वाले उधारकर्ताओं को आकर्षित किया है। • आसन्न संकट का स्रोत एक विरोधाभास में निहित है: ऋण वृद्धि में तेजी के बावजूद, घरेलू उपभोग अत्यंत धीमी गति से बढ़ रहा है। ○ परिवार संघर्ष कर रहे हैं; उनकी बचत दर में गिरावट आई है और वे उधार लेकर अल्प उपभोग को बढ़ावा दे रहे हैं।	• भारतीय नीति निर्माताओं ने स्वयं को इस धारणा के प्रति प्रतिबद्ध किया है कि वित्त विकास को बढ़ावा देगा तथा मानव पूंजी में गंभीर विकासात्मक बाधाओं को दूर करने में मदद करेगा। • जैसे-जैसे वित्तीय संकट का खतरा बढ़ता जा रहा है, नौकरियों की भारी कमी बनी हुई है, जिसका सबसे अधिक प्रभाव कार्यबल के कृषि क्षेत्र में वापस लौटने में दिखाई दे रहा है। • संकट को रोकने के लिए वित्तीय सेवा उद्योग को बेहतर ढंग से उधार देने की क्षमता और उत्पादक उधार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शल्य चिकित्सा द्वारा छोटा करना और निर्यात का विस्तार करने और मंदी आने पर उसे कम करने के लिए रुपये को कमजोर करना आवश्यक है। • इतिहास स्पष्ट करता है कि तीव्र ऋण वृद्धि और एक अधिक मूल्यांकित विनिमय दर एक घातक संयोजन है। • आखिरकार, संकट का बोझ कमजोर और असुरक्षित लोगों पर ही पड़ेगा, क्योंकि रोजगार की स्थिति और भी खराब हो जाएगी तथा असमानताएं और भी अधिक गंभीर हो जाएंगी।

193. जलवायु परिवर्तन पर अधिक कार्रवाई के लिए प्रयास- द हिंदू

प्रसंग:

- समुद्री कानून के लिए अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने जलवायु परिवर्तन शमन पर समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCLOS) के पक्षकारों के विशिष्ट दायित्वों के संबंध में लघु द्वीप राज्यों के आयोग (COSIS) द्वारा मांगी गई सलाहकार राय प्रदान की है।
- COSIS 2021 में स्थापित छोटे द्वीप राज्यों का एक संघ है।

न्यू एलेमेंट्स	इसके कानूनी महत्व को समझना

• ITLOS ने राज्यों के दायित्वों की पहचान करने के उद्देश्य से COSIS के अनुरोध को स्वीकार करके एक क्रांतिकारी कदम उठाया।
• ITLOS ने अपनी राय में बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि UNCLOS के अनुच्छेद 194(1) के तहत,
  ○ "पक्षों का ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन (GHG) से होने वाले समुद्री प्रदूषण को रोकने, कम करने और नियंत्रित करने के लिए सभी आवश्यक उपाय करने का विशिष्ट दायित्व है"।
• सतही महासागर वायुमंडल में उत्सर्जित CO2 का लगभग एक चौथाई भाग तेजी से अवशोषित कर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप समुद्री जल का क्रमिक अम्लीकरण होता है।
  ○ अन्य ग्रीनहाउस गैसों (GHG) का यह प्रभाव नहीं होता।
  ○ समुद्र ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न अतिरिक्त ऊष्मा (ऊर्जा) का 90% से अधिक हिस्सा अवशोषित कर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप समुद्र का तापमान बढ़ जाता है और समुद्र- का स्तर बढ़ जाता है।
	• यह राय जलवायु परिवर्तन के सिद्धांत (जो द्विपक्षीय हितों की तुलना में सामूहिक हित है) का पक्ष लेते हुए एक नया अध्याय जोड़ती है।
	• लेकिन अनुच्छेद 194 (1) के अंतर्गत मानवजनित GHG उत्सर्जन को कम करने के लिए सभी आवश्यक उपाय करने के संदर्भ में पक्षों के दायित्व बहुत सामान्य प्रकृति के हैं।
	• सामान्य दायित्व की मात्र पहचान प्रतीकात्मक मूल्य की होगी और अपर्याप्त होगी।
	• मामले का सार जलवायु परिवर्तन को कम करने का दायित्व नहीं है, बल्कि इस दायित्व के संबंध में आचरण का मानक है।
	• उठाए जाने वाले आवश्यक कदम राज्यों के पास उपलब्ध साधनों और उनकी क्षमताओं के अधीन होंगे,
	  ○ इसका अर्थ यह है कि शमन कार्रवाई के अपेक्षित स्तर को तय करने में समानता के सिद्धांत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है,
	• हालांकि सलाहकार राय में कानूनी बल का अभाव है, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि यह आधिकारिक न्यायिक घोषणाओं के रूप में अपने राजनीतिक प्रभाव को प्रभावित करे।

194. हिंद महासागर: बढ़ती ग्रीनहाउस गैसों से महासागरीय स्थिति -- द हिंदू

प्रसंग:

- हाल ही में हिंद महासागर अपने तेजी से गर्म होने के कारण काफी ध्यान आकर्षित कर रहा है।
- जैसा कि होता है, बढ़ती हुई ग्रीनहाउस गैसों और ग्लोबल वार्मिंग के प्रति पृथ्वी की समग्र महासागरीय प्रतिक्रिया को समझने के लिए आज हिंद महासागर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सबसे गंभीर तूफानों का घर

- हिंद महासागर अपनी मानसूनी हवाओं और भारतीय उपमहाद्वीप में होने वाली वर्षा के लिए प्रसिद्ध है।
- ग्रीष्म ऋतु के महीनों में अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के साथ-साथ दक्षिणी उष्णकटिबंधीय हिंद महासागर का तेजी से गर्म होना इसकी विशेषता है।
- सर्दियों के दौरान हवाएं भूमि से समुद्र की ओर तथा गर्मियों के शुरू होते ही समुद्र से भूमि की ओर चलने लगती हैं।
- उपमहाद्वीप में भीषण गर्मी के साथ-साथ मानसून-पूर्व चक्रवातों का खतरा भी बना रहता है।
- उत्तरी हिंद महासागर में प्रशांत या अटलांटिक महासागरों की तुलना में उतने चक्रवात उत्पन्न नहीं होते, लेकिन उनकी संख्या और उनकी तीव्रता में खतरनाक रूप से वृद्धि हो रही है।
- दक्षिण एशिया, पूर्वी अफ्रीका और पश्चिम एशिया के किनारे बसे विकासशील देश इनके मार्ग में आसान शिकार हैं। इसलिए, चक्रवात मृत्यु दर के मामले में सबसे घातक तूफान होते हैं।
- गर्म महासागर में बड़ी और छोटी मछलियाँ, एन्कोवीज़, मैकेरल, सार्डिन और टूना जैसी मछलियाँ पाई जाती हैं। डॉल्फ़िन पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं; अरब सागर में कुछ व्हेल भी देखी गई हैं।

- पर्यटक लक्षद्वीप से लेकर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह और मेडागास्कर के रियूनियन द्वीप तक लोकप्रिय समुद्र तटों और प्रवालों को देखने के लिए आते हैं।

एक अनूठी संरचना

- हिंद महासागर की उत्तरी सीमा एशियाई भूभाग से बंद है, तथा फारस की खाड़ी और लाल सागर से इसका कोई छोटा-सा संपर्क नहीं है।
- दक्षिणी हिंद महासागर प्रशांत और दक्षिणी महासागर से जुड़ा हुआ है।
  - इंडोनेशियाई समुद्र इसे प्रशांत महासागर से जोड़ता है जो पर्याप्त मात्रा में ऊष्मा का परिवहन करता है।
  - दूसरी सुरंग हिंद महासागर को दक्षिणी महासागर से दो-तरफ़ा यातायात के माध्यम से जोड़ती है।
  - लगभग 1 किमी की गहराई से दक्षिणी महासागर से ठंडा, खारा और भारी पानी हिंद महासागर में बहता है।
- हिंद महासागर में ऊष्मा और जल का मिश्रण विश्व के महासागरों में ऊष्मा के अवशोषण को प्रभावित करने की कुछ शक्तिशाली क्षमताएं प्रदान करता है।

छोटा सा महासागर

- हिंद महासागर एक गर्म टब है, क्योंकि यह वायुमंडलीय पुल के माध्यम से प्रशांत महासागर से भी काफी प्रभावित है।
  - इस प्रकार हिंद महासागर में गर्मी बढ़ती है, जिसे दक्षिण की ओर बहने वाले पानी द्वारा हटाया जाना चाहिए।
  - ग्लोबल वार्मिंग के साथ, प्रशांत महासागर हिंद महासागर में कुछ अतिरिक्त गर्मी छोड़ रहा है।
  - दक्षिणी महासागर से आने वाला ठंडा पानी भी पहले जितना ठंडा नहीं है।
  - इसका परिणाम यह हुआ कि हिंद महासागर सबसे तेजी से गर्म होने वाले महासागरों में से एक है, जिसके भारतीय उपमहाद्वीप पर गर्मी की लहरें और अत्यधिक बारिश के भयानक परिणाम हैं।
  - समुद्री गर्म लहरें भी प्रवालों और मत्स्य पालन के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय हैं।

मानव विकास में भूमिका

- लगभग तीन मिलियन वर्ष पहले तक ऑस्ट्रेलिया और न्यू गिनी भूमध्य रेखा के काफी दक्षिण में थे और हिंद महासागर सीधे प्रशांत महासागर से जुड़ा हुआ था।
- और यह हिंद-प्रशांत महासागर गर्म अवस्था में था जिसे 'स्थायी अल नीनो' के रूप में जाना जाता है -
  - एक ऐसा राज्य जो पूर्वी अफ्रीका में हमेशा भरपूर बारिश और हरे-भरे जंगलों से जुड़ा हुआ था। आज, अफ्रीका का यह हिस्सा शुष्क है।
- ऑस्ट्रेलिया और न्यू गिनी का उत्तर की ओर बहाव, जो अभी भी जारी है, ने लगभग तीन मिलियन वर्ष पहले हिंद और प्रशांत महासागरों को अलग कर दिया था।
  - परिणामस्वरूप, पूर्वी प्रशांत महासागर ठंडा हो गया और अल नीनो स्थायी स्थिति से प्रासंगिक स्थिति में आ गया।
  - इस परिवर्तन ने पूर्वी अफ्रीका को शुष्क बना दिया, तथा इसके वर्षावनों को घास के मैदानों और सवाना में बदल दिया।
- इस प्रकार, हमारे पड़ोसी महासागर का गौरवशाली इतिहास विश्व महासागर दिवस पर समझने और अध्ययन करने योग्य विषय है।

It's about quality

195. आपदा प्रबंधन अधिनियम में हीटवेव को अधिसूचित आपदा के रूप में शामिल क्यों नहीं - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- देश के कई हिस्सों में भीषण गर्मी के दौर ने एक बार फिर आपदा प्रबंधन (DM) अधिनियम, 2005 के तहत हीटवेव को अधिसूचित आपदाओं में शामिल करने पर चर्चा को फिर से शुरू कर दिया है।

अधिसूचित आपदाएं	**हीटवेव को अधिसूचित आपदाओं में क्यों शामिल नहीं किया गया?**
• आपदा प्रबंधन अधिनियम 1999 के ओडिशा सुपर-साइक्लोन और वर्ष 2004 की सुनामी के मद्देनजर लागू किया गया था। • यह आपदा को "प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों" से उत्पन्न "विपत्ति, दुर्घटना, विपत्ति या गंभीर घटना" के रूप में परिभाषित करता है, जिसके परिणामस्वरूप जान-माल का भारी नुकसान होता है, संपत्ति का विनाश होता है या पर्यावरण को नुकसान होता है। • यह ऐसी प्रकृति का भी होना चाहिए जो समुदाय की "सामना करने की क्षमता से परे" हो। • अगर ऐसी कोई घटना होती है, तो आपदा प्रबंधन अधिनियम के प्रावधानों को लागू किया जा सकता है। • प्रावधान राज्यों को इस कानून के तहत स्थापित राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF) और राज्य स्तर पर राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (SDRF) दो निधियों से धन निकालने की अनुमति देते हैं। • राज्य पहले SDRF में उपलब्ध धन का उपयोग करते हैं, और केवल तभी जब आपदा की भयावहता SDRF के साथ प्रबंधनीय नहीं होती है, तो राज्य NDRF से धन मांगते हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में, केवल दो राज्यों ने NDRF से धन निकाला है • जबकि NDRF का पूरा पैसा केंद्र सरकार से आता है, राज्य SDRF में 25% पैसा देते हैं (विशेष श्रेणी के राज्यों के मामले में 10%), बाकी केंद्र से आता है। • इन फंडों में पैसे का इस्तेमाल अधिसूचित आपदाओं के जवाब और प्रबंधन के अलावा किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जा सकता है। • वर्तमान में इस अधिनियम के अंतर्गत आपदाओं की 12 श्रेणियां अधिसूचित हैं। • ये हैं चक्रवात, सूखा, भूकंप, आग, बाढ़, सुनामी, ओलावृष्टि, भूस्खलन, हिमस्खलन, बादल फटना, कीट हमला, तथा पाला और शीत लहरें।	• ऐसा इसलिए था क्योंकि ग्रीष्मकाल में गर्म लहरें एक सामान्य घटना थी, तथा यह कोई असामान्य मौसम घटना नहीं थी। • राज्यों ने पिछले तीन वित्त आयोगों के समक्ष हीटवेव को अधिसूचित आपदा के रूप में शामिल करने की मांग रखी है। वित्त आयोग समय-समय पर गठित संवैधानिक निकाय है, जो केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय संसाधनों के वितरण पर निर्णय लेता है। **व्यावहारिक चुनौतियाँ** • हालांकि यह नहीं बताया गया है कि हीटवेव को अधिसूचित आपदा के रूप में शामिल करने में अनिच्छा के पीछे मुख्य कारण यह है कि इस कदम से वित्तीय रूप से बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है। • सरकार को अधिसूचित सूची में शामिल आपदा के कारण मरने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए 4 लाख रुपये का मुआवजा देना होगा तथा गंभीर रूप से घायलों को भी मुआवजा देना होगा।

196. जलवायु कार्रवाई के लिए धन क्यों महत्वपूर्ण है - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- जर्मनी के बॉन में जलवायु परिवर्तन पर एक बैठक में जलवायु वित्त के नए लक्ष्य को परिभाषित करने के महत्वपूर्ण मुद्दे पर कोई प्रगति नहीं हो पाई।

मुख्य बिंदु:

- वर्ष 2024 के अंत तक, देशों को प्रति वर्ष 100 बिलियन डॉलर की मौजूदा राशि से अधिक की एक नई धनराशि को अंतिम रूप देना होगा, जिसे विकसित देशों को जलवायु परिवर्तन से लड़ने में विकासशील देशों की सहायता के लिए जुटाना होगा।
- जून में होने वाली वार्षिक बॉन वार्ता से कुछ सांकेतिक आंकड़े मिलने की उम्मीद थी।
- लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जो कुछ सामने आया वह इनपुट पेपर था, जिसमें विभिन्न देशों की इच्छा सूची का विस्तृत विवरण था।
- ये सूचियां न केवल जलवायु वित्त की मात्रा से संबंधित थीं, बल्कि अन्य संबंधित मुद्दों से भी संबंधित थीं, जैसे कि किसे योगदान देना चाहिए, इस धन को किस पर खर्च किया जाना चाहिए, तथा वित्त प्रवाह की निगरानी कैसे की जानी चाहिए।
- इस पत्र को एक औपचारिक वार्ता मसौदे के रूप में विकसित किए जाने की संभावना है, जिस पर COP29 में सहमति बन सकती है।

न्यू सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG)

- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) द्वारा निर्धारित अंतर्राष्ट्रीय जलवायु संरचना के तहत, अमीर और विकसित देश जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए विकासशील देशों को धन उपलब्ध कराने के लिए बाध्य हैं।
- वर्ष 2009 में विकसित देशों ने इस उद्देश्य के लिए वर्ष 2020 से प्रति वर्ष 100 बिलियन डॉलर जुटाने का वादा किया था।
- दो सप्ताह पहले, अमीर देशों के समूह, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) की एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि वर्ष 2022 में पहली बार 100 बिलियन डॉलर का यह लक्ष्य पूरा हो गया था।
- वर्ष 2015 के पेरिस समझौते में कहा गया है कि विकसित देशों को जलवायु वित्त के लिए तेज़ी से बढ़ती आवश्यकताओं को देखते हुए वर्ष 2025 के बाद समय-समय पर इस राशि को बढ़ाना चाहिए।
- वर्ष 2025 के बाद की अवधि के लिए बढ़ा हुआ लक्ष्य, या नया सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG) , इस वर्ष अंतिम रूप दिया जाना है।

पर्याप्त मात्रा की आवश्यकता

- यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि विकासशील देशों को अब प्रतिवर्ष अरबों नहीं, बल्कि खरबों डॉलर की आवश्यकता है।
- पिछले साल UNFCCC के आकलन में कहा गया था कि इन देशों को अपने वादे के मुताबिक जलवायु कार्रवाई को लागू करने के लिए अब से लेकर वर्ष 2030 के बीच लगभग 6 ट्रिलियन डॉलर की आवश्यकता है।
- कुछ महीने पहले, भारत ने औपचारिक रूप से प्रस्ताव दिया था कि विकसित देशों को वर्ष 2025 के बाद हर वर्ष कम से कम 1 ट्रिलियन डॉलर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।
- विकसित देशों ने सार्वजनिक रूप से कोई प्रस्ताव नहीं रखा है। उन्होंने सिर्फ़ इतना स्वीकार किया है कि नई राशि प्रति वर्ष 100 बिलियन डॉलर से ज़्यादा होनी चाहिए।

योगदान पर बहस

- UNFCCC और पेरिस समझौते के अनुसार, UNFCCC के अनुलग्नक 2 में सूचीबद्ध देश और यूरोपीय आर्थिक समुदाय ही विकासशील देशों को जलवायु वित्त प्रदान करने के लिए जिम्मेदार हैं।
- हालांकि, सूचीबद्ध देश दूसरों पर भी जिम्मेदारी डालने की कोशिश कर रहे हैं।
- उनका तर्क है कि कई अन्य देश अब वर्ष 1990 के दशक की शुरुआत की तुलना में आर्थिक रूप से बेहतर स्थिति में हैं, जब यह सूची बनाई गई थी।
- उनका यह भी तर्क है कि ये आवश्यकताएं इतनी बड़ी हैं कि सूचीबद्ध देशों के मूल समूह के लिए इन्हें पूरा करना कठिन है।
- विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन, तेल समृद्ध खाड़ी देश तथा दक्षिण कोरिया जैसे अन्य देश अनुलग्नक 2 का हिस्सा नहीं हैं।

197. भारत-अमेरिका संबंधों की वैश्विक स्थिति - द हिंदू

प्रसंग:

- अमेरिका ने भारत को जेट इंजन की प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करने की दशक पुरानी योजना को पुनः आरंभ करने की पेशकश की।
- महत्वपूर्ण एवं उभरती प्रौद्योगिकी (iCET) पर रणनीतिक पहल की घोषणा को द्विपक्षीय संबंधों के लिए एक बड़ी सफलता माना गया, जो संबंधों में एक नए चरण के लिए मंच तैयार करेगी।
- हालांकि, कई बाहरी और आंतरिक कारणों से संबंधों की गति उन महत्वाकांक्षाओं से मेल नहीं खाती है।

शिखर

- पोखरण परीक्षणों के बाद, भारत ने 21वीं सदी में दुनिया के लिए "बेहतर भविष्य की खोज में अमेरिका को अपना स्वाभाविक सहयोगी" बताया।
- तब से, दिल्ली और वाशिंगटन ने हर साल रणनीतिक संबंध बनाए हैं, जिसमें जलवायु परिवर्तन और ग्रीन ऊर्जा से लेकर महत्वपूर्ण और उभरती हुई प्रौद्योगिकियों और बाहरी अंतरिक्ष तक कई क्षेत्रों में संवाद शामिल हैं।
- यह वृद्धि आधारभूत समझौतों, सैन्य अभ्यासों की अधिकता, समुद्री परिचालनों में बढ़ती अंतर-संचालन क्षमता और समन्वय के साथ-साथ सैन्य हार्डवेयर की पर्याप्त खरीद के कारण रणनीतिक विश्वास में देखी जा सकती है।
- व्यापक आपसी समझ ने जम्मू-कश्मीर पर पुरानी चिंताओं को शांत कर दिया है, जो कभी संबंधों में चिंताएं पैदा करती थीं
- क्वाड (भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका) के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी और अमेरिका की इंडो-पैसिफिक रणनीति, तथा चीन की आक्रामकता पर साझा चिंताओं ने दोनों को "एक ही पृष्ठ" पर ला दिया है।
- यद्यपि द्विपक्षीय संबंध फल-फूल रहे हैं,
  - यूक्रेन में रूस का युद्ध मतभेद का एक प्रमुख क्षेत्र रहा है।
  - लेकिन अमेरिका ने भारत द्वारा तेल और अन्य रूसी निर्यातों की निरंतर खरीद पर अपनी आपत्ति वापस ले ली है।
- यह देखना अभी बाकी है कि नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री रूसी राष्ट्रपति के साथ किस प्रकार अपनी मुलाकातें प्रबंधित करते हैं, क्योंकि कजाकिस्तान में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन और रूस के कज़ान में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में उनकी संभावित मुलाकात हो सकती है।

चीन कारक

- दूसरे बहुपक्षीय मोर्चे पर, दक्षिण चीन सागर में ताइवान और फिलीपींस के विरुद्ध चीन की धमकियों पर भी चिंताएं बढ़ रही हैं।
- चीन की नीतियों ने भारत और अमेरिका को पहले से कहीं अधिक करीब ला दिया है
- भारत-अमेरिका कोरिया गणराज्य और फिलीपींस के साथ "क्वाड-प्लस" बैठकों पर आक्रामक रूप से जोर दे रहे हैं।

'साजिशों' को लेकर तनाव

- इस चर्चा के बीच, न्यूयॉर्क में खालिस्तानी अलगाववादियों और अमेरिकी नागरिकों की हत्या के प्रयास से तनाव बढ़ गया।
- मतभेद बढ़ गए हैं, विशेष रूप से अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के साथ, तथा अमेरिकी कांग्रेस ने चिंता जताई है कि उसके प्रवासी समुदाय का एक वर्ग भारत द्वारा निशाना बनाए जाने का अनुभव करता है।
- इसके अलावा, मणिपुर और मानवाधिकारों पर उनकी टिप्पणियों के बाद भारत में अमेरिकी राजदूत के साथ संबंध तनावपूर्ण हो गए हैं।
- आम चुनाव 2024 से पहले भारत में लोकतंत्र की स्थिति पर टिप्पणियों के साथ-साथ अमेरिका की धार्मिक स्वतंत्रता रिपोर्ट में भारत के लिए लगातार खराब समीक्षाओं ने भारत को नाराज कर दिया
- नेताओं द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार, iCET समीक्षा को पूरा करने का अवसर वांछित है तथा उनके लिए पुनः आरंभ के लिए आवश्यक भी है।

198. भारत को अमेरिका के साथ महत्वाकांक्षी SMR सार्वजनिक-निजी भागीदारी स्थापित करना चाहिए - द प्रिंट

प्रसंग:

- पिछले वर्ष, चीन ने हैनान प्रांत में लिंगलोंग वन SMR के कोर मॉड्यूल को सफलतापूर्वक स्थापित करके अपने लघु मॉड्यूलर रिएक्टर कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है ।
- लिंगलोंग जैसे SMR आकार, सुवाह्यता, सुरक्षा और लागत के संदर्भ में पारंपरिक भूमि-आधारित रिएक्टरों की तुलना में अनेक लाभ प्रदान करते हैं।

चीन का SMR लाभ: • चीन SMR प्रौद्योगिकी में अग्रणी है, इसके लिंगलोंग वन रिएक्टर में SMR के छोटे आकार, आसान परिवहन, बेहतर सुरक्षा और कम लागत के लाभ प्रदर्शित किए गए हैं। • चीन का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम तेजी से विस्तारित हो रहा है और सम्भवतः एक दशक के भीतर इसकी कुल क्षमता अमेरिका से अधिक हो जाएगी। **वैश्विक पहुंच और रणनीतिक चिंताएं:** • चीन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर SMR निर्यात करने की योजना बना रहा है, जिससे संभावित रूप से दक्षिण एशिया में उसका प्रभाव बढ़ेगा (जैसे पाकिस्तान के साथ पिछले सहयोग)।	**इससे भारत के लिए चिंताएं उत्पन्न होती हैं:** • चीनी SMR पर निर्भरता प्राप्तकर्ता देशों के लिए दीर्घकालिक निर्भरता पैदा कर सकती है, जिससे उनकी स्वतंत्रता खतरे में पड़ सकती है (श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह की स्थिति के समान)। • अमेरिकी अधिकारी इस बात से चिंतित हैं कि चीन विवादित क्षेत्रों, जैसे कि दक्षिण चीन सागर में फ्लोटिंग SMR तैनात कर रहा है, जिससे क्षेत्रीय तनाव बढ़ सकता है और भारत के रणनीतिक हित प्रभावित हो सकते हैं। **भारत की प्रतिक्रिया:** • चीन की बढ़त का मुकाबला करने और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए भारत को अपने स्वयं के SMR कार्यक्रम में तेजी लाने की आवश्यकता है। • इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत को हाल ही में हुए परमाणु सहयोग समझौते के आधार पर अमेरिका के साथ साझेदारी करनी चाहिए। • इसके लिए भारत के परमाणु दायित्व कानून जैसी चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। • उन्नत SMR प्रौद्योगिकियों तक पहुंच प्राप्त करने के लिए होल्टेक इंटरनेशनल जैसी अमेरिकी कंपनियों के साथ सहयोग करना, जिससे विभिन्न स्थानों पर तैनाती की जा सके और मौजूदा बुनियादी ढांचे का उपयोग किया जा सके।

GEO IAS It's about quality

199. कुवैत त्रासदी ने नए उत्प्रवास कानून की आवश्यकता को रेखांकित किया- इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- कुवैत में आग लगने से 45 भारतीय श्रमिकों की मृत्यु, भारतीय प्रवासियों के एक बड़े और अक्सर उपेक्षित वर्ग की दयनीय कार्य स्थितियों की याद दिलाती है।

मुख्य बिंदु	पश्चिम एशिया में प्रवासी भारतीय
• हाल ही में जिस श्रमिक शिविर में आग लगी थी, उसमें कथित तौर पर क्षमता से अधिक लोग भरे हुए थे। • आग का तेजी से फैलना और हताहतों की बड़ी संख्या यह दर्शाती है कि छह मंजिला इमारत में अग्नि निकास और अग्निशमन उपकरण जैसे पर्याप्त सुरक्षा प्रावधान नहीं थे। • कुवैत सरकार ने जांच के आदेश दिए हैं और आश्वासन दिया है कि दोषियों को सजा दी जाएगी। • देश के उप-प्रधानमंत्री ने कुवैत नगरपालिका और सार्वजनिक जनशक्ति प्राधिकरण से अन्यत्र इसी प्रकार के उल्लंघनों को रोकने को कहा है, जहां बड़ी संख्या में श्रमिक आवासीय भवनों में एकत्रित रहते हैं। • केंद्र और राज्य सरकारों को और भी बहुत कुछ करना चाहिए। उन्हें पश्चिम एशियाई देशों में भारत के प्रति बढ़ती सद्भावना का उपयोग प्रवासी श्रम शक्ति की भलाई की गारंटी के लिए करना चाहिए।	• विदेश मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 8.8 मिलियन भारतीय खाड़ी देशों में रहते हैं और काम करते हैं। • ये जो धन अपने घर भेजते हैं, वह प्रवासी समुदाय द्वारा वार्षिक रूप से भेजी जाने वाली धनराशि का एक-चौथाई से भी अधिक होता है। • कुवैत में भारतीय बढ़ई, राजमिस्त्री, इलेक्ट्रीशियन, निर्माण स्थल मजदूर, कारखाने और घरेलू कामगार तथा खाद्य वितरण एजेंट देश के कार्यबल का लगभग पांचवां हिस्सा हैं। • जबकि खाड़ी देशों में वेतन काफ़ी अधिक है, फिर भी इस क्षेत्र के देश रोजगार के लिए पसंदीदा स्थान बने हुए हैं ○ इसके साथ ही, बड़ी संख्या में अकुशल और अर्ध-कुशल श्रमिकों तथा बेरोजगार मजदूरों की उपलब्धता, प्रवासियों की सौदेबाजी क्षमता को कम कर देती है। • इनमें से कई लोगों की भर्ती वीज़ा प्रायोजन या कफ़ाला प्रणाली के माध्यम से की जाती है, जो श्रमिकों को उनके नियोक्ताओं से बांध देती है, जिससे प्रवासियों की बेहतर आवास या व्यावसायिक सुरक्षा में सुधार की मांग करने की क्षमता गंभीर रूप से सीमित हो जाती है। • रोजगार या निष्कासन के भय से अधिकांश लोग कार्य की गुणवत्ता या जीवन-यापन की स्थिति के बारे में शिकायत करने से बचते हैं। • भारत ने कुवैत सहित पश्चिम एशियाई देशों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, ताकि श्रमिकों की भर्ती और उन्हें कानूनी सुरक्षा प्रदान करने की प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया जा सके। • हालांकि, कानूनी समाधान की प्रक्रिया लंबी है, अदालती प्रक्रियाएं महंगी हैं और पहले से ही कमजोर समुदाय को विदेशी देश में कानूनी सहायता के अभाव और दुभाषियों की कमी से जूझना पड़ता है। • समस्या यह भी है कि भारत 40 वर्ष पुराने उत्प्रवास अधिनियम के माध्यम से प्रवासन से निपटता है, जिससे प्रवासी श्रमिक खतरे में रहते हैं।

निष्कर्ष

- पिछले वर्ष संसद के बजट सत्र में विदेश मंत्रालय ने प्रवासन मुद्दों से निपटने के लिए एक अद्यतन कानून की आवश्यकता को स्वीकार किया था।
- उस कानून पर अभी भी काम चल रहा है।
- कुवैत में लगी आग से हुई क्षति हमें याद दिलाती है कि नई सरकार को काम करने के लिए विदेश जाने वाले भारतीयों के जीवन की सुरक्षा के लिए बहुत कुछ करना होगा।

200. फैटी लिवर रोग महामारी से निपटना- द हिंदू

प्रसंग:

- इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय फैटी लिवर दिवस का विषय है 'अभी कार्य करें, आज ही जांच कराएं'।
- यकृत रोग मुख्य रूप से अत्यधिक शराब के सेवन से जुड़े थे और यह उन्नत दीर्घकालिक यकृत रोग का एक महत्वपूर्ण कारण बना हुआ है।

मुख्य बिंदु

- हालाँकि, हाल के वर्षों में, हम लीवर के स्वास्थ्य के लिए एक चुपचाप बढ़ते खतरे को देख रहे हैं, जो कि अल्कोहल रहित फैटी लीवर रोग है।
- जैसे-जैसे इस स्थिति के बारे में हमारी समझ विकसित हुई है, अब हम जानते हैं कि फैटी लीवर मेटाबॉलिक स्वास्थ्य, हृदय स्वास्थ्य और कैंसर के विकास के जोखिम से निकटता से जुड़ा हुआ है।
- इस विकार को अब उचित रूप से पुनर्वर्गीकृत किया गया है और इसे 'मेटाबोलिक डिसफंक्शन-एसोसिएटेड स्टेटोटिक लीवर डिजीज' (MASLD) के रूप में जाना जाता है।
- लिवर स्वास्थ्य के प्रति हमारे दृष्टिकोण में एक आदर्श बदलाव की आवश्यकता है। मुख्य बात स्क्रीनिंग, परीक्षण और उपचार है।

बढ़ता बोझ

- MASH (मेटाबोलिक डिसफंक्शन-एसोसिएटेड स्टीटोहेपेटाइटिस), जो लीवर में सूजन और निशान पैदा करता है, क्रोनिक लीवर रोग का सबसे आम कारण बनने की उम्मीद है और लीवर प्रत्यारोपण के लिए प्रमुख संकेत है।
- वर्ष 2022 में, एक मेटा-विश्लेषण से पता चला कि भारत में, वयस्कों में, फैटी लीवर की व्यापकता 38.6% थी, जबकि मोटे बच्चों में यह लगभग 36% थी।
- फैटी लीवर रोग और मेटाबोलिक सिंड्रोम के बीच घनिष्ठ संबंध है, जिसमें मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और असामान्य कोलेस्ट्रॉल स्तर शामिल हैं।
- अत्यधिक कार्बोहाइड्रेट, विशेषकर परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट और शर्करा का सेवन, चयापचय संबंधी समस्याएं पैदा करके इन स्थितियों को और खराब कर देता है।
- समय के साथ, यह निरंतर क्षति यकृत की उचित रूप से कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करती है, तथा साधारण फैटी लीवर से बढ़कर स्टीटोहेपेटाइटिस और सिरोसिस जैसी अधिक गंभीर स्थिति में पहुंच जाती है, तथा यकृत प्रत्यारोपण की आवश्यकता हो सकती है।
- फैटी लीवर रोग के बढ़ते बोझ के बावजूद, इसका प्रायः पता नहीं चल पाता, क्योंकि प्रारंभिक अवस्था में आमतौर पर कोई चेतावनी या लक्षण नहीं होता।
- प्रारंभिक निदान की कुंजी एक व्यापक स्वास्थ्य जांच है जिसमें संपूर्ण इतिहास, शारीरिक परीक्षण, रक्त परीक्षण और पेट का अल्ट्रासाउंड शामिल है।
- पेट का अल्ट्रासाउंड यकृत रोग की जांच के लिए एक महत्वपूर्ण परीक्षण है और फैटी लीवर के निदान के लिए एक महत्वपूर्ण पहला कदम है।
- यह अक्सर कई स्वास्थ्य जांचों में शामिल नहीं किया जाता या छूट जाता है, जिसका मुख्य कारण रेडियोलॉजिस्टों की सीमित उपलब्धता तथा कड़े विनियामक अनुमोदन हैं।
- उन्नत लीवर परीक्षणों में लीवर फाइब्रोसिस मूल्यांकन शामिल होगा, ताकि लीवर के निशान देखे जा सकें, जो कंपन-नियंत्रित क्षणिक इलास्टोग्राफी जैसी नई तकनीकों का उपयोग करके सबसे सटीक रूप से किया जाता है।

वैयक्तिकरण महत्वपूर्ण है

- स्क्रीनिंग परीक्षणों का चयन और उनकी आवृत्ति व्यक्तिगत होनी चाहिए।
- यह निर्णय व्यक्ति के जोखिम कारकों जैसे पारिवारिक इतिहास, जीवनशैली और पहले से मौजूद स्वास्थ्य स्थितियों आदि पर आधारित होना चाहिए।
- यकृत रोग के जोखिम को कम करने के लिए आहार संशोधन, नियमित शारीरिक गतिविधि और प्रभावी वजन प्रबंधन को संयोजित करने वाली एकीकृत रणनीतियों की आवश्यकता है।
- यकृत एक 'मौन अंग' है, जो आमतौर पर तब तक क्षति के लक्षण प्रदर्शित नहीं करता, जब तक कि वह उन्नत अवस्था में न पहुंच जाए।
- यह महत्वपूर्ण है कि हम इस बात से अवगत रहें कि हमारी जीवनशैली का दीर्घकालिक प्रभाव क्या होगा।
- हमें अपने स्वास्थ्य पर सक्रिय नियंत्रण रखना चाहिए, हम जो खाते हैं उसके प्रति सचेत रहना चाहिए, तथा नियमित रूप से जांच करानी चाहिए, क्योंकि सुखी जीवन की नींव अच्छे स्वास्थ्य से ही शुरू होती है।

201. प्रतीक्षित HIV वैक्सीन की दिशा में प्रगति - द हिंदू

प्रसंग:

- एड्स का कोई टीका या इलाज नहीं है।
- प्रमुख संक्रामक रोगों से निपटने में मानवता के अन्यथा उल्लेखनीय ट्रैक रिकॉर्ड में यह विसंगति कई कारकों का परिणाम है।

मुख्य बिंदु

- इनमें से मुख्य बात यह है कि मानव इम्यूनोडिफीसिअन्सी वायरस (HIV), जो एड्स का कारण बनता है, की प्रतिकृति एक अविश्वसनीय रूप से त्रुटि-प्रवण प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप वायरस के कई प्रकार प्रसारित होते हैं।
- इसे परिप्रेक्ष्य में रखें तो, किसी भी समय एक रोगी में HIV के जितने प्रकार प्रसारित होते हैं, उससे कहीं अधिक प्रकार एक वर्ष में विश्व भर में सभी इन्फ्लूएंजा रोगियों में एकत्रित रूप से उत्पन्न होने वाले इन्फ्लूएंजा के प्रकार होते हैं।

B-कोशिकाओं की भूमिका
• जब प्रतिरक्षा प्रणाली किसी वायरस का सामना करती है, तो इसकी प्रतिक्रियाओं में से एक वायरस की सतह पर मौजूद प्रोटीन के लिए विशिष्ट एंटीबॉडी का उत्पादन करना होता है।
• प्रतिरक्षा प्रणाली ऐसा विशेष कोशिकाओं के एक समूह से शुरू करके करती है जो एंटीबॉडीज उत्पन्न करती हैं, जिन्हें B-कोशिकाएं कहा जाता है।
• जब B-कोशिका किसी बाहरी वस्तु, जैसे वायरस या बैक्टीरिया, पर समान प्रोटीन के टुकड़े से टकराती है, तो वह एंटीबॉडी को विभाजित और परिष्कृत करना शुरू कर देती है, जब तक कि वह लक्ष्य से पूरी तरह से बंध न जाए।
• ये एंटीबॉडीज फिर वायरस की सतह पर अपने संबंधित टुकड़ों से बंध जाते हैं, जिससे ये आगे संक्रमण करने में असमर्थ हो जाते हैं।
• टीके का उद्देश्य वायरल संक्रमण से पहले इन एंटीबॉडी को उत्पन्न करना है, ताकि जब भी कोई वायरस शरीर में प्रवेश करे, तो एंटीबॉडी उसे निष्प्रभावी कर सकें और उसे संक्रमण शुरू करने से रोक सकें।
• हालाँकि, जब एक ही वायरस के कई प्रकार मौजूद हों, तो सभी विभिन्न प्रकारों के विरुद्ध एक साथ एंटीबॉडी उत्पन्न करना बहुत कठिन हो जाता है।
• अधिकांश वायरस के मामले में, प्रतिरक्षा प्रणाली अंततः उनसे लड़ती है। लेकिन HIV के मामले में ऐसा नहीं होता है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के वायरस बहुत अधिक संख्या में फैल रहे हैं, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली की नई एंटीबॉडी बनाने की क्षमता पर असर पड़ता है।
• वास्तव में, जब तक प्रतिरक्षा प्रणाली कुछ स्ट्रेन्स के विरुद्ध एंटीबॉडी बनाती है, तब तक वायरस सैकड़ों अन्य स्ट्रेन्स बना चुका होता है।
	bNAb, आशा की एक किरण
	• वर्ष 1990 के दशक के आरंभ में, वैज्ञानिकों ने देखा कि HIV संक्रमित व्यक्तियों के एक छोटे समूह में एक नए प्रकार का एंटीबॉडी उत्पन्न हो रहा था, जो बड़ी संख्या में प्रसारित होने वाले वायरल स्ट्रेन को निष्क्रिय कर सकता था।
	• ये व्यापक रूप से बेअसर करने वाले एंटीबॉडी (bNAb) वायरल प्रोटीन के उन क्षेत्रों को लक्षित करके काम करते थे जिन्हें वायरस बदल नहीं सकता था, क्योंकि ऐसा करने से यह संक्रामकता खो देगा।
	• वैज्ञानिकों ने अब तक अनेक bNAbs की खोज की है , तथा उन्हें HIV के उस क्षेत्र के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया गया है, जिसे वे लक्षित करते हैं।
	• इनमें से कुछ bNAbs 90% से अधिक परिसंचारी स्ट्रेन्स को प्रभावी रूप से निष्प्रभावी कर सकते हैं।
	• लेकिन इसमें एक समस्या है: शरीर को आमतौर पर bNAbs बनाने में वर्षों लग जाते हैं, और तब तक वायरस उनसे बचने के लिए विकसित हो चुका होता है।
	  ○ इसमें वर्षों लग जाते हैं, क्योंकि bNAbs बनाने वाली पैतृक B-कोशिका, प्रारंभिक समूह में अत्यंत दुर्लभ होती है।
	जर्मलाइन लक्ष्यीकरण
	• इसलिए चुनौती यह है कि प्रतिरक्षा प्रणाली को टीके के प्रति प्रतिक्रियास्वरूप बड़ी संख्या में इन bNAbs का उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया जाए।
	• ऐसा करने का मार्ग, जिसे जर्मलाइन टार्गेटिंग कहा जाता है , में तीन चरण होते हैं:
	  ○ पहले चरण में, उन B-कोशिकाओं की पहचान की जाती है जो परिपक्व होकर bNAb उत्पन्न करने वाली कोशिकाओं में बदल सकती हैं और उनकी जनसंख्या बढ़ाने तथा उन्हें दूसरे चरण के लिए तैयार करने में लगा दिया जाता है।
	  ○ दूसरे चरण में बूस्टर खुराक शामिल है जो इन कोशिकाओं को HIV के खिलाफ अधिक मजबूत bNAb उत्पन्न करने में मार्गदर्शन करेगी।
	  ○ तीसरा और अंतिम चरण इन bNAb को इस प्रकार परिष्कृत करना है कि वे HIV के विभिन्न प्रकारों को निष्क्रिय कर सकें।

202. SWM उपकर क्या है और यह अपशिष्ट उत्पादकों पर क्यों लगाया जाता है? - द हिंदू

समाचार:

- बेंगलुरु शहरी निकाय ने प्रत्येक घर के लिए प्रति माह 100 रुपये का ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (SWM) उपकर प्रस्तावित किया है।
- SWM उपकर के पीछे के औचित्य, इसके इच्छित उपयोग तथा भारत में शहरी स्थानीय निकायों (ULB) के सामने आने वाली ठोस अपशिष्ट प्रबंधन चुनौतियों के व्यापक संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है।

मुख्य बिंदु

- शहरी स्थानीय निकाय (ULB) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के प्रावधानों के अनुसार उपयोगकर्ता शुल्क या SWM उपकर लगाते हैं।
- शहरी स्थानीय निकाय अब इन दरों को संशोधित करने तथा अपशिष्ट प्रबंधन सेवाएं प्रदान करने में होने वाली लागत के एक हिस्से को पूरा करने के लिए थोक अपशिष्ट उत्पादकों पर उच्च शुल्क लगाने पर विचार कर रहे हैं।

इसकी लागत क्या है?

- शहरी स्थानीय निकाय आम तौर पर अपने जनशक्ति का लगभग 80% और अपने वार्षिक बजट का 50% शहर के निवासियों को SWM सेवाएँ प्रदान करने के लिए लगाते हैं।
- बेंगलोर में प्रतिदिन लगभग 5,000 टन ठोस अपशिष्ट उत्पन्न होता है।
- कचरे की इस मात्रा के प्रबंधन के लिए लगभग 5,000 डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण वाहन, 600 कॉम्पैक्टर और लगभग 20,000 स्वच्छता कर्मचारियों की आवश्यकता होती है
- SWM सेवाओं में चार घटक शामिल हैं: संग्रहण, परिवहन, प्रसंस्करण और निपटान।
- संग्रहण और परिवहन संसाधन और श्रम-गहन हैं और SWM बजट का 85-90% हिस्सा इन्हीं पर खर्च होता है, जबकि अपशिष्ट के प्रसंस्करण और निपटान पर केवल 10-15% ही खर्च किया जाता है।

चुनौतियाँ

- भारतीय शहरों में उत्पन्न ठोस अपशिष्ट में लगभग 55-60% गीला जैवनिम्नीकरणीय पदार्थ और 40-45% गैर-जैवनिम्नीकरणीय पदार्थ होते हैं।
- यद्यपि 55% गीले कचरे को जैविक खाद या बायोगैस में परिवर्तित किया जा सकता है, लेकिन इसकी प्राप्ति मात्र 10-12% ही होती है, जिससे ठोस कचरे से खाद बनाना और बायोगैस बनाना दोनों ही आर्थिक रूप से अव्यवहारिक हो जाते हैं।
- वित्तीय चुनौतियों के अलावा, शहरी स्थानीय निकायों को SWM सेवाओं से जुड़ी अन्य चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है, जैसे नालियों की सफाई का अतिरिक्त कार्य, खुले में कूड़ा फेंकने से रोकना, अपशिष्ट उत्पादन में मौसमी परिवर्तन, तथा सफाई कार्य।
- गैर-खाद योग्य और गैर-पुनर्चक्रण योग्य सूखे कचरे, जैसे कि एकल-उपयोग प्लास्टिक, कपड़ा अपशिष्ट और निष्क्रिय सामग्री का निपटान महंगा है, क्योंकि सामग्री को सीमेंट कारखानों या शहरों से लगभग 400-500 किमी दूर स्थित अपशिष्ट-से-ऊर्जा परियोजनाओं में भेजना पड़ता है।

निदान

- हालांकि कचरे के संग्रह और परिवहन से कोई राजस्व नहीं मिलता, फिर भी कई रणनीतियाँ SWM पर समग्र व्यय को कम कर सकती हैं और उपयोगकर्ता शुल्क कम कर सकती हैं।
  - इनमें स्रोत पर ही अपशिष्ट का पृथक्करण,
  - एकल-उपयोग प्लास्टिक को कम करना, विकेन्द्रीकृत खाद बनाने की पहल,
  - खुले में कूड़ा फेंकने से रोकने के लिए सूचना, शिक्षा और जागरूकता (IEC), और
  - थोक अपशिष्ट उत्पादकों से अपने अपशिष्ट को स्वयं संसाधित करने के लिए कहा गया।
- सीमांत उपयोगकर्ता शुल्कों को कुशल संचालन के साथ संयोजित करने वाला संतुलित दृष्टिकोण हमारे शहरों को स्वच्छ बनाने में मदद कर सकता है।

203. पंजाब में DSR को बढ़ावा नहीं मिल पाया - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- पंजाब सरकार चावल की सीधी बुवाई या 'टार-वाटर' तकनीक को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है।
- इससे जल उपयोग में 15% से 20% तक कमी आ सकती है।
- इसके अलावा, DSR को कम श्रम की आवश्यकता होती है और यह 7 से 10 दिन पहले पक जाती है, जिससे किसानों को धान की पराली के प्रबंधन के लिए अधिक समय मिल जाता है।
- इन लाभों और सरकारी प्रोत्साहनों के बावजूद, इस तकनीक को पंजाब में अभी तक व्यापक रूप से अपनाया जाना बाकी है।
  - पिछले वर्ष पंजाब में धान की खेती के अंतर्गत 79 लाख एकड़ भूमि में से केवल 1.73 लाख एकड़ भूमि पर ही इस तकनीक का उपयोग किया गया।

+91-9477560001, +91-9477560002, +91-9477560005
info@geoias.com
www.geoias.com
BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | Head office: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

- यहां तक कि इस वर्ष 7 लाख एकड़ भूमि को DSR के अंतर्गत लाने का सरकार का लक्ष्य भी पंजाब के कुल चावल क्षेत्रफल का 10% से भी कम है।

DSR कैसे काम करता है?

- परंपरागत रूप से, धान की खेती करने वाले किसान नर्सरी तैयार करते हैं, जहां सबसे पहले बीज बोए जाते हैं।
  - 25-35 दिनों के बाद, युवा पौधों को उखाड़कर मुख्य खेत में पुनः रोप दिया जाता है।
  - यद्यपि यह विधि श्रम और पानी की अधिक खपत वाली है, फिर भी यह उपज को अधिकतम करने और फसल के बेहतर स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए जानी जाती है।
- सिंचाई का पहला दौर बुवाई के 21 दिन बाद किया जाता है, इसके बाद मिट्टी के प्रकार और मानसून की गुणवत्ता के आधार पर 7-10 दिन के अंतराल पर 14-17 दौर और किए जाते हैं।
- अंतिम सिंचाई कटाई से 10 दिन पहले की जाती है।
- पारंपरिक विधि में कुल 25-27 सिंचाई की आवश्यकता होती है।

मिट्टी की बनावट महत्वपूर्ण है

- विशेषज्ञ इस बात पर ज़ोर देते हैं कि DSR के सफल क्रियान्वयन के लिए मिट्टी की उपयुक्तता बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए दो कारक हैं।
  - सबसे पहले मिट्टी की बनावट पर ध्यान दें।
  - यह भारी या मध्यम से भारी बनावट वाली मिट्टी के लिए अधिक उपयुक्त है।
- इसका मुख्य कारण यह है कि हल्की बनावट वाली मिट्टी पानी को अच्छी तरह से बरकरार नहीं रख पाती।
- सीधे शब्दों में कहें तो भारी बनावट वाली मिट्टी में मिट्टी ज़्यादा और रेत कम होती है, जबकि हल्की बनावट वाली मिट्टी में मिट्टी कम और रेत ज़्यादा होती है। इसके अलावा पंजाब की 80% मिट्टी हल्की बनावट वाली है।

लौह तत्व का महत्व

- मिट्टी में लौह तत्व की मात्रा भी DSR की उपयुक्तता निर्धारित करती है। लोहे की गंभीर कमी वाली मिट्टी और खरपतवार की समस्या वाली मिट्टी में इस तकनीक का उपयोग करके खेती नहीं करनी चाहिए।
- लौह तत्व की कमी से पैदावार पर बहुत बुरा असर पड़ता है और किसानों को भारी वित्तीय नुकसान उठाना पड़ता है। कभी-कभी, किसानों को एक या दो महीने बाद भी फसल की रोपाई करनी पड़ती है, जिससे DSR के श्रम-बचत लाभ खत्म हो जाते हैं।

आगे की राह

- जागरूकता और समझ की कमी के कारण DSR को आगे नहीं बढ़ाया जा रहा है।
- अनुपयुक्त मिट्टी पर इस विधि का प्रयोग करने के बाद किसानों को अपेक्षित उपज नहीं मिलती।
- इसके बाद उनमें DSR के संबंध में आशंकाएं विकसित हो जाती हैं और वे अपनी पारंपरिक पडलिंग पद्धति पर वापस लौट जाते हैं।
- महत्वपूर्ण बात यह है कि नकारात्मक प्रतिक्रिया मौखिक रूप से तेजी से फैलती है, जिससे अन्य किसान हतोत्साहित हो जाते हैं, जिनके लिए DSR आदर्श हो सकता था।
- बुवाई से पूर्व से लेकर कटाई तक की पूरी प्रक्रिया में किसानों की सहायता के लिए व्यापक प्रशिक्षण और एक त्वरित हेल्पलाइन उपलब्ध कराई जाएगी।
- इसके अतिरिक्त, यदि किसानों को प्रारंभिक वर्षों के दौरान नुकसान उठाना पड़ता है, तो उन्हें पर्याप्त मुआवजा भी प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें दोबारा प्रयास करने से हतोत्साहित न किया जाए।

204. ग्रेट निकोबार परियोजना में सामरिकअनिवार्यता और पर्यावरण संबंधी चिंता- इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- विपक्ष ने ग्रेट निकोबार द्वीप पर प्रस्तावित 72,000 करोड़ रुपये के बुनियादी ढांचे के उन्नयन को द्वीप के स्वदेशी निवासियों और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए "गंभीर खतरा" बताया है, और संबंधित संसदीय समितियों सहित प्रस्तावित परियोजना की "गहन, निष्पक्ष समीक्षा" की मांग की है।

ग्रेट निकोबार • ग्रेट निकोबार निकोबार द्वीपसमूह का सबसे दक्षिणी और सबसे बड़ा द्वीप है, जो बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पूर्वी भाग में मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय वर्षावन का 910 वर्ग किलोमीटर का विरल रूप से बसा हुआ क्षेत्र है। • द्वीप पर इंदिरा प्वाइंट, भारत का सबसे दक्षिणी बिंदु, इंडोनेशियाई द्वीपसमूह के सबसे बड़े द्वीप सुमात्रा से केवल 90 समुद्री मील (170 किमी से कम) दूर है • ग्रेट निकोबार में दो राष्ट्रीय उद्यान, एक बायोस्फीयर रिजर्व, शोम्पेन और निकोबारी जनजातीय लोगों की छोटी आबादी और कुछ हजार गैर-आदिवासी निवासी हैं। • अंडमान और निकोबार द्वीप समूह 836 द्वीपों का एक समूह है, जो 150 किलोमीटर चौड़ी 10डिग्री चैनल द्वारा दो समूहों उत्तर में अंडमान द्वीप समूह और दक्षिण में निकोबार द्वीप समूह में विभाजित है । **इंफ्रा प्रोजेक्ट** • इस मेगा इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजना में एक अंतर्राष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल (ICTT), एक ग्रीनफील्ड अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा शामिल करने का प्रस्ताव है, जिसकी पीक ऑवर क्षमता 4,000 यात्रियों को संभालने की है, एक टाउनशिप और 16,610 हेक्टेयर में फैला एक गैस और सौर आधारित बिजली संयंत्र शामिल है। • नीति आयोग की एक रिपोर्ट के बाद ग्रेट निकोबार द्वीप के "समग्र विकास" के लिए परियोजना को लागू किया गया था। • यह मलक्का जलडमरूमध्य के करीब है, जो हिंद महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ने वाला मुख्य जलमार्ग है, और कंटेनर टर्मिनल से यह उम्मीद की जाती है कि यह "कार्गो ट्रांसशिपमेंट में एक प्रमुख प्रतिभागी बनकर ग्रेट निकोबार को क्षेत्रीय और वैश्विक समुद्री अर्थव्यवस्था में भाग लेने की अनुमति देगा"। • प्रस्तावित "ग्रीनफील्ड शहर" द्वीप की समुद्री और पर्यटन दोनों संभावनाओं का लाभ उठाएगा। • प्रस्तावित ICTT और विद्युत संयंत्र का स्थल ग्रेट निकोबार द्वीप के दक्षिण-पूर्वी कोने पर स्थित गैलेथिया खाड़ी है, जहां कोई मानव निवास नहीं है।	**सामरिक महत्व** • बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर क्षेत्र भारत के लिए महत्वपूर्ण सामरिक और सुरक्षा हित के हैं, क्योंकि चीनी नौसेना पूरे क्षेत्र में अपना विस्तार करना चाहती है। • भारत हिंद-प्रशांत के महत्वपूर्ण क्षेत्रों, विशेषकर मलक्का, सुंडा और लोम्बोक में चीनी समुद्री बलों के जमावड़े से चिंतित है। • इस क्षेत्र में अपना विस्तार करने के चीन के प्रयासों में कोको द्वीप (म्यांमार) में एक सैन्य सुविधा का निर्माण करना शामिल है, जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से सिर्फ 55 किमी उत्तर में स्थित है। • पूरे क्षेत्र की निगरानी और ग्रेट निकोबार में एक मजबूत सैन्य निरोध का निर्माण भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। **पर्यावरण संबंधी चिंताएँ** • प्रस्तावित बुनियादी ढांचे के उन्नयन का विरोध इस आधार पर किया गया है कि इससे द्वीपों की पारिस्थितिकी को खतरा है। • इसके अलावा, शोम्पेन पर भी संभावित प्रभाव पड़ेगा, जो कि शिकारी-संग्राहकों का एक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) है, जिसकी अनुमानित जनसंख्या कुछ सौ है तथा जो द्वीप पर स्थित जनजातीय रिजर्व में रहते हैं। • यह आशंका है कि बंदरगाह परियोजना से प्रवाल भित्तियाँ नष्ट हो जाएंगी, जिसका स्थानीय समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, तथा गैलेथिया खाड़ी क्षेत्र में घोंसला बनाने वाले स्थलीय निकोबार मेगापोड पक्षी और लेदरबैक कछुओं के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। • अप्रैल 2023 में, राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) की कोलकाता पीठ ने परियोजना को दी गई पर्यावरण और वन मंजूरी में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया। • हालांकि, न्यायाधिकरण ने आदेश दिया कि मंजूरी पर विचार करने के लिए एक उच्च-शक्ति समिति का गठन किया जाना चाहिए। • अभी तक इस बात पर कोई स्पष्टता नहीं है कि मुख्य रूप से सरकारी प्रतिनिधियों वाली समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है या नहीं।

205. विज्ञान आधारित निर्णय को प्राथमिकता देने से अंटार्कटिक पर्यटन हेतु एक सतत भविष्य सुनिश्चित होगा- द हिंदू

समाचार:

- वर्ष 1990 के दशक के बाद से अंटार्कटिक पर्यटन में तीव्र वृद्धि हुई है, वर्ष 2022-23 सीज़न के दौरान आगंतुकों की संख्या 100,000 से अधिक हो जाएगी।
- साहसिक पर्यटन में रुचि से प्रेरित यह वृद्धि महत्वपूर्ण पर्यावरणीय जोखिम प्रस्तुत करती है।

पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:
- बढ़ती मानवीय उपस्थिति वन्यजीवों को बाधित करती है, पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचाती है, तथा आक्रामक प्रजातियों के खतरे को जन्म देती है।
- इसके अतिरिक्त, पर्यटन प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन में योगदान देता है, जिससे नाज़ुक अंटार्कटिक पर्यावरण पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तीव्र होते हैं।

लाभ और जोखिम में संतुलन:
- यद्यपि पर्यटन शैक्षिक और आर्थिक लाभ प्रदान करता है, लेकिन यह वैज्ञानिक अनुसंधान, जिम्मेदार पर्यटन गतिविधिओं और पर्यावरण संरक्षण के बीच नाज़ुक संतुलन को भी बिगाड़ देता है।

नियामक ढांचे में अंतराल:
- अंटार्कटिक संधि (वर्ष 1961) और मैड्रिड प्रोटोकॉल सामान्य दिशानिर्देश प्रदान करते हैं, लेकिन उनमें पर्यटन के लिए विशिष्ट विनियमन का अभाव है।
- अंतर्राष्ट्रीय अंटार्कटिका टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन (IAATO) वर्तमान में स्व-नियमन करता है, जिसे कई लोग अपर्याप्त मानते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सहमति की चुनौतियाँ:
- अंटार्कटिक संधि परामर्श बैठक (ATCM) में निर्णयों के लिए सर्वसम्मति की आवश्यकता होती है, जो अक्सर प्रभावी विनियमन को जटिल बनाता है।
- विविध राष्ट्रीय हित और अंटार्कटिक सिद्धांतों की व्याख्याएँ शासन के प्रयासों में और बाधा डालती हैं।

नव गतिविधि:
- ATCM-46 ने एक व्यापक विनियामक ढांचा विकसित करने के उद्देश्य से एक कार्य समूह की स्थापना के साथ प्रगति को चिह्नित किया।
- हालाँकि, आम सहमति बनाना और प्रभावी उपायों को लागू करना महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

206. वन प्रबंधन को लोकतांत्रिक बनाना तथा जंगलों में लगने वाली आग को कैसे रोका जाए - द हिंदू

समाचार:
- हिमाचल प्रदेश में बड़े पैमाने पर जंगल की आग लग रही है।
- हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अनुसार, 15 अप्रैल से अब तक जंगल में आग लगने की कुल 1,684 घटनाएं हुई हैं।

मुख्य बिंदु
- इन आग से कुल 17,471 हेक्टेयर वन भूमि को नुकसान पहुंचा है, जिसके परिणामस्वरूप वन्यजीवों को काफी नुकसान हुआ है।
- वर्ष 2001 से वर्ष 2023 तक हिमाचल प्रदेश में आग से 957 हेक्टेयर वृक्षावरण नष्ट हो चुका है, तथा अन्य सभी कारणों से 4.37 हजार हेक्टेयर वृक्षावरण नष्ट हो चुका है।

राज्य में जंगल की आग कैसे शुरू होती है?
- हिमालय में आग लगने की घटनाएं मानसून-पूर्व ग्रीष्मकाल में नमी की कमी के कारण होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप बर्फ पिघलने से पानी की कमी हो जाती है।
- प्री-मानसून मौसम की नमी की स्थिति, जिसमें बारिश के साथ-साथ तूफान भी शामिल होते हैं, जंगल की आग की प्रकृति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- जितनी कम नमी होगी, आग का प्रभाव उतना ही अधिक होगा।
- मानवीय गतिविधियाँ जैसे कि बिना देखरेख के कैम्प फायर, फेंकी गई सिगरेट आदि भी जंगल की आग के कुछ सामान्य कारण हैं।
- ये आग ब्लैक कार्बन सहित प्रदूषकों का एक प्रमुख स्रोत भी हैं, जो हिमालय में ग्लेशियर पिघलने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और क्षेत्रीय जलवायु को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।
- इन जंगल की आग के प्राथमिक कारण दोषपूर्ण वानिकी प्रथाएँ हैं, और लोगों की भागीदारी को छोड़कर वनों को उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देखना है।

क्या किया जाने की जरूरत है?
- वनों का लोकतंत्रीकरण आवश्यक है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वनों में और उसके आसपास रहने वाले लोगों और समुदायों को वन प्रबंधन प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सके।
- स्थानीय समुदाय के अधिकारों में समय-समय पर कटौती की जाती रही है, और परिणामस्वरूप, जब जंगल में आग लगती है, तो प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता कहीं नजर नहीं आते।
- हिमालयी निवासियों के पारंपरिक वन अधिकारों में ईंधन, इमारती लकड़ी, चारा और अन्य गतिविधियों के लिए लकड़ी निकालने का अधिकार शामिल है। हिमाचल प्रदेश भारतीय संविधान की अनुसूची V के अंतर्गत आता है, जिसके तहत इस क्षेत्र में विकास गतिविधियों के लिए समुदाय की सहमति की आवश्यकता होती है।
- हालाँकि, जल विद्युत उत्पादन, रोड वीडेनिंग और चार लेन वाले राजमार्गों जैसी बड़ी परियोजनाओं के लिए वनों को आसानी से हस्तांतरित किया जा रहा है।
- हिमालयी राज्यों को अब मिश्रित वानिकी विकसित करने और देवदार के पेड़ों को हटाने की जरूरत है;
  - यह सुनिश्चित करना कि वैज्ञानिक और सामुदायिक ज्ञान दोनों एक साथ आएं और वन प्रबंधन सहभागितापूर्ण तरीके से किया जाए
  - जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने के लिए चेक डैम और अन्य तरीकों को लागू करना; गांव स्तर पर पर्यावरणीय सेवाएं बनाना
  - उन्होंने 16वें वित्त आयोग के समक्ष अपना मामला रखा तथा आपदा न्यूनीकरण निधि के अलावा अन्य सहायता की मांग की।

207. क्या सरकारी सब्सिडी हेतु EVs और हाइब्रिड वाहनों को समान माना जाना चाहिए? - द हिंदू

प्रसंग:

- अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, भारत का सड़क परिवहन क्षेत्र देश के CO2 उत्सर्जन में लगभग 12% का योगदान देता है, जिससे यह ऊर्जा और कृषि के बाद तीसरा सबसे अधिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन करने वाला क्षेत्र बन गया है।
- केंद्र सरकार वर्ष 2015 में हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों के तीव्र अंगीकरण और विनिर्माण, या FAME की शुरुआत के साथ लगभग एक दशक से डीकार्बोनाइजेशन परिवहन को तेजी से आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है।

FAME (फेम)	**सुधार**
• FAME खुदरा बिक्री को सब्सिडी देकर, घटकों के विनिर्माण को प्रोत्साहित करके और देश भर में EV पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण और पोषण करके इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) और हाइब्रिड के लिए मांग पैदा करने का प्रयास करता है। • हालांकि, चार्जिंग बुनियादी ढांचे की कमी, उन्नत बैटरी घटकों और प्रौद्योगिकी पर आयात निर्भरता, और ग्रिड में अभी भी कोयला आधारित बिजली का प्रभुत्व है, जिससे रेयर अर्थ एलिमेंट्स के खनन से इलेक्ट्रिक वाहनों के समग्र कार्बन फुटप्रिंट में वृद्धि हो रही है। • सरकार ने वर्ष 2017 में लोकप्रिय कार मॉडलों को प्रभावित करने वाले "माइल्ड हाइब्रिड" के लिए सब्सिडी समर्थन वापस ले लिया। • जब हम वाणिज्यिक वाहनों को देखते हैं, तो मालवाहक वाहन कुल वाहन संख्या का मात्र 5% हैं, लेकिन वे अकेले ही 34% उत्सर्जन में योगदान करते हैं, फिर भी हमारे पास हाइब्रिड ट्रक पर चर्चा नहीं है। • इसके अलावा, 75% से ज़्यादा बिजली कोयले से बनाई जाती है। इसलिए, जब EV उत्साही कहते हैं कि यह CO2 मुक्त है, तो ऐसा नहीं है। • हमारे पास बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन बनाने के लिए बुनियादी कच्चा माल भी नहीं है। कोबाल्ट, निकल और लिथियम जैसी धातुओं का बड़ी मात्रा में आयात किया जाता है।	• बिल्कुल, लेकिन सरकार को समग्र उद्देश्य पर ध्यान देना चाहिए। • इसमें जीवन चक्र उत्सर्जन और GHG मानदंड निर्दिष्ट किए जाने चाहिए। भारत जैसे देश के लिए, यह सब्सिडी केवल संख्या के कारण सतत नहीं है। • भारत भर में नवीकरणीय ऊर्जा के तेजी से उपयोग और वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा से 500 गीगावाट बिजली उत्पादन करने की देश की COP26 प्रतिबद्धता की पृष्ठभूमि में है। • हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं कि हमारा ग्रिड अधिक हरित और स्वच्छ हो। लेकिन अगर हम अपने ग्रिड के हरित होने का इंतजार करते हैं और फिर परिवहन परिवर्तन शुरू करते हैं, तो बहुत देर हो सकती है। • इसलिए कुछ ओवरलैप होंगे जहां दोनों क्षेत्रों का परिवर्तन साथ-साथ होना चाहिए। हम अपने परिवहन का विद्युतीकरण करते रहेंगे, जबकि हम अपने ग्रिड को हरित बनाएंगे। • सरकार को FAME 3 तैयार करते समय यह सोचना चाहिए कि हमें अनेक गणनाओं और कारकों पर विचार करना चाहिए। • नीतियों को बदलते क्षेत्रीय परिदृश्य के साथ विकसित किया जाना चाहिए। इसका लक्ष्य शून्य-उत्सर्जन वाहनों की ओर होना चाहिए क्योंकि इससे हमें अपने जलवायु और ऊर्जा सुरक्षा लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

208. IRDAI ने स्वास्थ्य कवर में बेहतरीन सुधार किये - द हिंदू

समाचार:

- पिछले कुछ वर्षों में भारत में बीमा परिदृश्य में बड़ा बदलाव आया है, जिसका श्रेय भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI) के निरंतर प्रयासों को जाता है।

मुख्य बिंदु	सेक्टर पर प्रभाव
• नवीनतम सुधार यह है कि "दस्तावेजों की कमी के कारण कोई भी दावा अस्वीकार नहीं किया जा सकता है"। • दावा प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए, IRDAI ने बीमाकर्ता द्वारा अंडरराइटिंग के समय आवश्यक दस्तावेज मांगे जाने को अनिवार्य कर दिया है। **हस्सले फ्री क्लेम्स** • IRDAI ने पहले निर्देश दिया था कि जहां कैशलेस दावों का निपटारा तीन घंटे की सीमा के भीतर किया जाना चाहिए, वहीं बीमाकर्ता द्वारा कैशलेस प्राधिकरण पर निर्णय दावे के अनुरोध के एक घंटे के भीतर किया जाना चाहिए। • IRDAI परिपत्र में यह भी कहा गया है कि सभी बीमा कंपनियों को समयबद्ध तरीके से 100% कैशलेस दावा निपटान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रतिपूर्ति मोड के माध्यम से दावा निपटान केवल असाधारण परिस्थितियों में ही किया जाए। • यह निर्देश IRDAI के हाल के 'कैशलेस एनीव्हेयर' निर्देश के अनुरूप है, जिसमें बीमा कंपनियों से कहा गया था कि ये उन अस्पतालों में भी दावों का निपटान कैशलेस तरीके से करें, जो उनके नेटवर्क अस्पतालों की सूची में नहीं हैं। • इसके अलावा, उन्हें दावों को सुविधाजनक बनाने के लिए पॉलिसीधारकों को डिजिटल पूर्व-प्राधिकरण भी उपलब्ध कराना चाहिए। • इस समस्या के समाधान के लिए, IRDAI ने कहा कि यदि दावे का निपटान तीन घंटे में नहीं किया जाता है, तो अस्पताल द्वारा लगाए गए अतिरिक्त खर्च का वहन बीमा कंपनी द्वारा किया जाएगा।	• इस निर्देश को लागू करने का एकमात्र तरीका बीमा कंपनियों और अस्पतालों के बीच बेहतर समन्वय है। • न केवल परिचालन प्रक्रियाओं में सुधार करना होगा, बल्कि विभिन्न हितधारकों के बीच मेडिकल रिकॉर्ड को साझा करना भी अधिक सुव्यवस्थित करना होगा, ताकि बीमाकर्ताओं को दावे पर निर्णय लेने में मदद मिल सके। • नेशनल हेल्थ क्लेम एक्सचेंज के माध्यम से मेडिकल रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण पहले से ही हो रहा है, जो सूचनाओं के अधिक पारदर्शी और सुचारू आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान कर रहा है। • अच्छी खबर यह है कि बीमाकर्ता ग्राहकों के लिए बीमा अनुभव को बेहतर बनाने के अपने सभी प्रयासों में नियामक का समर्थन करने के लिए सकारात्मक इरादा दिखा रहे हैं। • समय पर निपटान से अधिकांश गड़बड़ियां दूर हो जाएंगी और मरीजों तथा देखभाल करने वालों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा का अनुभव प्राप्त करने में मदद मिलेगी। • IRDAI ने कहा कि यदि उपचार के दौरान पॉलिसीधारक की मृत्यु हो जाती है, तो बीमाकर्ता को तुरंत दावा निपटान के अनुरोध को संसाधित करना चाहिए और शव को तुरंत अस्पताल से निकालना चाहिए। • इससे निश्चित रूप से शोकाकुल परिवार को कुछ राहत मिलेगी, क्योंकि वे एक दुखद क्षति से उबर रहे हैं। • ये मानदंड उपभोक्ता-केंद्रित हैं और पॉलिसीधारकों के कल्याण को हर चीज से ऊपर प्राथमिकता देते हैं। • यह सराहनीय कदम स्वास्थ्य बीमा परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा, समय पर और परेशानी मुक्त दावा निपटान सुनिश्चित करेगा, ग्राहक संतुष्टि को बढ़ाएगा और सभी के लिए समावेशी और किफायती स्वास्थ्य बीमा समाधान प्रदान करेगा।

209. टकराव-रोधी प्रणाली

प्रसंग:

- नव-निर्वाचित सरकार ने एक विकसित भारत की खोज शुरू कर दी है, यहाँ कुछ व्यापार नीति सलाह दी गई है, जो पूरी तरह से नि:शुल्क, बिना किसी उकसावे के और भरपूर विनम्रता के साथ दी गई है।
- आम चुनाव के तुरंत बाद का समय महत्वपूर्ण नीति निर्धारण के लिए अच्छा होता है, और यदि किसी क्षेत्र में इसकी आवश्यकता है तो वह है व्यापार है।
- क्योंकि, व्यापार में वृद्धि के बिना भारत अपने पूर्वी एशियाई पड़ोसियों की सफलताओं की बराबरी करने में असमर्थ होगा और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि के बिना वह व्यापार करने में असमर्थ होगा।

भारत की दुविधा

- वर्ष 2008 का वैश्विक वित्तीय संकट,वर्ष 2010 का यूरो जोन संघर्ष और हाल ही में कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप आई आर्थिक मंदी, इन सभी घटनाओं ने कई सरकारों को वैश्विक जुड़ाव पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

- इस संबंध में भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
  - एक है आत्मनिर्भर भारत की अपनी महत्वाकांक्षा को बढ़ावा देना, "स्थानीय के लिए मुखर" होकर भारत को आत्मनिर्भर बनाना, आयात पर घरेलू वस्तुओं को प्राथमिकता देना।
  - यह भारत की 1 ट्रिलियन डॉलर के निर्यात को प्राप्त करने की दूसरी महत्वाकांक्षा के साथ असहजता से बैठता है।
- भारत की निर्यात महत्वाकांक्षा वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVC) के साथ एकीकरण के बिना प्राप्त नहीं की जा सकती, जिसके लिए खुलेपन, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और आयात प्रतिस्पर्धा के स्वस्थ नुस्खे की आवश्यकता है।
- आयात शुल्क या संरक्षण में वृद्धि निर्यात कर के समान है।
- भारत को यह सबक बहुत कठिनाई से मिला है कि निर्यात संवर्धन और आयात प्रतिस्थापन परस्पर विरोधी नीतियां हैं, जो उसकी व्यापार नीति और आर्थिक एजेंडे पर हावी है।
- महामारी ने दुनिया को आयात में व्यवधान के परिणाम दिखाए।
- हम उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) जैसी योजनाओं के माध्यम से स्थानीय क्षमता के संवर्धन पर भरोसा कर रहे हैं, जो प्रदर्शन-आधारित वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।
- PLI योजनाओं के परिणामस्वरूप 8.61 लाख करोड़ रुपये का उत्पादन/बिक्री हुई और 6.78 लाख से अधिक रोजगार (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष) सृजित हुए।
- इससे पहले, सरकार क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) के लिए बातचीत से बाहर हो गई थी।
  - चीन के साथ उसका मौजूदा व्यापार घाटा इस निकासी का प्रमुख कारण बनकर उभरा है।
  - सहकारी-प्रधान कृषि और डेयरी क्षेत्र को न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों से प्रतिस्पर्धा का डर था।
- मुक्त व्यापार और बहुपक्षवाद की दिशा में भारत की यात्रा चुनौतियों से भरी रही है।
  - इसने वर्ष 1980 के दशक के दौरान एक आक्रामक आयात प्रतिस्थापन नीति अपनाई, लेकिन आयात प्रतिस्थापन और निर्यात संवर्धन को काफी विरोधाभासी पाया।
- वर्ष 1991 के संकट के दौरान, इसने उदार व्यापार नीति अपनाई, लेकिन इसके बाद दूसरी या तीसरी पीढ़ी के व्यापार सुधारों को अपनाने में अनिच्छुक रहा।
  - इस नीतिगत आख्यान ने इसके उदारीकरण और GVC में भागीदारी को धीमा कर दिया।
- भारत ने नौ वर्षों तक कोई समझौता नहीं होने के बाद वर्ष 2021 से चार FTA सहित कई FTA पर हस्ताक्षर किए हैं।
  - इनमें वर्ष 2021 में भारत-मॉरीशस व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता (CECPA) शामिल है।
  - भारत-UAE व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA), और
  - भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (CECTA) 2022 में।
- EFTA देशों (स्विट्जरलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे, लिकटेंस्टीन) के साथ नवीनतम व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौते (TEPA) पर 10 मार्च को हस्ताक्षर किए गए और अगले 15 वर्षों में 100 बिलियन डॉलर और 1 मिलियन प्रत्यक्ष नौकरियों की प्रतिबद्धता सुनिश्चित की गई।

भारत के प्रयास

- भू-राजनीतिक दृष्टि से, भारत ने खुद को एक महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसे G-20 की अध्यक्षता की मेजबानी से सहायता मिली है।
- इसका लक्ष्य खुद को चीन के लिए एक वैकल्पिक विनिर्माण गंतव्य के रूप में स्थापित करना और वियतनाम, कंबोडिया और बांग्लादेश जैसी अन्य दक्षिण एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करना है।
- डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) की अवधारणा ने महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है।
- DPI एक संभावित परिवर्तनकारी प्रक्रिया है जो लोगों और उपकरणों को जोड़ने के लिए सर्वव्यापी डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करती है।
- अब अवसर है अपनी बाधाओं को दूर करने का और वर्ष 1991 की पुनरावृत्ति करने का ऐसा करने के लिए किसी संकट का इंतजार किए बिना।

210. भारत मे रेलवे दुर्घटनाओं से सम्बंधित मामला - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- पश्चिम बंगाल में सिलीगुड़ी के निकट एक मालगाड़ी और एक यात्री रेलगाड़ी के बीच हुई टक्कर के बाद भारतीय रेलवे फिर से चर्चा में है। इस दुर्घटना में कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई और 40 से अधिक घायल हो गए।

मुख्य बिंदु

- वर्ष 1995 से अब तक देश में सात घातक रेल दुर्घटनाएँ हुई हैं, जिनमें से पाँच में 200 से ज़्यादा लोगों की जान गई थी। सबसे ज़्यादा मौतें 358, जो वर्ष 1995 में फिरोजाबाद में हुई थी।
- ओडिशा के बालासोर में करीब एक साल पहले हुई कई ट्रेनों की टक्कर में 287 लोगों की जान चली गई थी। इन सात दुर्घटनाओं में कुल मिलाकर 1,600 से ज़्यादा लोगों की जान गई।
- रेलवे योजनाकारों के बीच यह व्यापक रूप से माना जाता है कि भारत जैसे बड़े, घनी आबादी वाले विकासशील देश में एक मजबूत रेलवे प्रणाली होनी चाहिए जो लोगों और अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए सड़क और हवाई परिवहन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके।
- न तो रेलवे बोर्ड और न ही केंद्र ने कभी इस अनिवार्यता से इनकार किया है।

रेलवे की गति दोगुनी करना	**नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट**
• दरअसल, सुरक्षा में सुधार और लाइन क्षमता में भारी वृद्धि करते हुए ट्रेनों की गति को दोगुना करने की योजनाओं की बार-बार घोषणा की गई है, क्योंकि अधिकांश ट्रंक मार्गों पर तीव्र भीड़भाड़ का सामना करना पड़ रहा है। • लेकिन परिणाम बहुत निराशाजनक रहे हैं। • भारतीय रेलवे ने यात्री और माल ढुलाई दोनों क्षेत्रों में लगातार बाजार हिस्सेदारी खो दी है। • वास्तव में, वर्ष 2010-12 से माल और यात्री यातायात दोनों की कुल मात्रा स्थिर या घट गई है, जबकि हवाई और सड़क यातायात में प्रत्येक वर्ष 6-12 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। • वर्ष 2014-15 और वर्ष 2019-20 के बीच यात्री यातायात 995 बिलियन पास-किमी से घटकर 914 बिलियन पास-किमी रह गया और माल ढुलाई 682 और 739 बिलियन नेट टन-किमी के बीच स्थिर रही। वर्ष 2019-20 के बाद से लेकर अब तक की अवधि के लिए रेलवे ने इन यातायात के आंकड़ों को सार्वजनिक नहीं किया है। • यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि भारतीय रेलवे, जिसका रेल परिवहन पर एकाधिकार है, गंभीर संकट का सामना कर रही है। • भारतीय रेल को एक गौण भूमिका में रखा जा सकता है, जहाँ यह मुख्य रूप से भारी माल ढुलाई और कुछ धीमी गति से चलने वाली यात्री गाड़ियों को ले जाती है, जैसा कि अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे बड़े, कम आबादी वाले, आर्थिक रूप से उन्नत देशों में होता है। • निश्चित रूप से, अपनी उच्च जनसंख्या घनत्व के साथ, भारत जैसा विशाल विकासशील देश रेल परिवहन में इतनी गिरावट बर्दाश्त नहीं कर सकता।	• भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) ने हाल ही में भारतीय रेल पर सुरक्षा, गति और समय की पाबंदी पर दो महत्वपूर्ण रिपोर्ट जारी की हैं। • वर्ष 2019-20 के लिए गति और समय की पाबंदी पर रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2014 से वर्ष 2019 के बीच मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों की औसत गति में कोई वृद्धि नहीं हुई है यह 50 से 51 किमी प्रति घंटे पर बनी हुई है ○ मिशन रफ्तार के तहत 75 किमी प्रति घंटे की औसत गति प्राप्त करने के दावों के विपरीत, जो वर्ष 2005 से हर पांच से सात साल में किसी न किसी रूप में सामने आता रहा है। • जहां तक मालगाड़ियों का सवाल है, औसत गति में मामूली गिरावट आई है, जो बोर्ड के दावे के विपरीत है कि गति दोगुनी हो गई है। • यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि 20 वर्ष पूर्व भारतीय रेल ने कोच और लोकोमोटिव बनाने के लिए प्रौद्योगिकी और विनिर्माण क्षमताएं हासिल की थीं, ताकि अधिकतम परिचालन गति को 110-130 किमी प्रति घंटे से बढ़ाकर 160-200 किमी प्रति घंटे किया जा सके। • दुर्घटनाओं पर आधारित दूसरी CAG रिपोर्ट भी उतनी ही चिंताजनक है। • यद्यपि दुर्घटनाओं की संख्या में कुछ कमी आई है, लेकिन इसका मुख्य कारण मानवरहित रेलवे क्रॉसिंगों पर कर्मियों की तैनाती है। • डेटा से पता चलता है कि पटरी से उतरने और टकराव के मामले में बहुत कम सुधार हुआ है। • रिपोर्ट में परिसम्पत्तियों की विफलताओं, विशेषकर सिग्नल विफलताओं और रेल फ्रैक्चर की निरंतर उच्च दर के बारे में गंभीर चिंता व्यक्त की गई है। • भारतीय रेल पर सबसे भयानक दुर्घटनाएं इन्हीं कारणों से हुई हैं। पिछले साल बालासोर में हुई कई ट्रेनों की टक्कर सिग्नल फेल होने के कारण हुई थी। • स्पष्टतः, पिछले दो दशकों की गलत प्राथमिकताओं की गहन समीक्षा की आवश्यकता है, जो भारतीय रेल को अन्तिम गिरावट की ओर ले जा रही हैं।

211. भारत में अनाज की मांग कैसे बदल रही है- इंडियन एक्सप्रेस

मुख्य अंश:

- इसका एक बड़ा हिस्सा सीधे मानव उपभोग के लिए नहीं, बल्कि प्रसंस्कृत रूप में (जैसे ब्रेड, बिस्कुट, केक, नूडल्स, सेंवई, फ्लेक्स, पिज्जा बेस आदि) या पशु आहार, स्टार्च, पेय पदार्थ और इथेनॉल ईंधन बनाने के लिए उपयोग किया जा रहा है।
  - आधिकारिक घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) के आंकड़ों से इसका प्रमाण मिलता है।
- राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय की नवीनतम HCES रिपोर्ट से पता चलता है कि वर्ष 1999-2000 और वर्ष 2022-23 के बीच एक औसत व्यक्ति द्वारा प्रति माह उपभोग किए जाने वाले अनाज की मात्रा में लगातार गिरावट आई है।

अनाज

- जबकि प्रत्यक्ष घरेलू खपत स्थिर हो गई है, यहां तक कि इसमें गिरावट भी आई है, लेकिन उत्पादन के मामले में ऐसा नहीं है, बल्कि इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- आधिकारिक रूप से अनुमानित अनाज उत्पादन और HCES-आधारित घरेलू खपत के बीच का अंतर भी बढ़ गया है

अतिरिक्त उत्पादन कहां जा रहा है?	अस्पष्टीकृत अधिशेष
• इसका एक हिस्सा निर्यात हो रहा है, यानी देश से बाहर जा रहा है। • अंतर का दूसरा स्रोत घरों में प्रसंस्कृत रूप में उपभोग किये जाने वाले अनाज जैसे ब्रेड, बिस्कुट, नूडल्स आदि होंगे। • तीसरा स्रोत अनाज है जिसका उपयोग चारे या औद्योगिक स्टार्च के निर्माण के लिए किया जाता है। • कृषि मंत्रालय ने वर्ष 2022-23 में भारत का मक्का उत्पादन 38.1 मिलियन टन रहने का अनुमान लगाया है। • इसका 90% से ज़्यादा हिस्सा पोल्ट्री, पशुधन और जलीय फ़ीड में प्राथमिक ऊर्जा घटक के रूप में या गीले-मिलिंग और स्टार्च में रूपांतरण के लिए इस्तेमाल किया जाता होगा, जिसका उपयोग कागज, कपड़ा, दवा, खाद्य और पेय उद्योगों में होता है। • चारा और स्टार्च निर्माण के अलावा, अनाज को भी किण्वित कर अल्कोहल बनाया जाता है (पिसाई के बाद स्टार्च को सुक्रोज और सरल शर्करा में परिवर्तित किया जाता है) और फिर आसवन करके लगभग 94% परिशोधित/औद्योगिक स्पिरिट या 99.9% इथेनॉल बनाया जाता है। • दूसरे शब्दों में, अनाज आज केवल भोजन और चारा ही नहीं है, बल्कि ईंधन अनाज भी है।	• 32 मिलियन टन के निर्यात, प्रसंस्कृत खाद्य के रूप में उपयोग (38 मिलियन टन) तथा चारे, स्टार्च बनाने और किण्वन प्रयोजनों के लिए उपयोग (50-55 मिलियन टन) को जोड़ने पर, ये बहुत ही मोटे अनुमान हैं कि 150-155 मिलियन टन की प्रत्यक्ष घरेलू खपत से अनाज की कुल वार्षिक मांग अधिकतम 275-280 मिलियन टन तक पहुंच जाएगी। • यह अनुमानित 300 मीट्रिक टन से अधिक घरेलू अनाज उत्पादन से काफी कम है। अंतर यह है कि अतिरिक्त अनाज सरकारी एजेंसियों द्वारा एकत्र किया जा रहा है और भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में जमा हो रहा है। • यदि कृषि मंत्रालय के अनाज उत्पादन अनुमान सही हैं, तो देश में हर वर्ष कम से कम 25 मीट्रिक टन अतिरिक्त अनाज का उत्पादन हो रहा है, जिससे सरकारी भंडार में वृद्धि न होने पर भी बाजार कीमतों पर दबाव बढ़ रहा है। • लेकिन निर्यात पर प्रतिबंध/प्रतिबंधों के बावजूद उच्च अनाज मुद्रास्फीति के हाल के अनुभव और सरकारी गोदामों में घटते स्टॉक को देखते हुए, आधिकारिक उत्पादन अनुमानों की सत्यता पर सवाल उठाए जा सकते हैं।

212. बढ़ती वैश्विक भूख और जलवायु से प्रभावित खाद्य प्रणाली के लिए एक नई "जीन क्रांति" को अपनाया जा रहा है - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- बढ़ती वैश्विक भूख के लिए एक नए "जीन क्रांति" की घोषणा की जा रही है क्योंकि खाद्य प्रणालियाँ चरम मौसम के कारण नष्ट हो रही हैं।
- हजारों वर्षों से किसान स्वादिष्ट या अधिक उपज देने वाली संकर प्रजातियाँ बनाने के लिए फलों, अनाजों या सब्जियों का संकर प्रजनन करते आ रहे हैं।
- लेकिन वर्ष 1970 के दशक तक ऐसा नहीं था कि वैज्ञानिकों ने ट्रांसजेनिक फसलों का उत्पादन करने के लिए एक जीव से दूसरे जीव में जीन स्थानांतरित करने के लिए बायोइंजीनियरिंग का इस्तेमाल किया।

GM फसलें और बदलती जलवायु

- जब ये आनुवंशिक रूप से संशोधित जीव (GMO) वर्ष 1990 के दशक में पहली बार बाजार में आए, तो इन्हें फ्रेंकस्टीन खाद्य पदार्थ कहा गया।
- जी.एम.ओ. फसलों के प्रति प्रतिरोध जनता के इस निरंतर भय पर आधारित था कि वे मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।
- अब वर्ष 2020 के दशक में, एक नई जीन क्रांति, जिसके तहत डीएनए को एक अलग जीव के जीन को जोड़े बिना आनुवंशिक रूप से संपादित किया जा सकता है, जैव प्रौद्योगिकी फसल उद्योग के इस दावे को बल दे रही है कि यह वैश्विक जनसंख्या के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकती है, जिसके वर्ष 2050 तक 10 बिलियन तक पहुंचने की उम्मीद है।
- विश्व आर्थिक मंच (WEF) का कहना है कि उदाहरण के लिए, चावल, मक्का, गेहूँ, आलू और कसावा की नई किस्मों पर शोध से इन महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थों को गर्म होती दुनिया में चरम मौसम और "नई जलवायु-प्रेरित बीमारियों" से बचने में मदद मिलेगी।
- एक अमेरिकी-आधारित शोध परियोजना भी प्रकाश संश्लेषण को अनुकूलित करने में मदद कर रही है, ताकि मक्का और चावल जैसे पौधों के प्रमुख खाद्य पदार्थ सूर्य के प्रकाश, पानी और कार्बन डाइऑक्साइड को ऊर्जा में बेहतर रूप से परिवर्तित कर सकें, जिससे उपज में सुधार हो और वायुमंडलीय कार्बन में भी कमी आए।

आलोचना	अपवाद

• कई वैज्ञानिक और पर्यावरण कार्यकर्ता इस बात से सहमत नहीं हैं कि GM फसलें खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकती हैं या जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न अत्यधिक सूखे और बाढ़ से लड़ने में मदद कर सकती हैं, जो कृषि को नष्ट कर रहे हैं।
• वर्तमान में, खाद्य प्रणालियाँ जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग एक-तिहाई हिस्सा उत्पन्न करती हैं।
  ○ अमेरिका में, आधी से अधिक फसल आनुवंशिक रूप से संशोधित बीजों से उगाई जाती है।
• केनिस के शोध में तर्क दिया गया है कि GMO में अक्सर सीमित फसल किस्मों की "बड़े पैमाने पर मोनोकल्चर" शामिल होती है, जिसके लिए बड़ी मात्रा में कृत्रिम उर्वरकों, कीटनाशकों और सिंचाई की भी आवश्यकता होती है।
  ○ कार्य करने के लिए आवश्यक इनपुट की दृष्टि से यह एक बहुत ही ऊर्जा-गहन प्रणाली है।
• अब तक, यह प्रणाली "दुनिया के विभिन्न हिस्सों में आबादी के बड़े हिस्से को भोजन उपलब्ध कराने में भी विफल रही है"
  ○ विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP) के अनुसार, लगभग 60 देशों में कम से कम 250 मिलियन लोग संकट-स्तर की खाद्य असुरक्षा से पीड़ित हैं।
	• दक्षिणी अफ्रीका में छोटी जोतों के संदर्भ में, दक्षिणी अफ्रीका में "कीट प्रतिरोधी" फसलें इन किसानों के लिए वरदान हैं।
	• ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिक भी जैव-इंजीनियरिंग द्वारा "अंतर्निहित" कीट संरक्षण द्वारा लोबिया उत्पादन परियोजना का नेतृत्व कर रहे हैं, क्योंकि यह फली हजारों वर्षों से अफ्रीका में आहार का मुख्य हिस्सा रही है।
	  ○ कीट प्रतिरोध के बिना, कई मामलों में उन्हें कोई फसल नहीं मिलती,
	• नई GM फसलों की बढ़ती संभावना के बावजूद, जीन हेरफेर के प्रति प्रतिरोध और संदेह अभी भी जारी है, वर्ष 2020 में वैश्विक स्तर पर किए गए सर्वेक्षण में लगभग आधे लोगों का मानना था कि GMOP खाद्य पदार्थों के लिए असुरक्षित हैं।

213. भारत के बुजुर्गों की स्थिति से संबंधित मामला - द हिंदू

मुख्य बिंदु:

- भारतीय परिस्थितियों में, विशेष रूप से, जीवन के अंतिम चरण में उम्र बढ़ने की चार कमज़ोरियाँ दैनिक जीवन की गतिविधियों में प्रतिबंध, बहु-रुग्णता, गरीबी और किसी भी आय का अभाव हैं।
- भारत के अनुदैर्ध्य वृद्धावस्था सर्वेक्षण (LASI, 2017-18) की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 20% बुजुर्ग आबादी इनमें से प्रत्येक कमज़ोरी का सामना करती है।

संबंधित डेटा	सुझावात्मक उपाय
• मध्य शताब्दी तक अनुमानित वृद्ध जनसंख्या 319 मिलियन होगी, जो प्रति वर्ष लगभग 3% की दर से बढ़ेगी। • यह समूह स्त्रियोचित होगा, जिसमें प्रति हजार पुरुषों पर 1,065 महिलाएं होंगी; इसके अतिरिक्त, 54% बुज़ुर्ग महिलाएं विधवा होंगी। • जबकि 6% बुजुर्ग पुरुष अकेले रहते हैं, जबकि 9% महिलाएं अकेले रहती हैं, इनमें से 70% ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाती हैं। • सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि 45 वर्ष और उससे अधिक आयु की आबादी में लगभग 20% की तुलना में एक चौथाई बुजुर्गों की स्वास्थ्य स्थिति खराब बताई गई है। • जबकि 75% बुजुर्ग आबादी एक या एक से अधिक दीर्घकालिक बीमारियों से पीड़ित है, 45 वर्ष या उससे अधिक आयु के 40% लोग किसी न किसी विकलांगता से ग्रस्त हैं। • वैश्विक स्तर पर बीमारियों के बढ़ते बोझ के साथ, यह स्पष्ट है कि दो खतरनाक ताकतें मधुमेह और कैंसर हैं, जो भारत के बुज़ुर्गों में अक्सर दिखाई देती हैं। • इसके अलावा, उभरती हुई चिंता मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित है, जिसमें 45 वर्ष से अधिक आयु के 20% लोग किसी बीमारी की रिपोर्ट करते हैं, जो मुख्य रूप से अवसाद से ज़ुड़ी होती है; यह बुज़ुर्गों द्वारा बताई गई सीमा की तुलना में काफी अधिक है। • माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007 के बारे में मुश्किल से 12% लोग जानते हैं और 28% लोग बुजुर्गों को दी जाने वाली विभिन्न रियायतों के बारे में जानते हैं। • हालांकि उनमें से 5% ने दुर्व्यवहार की रिपोर्ट की है, लेकिन यह काफी आम बात है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के मामले में, जहां वे सबसे अधिक उपेक्षित हैं।	• उपाय के लिए समावेशन के सिद्धांतों और सामाजिक सुरक्षा उपायों को अपनाने के सिद्धांतों को शामिल करते हुए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। • इन कमज़ोरियों को जीवन की एक घटना के रूप में देखते हुए, जीवन की तैयारी के उपायों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, यह सिर्फ़ वित्तीय या आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वस्थ, सक्रिय और उत्पादक वर्षों को सुनिश्चित करने का भी साधन होना चाहिए। • बुजुर्गों की बढ़ती संख्या को अलग-थलग करके नहीं देखा जाना चाहिए, क्योंकि जनसंख्या परिवर्तन पारिवारिक परिवर्तन के साथ-साथ हो रहा है। • पारिवारिक परिवर्तन को परिवार की संरचना और उसमें बुजुर्गों के रहने के तरीके के आधार पर देखा जाना चाहिए। • जबकि ऐसे घर हैं जिनमें बुजुर्ग नहीं हैं और ऐसे घर हैं जिनमें कई बुजुर्ग हैं, फिर भी घर में बुज़ुर्गों के साथ बुज़ुर्गों के रहने के मामले अक्सर देखने को मिलते हैं। • न केवल यह रहने की व्यवस्था अधिक से अधिक होती जा रही है, बल्कि बुज़ुर्गों वाले घरों में बुज़ुर्गों के बिना रहने वाले घरों की तुलना में निर्भरता, देखभाल के प्रावधान के साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा और वित्तीय सुरक्षा की अन्य विशेषताएँ भी प्रमुखता प्राप्त कर रही हैं। • आज के बुजुर्गों की तुलना कल के बुजुर्गों से करें, तो शिक्षा, जीवन की तैयारी और आर्थिक निर्भरता के मामले में विशिष्ट लाभ की पूरी संभावना है। ○ हालाँकि, बढ़ती आयु और दीर्घकालिक दीर्घकालिक बीमारियों के उभरने के कारण स्वास्थ्य और जीवन स्तर में प्रतिकूलताएँ आ रही हैं। • इस संदर्भ में, स्वस्थ बुढ़ापे के नारे को बुजुर्ग आबादी पर नहीं बल्कि संभावित बुज़ुर्गों पर काफ़ी हद तक ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है। • दैनिक जीवन की गतिविधियों (ADL) के संबंध में सीमाएँ बुजुर्ग आबादी में भी उम्र के साथ बिगड़ती प्रवृत्ति दिखाती हैं, लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि क्या भविष्य के बुजुर्गों में यह पैटर्न कम हो जाएगा और जीवन के बहुत बाद के युगों तक स्थगित हो जाएगा।

214. तेजी से बदलती दुनिया में G-7 को अपने उद्देश्य की समीक्षा करनी होगी- द हिंदू

प्रसंग:

- तेजी से बदलती दुनिया में G-7 को अपने उद्देश्य की समीक्षा करनी चाहिए।
- "G-7 आउटरीच" शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री सहित 10 देशों के नेताओं का स्वागत करते हुए इटली के प्रधानमंत्री ने कहा कि "पश्चिम बनाम शेष" की पुरानी धारणा से हटना महत्वपूर्ण है।

पहुंच बढ़ाना	निरंतर परेशानियाँ:
• इटली ने मुख्य रूप से ग्लोबल साउथ देशों को आमंत्रित करने का निर्णय लिया, जिसमें ब्राजील, भारत और यूएई जैसे ब्रिक्स के प्रमुख देश शामिल हैं, ताकि ऊर्जा मुद्दों पर सात अफ्रीकी देशों के साथ एक आउटरीच आयोजित की जा सके। • G-7 को कभी विश्व के सर्वाधिक विकसित लोकतंत्रों के एक गतिशील समूह के रूप में देखा जाता था, जहां राष्ट्राध्यक्ष वर्ष में एक बार वैश्विक वित्तीय और विकास संबंधी मुद्दों पर वास्तविक समाधान के लिए एकत्रित होते थे। • हालाँकि, विनिर्माण मंदी, COVID-19 महामारी और रूस-यूक्रेन संघर्ष और पश्चिमी प्रतिबंधों के प्रभाव के कारण, समूह अधिक थका हुआ दिखाई दिया और इसकी बैठकें कम प्रभावी रहीं।	• सबसे उल्लेखनीय बात यह थी कि G-7 ने यूक्रेन के लिए "सैन्य, बजट, मानवीय और पुनर्निर्माण सहायता" जारी रखी, लेकिन युद्ध को कैसे समाप्त किया जाए, इस पर कोई रचनात्मक योजना नहीं बनाई। • गाजा युद्धविराम की अपील को भी इज़राइल ने स्वीकार नहीं किया है। • G-7 का ध्यान विशेष रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन पर तथा "औद्योगिक लक्ष्यीकरण" और अनुचित प्रथाओं पर केंद्रित था, लेकिन यह देखना अभी बाकी है कि क्या कोई भी सदस्य देश बीजिंग के साथ अपने व्यापारिक संबंधों को कम करेगा। • इसमें भारत-मध्य पूर्व-यूरोप कॉरिडोर सहित लगभग आठ अवसंरचना कॉरिडोर के लिए पुनः प्रतिबद्धता दर्शाई गई, तथा परियोजनाओं पर चर्चा करने के बजाय उनके क्रियान्वयन पर ध्यान केंद्रित न करने की बात पर बल दिया गया। • G-7 की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, भारत, जो ग्यारहवीं बार इसमें शामिल हो रहा है, इस बैठक की उपयोगिता का अच्छी तरह से आकलन कर सकता है। • वैश्विक असमानताओं को पाटने के लिए प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग का महत्व, तथा वैश्विक दक्षिण, विशेष रूप से अफ्रीका का महत्व। • ऐसा लगता है कि इनमें से अधिकांश मुद्दों को G-20 जैसे बड़े और अधिक प्रतिनिधित्व वाले प्रारूप में बेहतर ढंग से संबोधित किया जाएगा। • लेकिन तेजी से बदलती वैश्विक शक्ति गतिशीलता के बीच G-7 अपनी पहचान और उद्देश्य की समीक्षा करना चाह सकता है।

GEO IAS
It's about quality

215. श्रीलंकाई तमिल शरणार्थियों से सम्बंधित मामला - द हिंदू

प्रसंग:

- वर्ष 1983 में पहली बार भारत के तमिलनाडु तट पर पहुंचे श्रीलंकाई तमिलों ने अपना सब कुछ खो दिया था।
- उनका एकमात्र उद्देश्य घृणा से भरी जातीय हिंसा से अपने जीवन को बचाना था, जिसके कारण उन्हें विस्थापन का सामना करना पड़ा।
- सबसे अधिक असुरक्षित श्रीलंकाई तमिलों ने भारत को इसकी निकटता, सुगमता और तमिल भाषा की समानता के कारण चुना।
- वर्ष 1983 से अब तक 3,34,797 श्रीलंकाई तमिलों ने तमिलनाडु में शरण ली है।
- ये चार चरणों में हुए, जो वर्ष 1983 से श्रीलंका में संघर्ष के बढ़ने के साथ मेल खाते हैं:
- वर्तमान में, तमिलनाडु में 105 सरकारी शिविरों में 57,975 शरणार्थी रह रहे हैं और अनुमान है कि 40,000 श्रीलंकाई तमिल पुलिस पंजीकरण के साथ तमिलनाडु में शिविरों के बाहर रह रहे हैं।

नई शुरुआत

- इन लोगों की जीवनशैली में भारी परिवर्तन आया।
- उन्हें अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग शिविरों में रहने की नई जिंदगी के लिए अभ्यस्त होना पड़ा।
- हालाँकि, इन शिविरों में उन्हें कई लाभ मिलते हैं जैसे निःशुल्क आवास, बिजली, पानी और मासिक भोजन राशन।
- उन्हें तमिलनाडु के लोगों के लिए उपलब्ध सभी कल्याणकारी योजनाओं तक पहुंच प्राप्त है, जिसमें 1,000 रुपये प्रति माह की नवीनतम महिला अधिकार योजना भी शामिल है।
- शिक्षा के संदर्भ में, शरणार्थियों को सरकारी स्कूलों तक पहुंच प्राप्त है, तथा यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं तो उन्हें 1,000 रुपये प्रति माह का अतिरिक्त लाभ मिलता है।
- शरणार्थियों के लिए विशिष्ट एकमुश्त शिक्षा सहायता कार्यक्रम भी उपलब्ध हैं, कला और विज्ञान महाविद्यालय के छात्रों को ₹12,000 तथा इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के छात्रों को ₹50,000 मिलते हैं।
- हाल ही में, तमिलनाडु सरकार ने लगभग 5,000 श्रीलंकाई तमिलों को नये घर सौंपे हैं।
- वर्ष 2023 के अंत में पूरा होने वाले एक लागत अध्ययन से पता चला है कि सरकार शरणार्थियों पर सालाना लगभग 262 करोड़ रुपये खर्च करती है।

सम्मान वापस लाना

- कल्याणकारी योजनाएँ श्रीलंकाई तमिलों की सुरक्षा का एक बड़ा हिस्सा हैं, ताकि उनकी गरिमा को बहाल किया जा सके और उन्हें एक स्थायी भविष्य बनाने के लिए सशक्त बनाया जा सके।
- इसका नतीजा यह हुआ कि स्कूलों में 100% नामांकन हुआ और शिविरों से 4,500 से ज़्यादा छात्र स्नातक हुए। ये अपनी जातिगत बाधाओं को तोड़ने में सफल रहे क्योंकि वे शरणार्थी श्रेणी में आते हैं।
- श्रीलंकाई शरणार्थियों के साथ किया गया व्यवहार महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत ने वर्ष 1951 के शरणार्थी सम्मेलन पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं तथा शरणार्थियों को नियंत्रित करने के लिए उसके पास घरेलू कानून का अभाव है।
- भारत में दो पीढ़ियों से अधिक समय तक रहने के बाद, शरणार्थियों ने लगातार अनुभव और शिक्षा के साथ खुद को सशक्त बनाया है।
- UNHCR के अनुसार वर्ष 2009 में श्रीलंका में युद्ध की समाप्ति के बाद से कुल 16,641 शरणार्थी श्रीलंका वापस आ चुके हैं। जबकि वापसी की गति स्थिर गति से बढ़ रही थी, कोविड-19 महामारी और उसके बाद श्रीलंका में आर्थिक संकट ने इस प्रक्रिया को रोक दिया और बाद में धीमा कर दिया।
- तमिलनाडु के कल्याण केंद्रों में रह रहे श्रीलंकाई शरणार्थियों की कहानी एक ऐसे शरणार्थी देखभाल मॉडल की कहानी है जिसका अनुकरण किया जाना चाहिए।
- कल्याण केंद्रों में रहने वाले श्रीलंकाई तमिलों के परिणामस्वरूप एक परिवर्तन की कहानी सामने आई है
  - असहाय शरणार्थियों के संसाधन व्यक्तियों में बदलने की कहानी जो वापस लौटने पर राष्ट्र के पुनर्निर्माण में संभावित रूप से योगदान दे सकते हैं।
  - ये सबसे महत्वपूर्ण कुशल मानव संसाधन भी बनेंगे जो आने वाली किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहेंगे।

216. रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट क्या है?

प्रसंग:

- संयुक्त राज्य अमेरिका कांग्रेस ने 12 जून को तिब्बत-चीन विवाद समाधान अधिनियम पारित किया, जिसे तिब्बत समाधान अधिनियम के नाम से जाना जाता है।
- अब इस द्विदलीय विधेयक को राष्ट्रपति जो बिडेन की स्वीकृति का इंतजार है, जिसके बाद इसे कानून का रूप दे दिया जाएगा।
- यह अधिनियम तिब्बत के संबंध में अमेरिका द्वारा लिया गया तीसरा उल्लेखनीय कानून है, इससे पहले तिब्बती नीति अधिनियम या TPA (2002) और तिब्बती नीति एवं समर्थन अधिनियम या TPSA (2020) पारित किया गया था।

रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट क्या है?	पिछले कानून से अलग
• रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट, तिब्बत के बारे में चीनी दुष्प्रचार का मुकाबला करने के लिए धन के उपयोग को अधिकृत करता है, जिसमें तिब्बत के इतिहास, तिब्बती लोगों और दलाई लामा सहित तिब्बती संस्थाओं के बारे में दुष्प्रचार शामिल है। • यह अधिनियम चीन के इस दावे को भी चुनौती देता है कि तिब्बत प्राचीन काल से ही चीन का हिस्सा रहा है। • इसमें चीन से दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों तथा तिब्बती समुदाय के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेताओं के साथ सार्थक और प्रत्यक्ष वार्ता करने का आग्रह किया गया है। • यह तिब्बती लोगों के आत्मनिर्णय और मानवाधिकारों के अधिकार को रेखांकित करता है • यह अधिनियम दो अनुबंधों - नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध - के हस्ताक्षरकर्ता के रूप में चीन के कर्तव्य को नोट करता है जो समान वकालत करते हैं। • रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट का उद्देश्य तिब्बती लोगों की बहुआयामी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान, विशेषकर उनकी विशिष्ट ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई पहचान को मान्यता देना और संबोधित करना है। • अंततः, यह तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र के सटीक भौगोलिक क्षेत्रों को परिभाषित करने के लिए TPA में संशोधन करता है।	• रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट, इससे पहले आए दो अधिनियमों का साहसिक उत्तराधिकारी है। • तिब्बत के बारे में स्पष्ट रूप से अपनी तरह का पहला TPA , तिब्बत पर अमेरिकी नीति को परिभाषित करने में सतर्क रुख अपनाता है। हालांकि इसने तिब्बतियों के साथ दुर्व्यवहार को चिन्हित किया, लेकिन वर्ष 2024 के अधिनियम के विपरीत, इसने चीन के इस दावे को मान्यता दी कि तिब्बत चीन का अभिन्न अंग है। • वर्ष 2002 के अधिनियम ने चीनी सरकार को दलाई लामा के साथ एक "रचनात्मक साझेदार" के रूप में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन तिब्बत के लिए संप्रभुता या स्वतंत्रता को आगे बढ़ाने में उनकी इच्छा की कमी को दोहराया, और इसके बजाय चीन में तिब्बतियों के लिए अधिक स्वायत्तता की उनकी इच्छा पर बल दिया। • TPA ने यह भी स्पष्ट किया कि अमेरिकी सरकार निर्वासित तिब्बती सरकार के साथ कोई आधिकारिक संबंध नहीं रखती है, जिसका नेतृत्व वर्ष 2011 तक स्वयं दलाई लामा कर रहे थे, तथा वह केवल आध्यात्मिक नेता और नोबेल पुरस्कार विजेता के रूप में ही उनसे मुलाकात करेगी। • वर्ष 2020 के TPSA ने PRC और दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों, या तिब्बत के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेताओं के बीच रचनात्मक बातचीत पर जोर दिया, जिसके परिणामस्वरूप एक "बातचीत से समझौता" हुआ, जिससे इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन को प्रोत्साहन मिला। • रिज़ॉल्व तिब्बत एक्ट में इस बात पर जोर दिया गया है कि मतभेदों को दूर करने के लिए बिना किसी "पूर्व शर्त" के ऐसी वार्ता की आवश्यकता है। • TPSA ने यह भी कहा कि दलाई लामा के उत्तराधिकार का मामला चीन की चिंता का विषय नहीं है और इसे तिब्बती बौद्धों पर ही छोड़ देना बेहतर होगा।

217. नई संसद में नागरिक अधिकारों को खतरे में डालने वाले कानूनों को ख़त्म करना चाहिए - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- चूंकि वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद संसद का पुनर्गठन किया जाएगा, इसलिए सभी नागरिकों के लिए न्याय, समानता, स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कानूनों पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए और उन्हें निरस्त किया जाना चाहिए।

कानून पर पुनर्विचार की आवश्यकता

- **नागरिकता संशोधन अधिनियम:** वर्ष 2019 में जब नागरिकता संशोधन विधेयक संसद में पेश किया गया, तो देश भर में प्रस्तावित राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) के साथ जुड़ी चिंताओं को लेकर विरोध प्रदर्शन हुआ।
  - इससे कई भारतीय नागरिकों को मताधिकार से वंचित होना पड़ सकता है।
- गृह मंत्री ने जोर देकर कहा कि NRC को पूरे देश में लागू किया जाएगा, जबकि असम में पायलट प्रोजेक्ट बहुत खराब रहा था, जहां लगभग 6 प्रतिशत निवासियों के नाम अंतिम NRC सूची से बाहर रह गए थे - जिससे ये चिंताएं और बढ़ गईं।
  - यदि इस बहिष्करण दर को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जाए तो करोड़ों भारतीय संभवतः राज्यविहीन हो जाएंगे।
- **आपराधिक कानून विधेयक:** हाल ही में मनमाने ढंग से पारित आपराधिक कानून विधेयकों पर तत्काल पुनर्विचार और निरसन की आवश्यकता है
  - चूंकि इनमें वैवाहिक बलात्कार और राजद्रोह के प्रावधान शामिल हैं, तथा इनमें "पुलिस अधिकारी द्वारा दिए गए किसी भी निर्देश का पालन करने से इनकार करना, विरोध करना, अनदेखा करना या अवहेलना करना" को अपराध मानकर "पुलिस राज" का खतरा पैदा किया गया है।
- **वैवाहिक बलात्कार अपवाद:** भारतीय न्याय संहिता की धारा 63 बलात्कार के अपराध से संबंधित है, लेकिन वैवाहिक बलात्कार के लिए अपवाद प्रदान करती है
- यह उस मौलिक सिद्धांत को कमजोर करता है कि बलात्कार व्यक्तिगत स्वायत्तता और शारीरिक अखंडता का उल्लंघन है, चाहे अपराधी और पीड़ित के बीच कोई भी रिश्ता क्यों न हो। राजद्रोह: मई 2022 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद आईपीसी की धारा 124A (पुराना राजद्रोह कानून) के इस्तेमाल को स्थगित रखा गया था।
- न्यायालय ने सरकार को कानून पर पुनर्विचार करने के लिए समय दिया था। इसके बाद गृह मंत्री ने दावा किया कि भारतीय न्याय संहिता में अपराधों की सूची से राजद्रोह को हटा दिया गया है।
- मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त अधिनियम, 2023: यह अधिनियम चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए चयन समिति की संरचना में परिवर्तन करता है।
- सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्देश की अवहेलना की गई कि मुख्य न्यायाधीश को समिति का हिस्सा होना चाहिए।
- प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता (लोकसभा) और एक मनोनीत केंद्रीय कैबिनेट मंत्री अब चयन करते हैं, जिससे केंद्र सरकार को चयन पर पूरा नियंत्रण मिल जाता है।
- **खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2023:** इस अधिनियम ने केंद्र सरकार को कैडमियम, सेलेनियम, निकल, कोबाल्ट, टिन आदि जैसे कुछ महत्वपूर्ण उच्च मूल्य वाले खनिजों के लिए विशेष रूप से खनन पट्टों और समग्र अन्वेषण लाइसेंसों की नीलामी करने का अधिकार दिया।
- इसने खदानों की जांच और पूर्वेक्षण कार्यों के लिए आवश्यक वन मंजूरी को भी समाप्त कर दिया।
- यह बताना महत्वपूर्ण है कि अधिनियम, सर्वेक्षण के एक भाग के रूप में भूमिगत उत्खनन की अनुमति देता है, जिसे वर्ष 1957 के अधिनियम के तहत प्रतिबंधित किया गया था।
- इस तरह के आक्रामक संचालन के पर्यावरणीय परिणाम गंभीर और अपरिवर्तनीय हो सकते हैं, जो सतत विकास लक्ष्यों को कमजोर करते हैं और पहले से मौजूद पर्यावरणीय सुरक्षा की अवहेलना करते हैं।
- **ट्रांसजेंडर व्यक्ति अधिनियम, 2019** : ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019, महिलाओं के बलात्कार के लिए आजीवन कारावास के विपरीत अधिकतम दो साल की सजा के साथ केवल "यौन शोषण" को मान्यता देता है।
- यह सज़ा अपर्याप्त एवं भेदभावपूर्ण है।

218. 11 उम्मीदवारों ने EVM बर्न मेमोरी सत्यापित करने के लिए आवेदन किया - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- हाल ही में संपन्न हुए वर्ष 2024 के लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनावों में पहली बार 11 उम्मीदवारों ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) की बैलेट यूनिट और कंट्रोल यूनिट तथा वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT) यूनिट की जली हुई मेमोरी के सत्यापन के लिए आवेदन किया है।
- इस अप्रैल माह में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा असफल उम्मीदवारों के लिए सत्यापन का उपाय उपलब्ध कराया गया था।
- अभ्यर्थियों को सत्यापन प्रक्रिया का खर्च स्वयं वहन करना होगा, लेकिन यदि कोई छेड़छाड़ पाई गई तो उन्हें धनराशि वापस कर दी जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश	**सत्यापन के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया**

• EVM-VVPAT प्रणाली को बरकरार रखते हुए और मतपत्रों की वापसी तथा VVPAT पर्चियों की 100% गिनती की याचिका को खारिज करते हुए, अदालत ने भारत के चुनाव आयोग (ECI) को निर्देश दिया कि वह दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वाले उम्मीदवारों को EVM और VVPAT की जली हुई मेमोरी के सत्यापन की अनुमति दे।
  ○ किसी विधानसभा क्षेत्र या लोकसभा क्षेत्र के विधानसभा खंड में 5% तक मशीनें।
• अदालत ने कहा कि उम्मीदवार या उनके प्रतिनिधि "मतदान केंद्र या क्रम संख्या से EVM की पहचान करेंगे" और "सत्यापन के समय उपस्थित रहने का विकल्प उनके पास होगा"।
• सत्यापन के लिए अनुरोध परिणाम घोषित होने के सात दिनों के भीतर किया जाना चाहिए।
• उक्त सत्यापन के लिए वास्तविक लागत या व्यय भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अधिसूचित किया जाएगा, तथा उक्त अनुरोध करने वाला उम्मीदवार ऐसे व्यय का भुगतान करेगा।
• EVM से छेड़छाड़ पाए जाने पर व्यय वापस कर दिया जाएगा
	• ECI ने अभी तक तकनीकी मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) को अंतिम रूप नहीं दिया है।
	• हालांकि 1 जून को ECI ने EVM और VVPAT की जली हुई मेमोरी की जांच और सत्यापन के लिए प्रशासनिक SOP जारी कर दिया है।
	  ○ इस प्रक्रिया के लिए जिला चुनाव अधिकारी (DEO) जिम्मेदार होंगे।

It's about quality

219. पटना उच्च न्यायालय ने बिहार में 65% आरक्षण को रद्द कर दिया - द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- पटना उच्च न्यायालय ने गुरुवार को बिहार सरकार द्वारा सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण 50% से बढ़ाकर 65% करने संबंधी अधिसूचना को रद्द कर दिया।

आरक्षण के लिए 50% की अधिकतम सीमा का इतिहास

- प्रशासन में "दक्षता" सुनिश्चित करने के लिए 50% की अधिकतम सीमा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वर्ष 1992 में इंद्रा साहनी बनाम भारत संघ के ऐतिहासिक निर्णय में लागू की गई थी।
- सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों (SEBC) के लिए 27% आरक्षण को बरकरार रखने वाले 6-3 बहुमत के फैसले ने दो महत्वपूर्ण मिसाल कायम कीं
  - सबसे पहले, इसने कहा कि आरक्षण के लिए अर्हता प्राप्त करने का मानदंड सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ापन है
  - दूसरा, इसने ऊर्ध्वाधर आरक्षण की 50% सीमा को दोहराया जो न्यायालय ने पहले के निर्णयों में निर्धारित की थी-
  - एमआर बालाजी बनाम मैसूर राज्य, 1963, और देवदासन बनाम भारत संघ, 1964।
  - 50% की सीमा तब तक लागू रहेगी जब तक कि "असाधारण परिस्थितियाँ" न हों
- उसके बाद से अनेक मामलों में इंदिरा साहनी मामले में दिए गए फैसले की पुनः पुष्टि की गई है।
- लेकिन बिहार और अन्य राज्यों में 50% की सीमा को तोड़ने के प्रयास भी जारी रहे हैं, और इन्हें काफी राजनीतिक समर्थन भी मिला है।

सीलिंग को कानूनी चुनौती

- 50 % की सीमा को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जा रही है । लंबित चुनौती के बावजूद, जो कानून इस सीमा का उल्लंघन कर सकते थे, उन्हें अदालतों ने खारिज कर दिया है।
- एकमात्र अपवाद वर्ष 2019 में शुरू किया गया आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) के लिए 10% आरक्षण है ।
- नवंबर 2022 में, सुप्रीम कोर्ट की पांच-न्यायाधीशों की पीठ ने EWS आरक्षण को बरकरार रखा, जिसमें कहा गया कि 50% की सीमा केवल SC/ ST और OBC आरक्षण पर लागू होती है, न कि एक अलग आरक्षण पर जो 'पिछड़ेपन' ढांचे के बाहर संचालित होता है, जो एक पूरी तरह से अलग वर्ग है।
- इस अवलोकन से यह सवाल उठने लगा है कि क्या सर्वोच्च न्यायालय स्वयं इंदिरा साहनी मामले को पुनः खोल सकता है।
- 50% की अधिकतम सीमा के आलोचकों का तर्क है कि यह न्यायालय द्वारा खींची गई मनमानी रेखा है, जबकि विधायिका ने लगातार इसे पीछे धकेलने का प्रयास किया है।

समानता का सिद्धांत

- तर्क यह दिया जाता है कि 50% की सीमा का उल्लंघन **समानता के सिद्धांत के विपरीत होगा** , क्योंकि आरक्षण इस नियम का अपवाद है।
- संविधान सभा में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के भाषण को अक्सर इस चेतावनी के रूप में उद्धृत किया जाता है कि बिना किसी शर्त के आरक्षण "समानता के नियम को खत्म कर सकता है"
- हालांकि, एक दृष्टिकोण यह भी है कि आरक्षण समानता के मौलिक अधिकार की एक विशेषता है, और संविधान की मूल संरचना का हिस्सा है।
- वर्ष 2022 के अपने फ़ैसले में, जिसमें NEET में 27% OBC कोटा को बरकरार रखा गया था, SC ने कहा था कि आरक्षण योग्यता के साथ कोई विवाद नहीं है, बल्कि इसके वितरणात्मक परिणामों को बढ़ाता है।
- औपचारिक समानता के स्थान पर वास्तविक समानता के प्रश्न को पुनः प्रस्तुत करने की परीक्षा तब होगी जब सर्वोच्च न्यायालय एक बार फिर इंद्रा साहनी के प्रश्न पर विचार करेगा।

अन्य राज्यों में आरक्षण

- वर्ष 1994 में 76वें संविधान संशोधन ने 50% सीमा का उल्लंघन करने वाले तमिलनाडु आरक्षण कानून को संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल किया।
- नौवीं अनुसूची संविधान के अनुच्छेद 31A के तहत न्यायिक समीक्षा से कानून को "सुरक्षित आश्रय" प्रदान करती है।
- नौवीं अनुसूची में रखे गए कानूनों को संविधान के तहत संरक्षित किसी भी मौलिक अधिकार का उल्लंघन करने के कारण चुनौती नहीं दी जा सकती।
- मई 2021 में, पांच न्यायाधीशों वाली सुप्रीम कोर्ट बेंच ने सर्वसम्मति से मराठा समुदाय को आरक्षण प्रदान करने वाले महाराष्ट्र कानून को असंवैधानिक करार देते हुए रद्द कर दिया था और कहा था कि आरक्षण सीमा 50% से अधिक नहीं हो सकती।
- मराठा आरक्षण लागू होने से राज्य में आरक्षण 68% तक बढ़ सकता था।
- मराठा मुद्दे की तरह ही गुजरात में पटेल, हरियाणा में जाट और आंध्र प्रदेश में कापू के मामले भी हैं।

220. मनी लॉन्ड्रिंग मामलों में जमानत और PMLA के तहत 'ट्विन टेस्ट' - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA) के तहत जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को निचली अदालत द्वारा जमानत दिए जाने के एक दिन बाद, दिल्ली उच्च न्यायालय ने आदेश पर रोक लगा दी।
- ED ने ट्रायल कोर्ट के आदेश को इस आधार पर चुनौती दी कि अदालत PMLA के तहत जमानत देने के लिए 'ट्विन टेस्ट' लागू करने में विफल रही है।

ट्विन टेस्ट क्या है?	ट्विन टेस्ट को कानूनी चुनौतियाँ
• PMLA की धारा 45, जो जमानत से संबंधित है, पहले तो यह कहती है कि कोई भी अदालत इस कानून के तहत अपराधों के लिए जमानत नहीं दे सकती, और फिर कुछ अपवादों का उल्लेख करती है। • प्रावधान में प्रयुक्त नकारात्मक भाषा से पता चलता है कि PMLA के तहत जमानत नियम नहीं बल्कि अपवाद है। • इस प्रावधान के तहत सभी जमानत आवेदनों में सरकारी वकील की बात सुनना अनिवार्य है, और जब अभियोजक जमानत का विरोध करता है, तो अदालत को दोहरा परीक्षण लागू करना होता है। • ये दो शर्तें हैं: (i) कि "यह मानने के लिए उचित आधार हैं कि अभियुक्त ऐसे अपराध का दोषी नहीं है" (ii) कि "जमानत पर रहते हुए उसके द्वारा कोई अपराध करने की संभावना नहीं है"।	• जुड़वां परीक्षण की संवैधानिक वैधता को पहला झटका वर्ष 2017 के निकेश ताराचंद शाह बनाम भारत संघ के फैसले में लगा। ○ दो न्यायाधीशों वाली पीठ ने जमानत प्रावधान को इस आधार पर असंवैधानिक करार देते हुए खारिज कर दिया कि कठोर शर्तें उचित वर्गीकरण नहीं थीं। • 'उचित वर्गीकरण' समानता के अधिकार की एक विशेषता है, जो एक मौलिक अधिकार है। • हालाँकि, बाद के संशोधन द्वारा, संसद ने वित्त अधिनियम, 2018 के माध्यम से इन प्रावधानों को वापस कानून में डाल दिया। • इस पुनः-प्रविष्टीकरण को विभिन्न उच्च न्यायालयों और अंततः सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दी गई, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2022 में विजय मदनलाल चौधरी बनाम भारत संघ के रूप में याचिकाओं का एक समूह सुनवाई के लिए आया।

कानून में वर्तमान स्थिति

- विजय मदनलाल चौधरी के फैसले के बाद भी जमानत शर्तों पर संशोधन को चुनौती देने का एक प्रमुख पहलू अभी भी खुला है: इन संशोधनों को मनी बिल के माध्यम से पारित करना।
- यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय ने विजय मदनलाल चौधरी मामले में अपने फैसले की समीक्षा करने पर सहमति व्यक्त की है, फिर भी यह अभी भी वैध कानून है, क्योंकि इस फैसले पर कोई रोक नहीं है।
- फैसले के अनुसार, सभी अदालतों, मनी लॉन्ड्रिंग अपराधों की सुनवाई करने वाली विशेष अदालतों और संवैधानिक अदालतों द्वारा दोहरे परीक्षण को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए।
- यह नियमित जमानत और अग्रिम जमानत दोनों के लिए समान रूप से लागू होगा।
- हालांकि, अभियुक्त को अभी भी दंड प्रक्रिया संहिता (CrPC) की धारा 436A के तहत लाभ मिल सकता है , जिसके तहत वह विचाराधीन कैदी के रूप में अधिकतम सजा की आधी अवधि पूरी करने के बाद जमानत का हकदार होता है।
- इसका मतलब यह है कि अधिकांश धन शोधन मामलों में, यदि प्रवर्तन निदेशालय साढ़े तीन साल के भीतर मुकदमा पूरा नहीं कर पाता है, तो आरोपी को जमानत मिल जाती है, चाहे दोहरी जांच कुछ भी हो।

221. ओपिओइड के प्रबंधन में योगा महत्वपूर्ण निभाता है -पीआईबी

प्रसंग:

- योग, जिसे आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से पूरे विश्व में प्रचारित किया जा रहा है, में ओपिओइड निर्भरता जैसी समस्याओं को कम करने की क्षमता है।
- एक योग मॉड्यूल विकसित किया गया है जिसका उपयोग ओपियोइड उपयोग विकार (OUD) रोगियों के बीच पदार्थ के उपयोग को कम करने के लिए कम लागत और कम जोखिम वाले सहायक उपचार के रूप में किया जा सकता है।

ओपियोड:

- ओपिओइड प्राकृतिक, अर्ध-सिंथेटिक या कृत्रिम रसायन होते हैं जो शरीर और मस्तिष्क में ओपिओइड रिसेप्टर्स के साथ अंतःक्रिया करते हैं और दर्द की अनुभूति को कम करते हैं।
- यद्यपि ओपिओइड्स और ओपिएट्स शब्दों का प्रयोग कभी-कभी एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है।
- ओपियेट विशेष रूप से अफीम के पौधे से प्राप्त प्राकृतिक यौगिकों को संदर्भित करता है, जैसे हेरोइन या मॉर्फिन, जबकि ओपिओइड प्राकृतिक भी हो सकते हैं या प्रयोगशाला में बनाए जा सकते हैं।
- ओपिओइड उपयोग विकार एक गंभीर पदार्थ उपयोग विकार है।
- निर्भरता अक्सर दर्द से राहत के लिए दिए जाने वाले प्रिस्क्रिप्शन ओपिओइड (कोडीन, मॉर्फिन जैसी दवाएं) या स्ट्रीट ओपिओइड (जैसे हेरोइन, ब्राउन शुगर) पर हो सकती है।
- शरीर ओपिओइड का आदी हो जाता है और इससे गंभीर वापसी के लक्षण जैसे कि आंखों और नाक से पानी आना, शरीर में बहुत दर्द, फ्लू जैसे लक्षण, नींद न आना, चिंता और चिड़चिड़ापन हो सकता है। लंबे समय तक इसके इस्तेमाल से संज्ञान में कमी, यौन रोग, सामाजिक और व्यावसायिक कार्यों में गंभीर कमी आ सकती है और वित्तीय बोझ बढ़ सकता है।
- दर्द नियंत्रण के लिए ओपिओइड का विकल्प ढूंढने के लिए, ओपिओइड के उपयोग को कम करने के लिए योग मॉड्यूल विकसित करने हेतु राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS), बंगलौर द्वारा एक अध्ययन किया गया था।
- DST के योग और ध्यान के विज्ञान और प्रौद्योगिकी (SATYAM) कार्यक्रम के समर्थन से विकसित पदार्थ उपयोग के लिए योग मॉड्यूल का टेली-मोड के माध्यम से आवेदन की व्यवहार्यता के लिए परीक्षण किया गया और अंतर-चिकित्सक विश्वसनीयता स्थापित की गई।
- 9 महीने के अनुवर्ती अध्ययन के साथ प्रारंभिक नैदानिक मामले में, मॉड्यूल को ओपिओइड निर्भरता से पीड़ित रोगियों को राहत पहुंचाने के लिए उपयुक्त पाया गया।
- अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि योग, ओपिओइड निर्भरता वाले लोगों में संयम को बढ़ाने और मादक द्रव्यों के सेवन की गंभीरता को कम करने के लिए एक उपयोगी अतिरिक्त उपकरण हो सकता है।
- इसके अलावा, योग से दर्द, लालसा, चिंता और अवसाद में उल्लेखनीय कमी आई और जीवन की गुणवत्ता और नींद की गुणवत्ता में बेहतर सुधार हुआ।
- इस प्रकार, योग को मादक द्रव्यों के सेवन को कम करने के लिए कम लागत और कम जोखिम वाली सहायक चिकित्सा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

222. भारतीय लोकसभा अध्यक्ष के कर्तव्य - द हिंदू

प्रसंग:

- 18वीं लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के भर्तृहरि महताब को अस्थायी अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

प्रोटेम स्पीकर

- अनुच्छेद 94 में कहा गया है कि लोक सभा का अध्यक्ष लोक सभा के विघटन के बाद उसकी पहली बैठक से ठीक पहले तक अपना पद रिक्त नहीं करेगा।
  - इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अध्यक्ष का पद कभी रिक्त न रहे।
- संविधान के अनुच्छेद 95(1) में प्रावधान है कि जब अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का पद रिक्त हो, तो राष्ट्रपति अध्यक्ष के कर्तव्यों का पालन करने के लिए लोकसभा के किसी सदस्य को नियुक्त करेगा।
- यह शब्द संविधान या लोकसभा के नियमों में नहीं मिलता है, बल्कि यह एक पारंपरिक शब्द है जिसका उल्लेख 'संसदीय कार्य मंत्रालय के कामकाज की पुस्तिका' में मिलता है।
- परंपरा के अनुसार, लोकसभा के सबसे वरिष्ठ सदस्यों में से एक को सरकार द्वारा चुना जाता है, जिसे राष्ट्रपति द्वारा शपथ दिलाई जाती है।
- अस्थायी अध्यक्ष अन्य सांसदों को पद की शपथ दिलाता है तथा पूर्णकालिक अध्यक्ष के चुनाव की अध्यक्षता करता है।

अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव कैसे होता है?

- संविधान के अनुच्छेद 93 में कहा गया है कि लोकसभा अपने अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में दो सदस्यों का चयन करेगी।
- अध्यक्ष का चुनाव राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित तिथि पर होता है।
- स्वतंत्र भारत में सभी अध्यक्ष निर्विरोध चुने गए हैं।
- उपाध्यक्ष का चुनाव अध्यक्ष द्वारा तय की गई तिथि पर होता है।

अध्यक्ष की भूमिका

- कार्य संचालन के अलावा, अध्यक्ष दो महत्वपूर्ण संवैधानिक कार्य करते हैं - विधेयक को धन विधेयक के रूप में प्रमाणित करना और दलबदल के लिए दसवीं अनुसूची के तहत अयोग्यता पर निर्णय लेना।
- लोक सभा के नियमों के अनुसार अध्यक्ष को प्रस्तुत विधेयकों को स्थायी समितियों को भेजने तथा गंभीर अव्यवस्था के कारण सदस्यों को अधिकतम पांच दिन के लिए निलंबित करने की शक्ति प्राप्त है।
- समितियों को विधेयकों को संदर्भित करने की संख्या वर्ष 2009-14 के दौरान 71% से घटकर वर्ष 2019-24 के दौरान 16% हो गई है।
- गठबंधन सरकार की वापसी के साथ, यह उम्मीद की जा रही है कि अध्यक्ष महत्वपूर्ण विधेयकों को जांच के लिए स्थायी समितियों को भेजेंगे।
- वर्ष 2023 के शीतकालीन सत्र के दौरान विपक्षी सांसदों को बड़े पैमाने पर निलंबित भी किया गया।

सम्मेलन

- ब्रिटेन में, अध्यक्ष एक बार अपने पद के लिए चुने जाने के बाद, उस राजनीतिक दल से इस्तीफा दे देता है जिससे वह संबंधित है।
- हाउस ऑफ कॉमन्स के बाद के चुनावों में, वह किसी राजनीतिक दल के सदस्य के रूप में नहीं बल्कि 'पुनः चुनाव चाहने वाले अध्यक्ष' के रूप में चुनाव लड़ता है।
- यह सदन की अध्यक्षता करते समय उसकी निष्पक्षता को दर्शाता है।
- सोमनाथ चटर्जी, जो 14वीं लोकसभा के अध्यक्ष थे, ने वर्ष 2008 में विश्वास मत के दौरान संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) सरकार से समर्थन वापस लेने के बाद अपनी पार्टी (CPM) के निर्देश के बावजूद पद से इस्तीफा न देकर स्वतंत्र रूप से कार्य किया था।
- जबकि दसवीं अनुसूची अध्यक्ष को अपने पद पर चुने जाने पर अपने राजनीतिक दल से इस्तीफा देने की अनुमति देती है, ऐसा आज तक किसी भी अध्यक्ष द्वारा नहीं किया गया है।
- अध्यक्ष के रूप में चुने जाने पर अपने राजनीतिक दलों से इस्तीफा देना स्वतंत्रता का प्रदर्शन करने की दिशा में पहला कदम हो सकता है।

उपसभापति

- उपसभापति एक महत्वपूर्ण संवैधानिक अधिकारी होता है जो अध्यक्ष के पद रिक्त होने या अनुपस्थिति के दौरान पदभार ग्रहण करता है।
- विपक्ष को उपाध्यक्ष का पद देने की परंपरा वर्ष 1991 में शुरू हुई थी।
- इसके बाद 16वीं लोकसभा तक यह क्रम बिना रुके चलता रहा।
- यह संविधान का मखौल था कि 17वीं लोकसभा में कोई उपाध्यक्ष नहीं चुना गया।

223. लोकसभा के नये कार्यकाल में पर्यावरण संबंधी चिंताओं का ध्यान रखना होगा- द हिंदू

प्रसंग:

- सरकार और लोकसभा के लिए नया कार्यकाल शुरू होने के साथ ही, इसमें पर्यावरण संबंधी चिंताओं का ध्यान रखना होगा।
- हालाँकि, हमारे पास कभी भी ऐसी सरकार नहीं रही जिसने पर्यावरण को वास्तव में प्राथमिकता दी हो,
- भारतीय पर्यावरण मंत्री मुख्य रूप से खनन, तेल, कोयला, राजमार्ग और बिजली उद्योगों के कल्याण को लेकर चिंतित रहे हैं।
- भारत गंभीर पर्यावरणीय गिरावट के मुहाने पर खड़ा है, जिसे केवल हरित नीतियों को सचेत रूप से अपनाकर ही रोका जा सकता है, जबकि देश मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य का पीछा कर रहा है।

अधिक भेद्यता

- जलवायु परिवर्तन एक ऐसी चीज है जिसका जिक्र भारत का नेतृत्व अक्सर करता है, लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं देता (सौर ऊर्जा उद्योग को बढ़ावा देने के अलावा)।
  - ऊर्जा की खपत बढ़ने के बावजूद, उत्सर्जन में कटौती के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया है।
- इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के उपचारात्मक पहलू, जिनमें लचीलापन पैदा करना, खाद्य सुरक्षा और आवश्यक वस्तुओं तक पहुंच शामिल है, प्राथमिकताओं में बहुत पीछे रह गए हैं।
- चूंकि बाढ़, अकाल, गर्म हवाएं, जंगल की आग, पानी की कमी और सूखा आम बात हो गई है, इसलिए संवेदनशील आबादी की रक्षा करने और नुकसान को कम करने के लिए आकस्मिक योजनाएं बनानी होंगी।
- भवन निर्माण संबंधी दिशा-निर्देशों को अद्यतन करने से लेकर मैंग्रोव वनों जैसे प्राकृतिक तूफान अवरोधकों को संरक्षित करने, तथा निकासी और पुनर्वास के लिए धन की व्यवस्था करने तक, ऐसे कार्य हैं जिनके लिए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के पास हाल ही में समय नहीं है।
- भारत में प्रति व्यक्ति हरित आवरण विश्व में सबसे कम है।
  - यहां प्रति व्यक्ति केवल 28 पेड़ हैं,
  - पिछले 20 वर्षों में गुणात्मक रूप से महत्वपूर्ण वन क्षेत्र में काफी कमी आई है।
  - वन (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2023 जैसे हालिया कानून को वापस लेने तथा मजबूत नए संरक्षण लागू करने की आवश्यकता है।
- दिल्ली, मुंबई और गंगा के तट पर स्थित टियर 2 और टियर 3 शहरों के महानगरीय केंद्रों में अब वायु प्रदूषण का अस्वीकार्य स्तर है।
  - बेंगलुरु और दिल्ली में पानी खत्म हो रहा है और गरीबों को न्यूनतम पानी पाने के लिए घंटों कतार में खड़ा होना पड़ रहा है।
  - चेन्नई में अड्यार या दिल्ली में यमुना जैसी नदियाँ जो शहरों को जीवन देती थीं, अब खुले नाले बन गई हैं।
- छोटे शहरों में समस्याएं अधिक प्रबंधनीय हैं, लेकिन यदि समय पर हस्तक्षेप न किया गया तो ये महानगरों के समान संकट स्तर पर पहुंच जाएंगे।
- सीवेज ट्रीटमेंट के लिए विशेष रूप से राष्ट्रीय स्तर पर बड़े सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि भारतीय शहर अपने यहां उत्पन्न होने वाले सीवेज का केवल लगभग 28% ही उपचार करते हैं।

हिमालय में विनाश

- जलवायु परिवर्तन का भारत के पर्वतीय क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।
  - ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और कुछ स्थानों पर तो गायब हो गये हैं।
  - इस शताब्दी में उनकी 80% मात्रा लुप्त हो जाने का अनुमान है।
- वर्षा और तापमान का स्वरूप इतना बदल गया है कि उसका अंदाजा लगाना मुश्किल है।
- इससे न केवल पहाड़ों के लोगों की बल्कि उत्तर भारत के अधिकांश लोगों की जल और खाद्य सुरक्षा पर भी असर पड़ता है। जब हज़ारों लद्दाखियों ने सरकारी कार्रवाई की मांग को लेकर भूख हड़तालऔर विरोध प्रदर्शन किया तो शायद इसलिए उनकी अनदेखी की गई क्योंकि उन्होंने मतदान नहीं किया था।
- इसी प्रकार की चिंताएं आर्द्रभूमियों के लिए भी उत्पन्न होती हैं, जिनका महत्व पहले कभी इतना अधिक नहीं था, तथा अन्य सीमांत भूदृश्यों के लिए भी, जो जैव विविधता के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।
- इनमें से अनेक समस्याओं की जड़ में भारत सरकार का हितधारकों और प्रभावित व्यक्तियों की बात सुनने से इनकार करने का पुराना रवैया है।
- पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA) तंत्र अप्रभावी हो गए हैं। विरोधों को दरकिनार कर दिया जाता है, आलोचना को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप तेज़ी से, बिना सोचे-समझे कदम उठाए जाते हैं।
- चारधाम राजमार्ग परियोजना इसका उदाहरण है।
  - छोटे-छोटे पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) के बीच से गुजरी इस भव्य योजना ने उत्तराखंड की नदी घाटियों को अपूरणीय क्षति पहुंचाई है।

वास्तविक संरक्षण बहाल करें

- वाणिज्यिक हितों से प्रेरित गलत नीतियों, जैसे हरित ऋण और प्रतिपूरक वनरोपण, ने वास्तविक संरक्षण प्रयासों का स्थान ले लिया है।
  - सतत विकास का अर्थ यह नहीं है कि सरकार द्वारा केवल व्यावसायिक रूप से लाभदायक कदम ही उठाए जाएं।
  - वास्तविक पर्यावरणीय कानून शासन सुनिश्चित करने के लिए प्रवर्तन तंत्रों और निकायों को भी अधिक सशक्त बनाने की आवश्यकता है।
- प्रमुख राजनीतिक दलों के चुनाव घोषणापत्रों में इन मुद्दों का न होना बेहद निराशाजनक था।
- यदि सरकार को वास्तव में लोगों का संरक्षक बनना है, तो उसे देश के भौतिक स्वास्थ्य पर गंभीरता से विचार करना शुरू करना होगा।

224. 18वीं लोकसभा का सत्र शुरू: भर्तृहरि महताब होंगे लोकसभा प्रोटेम स्पीकर- इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- 18वीं लोकसभा का पहला सत्र शुरू होगा।
- सदन द्वारा अपना विधायी कार्य आरंभ करने से पहले, नवनिर्वाचित सदस्यों को संसद सदस्य (सांसद) की शपथ लेनी होगी, जिसका संविधान में प्रावधान है।

मुख्य बिंदु

- दिन की शुरुआत राष्ट्रपति भवन में होगी, जहाँ ओडिशा के कटक से लगातार सातवीं बार चुने गए भर्तृहरि महताब राष्ट्रपति के सामने लोकसभा सांसद के रूप में शपथ लेने वाले पहले व्यक्ति होंगे।
- राष्ट्रपति ने उन्हें नए अध्यक्ष के चुनाव तक संविधान के अनुच्छेद 95(1) के तहत प्रोटेम स्पीकर के कर्तव्यों का दायित्व सौंपा है। अपने सहयोगियों के शपथ लेने के बाद महताब सदन की अध्यक्षता करेंगे।

सांसद का कार्यकाल

- लोक सभा सांसद का पांच साल का कार्यकाल तब शुरू होता है जब भारत का चुनाव आयोग (ECI) जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 73 के अनुसार परिणाम घोषित करता है।
- उस दिन से, सांसद निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में कुछ अधिकारों के लिए पात्र होते हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें वर्ष 2024 के आम चुनावों के बाद ECI अधिसूचना की तारीख से अपना वेतन और भत्ते मिलना शुरू हो जाते हैं, ECI ने 6 जून को परिणाम घोषित किए गए थे।

लोकसभा में शपथ ग्रहण

- हालाँकि, इस नियम का एक अपवाद भी है। कोई व्यक्ति संसद में निर्वाचित हुए बिना भी मंत्री बन सकता है।
- उनके पास लोकसभा या राज्यसभा में सीट सुरक्षित करने के लिए छह महीने का समय होता है। इस दौरान वे सदन की कार्यवाही में भाग तो ले सकते हैं, लेकिन वोट नहीं दे सकते।

संसदीय शपथ क्या है?

- संविधान की तीसरी अनुसूची में संसदीय शपथ का अध्याय शामिल है।

सांसद शपथ कैसे लेते हैं?

- शपथ लेने या प्रतिज्ञान लेने के लिए बुलाए जाने से पहले सांसदों को अपना निर्वाचन प्रमाण पत्र लोकसभा स्टाफ को प्रस्तुत करना होगा।

क्या जेल में बंद सांसद शपथ ले सकते हैं?

- संविधान में यह प्रावधान है कि यदि कोई सांसद 60 दिनों तक संसद में उपस्थित नहीं होता है, तो उसकी सीट रिक्त घोषित की जा सकती है।
- अदालतों ने इस आधार का उपयोग जेल में बंद सांसदों को संसद में शपथ लेने की अनुमति देने के लिए किया है।
- उदाहरण के लिए, जून 2019 में पिछली लोकसभा के शपथ ग्रहण के दौरान उत्तर प्रदेश के घोसी से सांसद अतुल कुमार सिंह गंभीर आपराधिक आरोपों के चलते जेल में थे।

225. PESA ने भारत में वन संरक्षण को कैसे बढ़ावा दिया- द हिंदू

प्रसंग:

- भारत में संरक्षण के प्रति नीतिगत दृष्टिकोण लंबे समय से दो प्रकार के संघर्षों से जूझ रहा है: संरक्षण बनाम स्थानीय समुदायों द्वारा संसाधन निष्कर्षण, तथा संरक्षण बनाम 'आर्थिक विकास'।
- यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि राजनीतिक शक्ति का केंद्रीकरण जितना अधिक होगा, राष्ट्रीय और राज्य के अभिजात वर्ग की बात उतनी ही अधिक होगी, जो स्थानीय समुदायों के हितों की अपेक्षा बड़ी पूंजी के हितों को प्राथमिकता देगा।
  - खनन, विद्युत परियोजनाओं, वाणिज्यिक लकड़ी, बड़े बांधों आदि के कारण होने वाली वनों की कटाई, वन समुदायों के संरक्षण और/या आजीविका पर हावी हो सकती है, जो भारत में एक उल्लेखनीय घटना है।
  - संरक्षण संबंधी पहल ऊपर से नीचे की ओर दृष्टिकोण अपनाएगी, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय समुदायों की पारंपरिक वन भूमि तक पहुंच समाप्त हो जाएगी।

- हाशिए पर पड़े समुदायों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रदान करने वाला नीतिगत दृष्टिकोण वन संरक्षण को बढ़ावा देता है, साथ ही उनके आर्थिक हितों को भी सुरक्षित रखता है
- विकेंद्रीकरण और लोकतंत्रीकरण के संयोजन का मामला, जहां हाशिए पर पड़े स्थानीय समुदायों को न केवल प्रतीकात्मक राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्राप्त होता है, बल्कि निर्णय लेने और संसाधन प्रबंधन दोनों में वास्तविक बात होती है।

कार्यप्रणाली

- राजनीतिक प्रतिनिधित्व का डेटा-संचालित अध्ययन: पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम (PESA)।
- PESA स्थानीय सरकार परिषदों को अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तारित करता है।
- संविधान की पांचवीं अनुसूची के तहत, मुख्य रूप से जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों को 'अनुसूचित क्षेत्र' के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो एक क्षेत्रीय पदनाम है जो अनुसूचित जनजातियों (ST) के प्रथागत अधिकारों को मान्यता देता है।
- वर्ष 1992 में पारित 73वें संशोधन ने गैर-अनुसूचित क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन पंचायती राज संस्थाओं (PRI) को औपचारिक रूप दिया; इसने "ST के लिए अनिवार्य प्रतिनिधित्व" के बिना ऐसा किया।
- हालाँकि, PESA, 1996 ने इसे एक कदम आगे बढ़ाया:
  - एक चुनावी कोटा पेश किया गया जिसके तहत सभी अध्यक्ष पदों के साथ-साथ प्रत्येक स्थानीय सरकारी परिषदों में कम से कम आधी सीटें ST व्यक्तियों के लिए आरक्षित होंगी।"
  - संयोगवश, जिन राज्यों में PESA को ठीक से क्रियान्वित नहीं किया गया है, जैसे कि गुजरात, वहां सबसे आम विफलता ग्राम सभा समितियों में अनुसूचित जनजातियों के अनिवार्य प्रतिनिधित्व का अभाव रही है।

न्यायसंगत प्रतिनिधित्व

- समय के साथ वन क्षेत्रों में वृक्षों और वनस्पतियों की वृद्धि और कमी पर नज़र रखना,
  - यह पाया गया कि "ST के लिए औपचारिक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने से वृक्ष छत्र में प्रति वर्ष औसतन 3% की वृद्धि हुई और साथ ही वनों की कटाई की दर में कमी आई।"
- अध्ययन से यह भी पता चला कि वृक्षों की संख्या में वृद्धि और वनों की कटाई में कमी केवल "PESA चुनावों की शुरूआत के बाद ही शुरू हुई, जिसमें अनुसूचित जनजातियों के लिए कोटा अनिवार्य किया गया।"
  - दूसरे शब्दों में, वर्ष 1993 से लागू की गई PRI या स्थानीय स्वशासन की उपस्थिति से, "अनुसूचित जनजातियों के लिए अनिवार्य प्रतिनिधित्व के बिना, कोई संरक्षण प्रभाव नहीं पड़ा।"
  - अनुसूचित जनजातियों के पास वृक्षों की रक्षा करने के लिए एक आर्थिक प्रोत्साहन था, जिसकी उन्हें अपनी आजीविका के लिए गैर-लकड़ी वन उपज से आवश्यकता थी, एक निर्भरता जिसने उन्हें वाणिज्यिक लकड़ी और खनन के प्रति प्रतिकूल बना दिया।
- गुणात्मक और मात्रात्मक साक्ष्यों से पता चलता है कि PESA से पहले, खदानों के नज़दीकी इलाकों में वनों की कटाई की दर ज़्यादा थी। लेकिन PESA चुनावों की शुरुआत के बाद खदानों के नज़दीकी PESA गांवों में वनों की कटाई में काफ़ी कमी आई।

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण पर

- PESA की तुलना अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (FRA) से की गई है, जिसका उद्देश्य वन भूमि पर अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों को मजबूत करना है।
  - यह पाया गया कि FRA, 2006 का संरक्षण पर "PESA के कारण हुए प्रभावों के अलावा कोई अतिरिक्त प्रभाव नहीं था।"
- निष्कर्ष रूप में, हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए अनिवार्य राजनीतिक प्रतिनिधित्व एक संस्थागत तंत्र है जो संरक्षण में बेहतर परिणाम दे सकता है।
- अलग-अलग अधिदेशों वाली कई संस्थाओं की बजाय एक एकल संस्था महत्वपूर्ण है क्योंकि यह "विकास और संरक्षण के दोहरे नीतिगत उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाने के तरीके को पहचानने में बेहतर होगी;"
- वनों में रहने वाले अनुसूचित जनजाति समुदाय भारत में सबसे अधिक गरीब और राजनीतिक रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों में से एक हैं।

226. जम्मू-कश्मीर का शत्रु एजेंट अध्यादेश क्या है?

प्रसंग:

- जम्मू-कश्मीर के DGP ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों की सहायता करने वालों पर शत्रु एजेंट अध्यादेश, 2005 के तहत जांच एजेंसियों द्वारा मुकदमा चलाया जाना चाहिए।
- यह कानून गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (UAPA) से अधिक कठोर है और इसमें आजीवन कारावास या मृत्युदंड की सजा का प्रावधान है।
  - जिन लड़ाकों को जांच के दायरे में नहीं लाया जा सकता, उन्हें गोली मार दी जाती है।
  - जो लोग उनका समर्थन करेंगे, उनके साथ दुश्मन एजेंट जैसा व्यवहार किया जाएगा।

शत्रु एजेंट अध्यादेश क्या है?	अध्यादेश के तहत मुकदमे कैसे चलाए जाते हैं?
• जम्मू-कश्मीर शत्रु एजेंट अध्यादेश पहली बार वर्ष 1917 में जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन डोगरा महाराजा द्वारा जारी किया गया था। इसे 'अध्यादेश' इसलिए कहा जाता है क्योंकि डोगरा शासन के दौरान बनाए गए कानूनों को अध्यादेश कहा जाता था। • अध्यादेश के अनुसार, ○ "जो कोई भी दुश्मन का एजेंट है या दुश्मन की सहायता करने के इरादे से काम करता है, ○ या भारतीय सेनाओं के सैन्य या हवाई अभियानों में बाधा डालता है या जीवन को खतरे में डालता है, तो उसे मृत्युदंड या आजीवन कारावास या कठोर कारावास की सजा दी जाएगी, जिसकी अवधि 10 वर्ष तक हो सकेगी और साथ ही उसे जुर्माना भी देना होगा। • वर्ष 1947 में विभाजन के बाद, इस अध्यादेश को तत्कालीन राज्य में कानून के रूप में शामिल किया गया तथा इसमें संशोधन भी किया गया। • वर्ष 2019 में जब संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त किया गया, तो जम्मू-कश्मीर के कानूनी ढांचे में भी कई बदलाव हुए। • जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम पारित किया गया, जिसमें राज्य के कानूनों को सूचीबद्ध किया गया, जो जारी रहेंगे, जबकि कई अन्य को निरस्त कर दिया गया और उनके स्थान पर भारतीय कानून लागू किये गये। • जबकि शत्रु एजेंट अध्यादेश और सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम जैसे सुरक्षा कानून बने रहे; ○ रणबीर दंड संहिता को भारतीय दंड संहिता से प्रतिस्थापित कर दिया गया। ○ वन अधिनियम, 2006 और SC ST (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 सहित अन्य कानूनों को जम्मू-कश्मीर में भी लागू किया गया।	• शत्रु एजेंट अध्यादेश के तहत मुकदमा एक विशेष न्यायाधीश द्वारा चलाया जाता है, जिसे "सरकार द्वारा उच्च न्यायालय के परामर्श से" नियुक्त किया जाता है। • अध्यादेश के तहत, अभियुक्त अपने बचाव के लिए तब तक वकील नहीं रख सकता जब तक कि अदालत की अनुमति न हो। • फैसले के खिलाफ अपील का कोई प्रावधान नहीं है, और विशेष न्यायाधीश के फैसले की समीक्षा केवल "सरकार द्वारा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों में से चुने गए व्यक्ति द्वारा की जा सकती है और उस व्यक्ति का निर्णय अंतिम होगा"। • ऐसे अनेक कश्मीरी हैं जिन पर शत्रु एजेंट अध्यादेश के तहत मुकदमा चलाया गया है या उन्हें सजा सुनाई जा चुकी है।

227. केंद्र इस वर्ष के अंत तक भारतीय मध्यस्थता परिषद (MCI) की स्थापना करेगा - - द प्रिंट

समाचार:

- सरकार द्वारा कारोबार को आसान बनाने के लिए इस वर्ष के अंत तक भारतीय मध्यस्थता परिषद (MCI) की स्थापना किए जाने की उम्मीद है।

मुख्य बिंदु	व्यवसाय में मध्यस्थता क्यों महत्वपूर्ण है?
• इस पहल का उद्देश्य विवादों, विशेषकर व्यापार से संबंधित विवादों, का न्यायालय प्रणाली के बाहर समाधान सुगम बनाना है। • इस वर्ष की शुरुआत में,IBBI द्वारा गठित एक समिति ने न्यायालय के बाहर विवादों के समाधान में तेजी लाने के लिए स्वैच्छिक मध्यस्थता ढांचे की शुरूआत का सुझाव दिया था। • यह ढांचा न्यायालयों पर बोझ को भी कम कर सकता है, ठीक उसी तरह जैसे सरकार द्वारा 100 से अधिक कानूनी प्रावधानों को अपराधमुक्त करने का लक्ष्य इसी लक्ष्य को प्राप्त करना है। • प्रस्तावित MCI की स्थापना मध्यस्थता अधिनियम के तहत की जाएगी, जिसे पिछले वर्ष अधिनियमित किया गया था। • बिजनेस-डेली ने दावा किया है की राज्यसभा में किए गए खुलासे के अनुसार, इस अधिनियम के तहत मध्यस्थता कार्यवाही को शुरू होने के 180 दिनों के भीतर पूरा करना आवश्यक है • परिषद मध्यस्थता के लिए नियम निर्धारित करेगी और मध्यस्थों को सशक्त बनाएगी। • MCI मान्यता प्राप्त संस्थानों के माध्यम से मध्यस्थों की शिक्षा, मूल्यांकन और प्रमाणन की देखरेख करेगा। यह मध्यस्थों के आचरण के लिए मानक भी स्थापित करेगा और मध्यस्थता सेवा प्रदाताओं को मान्यता देगा। • परिषद में एक अध्यक्ष और दो सदस्य होंगे, जो अधिनियम में निर्दिष्ट मध्यस्थता में विशेषज्ञता रखते होंगे। • इसमें एक मुख्य कार्यकारी अधिकारी और केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त वाणिज्य एवं उद्योग के किसी मान्यता प्राप्त निकाय का एक प्रतिनिधि भी शामिल होगा।	• मध्यस्थता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मध्यस्थ विवादित पक्षों को अदालत के बाहर समझौते तक पहुंचने में मदद करता है। • न्यायालय के बाहर विवाद समाधान के अन्य तरीकों के विपरीत, मध्यस्थता के परिणामस्वरूप कोई बाध्यकारी निर्णय या निर्णय नहीं निकलता है। • इसके बजाय, मध्यस्थ पक्षों को पारस्परिक रूप से संतोषजनक समझौते तक पहुंचने में सहायता करता है। • पिछले वर्ष पारित मध्यस्थता अधिनियम के अनुसार, मध्यस्थता कार्यवाही प्रारम्भ होने के 180 दिनों के भीतर पूरी करना अनिवार्य है। • इस कानून के तहत MCI की स्थापना की जाएगी। • जैसा कि बताया गया है, परिषद मान्यता प्राप्त संस्थानों के माध्यम से मध्यस्थों के प्रशिक्षण और प्रमाणन के लिए भी जिम्मेदार होगी। • वर्तमान में, मध्यस्थता आम तौर पर केवल तभी की जाती है जब कानून द्वारा इसकी आवश्यकता होती है, जैसे कि वर्ष 2015 के वाणिज्यिक न्यायालय अधिनियम के तहत, जो यह अनिवार्य करता है कि पक्ष अदालत में जाने से पहले मध्यस्थता का प्रयास करें

228. लोकसभा में विपक्ष के नेता की भूमिका - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- लोकसभा में 10 वर्षों से रिक्त पड़े विपक्ष के नेता के पद पर अंततः नियुक्ति हो गई है।

लोक सभा और राज्य सभा में विपक्ष के नेता	लोकसभा में विपक्ष के नेता: पद, भूमिका, जिम्मेदारियाँ
• विपक्ष के नेता की स्थिति को आधिकारिक तौर पर संसद में विपक्ष के नेताओं के वेतन और भत्ते अधिनियम, 1977 में वर्णित किया गया था। • अधिनियम में विपक्ष के नेता को, यथास्थिति, राज्य सभा या लोक सभा के सदस्य के रूप में वर्णित किया गया है, जो उस समय, उस सदन में सरकार के विपक्षी दल का नेता होता है, जिसकी संख्या सबसे अधिक होती है और जिसे राज्य सभा के सभापति या लोक सभा के अध्यक्ष द्वारा मान्यता दी जाती है। • कुछ स्वयंभू विशेषज्ञों द्वारा अक्सर एक रहस्यमय नियम का हवाला दिया जाता है, जिसके अनुसार किसी भी पार्टी को सदन में कम से कम 10 प्रतिशत सदस्यों का समर्थन प्राप्त होना चाहिए, तभी अध्यक्ष किसी व्यक्ति को विपक्ष के नेता के रूप में मान्यता दे सकते हैं।	• विपक्ष का नेता अध्यक्ष के बाईं ओर अगली पंक्ति में बैठता है, और उसे औपचारिक अवसरों पर कुछ विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं, जैसे कि निर्वाचित अध्यक्ष को मंच तक ले जाना। • विपक्ष का नेता संसद के दोनों सदनों में राष्ट्रपति के अभिभाषण के दौरान भी अगली पंक्ति में सीट पाने का हकदार है। • विपक्ष के नेता का मुख्य कर्तव्य सदन में विपक्ष की आवाज़ बनना है। • वर्ष 2012 में संसद पर प्रकाशित एक आधिकारिक पुस्तिका में कहा गया है कि लोकसभा में विपक्ष के नेता को "एक छाया प्रधानमंत्री के रूप में माना जाता है, जिसके पास एक छाया मंत्रिमंडल होता है, जो सरकार के इस्तीफ़ा देने या सदन में हारने की स्थिति में प्रशासन संभालने के लिए तैयार रहता है।" • विपक्ष का नेता CBI के निदेशक, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त और मुख्य सूचना आयुक्त, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों तथा लोकपाल जैसे प्रमुख पदों पर नियुक्ति के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समितियों में विपक्ष का प्रतिनिधि होता है। • वरीयता क्रम में, लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष के नेता, केंद्रीय कैबिनेट मंत्रियों, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव, नीति आयोग के उपाध्यक्ष, पूर्व प्रधानमंत्रियों और मुख्यमंत्रियों के साथ सातवें स्थान पर आते हैं।

229. म्यांमार पर एक प्रगतिशील भारतीय नीति की रूपरेखा- द हिंदू

प्रसंग:

- तीन साल बाद भी म्यांमार की सेना, जिसने फरवरी 2021 में निर्वाचित नागरिक सरकार को उखाड़ फेंका था, अपने ही लोगों की हत्या, उन्हें अपंग बनाना और उन्हें विस्थापित करना जारी रखे हुए है।
- भारत ने इस शासन के साथ औपचारिक संबंध बनाए रखे हैं, जिसने अब तक 5,000 से अधिक लोगों की हत्या की है और लगभग 2.5 मिलियन लोगों को विस्थापित किया है।

मुख्य बिंदु

- एक प्रमुख लोकतंत्र के रूप में भारत को म्यांमार में लोकतंत्र और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने के लिए अपनी स्थिति का लाभ उठाना चाहिए।
- उनका तर्क है कि यह दृष्टिकोण भारत के दीर्घकालिक लक्ष्यों के साथ बेहतर तालमेल रखता है तथा इसकी क्षेत्रीय स्थिति को मजबूत करता है।

परिवर्तन हेतु सिफ़ारिशें:

- **लोकतंत्र का समर्थन** : भारत म्यांमार के लोकतंत्र समर्थक आंदोलन की सहायता के लिए अपने लोकतांत्रिक अनुभव का उपयोग कर सकता है।
- इसमें राष्ट्रीय एकता सरकार और अन्य प्रतिरोध समूहों को प्रशिक्षण और ज्ञान साझा करना शामिल हो सकता है।
- **सैन्य सहायता समाप्त करना** : भारत को तुरंत ही सैनिक शासकों को हथियार बेचना तथा सैन्य सहायता देना बंद कर देना चाहिए, क्योंकि इन संसाधनों का उपयोग नागरिकों को दबाने के लिए किया जाता है।
- **मानवीय सहायता:** भारत म्यांमार में संघर्ष प्रभावित नागरिकों को सहायता पहुंचाने के लिए सीमा पार मानवीय गलियारे स्थापित कर सकता है। इसमें फ्री मूवमेंट रेजीम (FMR) को पुनर्जीवित करना और स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों के साथ काम करना शामिल हो सकता है।
- **शरणार्थियों की सुरक्षा:** भारत को म्यांमार से भाग रहे शरणार्थियों को हिरासत में लेना और निर्वासित करना बंद करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय कानून और मानवीय सिद्धांत यह तय करते हैं कि उन्हें अवैध अप्रवासी नहीं बल्कि सुरक्षा चाहने वाले शरणार्थी के रूप में माना जाना चाहिए।

- **समावेशी शरणार्थी नीतियों को बढ़ावा देना** : सरकार को अन्य देशों में अपनाई गई सर्वोत्तम गतिविधिओं को अपनाते हुए तथा अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करते हुए शरणार्थियों के लिए मानवीय व्यवहार और आश्रय सुनिश्चित करना चाहिए।
- अधिक मूल्य-संचालित दृष्टिकोण अपनाकर भारत अपने सामरिक हितों को लोकतंत्र और मानवाधिकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ बेहतर ढंग से संतुलित कर सकता है।

230. न्यायालय ने हिमालय के विकास का मार्ग प्रशस्त किया - द हिन्दू

प्रसंग:

- भारतीय हिमालयी क्षेत्र (IHR) के महत्व के बावजूद, विशेष विकास आवश्यकताओं और IHR में अपनाए जा रहे विकास मॉडल के बीच हमेशा से ही मतभेद रहा है।
- भारत का सर्वोच्च न्यायालय अपने हालिया निर्णयों के माध्यम से अधिक मजबूत अधिकार-आधारित व्यवस्था की ओर अग्रसर होता दिख रहा है, जहाँ सतत विकास एक मौलिक अधिकार होगा।
- तेलंगाना राज्य और अन्य बनाम मोहम्मद अब्दुल कासिम (मृत्यु) प्रति एलआरएस में न्यायालय ने कहा था कि समय की मांग है कि पर्यावरण के प्रति पारिस्थितिकी केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाया जाए, जिसमें प्रकृति को केंद्र में रखा जाए।

वर्तमान विकास मॉडल

- IHR में अपनाया जा रहा वर्तमान विकास मॉडल इस दृष्टिकोण का पूर्णतः उल्लंघन है।
  - इन नदियों और झरनों के अधिकारों की कोई परवाह किए बिना जलविद्युत संयंत्रों की बंपर पैदावार।
  - विकास के नाम पर मौजूदा पहाड़ी सड़कों को चार लेन तक बढाना
- हिमाचल प्रदेश में 2023 में आने वाली बाढ़ पर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा आपदा के बाद की आवश्यकता आकलन रिपोर्ट में, आश्चर्यजनक रूप से, कई मामलों में मानदंडों, विनियमों और यहां तक कि अदालती आदेशों का उल्लंघन करते हुए बड़े पैमाने पर निर्माण की पहचान की गई है।
- तीस्ता बांध का टूटना तथा हिमाचल प्रदेश में वर्ष 2023 में होने वाली मानसून बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं, हमारे विकास मॉडल द्वारा पहाड़ों में पर्यावरण को पहुंचाई जा रही क्षति की स्पष्ट याद दिलाती हैं।

अधिकार	वहनीयता
• अशोक कुमार राघव बनाम भारत संघ और अन्य नामक जनहित याचिका (PIL) के एक अन्य मामले में। ○ सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार और याचिकाकर्ता से आगे का रास्ता सुझाने को कहा ताकि न्यायालय हिमालयी राज्यों और कस्बों की वहन क्षमता के संबंध में निर्देश पारित कर सके। • न्यायालय न केवल जागरूक है बल्कि प्रजातियों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध भी है और उसने ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की रक्षा के लिए "प्रतिक्रियाशील नहीं" बल्कि सक्रिय उपाय करने के महत्व को रेखांकित किया है। • ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के मामले में न्यायालय ने इस देश के लोगों के जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त होने के अधिकार को मान्यता दी है। • न्यायालय ने पिछले आदेश में संशोधन किया, जिसमें भारतीय वन्यजीव संस्थान की रिपोर्ट के बावजूद बहुत बड़े क्षेत्र पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया था • न्यायालय ने निर्णय में भूमिगत विद्युत पारेषण लाइनों की अव्यवहार्यता को स्पष्ट किया है। • वास्तव में, न्यायालय ने मौलिक अधिकारों और मानवाधिकारों के बीच अन्तर्विभाजकता को समझाने के लिए अनेक अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय दायित्वों के उदाहरणों के साथ विस्तार से समझाया है। • सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के बिना, जो स्थिर हो और जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं से अप्रभावित हो, जीवन का अधिकार पूरी तरह से साकार नहीं हो सकता।	• यह निश्चित है कि जब तक इंफ्रास्ट्रक्चर सतत और भरोसेमंद नहीं होगा, तब तक यह लोगों के विकास लक्ष्यों की प्राप्ति का आधार नहीं बन सकता। • इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थिरता का अनिवार्यतः यह अर्थ है कि यह जलवायु परिवर्तन और उसके परिणामस्वरूप होने वाली आपदाओं के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति संधारणीय है। • यह देश भर में लोगों के लिए समानता, समता और विभिन्न अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है, जैसा कि संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 में उल्लेखित है। • आपदाओं से सामाजिक असमानता भी बढ़ती है, क्योंकि गरीब लोग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं तथा वे इसके परिणामों से निपटने के लिए अपर्याप्त रूप से तैयार होते हैं। • सतत विकास के मार्ग पर चलना भी एक मौलिक अधिकार कहा जा सकता है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से मुक्त रहने के अधिकार का एक स्वाभाविक परिणाम या अभिन्न अंग या उप-समूह है।

आगे की राह

- आपदाओं और अनियमित विकास के बीच अंतर्संबंध तेजी से स्पष्ट और दृश्यमान हो गया है।
- आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता यह है कि विकास योजना में आपदा प्रबंधन को शामिल किया जाए, रोकथाम और लचीलेपन दोनों के दृष्टिकोण से है।
- विकास के नाम पर हमारे द्वारा की गई गतिविधियां, जिनमें अधिकांश मामलों में प्रकृति की पूर्ण उपेक्षा की गई है, प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न इन अप्राकृतिक आपदाओं के लिए जिम्मेदार हैं।

- विकास योजनाएं, नीतियां और कानून भी इन आपदाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- विभिन्न प्राधिकरणों के नियोजन चरण में समन्वय की तत्काल आवश्यकता है, ताकि जब किसी विकास की योजना बनाई जाए, तो आपदा और जलवायु लचीलेपन से संबंधित सभी चिंताओं को भी ध्यान में रखा जा सके।
- हमें यह भी चाहिए कि विज्ञान, नीति और कार्रवाई एक दूसरे के अनुरूप हों, तथा इसमें नीति निर्माताओं, योजनाकारों, वैज्ञानिक समूह और समुदायों सहित सभी की भागीदारी के साथ एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया जाए।

231. महाराष्ट्र के जल संकट का विश्लेषण - द हिंदू

प्रसंग:

- पिछले वर्ष कमजोर मानसून के बाद महाराष्ट्र सरकार ने राज्य के कई हिस्सों को सूखाग्रस्त घोषित कर दिया था।
- यह स्थिति राज्य के तटीय क्षेत्रों से बिल्कुल विपरीत है, जहां अक्सर अत्यधिक वर्षा होती है, जिसके कारण भयंकर बाढ़ आती है।

वर्षा-छाया प्रभाव

- मराठवाड़ा पश्चिमी घाट के वर्षा-छाया क्षेत्र में स्थित है।
- जब अरब सागर से आने वाली नम हवाएँ इन पहाड़ों से टकराती हैं, तो वे ऊपर उठती हैं और ठंडी हो जाती हैं, जिससे पश्चिमी हिस्से में भारी वर्षा (2,000-4,000 मिमी) होती है।
- लेकिन जब तक ये हवाएँ घाटों को पार करके पश्चिमी महाराष्ट्र और मराठवाड़ा में उतरती हैं, तब तक वे अपनी अधिकांश नमी खो देती हैं, जिससे मराठवाड़ा बहुत अधिक शुष्क (600-800 मिमी) हो जाता है।
- IIT गांधीनगर के शोधकर्ताओं द्वारा 2016 में किए गए एक अध्ययन में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन मध्य महाराष्ट्र में स्थिति को और खराब कर रहा है।
- हाल ही में इस क्षेत्र में सूखे की गंभीरता और आवृत्ति में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है।
- परिणामस्वरूप, मराठवाड़ा और उत्तरी कर्नाटक राजस्थान के बाद भारत में दूसरे सबसे शुष्क क्षेत्र के रूप में उभरे हैं।

मराठवाड़ा क्षेत्र में गन्ने की फसल

- मराठवाड़ा की कृषि पद्धतियाँ कम वर्षा के लिए उपयुक्त नहीं हैं।
- इस क्षेत्र के जल संकट में एक प्रमुख योगदानकर्ता गन्ना खेती है।
- गन्ने को अपने बढ़ते मौसम में 1,500-2,500 मिमी पानी की आवश्यकता होती है, इसे लगभग हर दिन सिंचाई की भी आवश्यकता होती है।
- वर्ष 1950 और वर्ष 2000 के दशक के बीच गन्ने की खेती का क्षेत्रफल लगातार बढ़ता रहा, लेकिन पिछले दशक में यह स्थिर हो गया।
- आज, यह फसल क्षेत्र के कुल फसल क्षेत्र का 4% है और सिंचाई के पानी का 61% खपत करती है।
- परिणामस्वरूप, ऊपरी भीमा बेसिन में नदी का औसत बहाव लगभग आधा हो गया है।
- गन्ने के मूल्य निर्धारण और बिक्री के लिए लंबे समय से चल रहे सरकारी समर्थन ने गन्ने की सिंचाई का विस्तार किया है, तथा अधिक पौष्टिक फसलों की सिंचाई को सीमित कर दिया है।
- दिसंबर 2023 से सरकार गन्ने के रस पर आधारित इथेनॉल उत्पादन को बढ़ावा दे रही है , जो पानी की कमी वाले इस क्षेत्र के लिए शायद समझदारी नहीं है
  - महाराष्ट्र में उगाई जाने वाली 82% चीनी कम वर्षा वाले क्षेत्रों से आती है।
- मराठवाड़ा में मुख्य रूप से चिकनी काली मिट्टी है, जिसे स्थानीय रूप से "रेगुर" कहा जाता है।
- यह उपजाऊ है और नमी को अच्छी तरह से बनाए रखता है। हालांकि, इसमें घुसपैठ की दर कम है: जब बारिश होती है, तो पानी या तो जमा हो जाता है या बह जाता है, लेकिन भूजल को रिचार्ज करने के लिए नीचे नहीं जाता है।
- यहां तक कि मराठवाड़ा में भी जल की कमी एक समान नहीं है।
  - ऐसा इसलिए है क्योंकि भूजल धीरे-धीरे ऊंचे क्षेत्रों से घाटियों की ओर बढ़ता है।
  - ऊंचे इलाकों में स्थित कुएं मानसून के कुछ महीनों बाद सूख जाते हैं और यहीं पर पानी की कमी सबसे अधिक होती है।

सुझावात्मक उपाय

- पारंपरिक जलग्रहण प्रबंधन कार्य (जैसे जल संरक्षण संरचनाएं जैसे समोच्च खाइयां, मिट्टी के बांध, गली प्लग आदि का निर्माण)।
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत निधियों का उपयोग गाद-फँसाने की व्यवस्था तैयार करने और समय-समय पर गाद निकालने के बारे में किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए किया जा सकता है।
- कम वर्षा वाले क्षेत्र में, पानी की मांग के प्रबंधन में जल-कुशल सिंचाई का अभ्यास करना, सूखा-प्रतिरोधी फसलों की खेती करना और आजीविका में विविधता लाना शामिल है।
- मराठवाड़ा को अन्य उच्च-मूल्य, कम पानी का उपयोग करने वाली फसलों की ओर भी बढ़ना चाहिए, जबकि गन्ना उत्पादन को उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में स्थानांतरित करना चाहिए।

232. भारत में रूफटॉप सौर ऊर्जा योजना का कितना उपयोग हो रहा है? - द हिंदू

प्रसंग:

- भारत की स्थापित रूफटॉप सोलर (RTS) क्षमता में वर्ष 2023-2024 में 2.99 गीगावाट की वृद्धि हुई, जो एक साल में सबसे अधिक वृद्धि है।
- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार, 31 मार्च तक भारत में कुल स्थापित RTS क्षमता 11.87 गीगावाट थी।

RTS कार्यक्रम

- भारत ने जनवरी 2010 में जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन का शुभारंभ किया।
- इसका मुख्य उद्देश्य तीन चरणों में 20 गीगावाट सौर ऊर्जा (RTS सहित) का उत्पादन करना था
- वर्ष 2015 में सरकार ने इस लक्ष्य को संशोधित कर वर्ष 2022 तक 100 गीगावाट कर दिया।
- दिसंबर 2022 में, भारत की स्थापित RTS क्षमता 7.5 गीगावाट थी और 40 गीगावाट लक्ष्य की समय सीमा वर्ष 2026 तक बढ़ा दी गई थी।
- भारत की समग्र RTS क्षमता लगभग 796 गीगावाट है।
- वर्ष 2030 तक 280 गीगावाट सौर घटक के साथ 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने के भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए, अकेले RTS को वर्ष 2030 तक लगभग 100 गीगावाट का योगदान करने की आवश्यकता है।

राज्यों की स्थिति

- वर्ष 2024 में, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान की RTS क्षमताएं बड़ी छलांग लगा चुकी थीं, जबकि कुछ अन्य राज्य पीछे थे।
- राजस्थान में RTS की संभावनाएं देश में सबसे अधिक हैं। स्वीकृतियों को सरल बनाने, वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करने और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से RTS को बढ़ावा देने के इसके प्रयासों ने इस वृद्धि को बढ़ावा दिया है।
- हालाँकि, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड सहित अन्य राज्यों को अभी भी अपनी RTS क्षमता का पूरी तरह से पता लगाना बाकी है।
- उनकी चुनौतियों में नौकरशाही बाधाएं, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और सार्वजनिक जागरूकता की कमी शामिल हैं।

'प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना'

- यह एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य एक करोड़ घरों में RTS प्रणाली स्थापित करना तथा उन्हें हर महीने 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली उपलब्ध कराना है।
- लक्षित घरों के लिए 2 किलोवाट के औसत सिस्टम आकार के परिणामस्वरूप कुल RTS क्षमता में 20 गीगावाट की वृद्धि होगी।
- यह योजना उन्नत सौर प्रौद्योगिकियों, ऊर्जा भंडारण समाधानों और स्मार्ट ग्रिड अवसंरचना को अपनाने को भी प्रोत्साहित करती है।

RTS कैसे बढ़ सकता है?

- उपभोक्ताओं को अपने साथ जोड़ने के लिए जागरूकता पैदा करना महत्वपूर्ण है।
- इसके अतिरिक्त, RTS को परिवारों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य होना चाहिए।
- यद्यपि सरकारी सब्सिडी से मदद मिल रही है, फिर भी अनेक कम लागत वाले वित्तपोषण विकल्पों की आवश्यकता है।
- हाल ही में RTS ऋण प्रदान करने वाले बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- कम लागत वाले RTS ऋण तक पहुंच बाइक या कार ऋण प्राप्त करने जितनी आसान होनी चाहिए।
- सौर प्रौद्योगिकी, ऊर्जा भंडारण समाधान और स्मार्ट-ग्रिड बुनियादी ढांचे में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने से लागत कम हो सकती है, प्रदर्शन में सुधार हो सकता है और RTS प्रणालियों की विश्वसनीयता बढ़ सकती है।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों (जैसे वर्ष 2015 में शुरू किया गया 'सूर्यमित्र' सौर पीवी तकनीशियन कार्यक्रम) , व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और कौशल विकास पहलों में निवेश से कुशल कार्यबल तैयार करने में मदद मिलेगी।
- जैसे-जैसे योजना का कार्यान्वयन जोरों पर होगा, नेट-मीटरिंग विनियमों, ग्रिड-एकीकरण मानकों और भवन संहिताओं की समीक्षा की जानी चाहिए और उन्हें अद्यतन किया जाना चाहिए, ताकि उभरती चुनौतियों का समाधान करने और सुचारू कार्यान्वयन में सहायता मिल सके।

233. भारत को महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपदा प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की आवश्यकता - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- पिछले महीने, लगातार बढ़ते तापमान के बीच, दिल्ली में बिजली की मांग ने बार-बार रिकॉर्ड तोड़ दिया।
- मध्य और पूर्वी भारत में कई स्थानों पर ऐसी ही या इससे भी बदतर स्थिति का सामना करना पड़ा।

संबंधित डेटा

- यद्यपि पूर्व चेतावनी और त्वरित प्रतिक्रिया से आपदाओं में मानवीय हताहतों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आई है, फिर भी चरम मौसम की घटनाओं और आपदाओं से होने वाली आर्थिक और अन्य नुकसान बढ़ रहे हैं।

- इसका मुख्य कारण ऐसी घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि है।
- सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 2018 से वर्ष 2023 के बीच पांच वर्षों में राज्यों ने आपदाओं और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने पर कुल मिलाकर 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए हैं।
- उदाहरण के लिए, आजीविका की हानि या कृषि भूमि की उर्वरता में कमी के कारण दीर्घकालिक लागतें बहुत बड़ी हैं तथा समय के साथ इनके और भी बदतर होने का अनुमान है।
- विश्व बैंक की वर्ष 2022 की एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि गर्मी से संबंधित तनाव के कारण उत्पादकता में गिरावट से वर्ष 2030 तक भारत में लगभग 34 मिलियन नौकरियां खत्म हो सकती हैं।
- आपदाओं और चरम मौसम की घटनाओं के कारण परिवहन, दूरसंचार और बिजली आपूर्ति जैसी महत्वपूर्ण अवसंरचना को होने वाली क्षति को अक्सर सरकारी आंकड़ों में नहीं गिना जाता है, खासकर तब जब ये सेवाएं निजी स्वामित्व वाली हों।

संधारणीय शामिल करना

- लगभग सभी इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों में अब इन घटनाओं से निपटने के लिए तैयारी और प्रतिक्रिया हेतु आपदा प्रबंधन योजनाएं मौजूद हैं।
- उदाहरण के लिए, आपदा-प्रवण क्षेत्रों में स्थित अस्पताल स्वयं को बैकअप विद्युत आपूर्ति से सुसज्जित कर रहे हैं, हवाई अड्डे और रेलवे जलभराव से बचने या उसे शीघ्र निकालने के लिए कदम उठा रहे हैं, तथा दूरसंचार लाइनों को भूमिगत किया जा रहा है।
- लेकिन इस मोर्चे पर प्रगति धीमी रही है और भारत का बड़ा इन्फ्रास्ट्रक्चर आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बना हुआ है।
- किसी भी भारतीय राज्य में अपनी तरह के पहले अभ्यास में, आपदा रोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (CDRI) ने ओडिशा में बिजली पारेषण और वितरण बुनियादी ढांचे का अध्ययन किया, जो चक्रवातों से उच्च जोखिम वाला राज्य है।
  - रिपोर्ट में पाया गया कि राज्य का इन्फ्रास्ट्रक्चर अत्यंत कमजोर है।
- भारत अभी भी अपने बुनियादी ढांचे के विकास की प्रक्रिया में है। 2030 तक भारत में जितने बुनियादी ढांचे का निर्माण प्रस्तावित है, उनमें से अधिकांश का निर्माण अभी भी होना है।

CDRI

- आपदा रोधी अवसंरचना गठबंधन (CDRI), वर्ष 2019 में भारत की पहल पर स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।
  - इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संधारणीय बनाना है।
- भारत में मुख्यालय वाली एक अंतरराष्ट्रीय संस्था, CDRI को इन परिवर्तनों को लागू करने के लिए एक ज्ञान केंद्र के रूप में विकसित होना है।
- अब 30 से अधिक देश इस गठबंधन का हिस्सा हैं और अपने बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए CDRI के साथ काम कर रहे हैं।
- लेकिन भारत में अब तक केवल कुछ ही राज्यों ने CDRI की विशेषज्ञता और सहयोग मांगा है।

आगे की राह

- निर्माण के समय ही आपदा प्रतिरोधक क्षमता को शामिल करना, बाद में इन सुविधाओं को पुनः जोड़ने की तुलना में अधिक आसान और लागत प्रभावी है।
- सभी आगामी इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को जलवायु के प्रति स्मार्ट होना चाहिए, न केवल टिकाऊ और ऊर्जा कुशल, बल्कि आपदाओं के प्रति संधारणीय भी होना चाहिए।
- संपूर्ण विश्व की सेवा के लिए CDRI बनाने की पहल करने के बाद, भारत को सबसे अधिक संधारणीय बुनियादी ढांचे के लिए सही टेम्पलेट बनाने की आवश्यकता है, जो बहु-खतरनाक आपदाओं का सामना कर सके।

234. आंध्रप्रदेश में NDA की जीत से रियल एस्टेट सेक्टर में स्पष्टता आने की उम्मीद - द हिंदू

समाचार:

- आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) की भारी जीत से रियल एस्टेट क्षेत्र में स्पष्टता आने की उम्मीद है।

मुख्य बिंदु

- रियल एस्टेट कारोबारी, जो 4 जून को आने वाले नतीजों का इंतजार कर रहे थे, अब राज्य के अन्य हिस्सों की तुलना में विशाखापत्तनम और अमरावती में निवेश और कारोबार की अधिक योजना बना रहे हैं।
- विशाखापत्तनम में निवेश में सुधार की संभावना है, जबकि अमरावती में रियल एस्टेट क्षेत्र में अचानक उछाल आने की उम्मीद है।
- अमरावती और विशाखापत्तनम में रियल एस्टेट कारोबारियों ने वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के बीच सैकड़ों करोड़ रुपये का निवेश किया।
- वर्ष 2014 में संयुक्त आंध्र प्रदेश के विभाजन के तुरंत बाद, रियल एस्टेट कारोबारियों और निवेशकों ने शेष आंध्र प्रदेश में बेहतर अवसरों की तलाश शुरू कर दी है।
- उन्होंने इस उम्मीद में भारी निवेश किया कि हैदराबाद से अमरावती में राजधानी बनने के कारण आवास की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि होगी।
- हालाँकि, अमरावती की राजधानी के निर्माण में अत्यधिक देरी हुई।
- इसकी आधारशिला अक्टूबर 2015 में रखी गई थी, लेकिन रियल एस्टेट बाजार में तेजी नहीं आई और रियल एस्टेट खिलाड़ी और निवेशक हैदराबाद लौट आए।
- इसी अवधि के दौरान आंध्र प्रदेश में सरकार बदल गई।
- नई पार्टी ने राज्य के विकास के लिए तीन राजधानियों का फार्मूला पेश किया।
- विशाखापत्तनम की ओर निवेश बढ़ने लगा, जिसे कार्यकारी राजधानी के रूप में प्रचारित किया गया।
- विशाखापत्तनम शहर के बाहरी इलाकों में मधुरवाड़ा, पेंडुर्थी, नायडू थोटा, सुजाता नगर, वेपगुंटा, नारवा और BHPV जैसे कई उद्यम शुरू हुए हैं, हालांकि वे विभिन्न कारणों से अधूरे रह गए हैं।
- यद्यपि पंजीकरण शुल्क मुख्य राजस्व स्रोतों में से एक है, फिर भी सरकार को सतत विकास के लिए रियल एस्टेट क्षेत्र के क्रमिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

235. सरकार को सभी मुख्य खाद्य वस्तुओं का बफर स्टॉक क्यों बनाना चाहिए- द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- आधिकारिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) पर आधारित मुद्रास्फीति मई में अनाज के लिए 8.69% और दालों के लिए लगभग दोगुनी (17.14%) रही।
- ये दरें संभवतः अधिक होतीं, लेकिन सरकारी एजेंसियों द्वारा बनाए गए बफर स्टॉक, विशेषकर गेहूं और चना की बिक्री के कारण ऐसा नहीं हो पाया।

चने में बफर कैसे मददगार साबित हुआ	खाद्य पदार्थों की कीमतों में अनिश्चितता
• दालों की कीमतें आसमान छू रही हैं और जून 2023 से खुदरा मुद्रास्फीति दोहरे अंक में पहुंच जाएगी। • लेकिन अगर भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ (NAFED) ने वर्ष 2021-22 और वर्ष 2022-23 की बंपर चना फसल की बड़ी मात्रा में खरीद नहीं की होती तो हालात और भी बदतर हो सकते थे। • इन खरीद कार्यों ने चना किसानों को MSP का लाभ उठाने में सक्षम बनाया, जब खुले बाजार में कीमतें कम थीं, और हाल ही में, उपभोक्ताओं को दाल की मुद्रास्फीति से बचाया। • जुलाई 2023 से अब तक NAFED ने खुले बाजार में ई-नीलामी के माध्यम से 14.06 लाख टन चना बेचा है	• मई में कुल मिलाकर CPI मुद्रास्फीति 4.75% रही, जो 12 महीनों में सबसे कम थी। अगर खुदरा खाद्य मुद्रास्फीति 8.69% पर नहीं रहती तो यह और भी कम होती। • जलवायु परिवर्तन, कम वर्षा वाले दिन और लंबे समय तक सूखे की स्थिति, बीच-बीच में तीव्र वर्षा, तथा छोटी सर्दियां और गर्म लहरों के कारण खाद्य कीमतों में स्वाभाविक रूप से अस्थिरता और अनिश्चितता बढ़ गई है, जिससे भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के लिए किसी भी मौद्रिक ढील या ब्याज दरों में कटौती पर विचार करना मुश्किल हो गया है। • सरकार भी निर्यात को प्रतिबंधित करने या व्यापारियों और प्रसंस्करणकर्ताओं पर उपज स्टॉक सीमा लागू करने जैसे अवांछनीय उपायों का सहारा लेने के लिए मजबूर है। • इस पहेली से बाहर निकलने का एक संभावित तरीका यह हो सकता है कि सभी आवश्यक खाद्य वस्तुओं का बफर स्टॉक बनाया जाए, अतिरिक्त उत्पादन के वर्षों के दौरान किसानों से इन्हें खरीदा जाए, तथा फसल खराब होने पर बाजार मूल्य को नियंत्रित करने के लिए इन्हें बेचा जाए। • इसमें न केवल दालों और तिलहनों की खरीद बढ़ाने की गुंजाइश है, बल्कि इसे मुख्य सब्जियों और यहां तक कि स्किम्ड मिल्क पाउडर (SMP) तक बढ़ाने की भी गुंजाइश है। • खरीदे गए प्याज, आलू और टमाटर को पेस्ट, फ्लेक्स और प्यूरी जैसे निर्जलित/प्रसंस्कृत रूप में होटलों, रेस्तरां, कैंटीनों और अन्य संस्थागत खरीदारों को बेचने के लिए भंडारित किया जा सकता है। • इससे यह सुनिश्चित होगा कि घरेलू और थोक खरीदार दोनों ही कमी के दौरान कीमतें बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा न करें। • आवश्यक खाद्य वस्तुओं के बफर स्टॉक को बनाए रखने की राजकोषीय लागत इतनी अधिक नहीं हो सकती है; भंडारित वस्तुओं को मुफ्त में वितरित नहीं किया जाता है, बल्कि अभाव/मुद्रास्फीति के समय में उन्हें बाजार मूल्य के निकट मूल्य पर बेचा जाता है। • बफर स्टॉकिंग खाद्य कीमतों में अत्यधिक अस्थिरता को रोकने के लिए एक साधन हो सकता है, ठीक उसी तरह जैसे मुद्रा बाजार के मुकाबले RBI का विदेशी मुद्रा भंडार होता है। • जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती कीमतों में अस्थिरता से अंततः न तो उपभोक्ताओं को और न ही उत्पादकों को कोई लाभ होगा, जिससे खाद्य बफर नीति की आवश्यकता और अधिक मजबूत हो जाएगी।

236. नये बजट के साथ भारत के लिए नये दृष्टिकोण का अवसर- द इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वार्षिक बजट कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं है।
- दूसरी ओर, उभरते बाजारों में बजट प्रस्तुति का विशेष महत्व है।
- भारत के मामले में, बजट औपनिवेशिक काल से विरासत में मिला है, इस हद तक कि इसे प्रस्तुत करने का समय भी ब्रिटिश समय के अनुरूप होता है।
- यद्यपि ब्रिटिश साम्राज्य में बजट का उद्देश्य मुख्यतः लेखा-जोखा रखना था, किन्तु स्वतंत्रता के बाद से इसका उद्देश्य अर्थव्यवस्था के लिए प्रशासन के दृष्टिकोण को सामने रखना रहा है।

अपेक्षाएं

- वर्ष 2024-25 के बजट में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये जाने की उम्मीद है।
- मेरे विचार में, इस दृष्टिकोण में पाँच प्रमुख तत्व शामिल होने चाहिए: (i) विकास (ii) रोजगार (iii) विनिर्माण (iv) सार्वजनिक वित्त और (v) अन्य।
- सरकार ने पहले ही स्पष्ट रूप से "विकसित भारत" के लिए अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत कर दिया है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनाना है।
- प्रश्न यह है कि भारत की प्रति व्यक्ति आय को 2,500 डॉलर से बढ़ाकर 14,000 डॉलर करने के लिए किस प्रकार की विकास दर की आवश्यकता है।
- वर्ष 2023 में भारत की प्रति व्यक्ति आय नाममात्र डॉलर के संदर्भ में 9.2 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी।
- यदि भारत इन विकास दरों को कायम रखता है, तो यह वर्ष 2030 तक उच्च मध्यम आय वाला देश बन जाएगा, तथा वर्ष 2042 तक उच्च आय वाला देश बन जाएगा।
- इसलिए प्रासंगिक प्रश्न यह है कि भारत को 10 प्रतिशत की वास्तविक GDP वृद्धि दर तक कैसे पहुंचाया जाए, ताकि वह तेजी से इसकी बराबरी कर सके।
- ऐसा लगता है कि अगर हम वाकई तेजी से आगे बढ़ना चाहते हैं, तो हमें उन सभी सिलेंडरों को चालू करना होगा। जिसमें निजी खपत, निवेश, निर्यात और आयात शामिल हैं। बजट इन सभी घटकों को चालू करने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है।
- दूसरा घटक है रोजगार और इससे संबंधित तीसरा घटक है, व्यापार और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के साथ विनिर्माण।
- सेवाओं और विनिर्माण के बीच कोई समझौता नहीं है।
- निस्संदेह, हमें दोनों की आवश्यकता है - जनसांख्यिकीय लाभांश को प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए श्रम-प्रधान विनिर्माण को बढ़ावा देना। भारत जैसी श्रम-प्रचुर अर्थव्यवस्था के लिए, पूंजी से श्रम अनुपात में तीव्र गति से वृद्धि हुई है।
- फैक्टर मार्केट सुधार संभवतः एक महत्वपूर्ण चालक हैं। पिछली सरकार ने कई सुधारों की शुरुआत की है, लेकिन लोकतंत्र में यह काम बेहद कठिन और जटिल है।
- दुनिया भर में सार्वजनिक वित्त में, मौद्रिक नीति निर्णय वैकल्पिक नीति विकल्पों और उनसे संबंधित व्यापक आर्थिक प्रभावों के व्यवस्थित विश्लेषण पर आधारित होते हैं।

FRBM

- संस्थागत पक्ष पर, FRBM समीक्षा समिति ने एक स्वतंत्र राजकोषीय परिषद की स्थापना की सिफारिश की।
- विचार यह था कि परिषद एक पूर्वानुमानित भूमिका निभाए, जिसमें वास्तविक और नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि, कर उछाल, वस्तुओं की कीमतों जैसे प्रमुख मैक्रो चरों पर स्वतंत्र पूर्वानुमान प्रदान करने के साथ-साथ एक पूर्व-पश्चात निगरानी भूमिका भी निभाई जाए, तथा एक संस्था के रूप में कार्य किया जाए जो पलायन खंड को सक्रिय करने और वापसी का मार्ग निर्दिष्ट करने के बारे में सलाह दे।
- राजकोषीय परिषद की शुरूआत पर शायद फिर से विचार किया जा सकता है। एक और महत्वपूर्ण सवाल यह है कि नियमों में बाजार अनुशासन को कैसे एकीकृत किया जाए

निष्कर्ष

- अंत में, मैं पांचवें तत्व को व्यापक, लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण मानता हूं: कृषि बाजारों का और अधिक विकास, उच्च शिक्षा को बेहतर बनाने पर नया जोर, स्वास्थ्य परिणामों में सुधार, और कार्बन सीमाओं को पूरा करना।
- महत्वपूर्ण सुधारों के लिए एक और बड़ा कदम उठाने का समय आ गया है।
- वर्ष 2024-25 का बजट दिशा और दृष्टि का संकेत देने का एक उपयुक्त अवसर है।
- इस बजट में आर्थिक एजेंट, बाजार सहभागी और नागरिक सभी मोर्चों पर नए जोश और उत्साह के साथ काम करने की प्रतिबद्धता और उत्साह की अपेक्षा कर रहे हैं।

237. दिल्ली हवाई अड्डे की छत ढहने की घटना: भारत के इन्फ्रास्ट्रक्चर की स्थिति - इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- हाल ही में भारी बारिश के कारण दिल्ली हवाई अड्डे के टर्मिनल 1 की छत का एक हिस्सा गिर गया, जिसके परिणामस्वरूप एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई और छह घायल हो गए।

मुख्य बिंदु	सुरक्षा से समझौता नहीं किया जा सकता
• यह घटना भारत में सार्वजनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर की नाजुक स्थिति को उजागर करती है तथा ऐसी संरचनाओं की सुरक्षा और अखंडता के बारे में गंभीर सवाल उठाती है। • एक हवाई अड्डा, विशेष रूप से राजधानी शहर में, आधुनिक इंजीनियरिंग उत्कृष्टता और सुरक्षा का प्रतीक है। इसे किसी त्रासदी का स्थल नहीं बनना चाहिए। • वर्ष 2008 की संरचना किसी भी मानक से पुरानी नहीं है। निजी ठेकेदारों से संबंधित मुद्दे पर, जवाबदेही और सरकारी निगरानी के बारे में सवाल बने हुए हैं। • वास्तविक चिंता यह है कि ऐसी संरचनाओं की सुरक्षा और अखंडता बनाए रखने के लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर का ऑडिट नियमित रूप से क्यों नहीं किया जा रहा है। • ऐसी आपदाओं को रोकने के लिए नियमित ऑडिट और रखरखाव जाँच महत्वपूर्ण हैं, फिर भी ऐसा लगता है कि उन्हें नजरअंदाज किया गया है।	• इस त्रासदी के लिए जिम्मेदार लोगों की पहचान करने और उन्हें जवाबदेह ठहराने के लिए गहन जांच आवश्यक है। • इन्फ्रास्ट्रक्चर में राज्य के निवेश का दृष्टिकोण केवल निर्माण के बारे में प्रतीत होता है, न कि पोषण के बारे में • ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सख्त नियमन और इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की बेहतर निगरानी की तत्काल आवश्यकता है। • नियमित सुरक्षा ऑडिट आयोजित किए जाने चाहिए, निर्माण मानकों का पालन किया जाना चाहिए, तथा सार्वजनिक सुरक्षा को प्राथमिकता देने वाली स्पष्ट जवाबदेही व्यवस्था लागू की जानी चाहिए। • गुणवत्ता नियंत्रण और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मानदंडों के पालन पर जोर दिया जाना चाहिए। नियोजन और क्रियान्वयन में कमियों को दूर करना महत्वपूर्ण है। • इन्फ्रास्ट्रक्चर का मतलब सिर्फ कंक्रीट और स्टील नहीं है बल्कि इसका मतलब उन लोगों से है जो इसका इस्तेमाल करते हैं। • सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफलता एक गहरे सामाजिक मुद्दे को दर्शाती है, जहां मानव जीवन को वह प्राथमिकता नहीं दी जाती जिसका वह हकदार है। • यह घटना हमें सचेत करने वाली है कि हम अपनी नीतियों और कार्यप्रणालियों का पुनर्मूल्यांकन करें तथा यह सुनिश्चित करें कि इन्फ्रास्ट्रक्चर का डिजाइन मानव जीवन और कल्याण को खतरे में न डाले।

238. फॉक्सकॉन रोजगार विवाद: कंपनी ने विवाहित महिलाओं को नौकरी पर नहीं रखा- इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- तमिलनाडु में एप्पल आईफोन निर्माता फॉक्सकॉन के असेंबली मुख्यालय की रॉयटर्स की जांच में नियुक्ति प्रक्रिया में अनियमितताएं सामने आई हैं। विवाहित महिलाओं को गर्भावस्था, पारिवारिक प्रतिबद्धताओं और अधिक छुट्टियों के आधार पर खारिज कर दिया जाता है।

संवीक्षा	यह किसकी गलती ?
• भारत में, जहां राजनीतिक दलों ने महिलाओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया है और जहां प्रधानमंत्री ने लैंगिक समानता के प्रति अपनी सरकार की प्रतिबद्धता को बार-बार दोहराया है, वहां महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाने का कोई मतलब नहीं है। • श्रम बल भागीदारी 32.7 प्रतिशत होगी जबकि पुरुषों के लिए यह 76.8 प्रतिशत होगी। • इसमें खामियां बहुत हैं और जमीनी स्तर पर इसे लागू करने का संघर्ष, कल्पना की कमी से उत्पन्न अवरोधक प्रक्रिया में फंस गया है। • यह कल्पना की विफलता है जो विकल्पों पर विचार करने से इंकार करती है, जो कार्यस्थलों पर पुरुष और महिला दोनों कर्मचारियों के लिए लाभकारी क्रेच सुनिश्चित नहीं करती है, या महिलाओं पर असंगत देखभाल के बोझ पर विचार नहीं करती है।	• यह विफलता सिर्फ़ सरकार या राजनीतिक दलों की नहीं है। इसकी शुरुआत व्यक्तियों और परिवारों से होती है और फिर यह संगठनों और समाज से सरकारों तक पहुँच जाती है। • बहुत सी महिलाओं से कहा जाता है कि वे "भाग्यशाली" हैं कि उनके परिवार उन्हें बाहर काम करने की "अनुमति" देते हैं या उनके साथी घर के कामों में मदद करते हैं। • **सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति**: UN वीमेन और UNDESA की जेंडर स्नैपशॉट 2023 रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि यदि उपाय नहीं किए गए तो महिलाओं की एक पूरी पीढ़ी पूर्वाग्रही मानदंडों से घिरी हुई, पुरुषों की तुलना में घरेलू कामकाज में असंगत समय व्यतीत करेगी। • इस वर्ष की शुरुआत में, भारत संघ एवं अन्य बनाम पूर्व लेफ्टिनेंट सेलिना जॉन मामले में , भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि विवाह के आधार पर कामकाजी महिलाओं को दंडित करने वाले नियम असंवैधानिक हैं। • भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने के लिए, जो महिलाओं को बदलाव के केंद्र में रखती है, उसे अपने मूल्यांकन के मापदंडों को फिर से उन्मुख करने की आवश्यकता होगी।

239. GST परिषद बैठक: जीएसटी परिषद को व्यापक सुधारों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए- द हिंदू

It's about quality

प्रसंग:

- वस्तु एवं सेवा कर (GST) परिषद की बैठक पिछले सप्ताह लगभग नौ महीने में पहली बार बुलाई गई थी।

मुख्य बिंदु

- कई उद्योग-विशिष्ट उपायों के अलावा, जिनमें से कुछ पूर्वव्यापी प्रभाव से लागू होंगे
- परिषद ने GST के पहले तीन वर्षों के लिए कर बकाया पर ब्याज और जुर्माना माफ करने का भी विकल्प चुना, बशर्ते कि उनका भुगतान मार्च 2025 तक किया जाए।
- इसके अलावा, इसने अपील दायर करने के लिए निर्धारित पूर्व-जमा राशि को कम कर दिया, जिसमें आगामी GST अपीलीय न्यायाधिकरणों के साथ दायर की जाने वाली अपीलें भी शामिल हैं।
    - और करदाताओं के लिए पिछले रिटर्न में त्रुटियों या चूक को सुधारने के लिए एक नया फॉर्म स्वीकृत किया।
- बारीकियों से परे, परिषद ने मुनाफाखोरी विरोधी धारा को समाप्त करने पर भी हस्ताक्षर किए, जिसके तहत कंपनियों को कर कटौती से होने वाले लाभ को ग्राहकों तक पहुंचाना अनिवार्य था।
    - और पूरे भारत में चरणबद्ध तरीके से सभी GST पंजीकरणों के लिए बायोमेट्रिक-आधारित आधार प्रमाणीकरण को अनिवार्य किया
- यह ताज़ा करने वाली बात है कि परिषद ने बहु-दर GST संरचना को युक्तिसंगत बनाने के लिए वर्ष 2021 की योजना का जायजा लेने की भी योजना बनाई है, जो कुछ समय से ठंडे बस्ते में है, जब वह अगली बैठक करेगी।
- सर्वोच्च GST निकाय को न केवल GST दर सुधारों को पुनर्जीवित और तेज करना चाहिए, बल्कि कर दरों में फेरबदल करते हुए पेट्रोलियम और बिजली जैसी बहिष्कृत वस्तुओं को GST के दायरे में लाने के लिए एक रोडमैप भी शामिल करना चाहिए।

240. लैंसेट अध्ययन: आधे भारतीय शारीरिक रूप से अस्वस्थ - इंडियन एक्सप्रेस

समाचार:

- लैंसेट ग्लोबल हेल्थ में प्रकाशित नए आंकड़ों के अनुसार, आधी वयस्क भारतीय आबादी पर्याप्त शारीरिक गतिविधि के संबंध में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के दिशानिर्देशों को पूरा नहीं करती है।

मुख्य बिंदु:

- सबसे चिंताजनक बात यह है कि भारतीय वयस्कों में अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि की व्यापकता वर्ष 2000 में 22.3 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 49.4 प्रतिशत हो गई है।
  - पुरुषों की तुलना में अधिक महिलाएं शारीरिक रूप से निष्क्रिय हैं।
- इसका अर्थ यह है कि यदि इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो वर्ष 2030 तक हमारी 60 प्रतिशत आबादी अस्वस्थ हो जाएगी तथा पर्याप्त शारीरिक गतिविधि न करने के कारण बीमारियों के खतरे में रहेगी।

WHO की सिफारिशें

- विश्व स्वास्थ्य संगठन सभी वयस्कों के लिए प्रति सप्ताह कम से कम 150 से 300 मिनट की मध्यम एरोबिक गतिविधि की सिफारिश करता है।
- अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि को प्रति सप्ताह 150 मिनट तक मध्यम-तीव्रता वाली गतिविधि, 75 मिनट तक तीव्र-तीव्रता वाली गतिविधि, या इनके समतुल्य संयोजन को न करने के रूप में परिभाषित किया जाता है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, शारीरिक निष्क्रियता से वयस्कों में हृदय संबंधी बीमारियों जैसे दिल के दौरे और स्ट्रोक, टाइप 2 मधुमेह, मनोभ्रंश और स्तन तथा बृहदान्त्र के कैंसर का खतरा अधिक होता है।

अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष

- अनुमान बताते हैं कि 195 देशों में अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि के मामले में भारत 12वें स्थान पर है।
- विश्व भर में, लगभग एक तिहाई वयस्क वर्ष 2022 में शारीरिक गतिविधि के अनुशंसित स्तर को पूरा नहीं कर पाएंगे।
- उच्च आय वाले एशिया-प्रशांत क्षेत्र और दक्षिण एशिया में शारीरिक निष्क्रियता की उच्चतम दर देखी गई
- शारीरिक निष्क्रियता विश्व स्तर पर कई कारकों के कारण बढ़ रही है, जिनमें कार्य पैटर्न में परिवर्तन, पर्यावरण में परिवर्तन, सक्रिय परिवहन को और अधि

भारत में शारीरिक निष्क्रियता

- भारत में यह स्थिति पत्रक विशेष रूप से चिंता का विषय है, क्योंकि यहां के लोगों में अन्य लोगों की तुलना में हृदय रोग और मधुमेह जैसी गैर-संचारी बीमारियों के विकसित होने की संभावना कम से कम एक दशक पहले ही अधिक होती है।
- भारत में किए गए कई अध्ययनों से पता चला है कि जनसंख्या स्तर पर शारीरिक गतिविधि का स्तर कम है, विशेष रूप से महिलाओं में, जो गलत तरीके से मानती हैं कि घरेलू काम करना शारीरिक व्यायाम का एक अच्छा रूप है।
- निष्क्रियता सबसे अधिक मध्यम आयु वर्ग की शहरी महिलाओं में देखी जाती है, हालांकि यह सभी आयु और लैंगिक समूहों में कुछ हद तक देखी जाती है।
- भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में महिलाओं में अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि चिंता का विषय है, क्योंकि वे पुरुषों की तुलना में 14-20 प्रतिशत अंक पीछे हैं।

सुझावात्मक उपाय

- यद्यपि फिट इंडिया और लेट्स मूव इंडिया जैसे कार्यक्रम हाल के वर्षों में शुरू किए गए हैं, फिर भी हमें स्कूल, कार्यस्थल और सामुदायिक स्तर पर सेटिंग-आधारित समूह गतिविधि प्रोत्साहन प्रयासों की आवश्यकता है।
- सुरक्षित साइकिल लेन, सुरक्षित पैदल पथ, हरित सामुदायिक स्थान और कम वायु प्रदूषण से सुरक्षित और आनंददायक आउटडोर गतिविधि संभव होगी

241. भारत में मुस्लिम जनसंख्या एक्सप्लोशन का मिथक- इंडियन एक्सप्रेस

प्रसंग:

- हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने फिल्म 'हमारे बारह' की रिलीज पर रोक लगा दी और बॉम्बे उच्च न्यायालय को अंतिम निर्णय लेने का निर्देश दिया।

भारत में मुस्लिम जनसंख्या एक्सप्लोशन का मिथक

- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW) द्वारा किए गए नवीनतम राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, वर्ष 2019-20 (NFHS-5) से पता चलता है कि
  - कई राज्य पहले ही प्रजनन क्षमता के प्रतिस्थापन स्तर को प्राप्त कर चुके हैं, और भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) में लगातार गिरावट आ रही है।
  - NHFS-5 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में वर्ष 2021 तक TFR प्रति महिला 2.0 बच्चे है, जो कि प्रति महिला 2.1 बच्चों के प्रजनन क्षमता के प्रतिस्थापन स्तर से थोड़ा कम है।
- आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2018-19 और नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS) के वर्ष 2017 के आंकड़ों में भी भारत की जनसंख्या वृद्धि में कमी के बारे में इसी प्रकार के निष्कर्ष सामने आए थे।
- भारत की वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, मुस्लिम जनसंख्या की वृद्धि दर हिंदू जनसंख्या से अधिक थी।

- इस एकल व्याख्या के इर्द-गिर्द उठे विवाद ने इस तथ्य को अस्पष्ट कर दिया कि वर्ष 2001 और वर्ष 2011 के बीच दोनों विकास दरों के बीच का अंतर काफी कम हो गया था
- वर्ष 2001 और वर्ष 2011 के आंकड़ों का उपयोग करके दोनों समुदायों के बीच प्रजनन अंतर की तुलना करने पर, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच प्रजनन क्षमता में समानता स्पष्ट हो जाती है।
  - इसमें यह चेतावनी भी दी गई है कि चूंकि विभिन्न राज्य और समूह इस परिवर्तन के विभिन्न बिंदुओं पर हैं,
  - इस अभिसरण की प्रक्रिया में क्षेत्रों के बीच भिन्नताएं हैं यह तथ्य पहले के अध्ययनों से प्रमाणित है।
- प्रजनन क्षमता में गिरावट और जनसंख्या वृद्धि में गिरावट की दर को ध्यान में रखते हुए एक अन्य हालिया विश्लेषण में पाया गया कि पिछले दो दशकों में हिंदू प्रजनन क्षमता में गिरावट मुस्लिम प्रजनन क्षमता में गिरावट से पांच प्रतिशत कम थी।
  - जहाँ मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर में हिंदुओं की तुलना में तेज़ गति से गिरावट आई है। इस विश्लेषण से पता चलता है कि वर्ष 2030 तक हिंदू-मुस्लिम प्रजनन दर में "पूर्ण अभिसरण" हो सकता है।
- NFHS के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले दो दशकों में सभी धार्मिक समुदायों की प्रजनन दर में गिरावट आई है।
- विशेष रूप से मुसलमानों के परिवार के आकार में तेजी से कमी स्पष्ट है, क्योंकि मुसलमानों की प्रजनन दर वर्ष 1992-93 में 4.4 से लगभग आधी घटकर वर्ष 2020-21 में 2.4 हो गई है।
- पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया ने पाया कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक-आर्थिक विकास प्रजनन दर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्य बिहार की तुलना में कम TFR दिखाते हैं
  - जिनकी इन संसाधनों तक पहुँच कम थी। इस प्रकार, प्रजनन दर के स्तर को प्रभावित करने वाला कारक धर्म नहीं था, बल्कि बेहतर सामाजिक-आर्थिक स्थिति और विकास था।

गलत सूचना को चुनौती देना

- NFHS 5 के आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि माता की शिक्षा का स्तर जितना ऊंचा होगा, प्रजनन दर उतनी ही कम होगी।
- सभी धार्मिक समूहों में मुसलमान आर्थिक रूप से सबसे अधिक वंचित हैं, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य का स्तर भी खराब है - जो उच्च शिक्षा में उनके कम नामांकन स्तर से स्पष्ट है।
- वर्ष 2006 में सच्चर समिति की रिपोर्ट में मुसलमानों के बीच ऐसी सामाजिक-आर्थिक असमानता पर जोर दिया गया था।
- इस प्रकार, जनसंख्या वृद्धि पर बहस को शिक्षा, आर्थिक विकास, आजीविका, भोजन, पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं और लैंगिक न्याय में निवेश पर केंद्रित होना चाहिए।
- इसके अलावा, महिलाओं, विशेष रूप से हाशिए पर स्थित समुदायों की महिलाओं को प्रजनन संबंधी निर्णय लेने की स्वतंत्रता सीमित है तथा गर्भनिरोधक और प्रजनन देखभाल तक उनकी पहुंच नियंत्रित है।
- मुस्लिम समुदाय की प्रजनन क्षमता के बारे में बयानबाजी सीधे तौर पर मुस्लिम महिलाओं के बच्चे पैदा करने या न करने के अधिकार को प्रभावित करती है।
- इससे न केवल मुस्लिम महिलाओं के जीवन और सम्मान के अधिकार का उल्लंघन होता है, बल्कि उनकी व्यक्तिपरकता भी प्रभावित होती है।
- इसलिए, जनसंख्या वृद्धि और प्रजनन क्षमता से संबंधित चर्चा का ध्यान यौन और प्रजनन स्वास्थ्य अधिकारों, व्यक्तिगत पसंद पर केन्द्रित होना चाहिए तथा राजनीतिक रूप से प्रेरित प्रचार के लिए सह-चुनाव के प्रयासों का विरोध करना चाहिए।

फैक्ट फटाफट

1. ओपेक+

- यह तेल निर्यातक देशों का एक समूह है जो विश्व बाजार में कितना कच्चा तेल बेचा जाए, इसका निर्णय लेने के लिए नियमित रूप से बैठक करता है।
- इन देशों का लक्ष्य तेल बाजार में स्थिरता लाने के लिए कच्चे तेल के उत्पादन को समायोजित करने पर मिलकर काम करना है।
- ओपेक+ वैश्विक तेल आपूर्ति के लगभग 40% और प्रमाणित तेल भंडार के 80% से अधिक पर नियंत्रण रखता है।
- ओपेक+ देशों ने वैश्विक तेल मांग को बढ़ाने के लिए वर्ष 2025 के अंत तक प्रति दिन 3.66 मिलियन बैरल की कटौती को एक साल बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

2. रजिया सुल्तान

- रजिया सुल्तान दिल्ली के सुल्तान ममलुक सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश की बेटी थी।
- इल्तुतमिश ने रजिया सुल्तान को दिल्ली सल्तनत का उत्तराधिकारी नामित किया।
- वर्ष 1236 में वह दिल्ली सल्तनत की शासक बनीं। दिल्ली में चार साल से भी कम समय तक शासन करने के बाद उन्हें पद से हटा दिया गया।

3. PPF

- PPF योजना भारत में कर बचत, रिटर्न और सुरक्षा के संयोजन के कारण एक बहुत लोकप्रिय दीर्घकालिक बचत योजना है।
- व्यक्तियों को छोटी बचत करने में सहायता करना तथा बचत पर प्रतिफल प्रदान करना।
- यह सबसे सुरक्षित निवेश उत्पादों में से एक है। यानी, भारत सरकार फंड में आपके निवेश की गारंटी देती है।
- अवधि: 15 वर्ष (5 वर्ष के ब्लॉक में नवीनीकृत किया जा सकता है)।
- ब्याज दर: वर्तमान में ऐसे खातों पर देय ब्याज दर 7.1% है।
- निवेश राशि: न्यूनतम 500 रुपये, अधिकतम 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष

4. H5N1

- H5N1 एक प्रकार का इन्फ्लूएंजा वायरस है, जो पक्षियों में अत्यधिक संक्रामक, गंभीर श्वसन रोग उत्पन्न करता है, जिसे एवियन इन्फ्लूएंजा (या "बर्ड फ्लू") कहा जाता है।
- समय-समय पर, फ्लू वायरस का एक रूप जंगली पक्षियों से पोल्ट्री फार्मों में पहुंचता है, तथा फार्म पक्षियों के तंग गोदामों में अपनी संख्या बढ़ाता है।
- H5N1 एवियन इन्फ्लूएंजा के मानव मामले कभी-कभी सामने आते हैं, लेकिन इस संक्रमण को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलाना मुश्किल है।
- जब लोग संक्रमित हो जाते हैं तो मृत्यु दर लगभग 60% होती है।

5. म्यूचुअल फंड

- म्यूचुअल फंड एक पेशेवर फंड मैनेजर द्वारा प्रबंधित धन का एक पूल है।
- यह एक ट्रस्ट है जो समान निवेश उद्देश्य वाले अनेक निवेशकों से धन एकत्रित करता है तथा इक्विटी, बांड, मुद्रा बाजार उपकरणों और/या अन्य प्रतिभूतियों में निवेश करता है।
- इस सामूहिक निवेश से उत्पन्न आय/लाभ को लागू व्यय और शुल्कों में कटौती के बाद निवेशकों के बीच आनुपातिक रूप से वितरित किया जाता है।

6. स्विस शांति शिखर सम्मेलन

- स्विस शांति शिखर सम्मेलन स्विट्जरलैंड में आयोजित होने वाला एक वार्षिक सम्मेलन है, जिसमें वैश्विक नेता, नीति निर्माता, कार्यकर्ता और विद्वान शांति स्थापना, संघर्ष समाधान और मानवीय प्रयासों से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होते हैं।
- शिखर सम्मेलन में विविध प्रकार के प्रतिभागी भाग लेते हैं, जिनमें राष्ट्राध्यक्ष, राजनयिक, संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि, नागरिक समाज के नेता, शिक्षाविद और जमीनी स्तर के कार्यकर्ता शामिल हैं।
- यह विविधता शांति निर्माण के लिए समावेशी चर्चाओं और नवीन दृष्टिकोणों को बढ़ावा देती है।
- यह शिखर सम्मेलन विचारों के आदान-प्रदान, सर्वोत्तम गतिविधिओं को साझा करने तथा विश्व स्तर पर शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए साझेदारी बनाने हेतु एक मंच के रूप में कार्य करता है।

7. BSE PSUइंडेक्स

- बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड ने 4 जून 2001 को 'BSE PSU इंडेक्स' लॉन्च किया। इस इंडेक्स में BSE में सूचीबद्ध प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम शामिल हैं।
- PSU कंपनियों की सूचीबद्ध इक्विटी के प्रदर्शन पर नज़र रखने के लिए एक सूचकांक
- केंद्र सरकार के लिए शेयर बाजार में अपनी संपत्ति की निगरानी के लिए एक उपयुक्त बेंचमार्क।
- BSE PSU सूचकांक की आधार तिथि 1 फरवरी 1999 है, जिस दिन BSE-500 लॉन्च किया गया था।

8. प्रेस्टन वक्र

- प्रेस्टन वक्र एक निश्चित अनुभवजन्य संबंध को संदर्भित करता है जो किसी देश में जीवन प्रत्याशा और प्रति व्यक्ति आय के बीच देखा जाता है।
- इसे पहली बार अमेरिकी समाजशास्त्री सैमुअल एच. प्रेस्टन ने अपने 1975 के पेपर में प्रस्तावित किया था।
- प्रेस्टन ने पाया कि गरीब देशों में रहने वाले लोगों की तुलना में अमीर देशों में रहने वाले लोगों का जीवनकाल सामान्यतः लंबा होता है।
- ऐसा संभवतः इसलिए है क्योंकि धनी देशों में लोगों को स्वास्थ्य सेवा तक बेहतर पहुंच है, ये बेहतर शिक्षित हैं, स्वच्छ वातावरण में रहते हैं, तथा बेहतर पोषण का आनंद लेते हैं।

9. पीएम- श्री स्कूल

- शिक्षक दिवस 2022 पर, भारत के प्रधान मंत्री ने पीएम श्री स्कूल (पीएम स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया) की घोषणा की थी।
- यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) को लागू करेगा और पहले चरण में, केंद्र प्रायोजित योजना के तहत 14,500 स्कूलों को अपग्रेड किया जाएगा
- स्कूल गुणवत्ता मूल्यांकन ढांचा (SQAF) विकसित किया जा रहा है, जिसमें परिणामों को मापने के लिए प्रमुख निष्पादन संकेतकों को निर्दिष्ट किया जाएगा।
- इसका ध्यान प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक बच्चे के सीखने के परिणामों पर होगा।
- सभी स्तरों पर मूल्यांकन वैचारिक समझ और वास्तविक जीवन की स्थितियों में ज्ञान के अनुप्रयोग पर आधारित होगा तथा योग्यता-आधारित होगा।

10.राष्ट्रीय अस्पताल एवं स्वास्थ्य सेवा प्रदाता प्रत्यायन बोर्ड (NABH)

- भारतीय गुणवत्ता परिषद का एक घटक बोर्ड है , जिसकी स्थापना स्वास्थ्य देखभाल संगठनों के लिए मान्यता कार्यक्रम स्थापित करने और संचालित करने के लिए की गई है।
- NABH का दायरा/उद्देश्य: स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं का प्रत्यायन, गुणवत्ता संवर्धन: नर्सिंग उत्कृष्टता, प्रयोगशाला प्रमाणन कार्यक्रम

- गुणवत्ता एवं रोगी सुरक्षा के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण
- मान्यता: विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल गुणवत्ता पाठ्यक्रमों/कार्यशालाओं का समर्थन

11.कैनलाओन ज्वालामुखी

- इसे कनलाओन भी कहा जाता है, यह मध्य फिलीपींस का सबसे सक्रिय पर्वत है, तथा नीग्रोस द्वीप का सबसे ऊंचा स्थान है।
- विशाल 2435 मीटर ऊंचा स्ट्रैटोज्वालामुखी दरार-नियंत्रित पाइरोक्लास्टिक शंकुओं और क्रेटरों से भरा हुआ है, जिनमें से कई झीलों से भरे हुए हैं।
- कैनलाओन के शिखर पर एक विस्तृत, लम्बा उत्तरी काल्डेरा है, जिसमें एक क्रेटर झील है तथा दक्षिण में एक छोटा, लेकिन ऊंचा, ऐतिहासिक रूप से सक्रिय क्रेटर है।

12.फाइव आईज़

- फाइव आईज़ एक खुफिया गठबंधन है जिसमें ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।
- ये साझेदार देश दुनिया की सबसे एकीकृत बहुपक्षीय व्यवस्थाओं में से एक के तहत एक दूसरे के साथ व्यापक स्तर की खुफिया जानकारी साझा करते हैं।
- इस गठबंधन की शुरुआत द्वितीय विश्व युद्ध से मानी जा सकती है। जर्मनी और जापान के कोड को सफलतापूर्वक तोड़ने के बाद ब्रिटेन और अमेरिका ने खुफिया जानकारी साझा करने का फैसला किया।
- वर्ष 1943 में ब्रिटेन-अमेरिका (ब्रूसा) समझौते ने इसकी नींव रखी।
- यूरोप में अमेरिकी सेना को समर्थन देने के लिए दोनों देशों के बीच खुफिया जानकारी साझा करने के लिए BRUSA पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- वर्ष 1949 में कनाडा इसमें शामिल हो गया, तथा वर्ष 1956 में न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया भी इसमें शामिल हो गए, जिससे गठबंधन बना।

13.राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण

- यह एक अर्ध-न्यायिक प्राधिकरण है जो कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत उत्पन्न होने वाले सिविल प्रकृति के कॉर्पोरेट विवादों से निपटने के लिए स्थापित किया गया है।
- इसका गठन 1 जून 2016 को कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत किया गया था।
- NCLT का गठन दिवालियेपन और कंपनियों के समापन से संबंधित कानून पर बालकृष्ण एराडी समिति की सिफारिश के आधार पर किया गया था।
- NCLT में एक अध्यक्ष और आवश्यकतानुसार न्यायिक एवं तकनीकी सदस्य शामिल होंगे।
- यह सिविल प्रक्रिया संहिता में निर्धारित नियमों द्वारा सीमित या बाध्य नहीं है तथा प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है।

14.पाम ऑयल

- पाम तेल एक खाद्य वनस्पति तेल है जो ताड़ के फल के मेसोकार्प (रेड्डिश पल्प) से प्राप्त होता है।
- इसका उपयोग खाना पकाने के तेल के रूप में, तथा सौंदर्य प्रसाधनों, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों, केक, चॉकलेट, स्प्रेड, साबुन, शैम्पू, तथा सफाई उत्पादों से लेकर जैव ईंधन तक हर चीज में किया जाता है।
- बायोडीजल बनाने में कच्चे पाम तेल के उपयोग को 'ग्रीन डीजल' के रूप में ब्रांड किया जा रहा है।
- इंडोनेशिया और मलेशिया मिलकर वैश्विक पाम ऑयल उत्पादन का लगभग 90% उत्पादन करते हैं, जिसमें इंडोनेशिया ने वर्ष 2021 में 45 मिलियन टन से अधिक की सबसे बड़ी मात्रा का उत्पादन किया।

15. वोलैटिलिटी इंडेक्स

- वोलैटिलिटी इंडेक्स निकट अवधि में बाजार की अस्थिरता की उम्मीद का एक माप है। अस्थिरता को अक्सर 'कीमतों में परिवर्तन की दर और परिमाण' के रूप में वर्णित किया जाता है और वित्त में इसे अक्सर जोखिम के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- इंडिया VIX NIFTY इंडेक्स ऑप्शन कीमतों पर आधारित एक वोलैटिलिटी इंडेक्स है।
- NIFTY ऑप्शन अनुबंधों की सर्वोत्तम बोली-मांग कीमतों से, एक अस्थिरता आंकड़ा (%) की गणना की जाती है जो अगले 30 कैलेंडर दिनों में अपेक्षित बाजार अस्थिरता को इंगित करता है।

16. विकासशील समाज अध्ययन केंद्र

- वर्ष 1963 में अपनी स्थापना के बाद से, विकासशील समाज अध्ययन केंद्र को वैश्विक दक्षिण के अग्रणी बौद्धिक संस्थानों में से एक के रूप में मान्यता दी गई है।
- इसने 21वीं सदी में स्वयं को पुनः आविष्कृत करके एक पीढ़ीगत परिवर्तन पूरा किया है,
- सामाजिक विज्ञान और मानविकी के बीच संबंध स्थापित करने तथा भारतीय भाषाओं में राजनीतिक और नैतिक विचारों की गैर-यूरोपीय वंशावली की खोज करने के लिए एक नई प्रतिबद्धता।
- CSDS को वर्ष 1969 से भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR), नई दिल्ली द्वारा सहायता प्रदान की जाती रही है।

17. कैसिनी अंतरिक्ष यान

- कैसिनी-ह्यूजेंस शनि ग्रह के लिए नासा/यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA)/इतालवी अंतरिक्ष एजेंसी (ASI) का संयुक्त अंतरिक्ष मिशन था।
- इसे 15 अक्टूबर, 1997 को लॉन्च किया गया था।
- इस मिशन में नासा का कैसिनी ऑर्बिटर शामिल था, जो शनि की परिक्रमा करने वाला पहला अंतरिक्ष यान था, तथा ESA का ह्यूजेंस यान, जो शनि के सबसे बड़े चंद्रमा टाइटन पर उतरा था।
- यह सबसे बड़े अंतरग्रहीय अंतरिक्ष यान में से एक था।
- इसने वर्ष 2004 से वर्ष 2017 तक शनि ग्रह की 294 बार परिक्रमा की तथा हमें शनि के बारे में लगभग सब कुछ जानकारी प्रदान की।

18. मुख्य आर्थिक सलाहकार

- मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) भारत सरकार में एक पद है और यह भारत सरकार के सचिव के पद के समकक्ष है।
- CEA सीधे वित्त मंत्री को रिपोर्ट करता है।
- CEA भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग के आर्थिक प्रभाग का प्रमुख है।
- भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार की प्रमुख भूमिका अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में सरकार की समग्र रणनीति निर्धारित करना है।
- मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) भारत सरकार को वित्त, वाणिज्य, व्यापार, अर्थव्यवस्था से संबंधित मामलों पर सलाह देता है।

19. वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग

- CAQM वायु गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले मामलों पर प्रतिबंध लगाने, जांच करने और निर्देश जारी करने के लिए एक वैधानिक निकाय है।
- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता सूचकांक से संबंधित समस्याओं के बेहतर समन्वय, अनुसंधान, पहचान और समाधान के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन हेतु आयोग की स्थापना की गई है।

- दिल्ली के 300 किलोमीटर के दायरे में स्थित सभी ताप विद्युत संयंत्रों को उत्सर्जन मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना होगा
- 31 दिसंबर, 2024 तक दिल्ली-एनसीआर में डीजल से चलने वाले ऑटो-रिक्शा को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना

20. सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया (STPI)

- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के तहत एक प्रमुख विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संगठन जो IoT, ब्लॉकचेन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग (ML) जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में IT/ITES उद्योग, नवाचार, अनुसंधान एवं विकास, स्टार्ट-अप, उत्पाद / आईपी निर्माण को बढ़ावा देने में लगा हुआ है।
- STPI सहयोगात्मक तरीके से देश भर में सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भारत के नेतृत्व का निर्माण करने के लिए प्रौद्योगिकी इनक्यूबेटर स्थापित कर रहा है।
- आज तक, STPI ने निम्नलिखित 24 उद्यमिता केंद्र (CoEs) शुरू किए हैं:

21. अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA)

- IEA की स्थापना वर्ष 1974 में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (OECD) के सदस्य देशों द्वारा औद्योगिक देशों को वर्ष 1973-1974 के बड़े तेल संकट से निपटने में मदद करने के लिए की गई थी।
- IEA के ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक विकास, पर्यावरण जागरूकता और विश्वव्यापी सहभागिता चार मुख्य क्षेत्र हैं।
- IEA एक स्वायत्त मंच है जो देशों को सुरक्षित और टिकाऊ ऊर्जा उपलब्ध कराने में मदद करने के लिए विश्लेषण, डेटा और नीति सिफारिशें प्रदान करता है।
- IEA परिवार में 31 सदस्य देश, भारत सहित 13 सहयोगी देश और 4 परिग्रहण देश शामिल हैं। IEA के लिए उम्मीदवार देश को OECD का सदस्य देश होना चाहिए।

22. EFTA

- यह एक अंतर-सरकारी संगठन है जो अपने चार सदस्य देशों आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड तथा विश्व भर में उनके व्यापारिक साझेदारों के लाभ के लिए मुक्त व्यापार और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है।
- इसकी स्थापना 4 जनवरी 1960 को स्टॉकहोम में हस्ताक्षरित एक कन्वेंशन द्वारा की गई थी।
- इसका उद्देश्य उन यूरोपीय राज्यों के लिए एक वैकल्पिक व्यापार ब्लॉक के रूप में कार्य करना था, जो यूरोपीय संघ (EU) के मुख्य पूर्ववर्ती, तत्कालीन यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) में शामिल होने में असमर्थ या अनिच्छुक थे।
- EFTA कन्वेंशन को बनाए रखना और विकसित करना, जो चार EFTA राज्यों के बीच आर्थिक संबंधों को विनियमित करता है।

23. विदेश व्यापार महानिदेशालय

- यह भारत में एक सरकारी संगठन है जो देश के भारतीय आयातकों और भारतीय निर्यातकों के लिए एक्जिम दिशानिर्देश और सिद्धांतों के निर्माण के लिए जिम्मेदार है।
- यह वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय है और इसका नेतृत्व विदेश व्यापार महानिदेशक करते हैं।
- इसे "सुविधाप्रदाता" की भूमिका सौंपी गई है।
- यह भारतीय निर्यात को बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य के साथ विदेश व्यापार नीति या एक्जिम नीति को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
- DGFT निर्यातकों को स्क्रिप्ट/प्राधिकरण भी जारी करता है तथा 24 क्षेत्रीय कार्यालयों के नेटवर्क के माध्यम से उनके संबंधित दायित्वों की निगरानी भी करता है।

24.राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)

- NSO देश में सांख्यिकीय प्रणाली के नियोजित विकास के लिए सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के तहत नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
- सांख्यिकी के क्षेत्र में मानदंड और मानक निर्धारित करता है और बनाए रखता है, जिसमें अवधारणाएं और परिभाषाएं, डेटा संग्रह की पद्धति, डेटा का प्रसंस्करण और परिणामों का प्रसार शामिल है।
- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) में केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO), कंप्यूटर केंद्र और राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) शामिल हैं।
- यह हर महीने 'त्वरित अनुमान' के रूप में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) संकलित और जारी करता है; उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI) आयोजित करता है; तथा संगठित विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि, संरचना और स्वरूप में परिवर्तनों का आकलन और मूल्यांकन करने के लिए सांख्यिकीय जानकारी प्रदान करता है।

25.ICJ

- ICJ, जिसे विश्व न्यायालय के नाम से भी जाना जाता है, संयुक्त राष्ट्र (UN) का प्रमुख न्यायिक अंग है।
- इसकी स्थापना जून 1945 में संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा की गई थी और इसने अप्रैल 1946 में कार्य करना शुरू किया था।
- न्यायालय का मुख्यालय द हेग (नीदरलैंड) स्थित पीस पैलेस में है।
- संयुक्त राष्ट्र के छह प्रमुख अंगों में से यह एकमात्र ऐसा अंग है जो न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित नहीं है। ICJ की सुनवाई हमेशा सार्वजनिक होती है। आधिकारिक भाषाएँ: फ्रेंच और अंग्रेजी है
- न्यायालय दो प्रकार के मामलों पर विचार कर सकता है:
- प्रथम, यह दो सदस्य देशों के बीच तथाकथित "विवादास्पद मामलों" में विवाद निपटान निकाय के रूप में कार्य कर सकता है।
- दूसरा, यह संयुक्त राष्ट्र निकाय या विशेष एजेंसी द्वारा संदर्भित किसी कानूनी प्रश्न पर सलाहकार राय जारी करने के अनुरोध को स्वीकार कर सकता है।

26.क्वालिटी कंट्रोल ऑर्डर

- क्वालिटी कंट्रोल ऑर्डर (QCO) सरकार द्वारा जारी किए गए विनियामक आदेश हैं, जो आमतौर पर एक निर्दिष्ट प्राधिकारी के माध्यम से जारी किए जाते हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उत्पाद गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रदर्शन के निर्दिष्ट मानकों को पूरा करते हैं।
- ये आदेश अक्सर व्यापक विनियामक ढांचे का हिस्सा होते हैं जिनका उद्देश्य उपभोक्ताओं की सुरक्षा करना, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को बनाए रखना और बाजार में उत्पादों की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाना होता है।
- यदि पर्यावरण, स्वास्थ्य, सुरक्षा और भ्रामक व्यापार प्रथाओं या राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर QCO लगाए जाते हैं, तो उन्हें विश्व व्यापार संगठन (WTO) में चुनौती नहीं दी जा सकती।

27.सेंट्रल हॉल

- सेंट्रल हॉल का उपयोग मूलतः विधानमंडल के सदस्यों के लिए पुस्तकालय के रूप में किया जाता था।
- संविधान सभा की बैठकें 1946 से 1949 के बीच लगभग तीन वर्षों तक इसी स्थान पर हुईं।
- इसका उपयोग मुख्य रूप से औपचारिक अवसरों जैसे कि लोकसभा और राज्यसभा दोनों के सदस्यों को राष्ट्रपति का वार्षिक संबोधन और राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह के लिए किया जाता था।
- यह राष्ट्रपति के विदाई समारोह तथा उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार समारोह जैसे संसदीय कार्यक्रमों का भी स्थल था।
- सेंट्रल हॉल का उपयोग अन्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों के संबोधन के लिए किया जाता था।
- अंतिम संबोधन मार्च 2021 में अंतर-संसदीय संघ (IPU) के अध्यक्ष डुआर्टे पाचेको द्वारा दिया गया था

28.सेबी

- सेबी, या भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड, भारत में प्रतिभूति और कमोडिटी बाजार को संभालने वाली नियामक संस्था है।
- यह वित्त मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड की स्थापना वर्ष 1992 में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम, 1992 के तहत एक वैधानिक निकाय के रूप में की गई थी।
- इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित है
  - निवेशकों और अन्य बाजार सहभागियों के हितों की सुरक्षा करना।
  - अंदरूनी व्यापार को रोकना,
  - निवेशक शिक्षा और जागरूकता बढ़ाना।
  - मूल्य हेरफेर की निगरानी।

29.IPEF

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई दारुस्सलाम, फिजी भारत, इंडोनेशिया, जापान, कोरिया गणराज्य, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम के साथ समृद्धि के लिए भारत-प्रशांत आर्थिक ढांचा (IPEF) शुरू किया।
- इस ढांचे का उद्देश्य अर्थव्यवस्थाओं के लिए लचीलापन, स्थिरता, समावेशिता, आर्थिक विकास, निष्पक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देना था।
- इस पहल के माध्यम से, IPEF साझेदारों का लक्ष्य क्षेत्र में सहयोग, स्थिरता, समृद्धि, विकास और शांति में योगदान करना है।
- यह फ्रेमवर्क ठोस लाभ प्रदान करता है जो आर्थिक गतिविधि और निवेश को बढ़ावा देगा, टिकाऊ और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा, तथा पूरे क्षेत्र में श्रमिकों और उपभोक्ताओं को लाभान्वित करेगा।
- IPEF के 14 साझेदार वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 40 प्रतिशत तथा वैश्विक वस्तु एवं सेवा व्यापार का 28 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करते हैं।

30.CPI औद्योगिक श्रमिक

- औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतक है जो औद्योगिक श्रमिकों द्वारा खरीदी गई उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की एक बॉस्केट के मूल्य स्तर में परिवर्तन को मापता है।
- यह सूचकांक मुद्रास्फीति के रुझान को समझने तथा वेतन और लाभों में समायोजन करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- सरकार और निजी क्षेत्र अक्सर महंगाई भत्ते की गणना के लिए CPI-IW का उपयोग करते हैं, जो श्रमिकों को मुद्रास्फीति के लिए मुआवजा देता है।
- श्रम ब्यूरो 1944 से औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक का संकलन और रखरखाव कर रहा है।

31.IRDAI

- भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI), 1999 में स्थापित, एक नियामक निकाय है जिसका उद्देश्य बीमा ग्राहकों के हितों की रक्षा करना है।
- यह IRDA अधिनियम 1999 के तहत एक वैधानिक निकाय है और वित्त मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में है।
- यह बीमा उद्योग के विकास को नियंत्रित करता है और बीमा से संबंधित गतिविधियों की निगरानी करता है।
- प्राधिकरण की शक्तियां और कार्य IRDAI अधिनियम, 1999 और बीमा अधिनियम, 1938 में निर्धारित हैं।

32. अटल इन्क्यूबेशन सेंटर

- AIM भारत में नवाचार और उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देने की एक प्रमुख पहल है।
- यह एक व्यापक संरचना है जिसका उद्देश्य देश में नवाचार को बढ़ावा देना तथा उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाना है।
- भारत में स्टार्ट-अप और उद्यमियों के लिए एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हुए नवाचार और उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने के लिए नीति आयोग की पहल है।
- प्रत्येक AIC को 5 वर्षों की अवधि में 10 करोड़ रुपये तक के अनुदान के साथ समर्थन दिया जाता है।
- वर्ष 2016 से, AIM ने 18 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में 68 अटल इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित किए हैं, जिन्होंने 2700 से अधिक स्टार्टअप का समर्थन किया है।

33. डीपर बूल वन्यजीव अभयारण्य

- डीपर बील असम के कामरूप जिले में एक स्थायी मीठे पानी की झील और एक पक्षी अभयारण्य भी है।
- यह एक नदीय आर्द्रभूमि है, जो ब्रह्मपुत्र नदी के पूर्व चैनल में स्थित है, यह मुख्य नदी चैनल के दक्षिण में स्थित है।
- इसे वर्ष 2002 में रामसर साइट के रूप में नामित किया गया था
- वर्ष 2021 में पर्यावरण मंत्रालय ने इसे पारिस्थितिकी-संवेदनशील क्षेत्र के रूप में अधिसूचित किया।

34. चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (MRI)

- MRI एक गैर-आक्रामक निदान प्रक्रिया है जिसका उपयोग शरीर के भीतर कोमल ऊतकों के चित्र प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
- नरम ऊतक वह ऊतक है जो कैल्शिफिकेशन के कारण कठोर नहीं हुआ है।
- इसका उपयोग शरीर के विभिन्न भागों जैसे मस्तिष्क, हृदय-संवहनी प्रणाली, रीढ़ की हड्डी, जोड़ों, मांसपेशियों, यकृत और धमनियों की इमेजिंग के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।
- एक्स-रे के विपरीत, जिसमें विकिरण का उपयोग किया जाता है, MRI स्कैन शरीर के भीतर कोमल ऊतकों के विस्तृत चित्र बनाने के लिए शक्तिशाली चुम्बकों और रेडियो तरंगों का उपयोग करता है।

35. इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचा (IPEF)

- यह एक अमेरिकी नेतृत्व वाली पहल है जिसका उद्देश्य भारत-प्रशांत क्षेत्र में लचीलापन, स्थिरता, समावेशिता, आर्थिक विकास, निष्पक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए भाग लेने वाले देशों के बीच आर्थिक साझेदारी को मजबूत करना है।
- IPEF को 2021 में एक दर्जन प्रारंभिक साझेदारों के साथ लॉन्च किया गया था, जो कुल मिलाकर विश्व सकल घरेलू उत्पाद का 40% प्रतिनिधित्व करते हैं।
- IPEF एक मुक्त व्यापार समझौता (FTA) नहीं है, लेकिन यह सदस्यों को उन हिस्सों पर बातचीत करने की अनुमति देता है, जिन पर वे चाहते हैं। बातचीत चार मुख्य "स्तंभों" पर होगी।
  - आपूर्ति-श्रृंखला रेसिलिएंस
  - स्वच्छ ऊर्जा, डीकार्बोनाइजेशन और बुनियादी ढांचा
  - कराधान एवं भ्रष्टाचार विरोधी
  - निष्पक्ष एवं लचीला व्यापार।
- वर्तमान में भारत और प्रशांत महासागर में स्थित 13 देश इसके सदस्य हैं।
  - ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई, फिजी, भारत, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका और वियतनाम।

36.न्यू कैलेडोनिया

- यह वर्ष 1998 के नौमिया समझौते के तहत महत्वपूर्ण स्वायत्तता वाला एक फ्रांसीसी विदेशी समूह है।
- यह ऑस्ट्रेलिया के पूर्व में दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत महासागर में स्थित है।
- अपेक्षाकृत हाल ही में ज्वालामुखीय उत्पत्ति वाले कई प्रशांत द्वीपों के विपरीत, न्यू कैलेडोनिया गोंडवाना महाद्वीप का एक प्राचीन टुकड़ा है।
- न्यू कैलेडोनियन फ्रांसीसी और यूरोपीय नागरिक हैं जिन्हें फ्रांस में कहीं भी रहने का अधिकार है। ये प्रादेशिक और फ्रांसीसी राष्ट्रीय चुनावों में वोट देने के हकदार हैं।

37.INS विक्रमादित्य

- यह एक संशोधित कीव-श्रेणी का विमानवाहक पोत है, जो वर्ष 2013 में भारतीय नौसेना की सेवा में शामिल हुआ।
- इसका नाम भारत के उज्जैन के महान सम्राट विक्रमादित्य के सम्मान में रखा गया है।
- वर्ष 1996 में सेवामुक्त होने से पहले यह विमानवाहक पोत रूसी नौसेना में एडमिरल गोर्शकोव के नाम से कार्यरत था।
- बाद में इसे भारत ने वर्ष 2004 में 2.33 बिलियन डॉलर में खरीद लिया।
- यह समुद्र में 45 दिनों तक टिक सकता है।
- यह 08 नई पीढ़ी के स्टीम बॉयलरों द्वारा संचालित है।

38.लोकनीति-CSDS

- लोकनीति विकासशील समाज अध्ययन केंद्र (CSDS) का एक शोध कार्यक्रम है जिसकी स्थापना वर्ष 1997 में हुई थी।
- इसमें अनुसंधान पहलों का एक समूह है, जो अनुभवजन्य रूप से आधारित तथा सैद्धांतिक रूप से उन्मुख अध्ययनों को शुरू करके लोकतांत्रिक राजनीति पर राष्ट्रीय और वैश्विक बहस में शामिल होने का प्रयास करता है।
- चुनाव, लोकतांत्रिक राजनीति और दलीय राजनीति पर CSDS की विभिन्न परियोजनाओं को एक कार्यक्रम के अंतर्गत लाकर, लोकनीति लोकतंत्र पर वैश्विक बहस में शामिल होना चाहती है।
- चुनावी पैटर्न और मतदान व्यवहार लोकनीति के शोध के प्रमुख क्षेत्र हैं।

39.अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी है।
- इसका अधिदेश अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानकों को निर्धारित करके सामाजिक और आर्थिक न्याय को आगे बढ़ाना है।
- शांति के आधार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अधिदेश आज सभी के लिए सभ्य कार्य के रूप में व्यक्त किया जाता है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1919 में प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त करने वाली वर्साय की संधि के एक भाग के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य सामाजिक न्याय के सार्वभौमिक सिद्धांतों के विश्वास को प्रतिबिंबित करना था।
- वर्ष 1946 में, ILO नवगठित संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी बन गयी।
- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के 187 सदस्य देश हैं: संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों में से 186 देश तथा कुक द्वीप समूह।

40.स्टेपी घास के मैदान

- स्टेपीज़ समशीतोष्ण जलवायु में स्थित विस्तृत समतल घास के मैदान हैं, जो उष्णकटिबंधीय और ध्रुवीय क्षेत्रों के बीच स्थित हैं।
- स्टेपीज़ उष्णकटिबंधीय और ध्रुवों के बीच मध्यम जलवायु वाले क्षेत्रों में स्थित हैं, जहां मौसमी तापमान में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव होता रहता है।
- ये क्षेत्र अर्ध-शुष्क हैं, जहां वार्षिक वर्षा 25 से 50 सेंटीमीटर (10-20 इंच) तक होती है।

- स्टेपीज़ मुख्यतः महाद्वीपों के भीतर स्थित हैं, जो पश्चिमी पवन बेल्ट में स्थित हैं, जो मध्य अक्षांश या शीतोष्ण क्षेत्र से मेल खाता है।
- वर्षा लाने वाली हवाओं से सुरक्षित इनके स्थान की गोपनीयता, इन घास के मैदानों की विशिष्ट वृक्षविहीन प्रकृति में योगदान देती है।

41. अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM)

- वर्ष 1951 में स्थापित, IOM प्रवासन का अग्रणी अंतर-सरकारी संगठन है।
- प्रवासी शब्द की परिभाषा इस प्रकार है: "ऐसा व्यक्ति जो अपने सामान्य निवास स्थान से दूर चला जाता है, चाहे वह किसी देश के भीतर हो या किसी अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पार, अस्थायी रूप से या स्थायी रूप से, और विभिन्न कारणों से।"
- IOM प्रवासन के व्यवस्थित और मानवीय प्रबंधन को सुनिश्चित करने, प्रवासन मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने, प्रवासन की चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान की खोज में सहायता करने, शरणार्थियों और आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों सहित जरूरतमंद प्रवासियों को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए काम करता है।
- वर्ष 2016 में, IOM ने संयुक्त राष्ट्र के साथ एक समझौता किया और एक संबद्ध संगठन बन गया।

42. अल्टरनेटिव डिस्प्यूट री-सॉल्यूशन (ADR)

- ADR एक ऐसी व्यवस्था है जो अदालतों पर मुकदमेबाजी के बोझ को कम करने में सहायक है, साथ ही इसमें शामिल पक्षों को एक समग्र और संतोषजनक अनुभव प्रदान करती है।
- यह रचनात्मक, सहयोगात्मक सौदेबाजी के माध्यम से "पाई का विस्तार" करने, तथा उनकी मांगों को प्रेरित करने वाले हितों को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है।
- भारत में न्याय प्रदान करने की प्रणाली मुख्यतः अदालतों में लंबित मामलों की बड़ी संख्या के कारण अत्यधिक दबाव में आ गई है।
- भारत में, हाल के वर्षों में अदालतों में दायर मामलों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप लंबित मामलों और देरी में वृद्धि हुई है, जिससे ADR विधियों की आवश्यकता रेखांकित हुई है।

43. नागरहोल टाइगर रिजर्व

- नागरहोल कर्नाटक का एक महत्वपूर्ण बाघ अभयारण्य है और यह प्रोजेक्ट टाइगर तथा प्रोजेक्ट एलीफेंट के तहत संरक्षण का एक प्रमुख केंद्र है।
- नागरहोल टाइगर रिजर्व को पहले राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाता था, इसका नाम नागरहोल नदी के नाम पर रखा गया था।
- यह बाघ अभयारण्य, ब्रह्मगिरी वन्यजीव अभयारण्य के माध्यम से पश्चिमी घाट के अन्य क्षेत्रों और बांदीपुर बाघ अभयारण्य के माध्यम से पूर्वी घाटों को जोड़ने वाले बाघों और हाथियों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास है।
- इसमें मुख्य रूप से नम पर्णपाती वन हैं जिनमें सागौन और शीशम के वृक्ष प्रमुख हैं।
- बाघ, एशियाई तेंदुआ, जंगली कुत्ता, भालू, एशियाई हाथी, गौर, सांभर, चीतल, मुंतजेक, चार सींग वाला मृग आदि।

44. भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग

- CCI भारत सरकार का एक वैधानिक निकाय है, जिसकी स्थापना प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 के तहत 2009 में की गई थी।
- CCI का लक्ष्य अर्थव्यवस्था में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा पैदा करना है जो उत्पादकों को 'समान अवसर' प्रदान करेगा और बाजारों को उपभोक्ताओं के कल्याण के लिए काम करने के लिए प्रेरित करेगा।
- यह प्रतिस्पर्धा-विरोधी समझौतों और उद्यमों द्वारा प्रभुत्वशाली स्थिति के दुरुपयोग पर रोक लगाता है;
- यह विधेयक विलय और अधिग्रहण (एम एंड ए) को विनियमित करता है, जिसका भारत के भीतर प्रतिस्पर्धा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- इस प्रकार, एक निश्चित सीमा से अधिक के सौदों के लिए CCI से मंजूरी लेना आवश्यक है।

45. वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद

- यह भारत का सबसे बड़ा अनुसंधान एवं विकास (M&A) संगठन है।
- CCI की अखिल भारतीय उपस्थिति है तथा इसका 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, 39 आउटरीच केन्द्रों, 3 नवाचार परिसरों और 5 इकाइयों का नेटवर्क है।
- सितंबर 1942 में स्थापित की गई थी।
- CCI को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित किया जाता है और यह सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के माध्यम से एक स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य करता है।
- यह सामाजिक प्रयासों से संबंधित कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण तकनीकी हस्तक्षेप प्रदान करता है जिसमें पर्यावरण, स्वास्थ्य, पेयजल, भोजन, आवास, ऊर्जा, कृषि और गैर-कृषि क्षेत्र शामिल हैं।
- भारत के प्रधानमंत्री संगठन के पदेन अध्यक्ष हैं।

46. माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं

- MFI एक ऐसा संगठन है जो कम आय वाले लोगों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है।
- इन सेवाओं में माइक्रोलोन, माइक्रोसेविंग्स और माइक्रोइंश्योरेंस शामिल हैं।
- MFI ऐसी वित्तीय कंपनियां हैं जो ऐसे लोगों को छोटे ऋण उपलब्ध कराती हैं जिनकी बैंकिंग सुविधाओं तक पहुंच नहीं है।
- "छोटे ऋण" की परिभाषा अलग-अलग देशों में अलग-अलग है। भारत में, 1 लाख रुपये से कम के सभी ऋणों को माइक्रोलोन माना जा सकता है।
- ब्याज दरें सामान्य बैंकों द्वारा ली जाने वाली दरों से कम हैं, इस अवधारणा के कुछ प्रतिद्वंद्वी माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं पर गरीब लोगों के पैसे में हेराफेरी करके लाभ कमाने का आरोप लगाते हैं।

47. औद्योगिक उत्पादन सूचकांक:

- IIP एक संकेतक है जो किसी निश्चित अवधि के दौरान औद्योगिक उत्पादों के उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन को मापता है।
- इसे राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा मासिक आधार पर संकलित और प्रकाशित किया जाता है।
- यह एक समग्र संकेतक है जो उद्योग समूहों की विकास दर को मापता है
- IIP के लिए आधार वर्ष 2011-2012 है।
- नीति-निर्माण प्रयोजनों के लिए सरकारी एजेंसियों द्वारा उपयोग किया जाता है।
- IIP तिमाही और अग्रिम जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) अनुमानों की गणना के लिए महत्वपूर्ण है।

48. यूरोपीय संसद

- यह यूरोपीय संघ (EU) की एकमात्र संसदीय संस्था है जिसका चुनाव 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के EU नागरिकों द्वारा सीधे किया जाता है।
- यूरोपीय संघ की परिषद (जिसे 'परिषद' भी कहा जाता है) के साथ मिलकर यह यूरोपीय संघ का विधायी कार्य करता है।
- संसद में 720 सदस्य (MEP) होते हैं जो हर पांच साल में चुने जाते हैं।
- इसके बाद निर्वाचित सदस्य ढाई वर्ष के कार्यकाल के लिए अपने अध्यक्ष का चुनाव करते हैं।
- यूरोपीय संसद के पास उतनी विधायी शक्ति नहीं है जितनी उसके सदस्य देशों की संसदों के पास है।

49. हलाइब त्रिभुज

- मिस्र-सूडानी सीमा पर स्थित एक भूभाग है
- वर्ष 1956 में सूडान को ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिलने के बाद से दोनों देश इस पर अपना दावा करते रहे हैं।
- वर्ष 1990 के दशक में मिस्र ने इस क्षेत्र में अपनी सेना तैनात कर दी, लेकिन अगले दो दशकों में विवाद कुछ हद तक शांत हो गया।
- वर्ष 2016 में यह फिर भड़क गया क्योंकि यह लाल सागर पर खुलने वाला महत्वपूर्ण क्षेत्र है

50. ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट

- इसका गठन वर्ष 2001 में अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान समुदाय को एक साझा, पारस्परिक रूप से सहमत ज्ञान आधार स्थापित करने में मदद करने के लिए किया गया था, जो वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों को कम करने के लिए नीति और कार्रवाई का समर्थन करता है।
- यह भविष्य की पृथ्वी की एक परियोजना है, जिसका गठन अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान समुदाय के साथ मिलकर एक साझा और पारस्परिक रूप से सहमत ज्ञान आधार स्थापित करने के लिए किया गया है।
- ग्लोबल कार्बन परियोजना, पृथ्वी प्रणाली विज्ञान साझेदारी के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय भूमंडल-जैवमंडल कार्यक्रम, विश्व जलवायु कार्यक्रम, वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन और विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय मानव आयाम कार्यक्रम के साथ मिलकर काम करती है।

51. EPFO

- यह एक वैधानिक सरकारी संगठन है जो भविष्य निधि और पेंशन खातों का प्रबंधन करता है
- कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम, 1952 कारखानों और अन्य प्रतिष्ठानों में कर्मचारियों के लिए भविष्य निधि की स्थापना का प्रावधान करता है।
- इसका प्रशासन श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया जाता है।
- ग्राहकों और किए गए वित्तीय लेन-देन की मात्रा के मामले में यह दुनिया के सबसे बड़े सामाजिक सुरक्षा संगठनों में से एक है।

52. ग्रे ज़ोन वारफेयर

- ग्रे-ज़ोन वारफेयर से तात्पर्य संघर्ष के एक ऐसे स्वरूप से है, जिसमें ऐसी कार्रवाइयां की जाती हैं जो पारंपरिक युद्ध की सीमा से नीचे होती हैं, लेकिन इनका उद्देश्य अस्पष्टता, अस्वीकार्यता और बल प्रयोग के माध्यम से रणनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करना होता है।
- ग्रे-ज़ोन वारफेयर में, विरोधी सीधे खुले युद्ध में शामिल हुए बिना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए साइबर हमले, आर्थिक दबाव और छद्म संघर्ष जैसी रणनीति अपनाते हैं।
- यह शांति और संघर्ष के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देता है, तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और स्थिरता के लिए गंभीर चुनौतियां उत्पन्न करता है।

53. डिफेंस एक्वीजीशन कॉउन्सिल

- DAC रक्षा मंत्रालय में तीनों सेनाओं (सेना, नौसेना और वायु सेना) तथा भारतीय तटरक्षक बल के लिए नई नीतियों और पूंजी अधिग्रहण पर निर्णय लेने वाली सर्वोच्च निर्णयकारी संस्था है।
- रक्षा मंत्री परिषद के अध्यक्ष हैं।
- इसका गठन कारगिल युद्ध (1999) के बाद वर्ष 2001 में 'राष्ट्रीय सुरक्षा प्रणाली में सुधार' पर मंत्रिसमूह की सिफारिशों के आधार पर किया गया था।

54. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA)

- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) की स्थापना वर्ष 1987 में संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई थी, जो कला के क्षेत्र में अनुसंधान, शैक्षणिक खोज और प्रसार के लिए एक केंद्र है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1985 में श्रीमती इंदिरा गांधी की स्मृति में की गई थी।
- IGNCA का मुख्य लक्ष्य भारत के मौखिक और दृश्य कला रूपों के लिए एक प्रमुख संदर्भ केंद्र बनना है।
- IGNCA की कला निधि, कला कोष, जनपद संपदा, सांस्कृतिक सूचना विज्ञान, सूत्रधार, कला दर्शन छह कार्यात्मक इकाइयाँ हैं:

55.नमामि गंगे कार्यक्रम

- केन्द्र सरकार का एकीकृत संरक्षण मिशन, राष्ट्रीय नदी गंगा के प्रदूषण में प्रभावी कमी तथा संरक्षण एवं पुनरुद्धार के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए है।
- इसका संचालन जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय के तहत किया जा रहा है।
- नमामि गंगे कार्यक्रम (वर्ष 2021-26) के दूसरे चरण में, राज्य परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने और गंगा की सहायक नदियों के शहरों में परियोजनाओं के लिए विश्वसनीय विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जिससे देरी कम हो सके।
- छोटी नदियों और आर्द्रभूमियों के पुनरुद्धार पर भी ध्यान दिया जा रहा है।
- प्रत्येक गंगा जिले को कम से कम 10 आर्द्रभूमियों के लिए वैज्ञानिक योजना और स्वास्थ्य कार्ड विकसित करना है तथा उपचारित जल और अन्य उप-उत्पादों के पुनः उपयोग के लिए नीतियां अपनानी हैं।

56.G - 7

- G - 7 (ग्रुप ऑफ सेवन) विश्व की सात सबसे बड़ी तथाकथित उन्नत अर्थव्यवस्थाओं का संगठन है, जो वैश्विक व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली पर हावी है।
- ये देश हैं कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका।
- रूस वर्ष 1998 में इसमें शामिल हुआ, जिससे G-8 बना, लेकिन 2014 में क्रीमिया पर कब्ज़ा करने के कारण इसे इससे बाहर कर दिया गया।
- यूरोपीय संघ G - 7 का सदस्य नहीं है, लेकिन वार्षिक शिखर सम्मेलन में भाग लेता है।
- वर्ष 2024 में G7 की अध्यक्षता इटली को मिलेगी।

57.पीएम गति शक्ति

- पीएम गति शक्ति ज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार पर आधारित समन्वित, समग्र, एकीकृत और व्यापक योजना के माध्यम से भरोसेमंद बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी लाने के लिए एक दृष्टिकोण है।
- इसके लिए मंत्रालयों को सार्वजनिक और निजी संस्थाओं सहित संबंधित हितधारकों को सुविधा प्रदान करने की आवश्यकता है, जिन्हें बुनियादी ढांचा परियोजनाएं स्थापित करने के लिए विभिन्न केंद्रीय/राज्य अनुमोदन और NOC (अनापत्ति प्रमाण पत्र) की आवश्यकता होती है।
- गति शक्ति के दृष्टिकोण के तहत, ये अनुमोदन और एनओसी निवेशकों के लिए एक सामान्य पोर्टल पर उपलब्ध होने चाहिए, ताकि उन्हें ऐसी मंजूरी प्राप्त करने के लिए अलग-अलग प्लेटफार्मों पर जाने की आवश्यकता न हो।
- इस प्रकार राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली को एंड-टू-एंड आवेदन और उसके बाद की मंजूरी के लिए 9 मंत्रालयों के एक समूह से महत्वपूर्ण अनुमोदन और एनओसी को ऑनबोर्ड करने का कार्य सौंपा गया है।

58.कावली पुरस्कार

- कावली पुरस्कार एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है, जो तीन क्षेत्रों: खगोल भौतिकी, नैनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान में अग्रणी प्रगति के लिए वैज्ञानिकों को मान्यता देने और सम्मानित करने के लिए स्थापित किया गया है।
- इसकी शुरुआत वर्ष 2008 में कावली फाउंडेशन द्वारा नॉर्वेजियन एकेडमी ऑफ साइंस एंड लेटर्स और नॉर्वेजियन शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्रालय के साथ साझेदारी में की गई थी।
- कावली पुरस्कार का उद्देश्य मानवता के लाभ के लिए विज्ञान को आगे बढ़ाना, वैज्ञानिक अनुसंधान के बारे में सार्वजनिक समझ को बढ़ावा देना और मानव ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाने वाले वैज्ञानिकों को समर्थन देना है।

59.CIC

- केन्द्रीय सूचना आयोग का गठन सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के अन्तर्गत दिनांक 12-10-2005 से किया गया है।
- आयोग का अधिकार क्षेत्र सभी केन्द्रीय सार्वजनिक प्राधिकरणों तक फैला हुआ है।
- आयोग के पास RTI अधिनियम, 2005 की धाराओं में उल्लिखित कुछ शक्तियां और कार्य हैं।
- ये मोटे तौर पर सूचना देने के लिए द्वितीय अपील में न्यायनिर्णयन; रिकार्ड रखने के लिए निर्देश, स्वप्रेरणा से खुलासा, आरटीआई दाखिल करने में असमर्थता पर शिकायत प्राप्त करना और जांच करना; जुर्माना लगाना तथा वार्षिक रिपोर्ट तैयार करने सहित निगरानी और रिपोर्टिंग से संबंधित हैं।
- आयोग के निर्णय अंतिम एवं बाध्यकारी हैं।

60.नाटो

- उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन की स्थापना वर्ष 1949 में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और कई पश्चिमी यूरोपीय देशों द्वारा सोवियत संघ के विरुद्ध सामूहिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए की गई थी।
- नाटो पहला शांतिकालीन सैन्य गठबंधन था जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका ने पश्चिमी गोलार्ध के बाहर बनाया था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के विनाश के बाद, यूरोप के राष्ट्रों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण और अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष किया।
- संयुक्त राज्य अमेरिका ने आर्थिक रूप से मजबूत, पुनःसशस्त्रीकृत और एकीकृत यूरोप को पूरे महाद्वीप में साम्यवादी विस्तार की रोकथाम के लिए महत्वपूर्ण माना।
- परिणामस्वरूप, नाटो के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के बीच साझा हितों और सहयोग के विचार को बढ़ावा दिया गया

61.नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो

- इसका गठन भारत सरकार द्वारा वर्ष 1986 मेंनारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रोपिक पदार्थ अधिनियम, 1985 के अंतर्गत किया गया था।
- यह गृह मंत्रालय के अंतर्गत सर्वोच्च समन्वय एजेंसी है।
- नारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रोपिक पदार्थों पर राष्ट्रीय नीति भारतीय संविधान के अनुच्छेद 47 पर आधारित है, जो राज्य को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नशीली दवाओं के सेवन पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश देता है, सिवाय औषधीय उद्देश्यों के।
- नशीली दवाओं के दुरुपयोग पर नियंत्रण केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है।

62.भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI)

- यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत भारत सरकार द्वारा आधार अधिनियम 2016 के प्रावधानों के तहत स्थापित एक वैधानिक प्राधिकरण है।
- यह भारत के निवासियों को एक विशिष्ट पहचान और डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करता है, जिससे वे किसी भी समय, कहीं भी प्रमाणीकरण कर सकते हैं।
- यह भारत के सभी निवासियों को विशिष्ट पहचान संख्या (UID) जारी करने के लिए बनाया गया है, जिसे 'आधार संख्या' के रूप में भी जाना जाता है।
- आधार अधिनियम 2016 के तहत, UIDAI आधार नामांकन और प्रमाणीकरण के लिए जिम्मेदार है, जिसमें आधार जीवन चक्र के सभी चरणों का संचालन और प्रबंधन और व्यक्तियों को आधार संख्या जारी करने की प्रणाली शामिल है।
- UIDAI में एक अध्यक्ष, दो अंशकालिक सदस्य और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) होते हैं, जो प्राधिकरण के सदस्य-सचिव भी होते हैं।

63.राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC)

- NMC का गठन संसद के एक अधिनियम, जिसे राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग अधिनियम, 2019 के रूप में जाना जाता है, द्वारा किया गया है।
- NMC भारत में चिकित्सा शिक्षा और अभ्यास के शीर्ष नियामक के रूप में कार्य करता है।
- स्वास्थ्य देखभाल शिक्षा में उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध,
- NMC पूरे देश में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा और प्रशिक्षण की उपलब्धता भी सुनिश्चित करता है।

64.गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य:

- यह मध्य प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, तथा इसकी एक सीमा राजस्थान से लगती है।
- अभयारण्य का एक बड़ा हिस्सा विशाल खुले परिदृश्य से बना है, जिसमें विरल वनस्पतियां और चट्टानी भूभाग हैं, तथा घने जंगलों के छोटे-छोटे टुकड़े हैं।
- चम्बल नदी अभयारण्य से होकर बहती है तथा इसे दो भागों में विभाजित करती है।
- उत्तरी उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन, उत्तरी उष्णकटिबंधीय शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन और शुष्क पर्णपाती झाड़ियाँ।
- इस क्षेत्र में चिंकारा, नीलगाय, चित्तीदार हिरण, भारतीय तेंदुआ, धारीदार लकड़बग्घा और सियार अच्छी संख्या में पाए जाते हैं।
- यहां मगरमच्छ, मछली, ऊदबिलाव और कछुओं की भी अच्छी काशी आबादी है।

65.मिशन लाइफ

- लाइफ़स्टाइल (या पर्यावरण के लिए जीवनशैली) भारत के नेतृत्व में एक वैश्विक जन आंदोलन है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए व्यक्तिगत और सामुदायिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करना है।
- इसे भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा वर्ष 2021 में ग्लासगो में 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP26) में लॉन्च किया गया था।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य "एक अरब भारतीयों के साथ-साथ अन्य देशों के लोगों को भी ऐसे व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित करना है जो स्थायी जीवनशैली का अभ्यास करते हैं।
- यह वैश्विक आंदोलन दुनिया भर के देशों और व्यक्तियों द्वारा उठाए गए सतत लक्ष्यों और जलवायु संबंधी कार्यों को प्रदर्शित करेगा।

66.नाटो

- उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) एक सैन्य गठबंधन है जिसे अप्रैल 1949 की उत्तरी अटलांटिक संधि (जिसे वाशिंगटन संधि भी कहा जाता है) द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और कई पश्चिमी यूरोपीय देशों द्वारा सोवियत संघ के खिलाफ सामूहिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया था।
- वर्तमान में इसके 30 सदस्य देश हैं।
- मूल सदस्य बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका थे।
- नाटो का अनिवार्य और स्थायी उद्देश्य राजनीतिक और सैन्य साधनों द्वारा अपने सभी सदस्यों की स्वतंत्रता और सुरक्षा की रक्षा करना है।
- इसका हेडक्वार्टर ब्रुसेल्स, बेल्जियम में है।

67.कवच

- कवच स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ATP) प्रणाली है।
- भारतीय रेलवे (IR) के अंतर्गत अनुसंधान डिजाइन एवं मानक संगठन (RDSO) द्वारा विकसित
- यह इंजनों, सिग्नलिंग प्रणाली और पटरियों में स्थापित इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान उपकरणों का एक सेट है, जो ट्रेनों के ब्रेक को नियंत्रित करने और ड्राइवरों को सचेत करने के लिए अल्ट्रा-हाई रेडियो फ्रीक्वेंसी का उपयोग करके एक-दूसरे से बात करते हैं, और यह सब उनमें प्रोग्राम किए गए तर्क पर आधारित होता है।
- वर्ष 2016 से रेलवे यात्री रेलगाड़ियों में कवच के लिए फील्ड परीक्षण कर रहा है।

68.उत्तर पूर्वी परिषद

- उत्तर पूर्वी परिषद (NEC) पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (MDoNER) के प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत है।
- NEC एक संवैधानिक निकाय नहीं है, बल्कि यह एक वैधानिक संगठन है जिसकी स्थापना उत्तर पूर्वी परिषद अधिनियम, 1971 के तहत की गई है, जिसे वर्ष 2002 में संशोधित किया गया।
- यह पूर्वोत्तर क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नोडल एजेंसी है, जिसमें आठ राज्य अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा शामिल हैं।
- परिषद में घटक राज्यों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री तथा राष्ट्रपति द्वारा नामित तीन सदस्य शामिल होते हैं।

69.वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब

- वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब (WIL) पेरिस स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स का एक शोध केंद्र है।
- WIL का उद्देश्य वैश्विक असमानता गतिशीलता पर अनुसंधान को बढ़ावा देना है।
- यह डेटाबेस में योगदान देने वाले शोधकर्ताओं के एक बड़े अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क (सत्तर देशों के सौ से अधिक शोधकर्ता) के साथ निकट समन्वय में काम करता है।
- यह विश्व असमानता रिपोर्ट प्रकाशित करता है
- रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2022-23 में भारत के शीर्ष 1% लोगों के पास 40.1% संपत्ति होगी

70.अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM)

- IOM एक अंतर-सरकारी संगठन है जो सरकारों और प्रवासियों, जिनमें शरणार्थी, आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्ति और प्रवासी श्रमिक शामिल हैं, को प्रवासन से संबंधित सेवाएं और सलाह प्रदान करता है।
- वर्ष 1992 में इसे संयुक्त राष्ट्र महासभा में स्थायी पर्यवेक्षक का दर्जा दिया गया। अब यह संयुक्त राष्ट्र का हिस्सा है।
- विश्व प्रवासन रिपोर्ट हर वर्ष प्रकाशित होती है।
- इसके 175 सदस्य देश हैं। भारत IOM का सदस्य है।

71.कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र

- इसका निर्माण रूस की तकनीकी सहायता से तमिलनाडु में किया जा रहा है।
- इस संयंत्र की स्थापित क्षमता 6,000 मेगावाट बिजली उत्पादन की होने की उम्मीद है।
- फरवरी 2016 से, कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र की पहली विद्युत इकाई 1,000 मेगावाट की अपनी डिजाइन क्षमता पर लगातार काम कर रही है।
- जल-जल ऊर्जा रिएक्टर (WWER) एक जल-शीतित जल-संचालित ऊर्जा रिएक्टर है।
- इस संयंत्र के वर्ष 2027 में पूरी तरह से चालू होने की उम्मीद है।
- संचालक: रूसी सरकारी कंपनी और भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड

72. स्कारबोरो शोल

- स्कारबोरो शोल छोटी चट्टानों और द्वीपों की एक श्रृंखला है जो दक्षिण चीन सागर में त्रिभुज आकार में बनी है, यह फिलीपींस से 220 किलोमीटर दूर स्थित है।
- सबसे बड़े द्वीप में एक लैगून है।
- शोल के आसपास का गहरा पानी इसे एक उत्पादक मछली पकड़ने का क्षेत्र बनाता है, जो समुद्री जीवन से समृद्ध है और लैगून में कई व्यावसायिक रूप से मूल्यवान शंख और समुद्री खीरे भी हैं।
- यह तटवर्ती क्षेत्र चीन और फिलीपींस के बीच विवाद का स्रोत है। दोनों देश दावा करते हैं कि यह तटवर्ती क्षेत्र उनके भूभाग में स्थित है तथा इसके जल तक पहुंच का विशेष अधिकार उनके पास है।

73. राष्ट्रीय महिला आयोग

- राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) एक स्वायत्त और वैधानिक निकाय है जिसकी स्थापना वर्ष 1992 में राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम, 1990 के तहत भारत में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और संवर्धन के लिए की गई थी।
- यह महिलाओं के अधिकारों से संबंधित मुद्दों की समीक्षा और समाधान करने तथा इन अधिकारों के संरक्षण और संवर्धन के लिए सिफारिशें करने के लिए जिम्मेदार है।
- आयोग में एक अध्यक्ष, 5 सदस्य और एक सदस्य-सचिव होंगे जिन्हें केन्द्र सरकार द्वारा नामित किया जाएगा।
- कम से कम एक सदस्य क्रमशः अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से संबंधित व्यक्तियों में से होगा।
- अध्यक्ष और प्रत्येक सदस्य तीन वर्ष की अवधि के लिए पद धारण करेंगे।

74. भारतीय उद्योग परिसंघ (CII)

- यह एक गैर-सरकारी, गैर-लाभकारी, उद्योग-नेतृत्व वाला और उद्योग-प्रबंधित संगठन है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1895 में हुई थी, इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।
- यह सलाहकारी और परामर्शी प्रक्रियाओं के माध्यम से उद्योग, सरकार और नागरिक समाज के साथ साझेदारी करके भारत के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाने और बनाए रखने के लिए काम करता है।
- CII ने गुणवत्ता, कॉर्पोरेट प्रशासन, ज्ञान प्रबंधन, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण प्रबंधन जैसे मापदंडों पर तेजी से उन्नयन की आवश्यकता को रेखांकित करके भारतीय उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने वाली पहल शुरू की है।

75. राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (NCDC)

- राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (NCDC), जिसे पहले राष्ट्रीय संचारी रोग संस्थान (NICD) कहा जाता था।
- NICD को वर्ष 2009 में उभरती और फिर से उभरती बीमारियों को नियंत्रित करने के बड़े अधिदेश के साथ राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (NCDC) में बदल दिया गया।
- यह देश में रोग निगरानी के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है, जो संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण को सुविधाजनक बनाता है।
- यह सार्वजनिक स्वास्थ्य, प्रयोगशाला विज्ञान और कीटविज्ञान सेवाओं के लिए विशेष मानवशक्ति के प्रशिक्षण हेतु एक राष्ट्रीय स्तर का संस्थान भी है तथा विभिन्न अनुप्रयुक्त अनुसंधान गतिविधियों में संलग्न है।
- संस्थान स्वास्थ्य सेवा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में है। संस्थान का मुख्यालय दिल्ली में है।

76. CERT-In

- यह कंप्यूटर सुरक्षा से संबंधित घटनाओं के घटित होने पर उन पर प्रतिक्रिया देने वाली राष्ट्रीय नोडल एजेंसी है।
- CERT-In की स्थापना 2004 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के एक कार्यात्मक संगठन के रूप में की गई थी।

- सूचना प्रौद्योगिकी (संशोधन) अधिनियम 2008 ने CERT-In को राष्ट्रीय एजेंसी के रूप में कार्य करने के लिए नामित किया
- कार्य: साइबर घटनाओं पर सूचना का संग्रह, विश्लेषण और प्रसार; साइबर सुरक्षा घटनाओं का पूर्वानुमान और चेतावनी; साइबर सुरक्षा घटनाओं से निपटने के लिए आपातकालीन उपाय; दिशा-निर्देश, सलाह, भेद्यता नोट और श्वेतपत्र जारी करना

77. संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR)

- यह एक संयुक्त राष्ट्र एजेंसी है जिसका कार्य शरणार्थियों, जबरन विस्थापित समुदायों और राज्यविहीन लोगों की सहायता और सुरक्षा करना तथा उनके स्वैच्छिक प्रत्यावर्तन, स्थानीय एकीकरण या किसी तीसरे देश में पुनर्वास में सहायता करना है।
- UNHCR का मुख्यालय जिनेवा, स्विटजरलैंड में है।
- UNHCR की स्थापना वर्ष 1950 में द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न शरणार्थी संकट से निपटने के लिए की गई थी।
- वर्ष 1951 के संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी सम्मेलन ने एजेंसी के कार्य का दायरा और कानूनी ढांचा स्थापित किया, जो शुरू में युद्ध से उजड़े यूरोपीय लोगों पर केंद्रित था।

78. ई-श्रम पोर्टल

- ई-श्रम पोर्टल श्रम और रोजगार मंत्रालय के अधीन है।
- इसका लक्ष्य 38 करोड़ असंगठित श्रमिकों जैसे निर्माण मजदूर, प्रवासी श्रमिक, रेहड़ी-पटरी विक्रेता, घरेलू कामगार आदि को पंजीकृत करना है।
- श्रमिकों को 12 अंकों की विशिष्ट संख्या वाला ई-श्रम कार्ड जारी किया जाएगा।
- यदि कोई श्रमिक ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत है और दुर्घटना का शिकार हो जाता है, तो वह मृत्यु या स्थायी विकलांगता पर 2.0 लाख रुपये और आंशिक विकलांगता पर 1.0 लाख रुपये के लिए पात्र होगा।
- ई-श्रम पोर्टल का गठन सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सरकार को असंगठित श्रमिकों की पंजीकरण प्रक्रिया पूरी करने के निर्देश देने के बाद हुआ, ताकि वे विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत दिए जाने वाले कल्याणकारी लाभों का लाभ उठा सकें।

79. इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (IPPB)

- 1 सितंबर, 2018 को भारत सरकार के स्वामित्व वाली 100% इक्विटी के साथ लॉन्च किया गया।
- सभी नागरिकों के लिए एक सुलभ, किफायती और विश्वसनीय बैंक बनाने के विजन के साथ।
- इसका उद्देश्य नवीन प्रौद्योगिकी और सुरक्षित लेनदेन के माध्यम से बैंकिंग को सुविधाजनक बनाना है।
- निर्बाध लेनदेन के लिए बायोमेट्रिक्स एकीकृत स्मार्टफोन और बायोमेट्रिक उपकरणों को लागू करना।
- IPPB 13 भाषाओं में उपलब्ध सहज इंटरफेस के माध्यम से सरल और किफायती बैंकिंग समाधान प्रदान करता है।
- 1,55,000 डाकघरों और 3,00,000 डाक कर्मचारियों के साथ भारत के विशाल डाक बुनियादी ढांचे का लाभ उठाना

80. घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES)

- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा प्रत्येक 5 वर्ष में आयोजित किया जाता है।
- इसे घरों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- HCES में एकत्रित आंकड़ों का उपयोग सकल घरेलू उत्पाद (GDP), गरीबी दर और उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति (CPI) जैसे विभिन्न अन्य व्यापक आर्थिक संकेतकों को प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है।
- नीति आयोग ने कहा है कि नवीनतम उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण से पता चला है कि देश में गरीबी घटकर 5% रह गई है।

81. जीसैट (GSAT)-20

- जीसैट-20 एक उच्च थ्रूपुट का-बैंड उपग्रह है जो उच्च गति ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल वीडियो ट्रांसमिशन और ऑडियो ट्रांसमिशन प्रदान करता है।
- इसे भारत की बढ़ती ब्रॉडबैंड संचार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लॉन्च किया जा रहा है।
- इसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप जैसे दूरदराज के क्षेत्रों सहित पूरे भारत में व्यापक कवरेज प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- उल्लेखनीय रूप से, इसमें 32 बीम शामिल हैं, जिन्हें विशेष रूप से कम सेवा वाले क्षेत्रों की कठिन सेवा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसका उद्देश्य कनेक्टिविटी अंतर को पाटना है।

82. भारत-यूरोपीय संघ व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद:

- परिषद का गठन वर्ष 2022 में एक उच्च स्तरीय समन्वय मंच बनाने के उद्देश्य से किया गया था
- मंत्रिस्तरीय बैठकें प्रतिवर्ष आयोजित की जाएंगी, जिससे भारत और यूरोपीय संघ के बीच नियमित उच्च स्तरीय सहभागिता सुनिश्चित होगी।
- संतुलित भागीदारी को बढ़ावा देने और द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने के लिए ये बैठकें स्थान के आधार पर भारत या यूरोपीय संघ में आयोजित की जाएंगी।
- TTC में तीन कार्य समूह (WG) शामिल हैं जो भविष्य के सहयोग के लिए रोडमैप पर रिपोर्ट देते हैं: सामरिक प्रौद्योगिकी, डिजिटल गवर्नेंस और डिजिटल कनेक्टिविटी पर कार्य समूह:
- यह डिजिटल कनेक्टिविटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, 5G/6G, उच्च प्रदर्शन और क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर, क्लाउड सिस्टम, साइबर सुरक्षा, डिजिटल कौशल और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे क्षेत्रों पर संयुक्त रूप से काम करेगा

83. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB)

- इसकी स्थापना शोषण के स्थान पर सशक्तिकरण, परंपरा के स्थान पर आधुनिकता, स्थिरता के स्थान पर विकास तथा डेयरी को भारत के ग्रामीण लोगों के विकास का साधन बनाने के लिए की गई थी।
- NDDB भारतीय संसद के एक अधिनियम (NDDB अधिनियम 1987) द्वारा स्थापित राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान है और इस प्रकार यह एक वैधानिक निकाय है।
- राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड आनंद, गुजरात (मुख्यालय) में स्थित है
- यह पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन मंत्रालय के अधीन है
- इसकी स्थापना डॉ. वर्गीज कुरियन ने की थी, जिन्हें अक्सर 'भारत का दूधवाला' कहा जाता है।

84. विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT)

- यह भारत में एक सरकारी संगठन है जो देश के भारतीय आयातकों और भारतीय निर्यातकों के लिए एक्जिम दिशानिर्देश और सिद्धांतों के निर्माण के लिए जिम्मेदार है।
- यह वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय है और इसका नेतृत्व विदेश व्यापार महानिदेशक करते हैं।
- इसे "सुविधाप्रदाता" की भूमिका सौंपी गई है।
- यह भारतीय निर्यात को बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य के साथ विदेश व्यापार नीति या एक्जिम नीति को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
- DGFT निर्यातकों को स्क्रिप्ट/प्राधिकरण भी जारी करता है तथा 24 क्षेत्रीय कार्यालयों के नेटवर्क के माध्यम से उनके संबंधित दायित्वों की निगरानी भी करता है।

85.डायटम

- डायटम एक प्रकार का सूक्ष्म, सुनहरे-भूरे रंग का शैवाल है जो मीठे पानी और समुद्री वातावरण दोनों में पाया जाता है।
- ये वैश्विक ऑक्सीजन का 25 प्रतिशत उत्पादन करके हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अर्थात हम जितनी भी चौथी सांस अंदर लेते हैं, उसमें ऑक्सीजन की मात्रा लगभग बराबर होती है।
- डायटम अतीत की पर्यावरणीय स्थितियों के अध्ययन में अपरिहार्य साबित हुए हैं।
- ये जीव प्रायः झीलों, नदियों और महासागरों के तलछट में संरक्षित रहते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे वृक्षों के छल्ले ऐतिहासिक जलवायु डेटा को संरक्षित रखते हैं।

86.INS SUNAYNA (INS सुनयना)

- INS सुनयना गश्ती जहाजों के सरयू-क्लास का हिस्सा है, जिसे लंबी दूरी के संचालन के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इन जहाजों की प्राथमिक भूमिका नौसैनिक निगरानी, अवरोधन, तथा खोज एवं बचाव कार्य करना है।
- इस जहाज का निर्माण गोवा शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा किया गया था और इसे 15 अक्टूबर 2013 को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था।
- INS सुनयना विभिन्न प्रकार के हथियारों से सुसज्जित है।
- जहाज़ की परिचालन क्षमता बढ़ाने के लिए इसमें उन्नत नेविगेशन और संचार प्रणाली भी लगाई गई है।

87.क्लाउड 3.5 सॉनेट

- क्लाउड 3.5 सॉनेट एक वृहद भाषा मॉडल (LLM) है, और यह LLM परिवार का हिस्सा है जिसे एंथ्रोपिक द्वारा विकसित किया जा रहा है।
- इन मॉडलों को जनरेटिव प्री-ट्रेन्ड ट्रांसफॉर्मर्स के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है कि उन्हें बड़ी मात्रा में पाठ में अगले शब्द की भविष्यवाणी करने के लिए पूर्व प्रशिक्षित किया गया है।
- क्लाउड 3.5 सॉनेट इस वर्ष मार्च में प्रस्तुत क्लाउड 3 सॉनेट का पूर्ववर्ती है।
- क्लाउड 3.5 सॉनेट ने कोडिंग दक्षता (ह्यूमनइवल), स्नातक स्तरीय तर्क (GPQA) और स्नातक स्तरीय ज्ञान (MMLU) जैसी क्षमताओं में कुछ नए उद्योग मानक स्थापित किए हैं।

88.अटल सेतु

- अटल सेतु भारत का सबसे लंबा समुद्री पुल है।
- यह अरब सागर में ठाणे क्रीक पर बना 22 किमी लंबा जुड़वां कैरिजवे छह लेन वाला पुल है।
- यह मुंबई के द्वीपीय शहर शिवड़ी को मुख्य भूमि पर रायगढ़ जिले के चिर्ले से जोड़ेगा।
- यह परियोजना MMRDA (मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण) और जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) के बीच सहयोग है, जो परियोजना लागत का 80 प्रतिशत वित्तपोषित कर रही है, जबकि शेष राशि राज्य और केंद्र सरकार द्वारा वहन की जा रही है।

89.मौद्रिक नीति समिति

- संशोधित RBI अधिनियम, 1934 की धारा 45ZB में एक सशक्त छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (MPC) का प्रावधान है, जिसका गठन केंद्र सरकार द्वारा आधिकारिक राजपत्र में अधिसूचना जारी करके किया जाएगा।
- इस प्रकार की पहली MPC 29 सितम्बर, 2016 को गठित की गई थी।
- MPC मुद्रास्फीति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत रेपो दर निर्धारित करती है।

- MPC को वर्ष में कम से कम चार बार बैठक करनी आवश्यक है।
- MPC की बैठक के लिए कोरम चार सदस्यों का है।
- MPC के प्रत्येक सदस्य के पास एक वोट होता है, तथा वोट बराबर होने की स्थिति में गवर्नर के पास दूसरा या निर्णायक वोट होता है।

90.गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC)

- गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत पंजीकृत कंपनी है।
- वे ऋण और अग्रिम, सरकार या स्थानीय प्राधिकरण द्वारा जारी किए गए शेयरों/स्टॉक/बॉन्ड/डिबेंचर/प्रतिभूतियों या अन्य विपणन योग्य प्रतिभूतियों के अधिग्रहण के व्यवसाय में लगे हुए हैं।
- एक गैर-बैंकिंग संस्था जो एक कंपनी है और जिसका मुख्य व्यवसाय किसी योजना या व्यवस्था के तहत एकमुश्त या किस्तों में अंशदान या किसी अन्य तरीके से जमा प्राप्त करना है, वह भी एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी है।

91.रोटावायरस

- रोटावायरस एक अत्यधिक संक्रामक डायरिया पैदा करने वाला वायरस है।
- टीके के विकास से पहले, अधिकांश बच्चे रोटावायरस से संक्रमित होने के प्रति संवेदनशील थे।
- यद्यपि रोटावायरस से होने वाले संक्रमण अप्रिय होते हैं, फिर भी निर्जलीकरण से बचने के लिए उचित दवा और तरल पदार्थों के साथ इनका उपचार आमतौर पर घर पर ही किया जा सकता है।
- गंभीर निर्जलीकरण के कारण नसों के माध्यम से तरल पदार्थ लेना आवश्यक हो सकता है।
- नियमित रूप से अपने हाथ धोकर अच्छी स्वच्छता का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, रोटावायरस संक्रमण से बचने का सबसे प्रभावी तरीका टीकाकरण है।

92.केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण

- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के तहत केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना की गई।
- एक वर्ग के रूप में उपभोक्ताओं के अधिकारों को बढ़ावा देना, संरक्षित करना और लागू करना।
- इसका प्रमुख एक मुख्य आयुक्त होता है, तथा दो अन्य आयुक्त इसके सदस्य होते हैं; एक आयुक्त वस्तुओं से संबंधित मामलों को देखता है, जबकि दूसरा आयुक्त सेवाओं से संबंधित मामलों को देखता है।
- यह उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन की जांच करता है तथा शिकायत/अभियोजन शुरू करता है।
- असुरक्षित वस्तुओं और सेवाओं को वापस लेने का आदेश देता है,
- अनुचित व्यापार गतिविधिओं और भ्रामक विज्ञापनों को बंद करने का आदेश,देता है
- भ्रामक विज्ञापनों के निर्माताओं/समर्थकों/प्रकाशकों पर जुर्माना लगाता है।
- उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय नोडल मंत्रालय है

93.सतनामी संप्रदाय

- सतनामी (ऐसे ईश्वर में विश्वास रखने वाले जिनका नाम 'सत्य' है) छत्तीसगढ़ की 11% अनुसूचित जाति की आबादी में एक प्रमुख समूह हैं और माना जाता है कि वे रविदासिया समुदाय की एक शाखा हैं।
- संत रविदास के शिष्य उधोदास इस समाज के पहले पुजारी या आध्यात्मिक गुरु थे।
- यह समुदाय राज्य के मध्य क्षेत्र के मैदानी इलाकों में रहता है, जिनमें से ज़्यादातर बिलासपुर, दुर्ग, राजनांदगांव और रायपुर के पुराने ज़िले हैं।
- यह संप्रदाय तीन सिद्धांतों पर जोर देता है - सतनामी भक्त की वेशभूषा धारण करना, उचित साधनों से धन कमाना और किसी भी अन्याय या अत्याचार को बर्दाश्त न करना
- ऐसी मान्यता है कि सतनामी सामूहिक मतदान करके राजनीतिक प्रभाव डालते हैं।
- अनुसूचित जातियों के लिए आवंटित 10 विधानसभा क्षेत्रों में से अधिकांश पर समुदाय के प्रतिनिधियों का कब्जा है।

94. फास्ट ब्रीडर रिएक्टर

- फास्ट ब्रीडर रिएक्टर एक प्रकार का परमाणु रिएक्टर है जिसे संचालन के दौरान खपत होने वाली मात्रा से अधिक विखंडनीय पदार्थ (जैसे प्लूटोनियम-239) उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह गैर-विखंडनीय समस्थानिकों (जैसे यूरेनियम-238) को विखंडनीय समस्थानिकों (जैसे प्लूटोनियम-239) में परिवर्तित करने के लिए तीव्र न्यूट्रॉन का उपयोग करके ऐसा करता है।
- इस प्रक्रिया को "प्रजनन" के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इससे रिएक्टर में शुरू में लोड की गई सामग्री से अधिक विखंडनीय सामग्री बनती है।
- तमिलनाडु में भारत के प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR) की क्षमता 500 मेगावाट विद्युत (MWe) है। इसे इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा डिजाइन किया गया था और भाविनि द्वारा निर्मित किया गया था।
- भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड का संक्षिप्त नाम 'भाविनी' (BHAVINI) की स्थापना वर्ष 2003 में PFBR के निर्माण और संचालन के लिए की गई थी।

95. समीर (SAMEER)

- सोसाइटी फॉर एप्लाइड माइक्रोवेव इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग एंड रिसर्च (SAMEER) भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त अनुसंधान एवं विकास संस्थान है।
- समीर (SAMEER) की स्थापना वर्ष 1984 में एक अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के रूप में की गई थी, तथा बाद में इसे वर्ष 1988 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बम्बई में इसके वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया।
- जबकि SAMEER का प्राथमिक ध्यान अनुसंधान और विकास पर है, SAMEER देश के सबसे उन्नत और जटिल मिशन महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के लिए समाधान प्रदान कर रहा है। SAMEER की कई तकनीकों का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़ा है।
- समीर (SAMEER) माइक्रोवेव के व्यापक क्षेत्र में सक्रिय अनुसंधान में लगा हुआ है तथा विभिन्न अत्याधुनिक एवं चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं पर काम कर रहा है।

96. पशुधन गणना

- देश में पशुगणना वर्ष 1919-20 से हर पांच साल में एक बार आयोजित की जाती रही है।
- इसमें सभी पालतू पशुओं और उनकी संख्या को शामिल किया गया है।
- मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय द्वारा राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के सहयोग से अब तक 19 ऐसी गणनाएं आयोजित की जा चुकी हैं।
- यह जनगणना न केवल नीति निर्माताओं के लिए बल्कि कृषकों, व्यापारियों, उद्यमियों, डेयरी उद्योग और आम जनता के लिए भी लाभदायक है।

97. जल शक्ति अभियान

- जल शक्ति मंत्रालय द्वारा वर्ष 2019 में लॉन्च किया गया।
- यह भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों के सहयोगात्मक प्रयास से देश में जल संरक्षण और जल सुरक्षा के लिए एक अभियान है।
- अभियान का फोकस जल संकटग्रस्त जिलों और ब्लॉकों पर है।
- जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन, पारंपरिक और अन्य जल निकायों/टैंकों का नवीनीकरण, पानी का पुनः उपयोग और संरचनाओं का पुनर्भरण, वाटरशेड विकास और गहन वनरोपण महत्वपूर्ण जल संरक्षण हस्तक्षेप हैं।
- जल शक्ति अभियान के तहत देश भर में जल संकटग्रस्त 256 जिलों को कवर किया गया।
- लगभग पचहत्तर लाख पारंपरिक और अन्य जल निकायों और टैंकों का पुनरोद्धार किया गया तथा लगभग एक करोड़ जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन संरचनाएं बनाई गईं।

98. भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण

- यह भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण अधिनियम, 1997 की धारा 3 के तहत भारत सरकार द्वारा स्थापित एक नियामक निकाय है।
- यह भारत में दूरसंचार क्षेत्र का नियामक है।
- इसमें एक अध्यक्ष और अधिकतम दो पूर्णकालिक सदस्य तथा अधिकतम दो अंशकालिक सदस्य होते हैं।
- ट्राई के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति केन्द्र सरकार द्वारा की जाती है, तथा वे तीन वर्ष या 65 वर्ष की आयु तक, जो भी पहले हो, अपने पद पर बने रह सकते हैं।

99. भारतीय कॉफी बोर्ड

- यह एक वैधानिक संगठन है जिसका गठन कॉफ़ी अधिनियम, 1942 की धारा (4) के तहत किया गया था।
- यह भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कार्य करता है।
- बोर्ड में अध्यक्ष सहित 33 सदस्य हैं, जो मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं और यह बैंगलोर से कार्य करता है।
- बोर्ड मुख्य रूप से अनुसंधान, विस्तार, विकास, बाजार आसूचना, कॉफी के लिए बाह्य एवं आंतरिक संवर्धन के क्षेत्रों में अपनी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

100. SC, ST (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989

- यह संसद द्वारा पारित एक अधिनियम है जो अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति समुदायों के सदस्यों के विरुद्ध भेदभाव का निषेध करने तथा उनके विरुद्ध अत्याचार को रोकने के लिए बनाया गया है।
- यह अधिनियम इस निराशाजनक वास्तविकता को भी स्वीकार करता है कि अनेक उपाय करने के बावजूद अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों को उच्च जातियों के हाथों विभिन्न प्रकार के अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा है।
- यह अधिनियम संविधान के अनुच्छेद 15 (भेदभाव का प्रतिषेध), 17 (अस्पृश्यता का उन्मूलन) और 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संरक्षण) में उल्लिखित संवैधानिक सुरक्षा उपायों को ध्यान में रखते हुए अधिनियमित किया गया है।
- संशोधित SC/STअधिनियम (2018) में प्रारंभिक जांच अनिवार्य नहीं है और SC/ST पर अत्याचार के मामलों में FIR दर्ज करने के लिए पूर्व अनुमोदन की भी आवश्यकता नहीं है।

101. भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण

- भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) शिपिंग मंत्रालय के तहत एक वैधानिक निकाय है, जिसकी स्थापना वर्ष 1986 में शिपिंग और नेविगेशन के लिए अंतर्देशीय जलमार्गों के विकास और विनियमन के लिए की गई थी।
- इसका मुख्यालय नोएडा, उत्तर प्रदेश में है और इसका मुख्य कार्य अंतर्देशीय जलमार्गों में आवश्यक बुनियादी ढांचे का निर्माण करना, नई परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहार्यता का सर्वेक्षण करना और प्रशासन और विनियमन करना है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 के अनुसार 111 जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है।

102. SBM-U 2.0

- इसका उद्देश्य भारतीय शहरों को कचरा मुक्त और सभी शहरी स्थानीय निकायों (ULB) को खुले में शौच से मुक्त बनाना है।
- इसमें ठोस अपशिष्ट के स्रोत पृथक्करण, 3R (कम करना, पुनः उपयोग करना, पुनर्चक्रण करना) के सिद्धांतों का उपयोग, नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट का वैज्ञानिक प्रसंस्करण और पुराने डंप स्थलों के सुधार पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- इस योजना का परिव्यय 1.41 लाख करोड़ रुपये है।

- यह एक चक्राकार अर्थव्यवस्था में परिवर्तन पर केंद्रित है जो ठोस और तरल अपशिष्ट को एक संसाधन के रूप में मानता है।
- इसका लक्ष्य लगभग 4,700 शहरी स्थानीय निकायों में 100% नल जल आपूर्ति और 500 अमृत शहरों में सीवरेज और सेप्टेज की व्यवस्था करना भी है।

103. भारतीय निर्यात संगठन महासंघ (FIEO)

- भारतीय निर्यात संगठन महासंघ वैश्विक बाजार में भारतीय उद्यमियों की उद्यमशीलता की भावना का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी स्थापना वर्ष 1965 में हुई थी।
- यह भारत में निर्यात संवर्धन परिषदों, सामुदायिक बोर्डों और विकास प्राधिकरणों का एक शीर्ष निकाय है।
- यह भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक समुदाय और केन्द्र व राज्य सरकारों, वित्तीय संस्थाओं, बंदरगाहों, रेलवे तथा निर्यात व्यापार सुविधा में लगे सभी लोगों के बीच महत्वपूर्ण इंटरफेस प्रदान करता है।
- यह देश के प्रत्येक वस्तु एवं सेवा क्षेत्र के 100000 से अधिक निर्यातकों के हितों की सेवा करता है।

104. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE)

- नवंबर 1945 में तकनीकी शिक्षा के लिए उपलब्ध सुविधाओं पर सर्वेक्षण करने और समन्वित और एकीकृत तरीके से देश में विकास को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष सलाहकार संस्था के रूप में स्थापित किया गया था।
- AICTE ने वर्ष 1987 में AICTE अधिनियम के तहत वैधानिक दर्जा प्राप्त किया।
- शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत AICTE भारत में तकनीकी शिक्षा प्रणाली की उचित योजना और विकास प्रदान करता है।
- यह भारतीय संस्थानों में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों को मान्यता प्रदान करता है।
- इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

105. केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS)

- यह आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय है।
- यह भारत में आयुर्वेदिक विज्ञान में वैज्ञानिक आधार पर अनुसंधान करने, समन्वय करने, तैयार करने, विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए एक शीर्ष निकाय है।
- उद्देश्य: प्राचीन ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ एकीकृत करके आयुर्वेदिक सिद्धांतों, औषधि उपचारों में वैज्ञानिक प्रमाण विकसित करना तथा निदान, निवारक, प्रोत्साहक और उपचार विधियों से संबंधित वैज्ञानिक नवाचारों के माध्यम से आयुर्वेद को लोगों तक पहुंचाना।
- गुणवत्तापूर्ण प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर उपलब्धता के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू करना, उन्हें उत्पादों और प्रक्रियाओं में बदलना तथा संबंधित संगठनों के साथ तालमेल बिठाकर इन नवाचारों को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में शामिल करना

106. अदन की खाड़ी

- यह हिंद महासागर का विस्तार है, जो अरब प्रायद्वीप और अफ्रीकी महाद्वीप के बीच स्थित है।
- यह लाल सागर को अरब सागर और अंततः हिंद महासागर से जोड़ता है।
- इस खाड़ी का नाम यमन के तट पर स्थित बंदरगाह शहर "अदन" के नाम पर रखा गया है।
- यह दक्षिण में सोमालिया और सोकोत्रा द्वीपसमूह (यमन का हिस्सा), उत्तर में यमन, पूर्व में अरब सागर और पश्चिम में जिबूती से घिरा है।
- यह खाड़ी सोमाली सागर से तथा बाब अल-मन्देब जलडमरूमध्य द्वारा लाल सागर से जुड़ी हुई है।
- यह अरब सागर से अफ्रीका के हॉर्न और सोकोट्रा द्वीप समूह द्वारा अलग किया गया है।

107. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO)

- यह कर्मचारी भविष्य निधि एवं विविध अधिनियम, 1952 के अंतर्गत एक वैधानिक निकाय है।
- यह केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में है।
- EPFO की संरचना:
- अधिनियम और इसकी सभी योजनाओं का प्रशासन एक त्रिपक्षीय बोर्ड द्वारा किया जाता है जिसे केन्द्रीय न्यासी बोर्ड कहा जाता है।
- बोर्ड में सरकार (केन्द्र और राज्य दोनों), नियोक्ता और कर्मचारियों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।
- बोर्ड की अध्यक्षता भारत सरकार के केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्री करते हैं।

108. जैविक विविधता अधिनियम, 2002

- यह अधिनियम 2002 में लागू किया गया था, इसका उद्देश्य जैविक संसाधनों का संरक्षण, इसके सतत उपयोग का प्रबंधन करना तथा स्थानीय समुदायों के साथ जैविक संसाधनों के उपयोग और ज्ञान से उत्पन्न लाभों को उचित और न्यायसंगत रूप से साझा करना है।
- इस अधिनियम में जैविक संसाधनों तक पहुंच को विनियमित करने के लिए तीन स्तरीय संरचना की परिकल्पना की गई थी: राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (NBA), राज्य जैव विविधता बोर्ड (SBB), जैव विविधता प्रबंधन समितियां (BMC) (स्थानीय स्तर पर)
- जैव विविधता अधिनियम, 2002 का जन्म जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (CBD) 1992 में निहित उद्देश्यों को साकार करने के भारत के प्रयास से हुआ था।

109. वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग

- आयोग एक वैधानिक निकाय है जिसका गठन पहली बार वर्ष 2020 में एक अध्यादेश द्वारा किया गया था।
- इसकी अध्यक्षता सचिव या मुख्य सचिव स्तर के सरकारी अधिकारी द्वारा की जाएगी।
- वह तीन वर्ष तक या 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक इस पद पर बने रहेंगे।
- इसमें पांच पदेन सदस्य भी होंगे जो या तो मुख्य सचिव होंगे या दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों में पर्यावरण संरक्षण से संबंधित विभाग के प्रभारी सचिव होंगे।
- CPCB, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और नीति आयोग के तकनीकी सदस्य
- वायु गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित अनुसंधान की जांच और संचालन करना, वायु प्रदूषण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए कोड और दिशानिर्देश तैयार करना,
- निरीक्षण या विनियमन सहित मामलों पर निर्देश जारी करना जो संबंधित व्यक्ति या प्राधिकरण पर बाध्यकारी होगा।

110. आधिकारिक ऋणदाता समिति (OCC)

- इसका गठन पिछले वर्ष के आर्थिक संकट के दौरान श्रीलंका द्वारा ऋण उपचार के अनुरोध के प्रत्युत्तर में किया गया था।
- इसकी सह-अध्यक्षता भारत, जापान और फ्रांस द्वारा की जाती है, तथा ये पेरिस क्लब के अध्यक्ष हैं।
- श्रीलंका के सबसे बड़े द्विपक्षीय ऋणदाता चीन ने OCC में भाग न लेने का निर्णय लिया, लेकिन पर्यवेक्षक के रूप में बैठकों में भाग लिया।
- आधिकारिक ऋणदाता समिति (OCC) और श्रीलंका ने IMF के साथ विस्तारित निधि सुविधा (EFF) व्यवस्था के साथ संरेखित मुख्य मापदंडों पर सहमति व्यक्त की है।

111. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC)

- 'रोम संविधि' नामक अंतर्राष्ट्रीय संधि द्वारा शासित, ICC दुनिया का पहला स्थायी अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय है।
- यह जांच करता है और जहां आवश्यक हो, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए चिंता के सबसे गंभीर अपराधों के आरोपी व्यक्तियों पर मुकदमा चलाता है: जैसे नरसंहार, युद्ध अपराध, मानवता के विरुद्ध अपराध और आक्रामकता का अपराध।
- अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्याय के माध्यम से, ICC का लक्ष्य लोगों को उनके अपराधों के लिए जिम्मेदार ठहराना तथा इन अपराधों को दोबारा होने से रोकने में मदद करना है।
- भारत, अमेरिका और चीन के साथ रोम संविधि का पक्षकार नहीं है।

112. वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

- वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट RBI द्वारा वर्ष में दो बार जारी की जाती है।
- RBI देश में वित्तीय स्थिरता की स्थिति का विवरण देता है, और इसे सभी वित्तीय क्षेत्र के नियामकों के योगदान को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है।
- FSR के भाग के रूप में, RBI एक प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (SRS) भी करता है, जिसमें वह विशेषज्ञों और बाजार सहभागियों से पाँच अलग-अलग प्रकार के जोखिमों - वैश्विक, वित्तीय, मैक्रोइकॉनोमिक, संस्थागत, सामान्य पर वित्तीय प्रणाली का आकलन करने के लिए कहता है।

113. सेंगोल

- सेंगोल तमिल शब्द "सेम्माई" से निकला है, जिसका अर्थ है "धार्मिकता"।
- यह सोने या चांदी से बना होता था और अक्सर कीमती पत्थरों से सजाया जाता था।
- सेंगोल राजदण्ड को सम्राटों द्वारा औपचारिक अवसरों पर धारण किया जाता था, तथा इसका प्रयोग उनकी सत्ता को दर्शाने के लिए किया जाता था।
- इसका सम्बन्ध चोल साम्राज्य से है, जो दक्षिण भारत में सबसे लम्बे समय तक शासन करने वाले और सबसे प्रभावशाली राजवंशों में से एक था।
- चोलों में उत्तराधिकार और वैधता के प्रतीक के रूप में सेंगोल राजदण्ड को एक राजा से दूसरे राजा को सौंपने की परंपरा थी।
- शीर्ष पर नंदी की मूर्ति, जो न्याय के द्रष्टा के रूप में अपनी अविचल दृष्टि रखती है, हाथ से बनाई गई है।

114. अभ्यास

- यह एक उच्च गति वाला व्ययोग्य हवाई लक्ष्य (HEAT) है।
- इसे DRDO के वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (ADE) द्वारा डिजाइन किया गया है।
- ABHYAS हथियार प्रणालियों के अभ्यास के लिए एक यथार्थवादी खतरा परिदृश्य प्रस्तुत करता है।
- यह सशस्त्र सेना में शामिल किए जाने के लिए प्रतीक्षारत उपकरणों (केवल वे उपकरण जिनमें हवाई मुठभेड़ की आवश्यकता होती है) के सत्यापन के लिए आदर्श मंच है।
- इसे ADE द्वारा स्वदेशी रूप से निर्मित ऑटोपायलट की सहायता से स्वायत्त उड़ान के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इसमें हथियार अभ्यास के लिए आवश्यक रडार क्रॉस-सेक्शन और दृश्य एवं इन्फ्रारेड संवर्द्धन प्रणाली है।
- लक्ष्य ड्रोन में लैपटॉप आधारित ग्राउंड कंट्रोल सिस्टम है, जिसके साथ विमान को एकीकृत किया जा सकता है और उड़ान-पूर्व जांच, उड़ान के दौरान डेटा रिकॉर्डिंग, उड़ान के बाद रिप्ले और उड़ान के बाद विश्लेषण किया जा सकता है।

115. भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR)

- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR), नई दिल्ली, जैव-चिकित्सा अनुसंधान के निर्माण, समन्वय और संवर्धन के लिए भारत में शीर्ष निकाय है, जो दुनिया के सबसे पुराने चिकित्सा अनुसंधान निकायों में से एक है।
- वर्ष 1911 में भारत सरकार ने देश में चिकित्सा अनुसंधान को प्रायोजित करने और समन्वय करने के विशिष्ट उद्देश्य से भारतीय अनुसंधान निधि संघ (IRFA) की स्थापना की। स्वतंत्रता के बाद, वर्ष 1949 में इसका नाम बदलकर भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) कर दिया गया।
- ICMR के शासी निकाय की अध्यक्षता केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री करते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी मामलों में इसे एक वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड द्वारा सहायता प्रदान की जाती है जिसमें विभिन्न जैव चिकित्सा विषयों के प्रख्यात विशेषज्ञ शामिल होते हैं।

116. अर्थोपाय अग्रिम (वेज एंड मीन्स एडवांस/WMA)

- यह केंद्र और राज्यों दोनों के लिए RBI से उधार लेने की सुविधा है।
- ये उधारी विशुद्ध रूप से उनकी प्राप्तियों और व्ययों के नकदी प्रवाह में अस्थायी असंतुलन को दूर करने में मदद करने के लिए हैं।
- RBI अधिनियम, 1934 की धारा 17(5) केंद्रीय बैंक को केंद्र और राज्य सरकारों को उधार देने के लिए अधिकृत करती है, बशर्ते कि अग्रिम भुगतान की तारीख से तीन महीने के भीतर उन्हें चुकाया जा सके।
- WMA पर ब्याज दर RBI की रेपो दर है, जो मूल रूप से वह दर है जिस पर वह बैंकों को अल्पकालिक धन उधार देता है।

117. शंघाई सहयोग संगठन

- शंघाई सहयोग संगठन एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतरराष्ट्रीय संगठन है जिसकी स्थापना 15 जून 2001 को शंघाई में हुई थी
- वर्ष 2002 में, सेंट पीटर्सबर्ग में राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की बैठक में शंघाई सहयोग संगठन के चार्टर पर हस्ताक्षर किए गए, जो 19 सितंबर, 2003 को लागू हुआ।
- यह एक क़ानून है जो संगठन के लक्ष्यों, सिद्धांतों, संरचना और गतिविधियों के प्रमुख क्षेत्रों को निर्धारित करता है।
- SCO का लक्ष्य सदस्य देशों के बीच आपसी विश्वास, मित्रता और अच्छे पड़ोसी संबंधों को मजबूत करना है
- SCO की आधिकारिक भाषाएं रूसी और चीनी हैं।
- SCO में वर्तमान में 9 सदस्य हैं, भारत भी SCO का सदस्य है।

118. वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF)

- FATF एक अंतरराष्ट्रीय निकाय है जिसका गठन 1989 में ग्रुप ऑफ सेवन (G7) के सदस्य देशों द्वारा किया गया था जिसका उद्देश्य धन शोधन और आतंकवादी गतिविधियों के वित्तपोषण के मामलों को रोकना है।
- इसका मुख्यालय पेरिस, फ्रांस में स्थित है।
- FATF में 37 सदस्य क्षेत्राधिकार और 2 क्षेत्रीय संगठन शामिल हैं, जिनमें यूरोपीय आयोग और खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) शामिल हैं।
  - भारत FATF का सदस्य है
- इसका उद्देश्य धन शोधन और आतंकवादी गतिविधियों के वित्तपोषण को रोकने के लिए राष्ट्रीय विधायी और नियामक सुधारों को लाने के लिए आवश्यक राजनीतिक इच्छाशक्ति उत्पन्न करना है।
- FATF मानकों का अनुपालन न करने से प्रतिष्ठा को नुकसान, वित्तीय अलगाव, तथा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की ओर से जांच बढ़ सकती है।

119. आठ कोर उद्योग सूचकांक (ICI)

- आठ कोर उद्योगों का सूचकांक (ICI) हर महीने तैयार किया जाता है और आर्थिक सलाहकार कार्यालय (OEA), उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) और वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है।
- ICI आठ प्रमुख उद्योगों अर्थात सीमेंट, कोयला, कच्चा तेल, बिजली, उर्वरक, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद और इस्पात के उत्पादन के संयुक्त और व्यक्तिगत प्रदर्शन को मापता है।
- औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में शामिल वस्तुओं के भार का 40.27 प्रतिशत हिस्सा आठ प्रमुख उद्योगों का है।
- आठ प्रमुख उद्योगों का वर्तमान भार इस प्रकार है: पेट्रोलियम रिफाइनरी उत्पाद (28.04%)> बिजली (19.85%)> इस्पात (17.92%)> कोयला (10.33%)> कच्चा तेल (8.98%)> प्राकृतिक गैस (6.88%)> सीमेंट (5.37%)> उर्वरक (2.63%)।
- ICI की वर्तमान श्रृंखला में आधार वर्ष 2011-12 है।

120. इंजीन्यूटी मार्स हेलीकॉप्टर

- इंजीन्यूटी मार्स हेलीकॉप्टर एक छोटा रोबोट हेलीकॉप्टर है जो नासा के मार्स 2020 मिशन का हिस्सा है, जिसमें पर्सिवियरेंस रोवर भी शामिल है।
- यह किसी अन्य ग्रह पर संचालित, नियंत्रित उड़ान का प्रयास करने वाला पहला विमान है।
- इंजीन्यूटी का प्राथमिक मिशन मंगल ग्रह के पतले वायुमंडल में उड़ान की व्यवहार्यता का प्रदर्शन करना और लाल ग्रह के भविष्य के हवाई अन्वेषण के लिए डेटा एकत्र करना है।

GEO IAS It's about quality

GEO IAS

It's about quality

ABOUT US

GEO IAS is the best institute for civil services in India for providing top quality teaching and materials, offering you most optimum path for your success in Civil Services exam. Our aim is to provide quality training with an affordable fee structure. Our uniquely designed course make us the best institute for UPSC to crack the exam in one go. We have a dedicated team of experienced and young teachers and counsellors who make sure that every student who joins the institute, must get customized way of preparation which matches with student's learning style.
The only institute of UPSC in India which has 3 AI enabled Mobile apps. We believe in Smart way of teaching and learning. The classes are available in offline as well as in online mode. We take the help of animation so that you may visualize the lectures. Unlimited tests for prelims and mains with solution in both form (Hard copy and soft copy). We have the set of 15 lac mcqs on each topic. We provide daily news analysis, Highlighted news paper and links of important Sansad TV shows. The institute has best success rate with more than 230 students have cleared the exam. HIGHEST RATED INSTITUTE as per GOOGLE, SULEKHA and JUST DIAL and the magazine on civil services

+91-9477560001 /002/005

BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | HEAD OFFICE: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

info@geoias.com

www.geoias.com